

سلسلہ نوموزہ سالار جنگ ۷ / ۹

فہرست مشروح

مخطوطات فارسی

جلد ہفتم

(علم اجتہاد)

تالیف

حاجی مولانا محمد اشرف مرحوم

دیباچہ

دکتور مودن لعل نسیم

رئیس

موزہ و کتابخانہ سالار جنگ

حیدرآباد - آندھرا پردیش

بھارت

دارالافتاء دارالعلوم دیوبند

فهرست مشروح

مخطوطات فارسی

در

موزه و کتابخانه سالار جنگ

تالیف

حاجی مولانا محمد اشرف مرحوم

(عہدہ دار خاص برای فہرست سازی)

دیباچہ

دکتر موهن لعل نسیم

رئیس موزه و کتابخانه

جلد ہفتم

(محتوی بر ۶۲۷ مخطوطات تہوید، تفسیر، حدیث، فقہ و عقاید)

ناشر

موزه و کتابخانه سالار جنگ

حیدرآباد - آندھرا پردیش بھارت

۱۹۸۰ء - ۱۹۸۰ء

قیمت:

۱۱۸۸/۲۰

III Decorated Mss

2555 (Superbly decorated with Floral Designs and 'Unwāns).

Illustrated Mss

2401 (Illustrated with Diagrams and Charts).

2701 (Illustrated with Calligraphic Panels and Drawings).

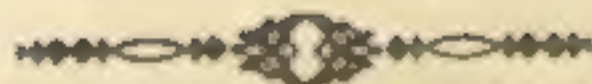
IV Imperial and Royal Codices

(i) Imperial: 2554 and 2882.

(ii) Royal: 2576, 0592, 2716 and 2855.

V Rare Works

2401, 2402, 2408, 2413, 2418, 2419/1, 2419/2, 2427, 2464, 2465, 2467, 2512, 2536, 2537, 2558, 2576, 2633, 2682, 2716, 2815, 2818, 2819, 2820, 2839, 2855, 2856, 2857, 2876, 2900, 2909, 2949, 2960 and 2987.



Ordinary :

2402/(ii), 2404, 2409/(ii), 2415/(ii), 2416, 2418/(ii), 2422,
2432/(ii), 2454/(ii), 2459/(ii), 2463, 2483/(ii), 2498/(ii), 2518,
2522/(ii), 2524/(ii), 2527/ii, 2531/(ii), 2533, 2540, 2442, 2548,
2549, 2550, 2552, 2553, 2560, 2561, 2562/(ii), 2563/(ii), 2577,
2581, 2583, 2587, 2589, 2590, 2596/(ii), 2601/(ii), 2604, 2608,
2609, 2619, 2621, 2624/(ii), 2631/(ii), 2638/(ii), 2639,
2645/(ii), 2648/(ii), 2649, 2651, 2653, 2657, 2658, 2663, 2674,
2678, 2679, 2680, 2681, 2683, 2685, 2690/(ii), 2693, 2695/(ii),
2696, 2697/ii, 2698/ii, 2700, 2702, 2705, 2707/(ii), 2708,
2713, 2714, 2724/(ii), 2730, 2740, 2745/(ii), 2746/ii, 2747,
2750, 2763, 2767, 2769/(ii), 2772/(ii), 2784/(ii), 2786, 2787,
2793, 2796, 2798, 2799, 2801, 2803, 2805, 2808, 2811,
2813, 2814, 2815, 2817, 2818, 2823, 2824/(ii), 2829/(ii), 2832,
2834, 2836, 2838, 2847, 2858, 2866, 2884/ii, 2887/(ii), 2896,
2903, 2910/(ii), 2913, 2914/(ii), 2916, 2922, 2924, 2927, 2935,
2936, 2937, 2938/(ii), 2955, 2965, 2967, 2974, 2975, 2981,
2984, 2985, 2994, 2995/(ii), 3002, 3003/(ii), 3004, 3007,
3008, 3011, 3012/(ii), 3022 and 3026.

(v) *Riqā'*

Good : 2857/(ii) and 2930.

(vi) *Shafī'a*

Excellent : 2643.

Good : 2781 and 2945.

(vii) *Shikast*

Good : 2754.

(viii) *Shikast-Nasī'atīq*

Clear : 2688, 2689, 2761, 2790, 2844, 2861, 2874, 2892, 2931,
2943, 2948 and 2973.

Good : 2556, 2558, 2603, 2605, 2654, 2819, 2820, 2856, 2864 and
2898.

Ordinary : 2415/(ii), 2421, 2551 and 2784.

(ix) *Ta'īlīq*

Good : 2020 and 2875.

(x) *Thuth*

Good : 2512.

2616, 2617, 2618, 2623, 2625, 2628, 2630, 2632, 2634, 2647, 2650, 2655, 2676, 2682, 2706, 2711, 2721, 2724, 2725, 2741, 2748, 2759, 2761, 2763, 2768, 2777, 2782, 2783, 2795, 2800, 2808, 2819, 2820, 2835, 2840, 2841, 2842, 2845, 2850, 2852, 2857, 2859, 2868, 2869, 2873, 2883, 2884, 2885, 2886, 2889, 2892, 2895, 2900, 2908, 2917, 2918, 2919, 2923, 2925, 2929, 2933, 2939, 2942, 2971, 2982, 2997 and 3024.

(iv) *Nasta'liq*

Bad: 2410/(ii) and 2837.

Clear: 2445, 2469/(ii), 2471, 2472/(ii), 2473, 2475/(ii), 2476, 2477/(ii), 2490/(ii), 2494/(ii), 2499/(ii), 2503/(ii), 2510/(ii), 2515, 2532, 2543, 2547, 2567, 2568/(ii), 2569, 2571, 2572, 2578, 2600, 2611, 2622/(ii), 2633/(ii), 2637, 2644, 2659, 2660, 2661, 2662, 2668, 2673, 2675, 2696, 2699, 2701, 2710, 2715, 2718, 2723, 2727/(ii), 2728, 2729, 2732, 2733/(ii), 2735, 2736, 2737, 2751, 2752, 2753, 2756/(ii), 2757, 2766, 2770/(ii), 2788, 2791, 2797, 2802, 2804, 2810, 2812, 2816, 2822, 2825, 2826/(ii), 2827, 2839, 2846/(ii), 2865, 2870/(ii), 2880, 2882/(ii), 2888, 2890, 2899, 2904/(ii), 2911, 2912, 2915, 2921, 2926/(ii), 2932, 2934/(ii), 2950, 2956, 2957, 2959, 2961, 2962, 2963/(ii), 2964/(ii), 2972, 2976, 2977, 2979, 2980, 2983, 2986, 2987, 2988/(ii), 2991/(ii), 2992, 2996, 2999/(ii), 3006, 3009/(ii), 3018/(ii), 3023 and 3025.

Excellent: 2465/ii, 2521, 2554, 2555, 2593, 2607, 2716/ii, 2828, 2849, 2855 and 2998.

Good: 2405/(ii), 2406, 2407, 2413, 2431, 2437, 2463, 2467, 2470/(ii), 2484/(ii), 2495/(ii), 2496/(ii), 2501/(ii), 2511/(ii), 2514/(ii), 2520/(ii), 2537/(ii), 2538/(ii), 2544, 2557/(ii), 2576/(ii), 2582, 2584, 2564/(ii), 2585, 2588/(ii), 2592, 2595/(ii), 2598/(ii), 2602, 2604, 2612/(ii), 2613, 2614, 2615/(ii), 2616/(ii), 2706/(ii), 2710, 2720/(ii), 2734, 2768/(ii), 2773/(ii), 2780, 2792, 2795/(ii), 2809/(ii), 2840/(ii), 2841/(ii), 2842, 2843, 2860, 2871, 2876, 2877, 2878, 2883/(ii), 2884/(ii), 2892/(ii), 2893, 2894, 2901, 2902, 2906, 2907, 2909, 2923/(ii), 2925/(ii), 2929/ii, 2932/(ii), 2940, 2941, 2947, [2951, 2954, 2958, 2960, 2966, 2970, 2993, 3010, 3013, 3014, 3015, 3024/(ii), 3027 and 3029.

INDEX VIII

Volume VII

Islamic Theology

(Persian Manuscripts)

Autograph Copies; Calligraphically written Mss; Illustrated, Imperial, Rare, Royal and Superbly decorated codices, etc.,

I Autograph Copies

2413, 2555, 2562, 2576, 2625, 2731, 2734, 2682, 2707, 2760, 2819, 2825, 2826, 2827, 2877, 2924, 2968 and 3006.

II Calligraphically Written Mss.

(i) Archaic Naskh

Good: 2425 and 2427.

(ii) Bahâr

Good: 2426, 2428, 2433 and 2442.

(iii) Naskh

Bad: 2410.

Clear: 2579, 2622, 2629, 2631, 2633, 2645, 2652, 2658, 2743, 2756, 2770, 2771, 2774, 2776, 2789, 2806, 2826, 2926, 2928, 2934, 2946, 2949, 2952, 2953, 2963, 2965, 2979, 2991/(i), 2999/(i), 3001, 3002, 3009/(i) and 3018/(i).

Excellent: 2465/i, 2519, 2716, 2855/(i) 2869 and 3016.

Good: 2401, 2405, 2408, 2409/1, 2412, 2419/2, 2420, 2436, 2440, 2441, 2443, 2444, 2466, 2468, 2470, 2478, 2484, 2492, 2493, 2495, 2496, 2500, 2501, 2503, 2506, 2511, 2513, 2514, 2520, 2525, 2536, 2537, 2541, 2557, 2558, 2562, 2564, 2565, 2570, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2588, 2590, 2591, 2595, 2597, 2598, 2599, 2612, 2615,

| Cat. No. | Reg. No. | Cat. No. | Reg. No. | | |
|----------|----------|----------|----------|-------|---------|
| 2977 | Aq | 1/1 | 3004 | do | 16 |
| 2978 | do | 2 | 3005 | do | 112 |
| 2979 | do | 1/2 | 3006 | Man | 21 |
| 2980 | do | 76 | 3007 | Aq | 89 |
| 2981 | do | 77/1 | 3008 | do | 104 |
| 2982 | do | 137 | 3009 | do | 27 |
| 2983 | do | 126/2 | 3010 | do | 151/1 |
| 2984 | do | 78 | 3011 | do | 106 |
| 2985 | do | 144/1 | 3012 | do | 90 |
| 2986 | Man | 52/2 | 3013 | do | 14 |
| 2987 | Aq | 12 | 3014 | do | 15 |
| 2988 | do | 4 | 3015 | Aq | 26 |
| 2989 | do | 40 | 3016 | do | 68 |
| 2990 | do | 91 | 3017 | do | 133 |
| 2991 | do | 136 | 3018 | do | 145/1 |
| 2992 | do | 87 | 3019 | Tas | 148/3 |
| 2993 | do | 71 | 3020 | A. Nm | 686/2 |
| 2994 | do | 24 | 3021 | Aq | 59 |
| 2995 | do | 60/1 | 3022 | do | 105 |
| 2996 | do | 115 | 3023 | do | 101 |
| 2997 | do | 113 | 3024 | do | 70 |
| 2998 | do | 46 | 3025 | do | 120 |
| 2999 | do | 7 | 3026 | do | 13 |
| 3000 | do | 130 | 3027 | do | 140 |
| 3001 | do | 41 | 3028 | Tas | 248/2-8 |
| 3002 | do | 98 | 3029 | Aq | 146 |
| 3003 | Aq | 81 | | | |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-------|----------|----------|-----|----------|
| 2923 | M & K | 79 | 2950 | Aq | 126/1 |
| 2924 | Aq | 86 | 2951 | do | 127 |
| 2925 | do | 83 | 2952 | do | 117 |
| 2926 | Man | 31 | 2953 | do | 32 |
| 2927 | do | 32 | 2954 | AN | 262/2 |
| 2928 | Aq | 48 | 2955 | Aq | 145/2 |
| 2929 | Aq | 206 | 2956 | do | 31 |
| 2930 | do | 88 | 2957 | do | 34 |
| 2931 | Man | 6 | 2958 | do | 33 |
| 2932 | do | 16 | 2959 | do | 99 |
| 2933 | do | 39 | 2960 | do | 97 |
| 2934 | Aq | 80 | 2961 | do | 18 |
| 2935 | do | 62 | 2962 | do | 17 |
| 2936 | F | 40 | 2963 | do | 75 |
| 2937 | F.I | 1612 | 2964 | do | 74 |
| 2938 | Aq | 142 | 2965 | do | 69 |
| 2939 | do | 143 | 2966 | do | 30 |
| 2940 | Man | 25 | 2967 | F | 72/2 |
| 2941 | Aq | 85 | 2968 | Man | 10 |
| 2942 | M & K | 36/2 | 2969 | Aq | 111 |
| 2943 | Aq | 149 | 2970 | do | 67 |
| 2944 | Mad | 52 | 2971 | do | 119 |
| 2945 | Aq | 84 | 2972 | do | 110 |
| 2946 | do | 139 | 2973 | Man | 48 |
| 2947 | Aq | 23 | 2974 | Aq | 108 |
| 2948 | do | 22/1 | 2975 | do | 121 |
| 2949 | do | 125 | 2976 | do | 3 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-------|----------|----------|-------|----------|
| 2869 | Aq | 79 | 2896 | Tas | 180 |
| 2870 | do | 100 | 2897 | M & K | 87 |
| 2871 | M & K | 78 | 2898 | Aq | 95 |
| 2872 | Ta | 2 | 2899 | do | 96 |
| 2873 | Tas | 121 | 2900 | do | 45 |
| 2874 | Aq | 92 | 2901 | Man | 30 |
| 2875 | do | 142/2-6 | 2902 | M & K | 14/3 |
| 2876 | M & K | 16 | 2903 | Tas | 23/2 |
| 2877 | do | 68 | 2904 | Aq | 73 |
| 2878 | do | 67 | 2905 | do | 124 |
| 2879 | do | 66 | 2906 | Man | 2 |
| 2880 | M & K | 65 | 2907 | do | 1 |
| 2881 | Aq | 69/1 | 2908 | do | 24 |
| 2882 | Aq | 67 | 2909 | Aq | 119 |
| 2883 | H.I | 19 | 2910 | do | 102 |
| 2884 | do | 23 | 2911 | do | 103 |
| 2885 | do | 20 | 2912 | do | 131 |
| 2886 | do | 24 | 2913 | do | 132 |
| 2887 | do | 24 | 2914 | do | 60/2 |
| 2888 | do | 21 | 2915 | do | 82 |
| 2889 | Man | 18 | 2916 | do | 144/2-3 |
| 2890 | do | 19 | 2917 | Ad | 69 |
| 2891 | do | 20 | 2918 | Aq | 6 |
| 2892 | do | 11 | 2919 | do | 5 |
| 2893 | Aq | 51 | 2920 | do | 114 |
| 2894 | Aq | 52 | 2921 | Man | 51 |
| 2895 | Tas | 179 | 2922 | Aq | 138/1 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|----------|--------------|----------------|
| 2816 | Man | 3 | 2843 | Aq | 49 |
| 2817 | F | 3 | 2844 | do | 50 |
| 2818 | Aq | 8 | 2845 | do | 141/1 |
| 2819 | Man | 17 | 2846 | do | 65 |
| 2820 | Aq | 57/1 | 2847 | do | 66 |
| 2821 | do | 43 | 2848 | do | 63 |
| 2822 | F | 6 | 2849 | do | 64 |
| 2823 | do | 9 | 2850 | H.I | 1 |
| 2824 | A.N. | 356/6 | 2851 | Man | 36 |
| 2825 | Man | 34 | 2852 | do | 37 |
| 2826 | Ak. | 36 | 2853 | do | 35 |
| 2827 | Aq | 42 | 2854 | Aq | 116 |
| 2828 | do | 72 | 2855 | T I | 4 ^R |
| 2829 | do | 147/2 | 2856 | Aq | 11 |
| 2830 | N | 7/2 | 2857 | do | 25 |
| 2831 | Si | 70 | 2858 | do | 145 3 |
| 2832 | do | 69 | 2859 | Tas | 478/1 |
| 2833 | Aq | 148 | 2860 | Ta | 445/1 |
| 2834 | do | 192/1-2 | | (M. No. 121) | |
| 2835 | do | 28 | 2861 | Ta | 445 |
| 2836 | do | 192/4 | 2862 | M & K | 98 |
| 2837 | do | 93/1 | 2863 | Man | 42 |
| 2838 | Man | 5 | 2864 | do | 43 |
| 2839 | Aq | 9 | 2865 | do | 41 |
| 2840 | Man | 15 | 2866 | do | 44 |
| 2841 | do | 16 | 2867 | do | 45 |
| 2842 | Aq | 37 | 2868 | do | 46/1 |

| Cat. No. | Reg. No. | Cat. No. | Reg. No. | | |
|----------|----------|----------|----------|-------|-------|
| 2762 | F I | 47 | 2789 | F.I | 9 |
| 2763 | do | 68 | 2790 | do | 43 |
| 2764 | do | 63 | 2791 | do | 44 |
| 2765 | do | 17 | 2792 | do | 45 |
| 2766 | Man | 38 | 2793 | Ad | 90/2 |
| 2767 | F.I | 161 | 2794 | do | 56 |
| 2768 | do | 60 | 2795 | do | 36 |
| 2769 | Ad | 23 | 2796 | do | 67 |
| 2770 | F I | 8 | 2797 | do | 54 |
| 2771 | do | 62 | 2798 | do | 42 |
| 2772 | Ad | 112 | 2799 | do | 70 |
| 2773 | do | 42 | 2800 | do | 38 |
| 2774 | F.I | 7 | 2801 | do | 13 |
| 2775 | do | 10 | 2802 | Tas | 146/1 |
| 2776 | F | 3 | 2803 | Aq. | 118 |
| 2777 | F I | 55/1 | 2804 | F | 23 |
| 2778 | do | 6 | 2805 | do | 24 |
| 2779 | F | 63 | 2806 | do | 25/1 |
| 2780 | F I | 1 | 2807 | Aq | 128 |
| 2781 | do | 37 | 2808 | F | 66 |
| 2782 | do | 61 | 2809 | Man | 28 |
| 2783 | do | 64 | 2810 | F | 7 |
| 2784 | do | 5 | 2811 | do | 8 |
| 2785 | do | 62 | 2812 | Aq | 30 |
| 2786 | do | 50 | 2813 | do | 147/1 |
| 2787 | do | 51 | 2814 | do | 38 |
| 2788 | do | 53 | 2815 | M & K | 13 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-----|----------|----------|-----|----------|
| 2708 | F | 41 | 2735 | F.I | 32 |
| 2709 | F I | 48 | 2736 | do | 11 |
| 2710 | Aq | 23/2 | 2737 | do | 12 |
| 2711 | do | 141/2 | 2738 | do | 41 |
| 2712 | F I | 59 | 2739 | do | 40 |
| 2713 | I | 11 | 2740 | H I | 11/2 |
| 2714 | do | 32 | 2741 | do | 39 |
| 2715 | do | 29 | 2742 | do | 41 |
| 2716 | F I | 15 | 2743 | do | 40 |
| 2717 | A d | 141 | 2744 | do | 42 |
| 2718 | do | 142 | 2745 | do | 27 |
| 2719 | do | 53 | 2746 | F.I | 33 |
| 2720 | do | 54 | 2747 | do | 34 |
| 2721 | F I | 18 | 2748 | do | 35 |
| 2722 | do | 19 | 2749 | do | 57 |
| 2723 | do | 21 | 2750 | do | 46 |
| 2724 | do | 20 | 2751 | do | 7 |
| 2725 | do | 22 | 2752 | do | 61 |
| 2726 | do | 23 | 2753 | I I | 18 |
| 2727 | do | 29 | 2754 | F I | 4 |
| 2728 | do | 24 | 2755 | A d | 19, 23 |
| 2729 | do | 28 | 2756 | do | 44 |
| 2730 | do | 30 | 2757 | do | 43 |
| 2731 | do | 25 | 2758 | do | 45 |
| 2732 | do | 26 | 2759 | F.I | 49 |
| 2733 | do | 27 | 2760 | do | 48 |
| 2734 | do | 31 | 2761 | do | 39 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-----|----------|----------|-----|----------|
| 2654 | F | 43 | 2681 | F | 58 |
| 2655 | do | 67 | 2682 | do | 1 |
| 2656 | do | 68 | 2683 | do | 64 |
| 2657 | do | 68 | 2684 | do | 59 |
| 2658 | do | 41 | 2685 | do | 38 |
| 2659 | do | 46 | 2686 | H | 26/1-2. |
| 2660 | do | 47/1 | 2687 | F | 21 |
| 2661 | do | 47/1 | 2688 | do | 20 |
| 2662 | do | 48 | 2689 | do | 72/1 |
| 2663 | do | 22 | 2690 | do | 62 |
| 2664 | do | 11 | 2691 | do | 17 |
| 2665 | do | 10 | 2692 | do | 18 |
| 2666 | do | 12 | 2693 | do | 61 |
| 2667 | do | 19 | 2694 | do | 5 |
| 2668 | do | 55 | 2695 | do | 51 |
| 2669 | Fat | 6 | 2696 | do | 2 |
| 2670 | F | 54 | 2697 | do | 73 |
| 2671 | do | 60 | 2698 | do | 39/1 |
| 2672 | Fat | 3 | 2699 | do | 52 |
| 2673 | do | 2 | 2700 | do | 69 |
| 2674 | do | 1 | 2701 | do | 26 |
| 2675 | F | 23 | 2702 | Fat | 7 |
| 2676 | do | 28 | 2703 | F | 35 |
| 2677 | do | 30 | 2704 | do | 36 |
| 2678 | Fat | 4 | 2705 | do | 53 |
| 2679 | do | 5 | 2706 | do | 56 |
| 2680 | F | 57 | 2707 | F.I | 66 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|----------|-------|----------|
| 2600 | Man | 17 | 2627 | H.I. | 6 |
| 2601 | do | 16 | 2628 | Man | 13 |
| 2602 | do | 4 | 2629 | A I | 29 |
| 2603 | S.I. | 13 | 2630 | Man | 12 |
| 2604 | do | 12 | 2631 | do | 14 |
| 2605 | do | 11 | 2632 | H I | 44 |
| 2606 | Ta | 388 | 2633 | do | 26 |
| 2607 | do | 395 | 2634 | do | 2 |
| 2608 | do | 390 | 2635 | Ta | 353 |
| 2609 | do | 391 | 2636 | H.I. | 25 |
| 2610 | do | 392 | 2637 | do | 43 |
| 2611 | H I | 8 | 2638 | Man | 7 |
| 2612 | Fat | 14 | 2639 | H I | 3 |
| 2613 | do | 15 | 2640 | Man | 22 |
| 2614 | do | 16 | 2641 | do | 21 |
| 2615 | H.I. | 35 | 2642 | H I | 46 |
| 2616 | do | 36 | 2643 | M & K | 27 |
| 2617 | do | 37 | 2644 | H I | 45/1 |
| 2618 | H I | 38 | 2645 | do | 33 |
| 2619 | Ta | 367 | 2646 | do | 28 |
| 2620 | H I. | 39 | 2647 | H | 9 |
| 2621 | do | 32 | 2648 | A I | 94 |
| 2622 | do | 29 | 2649 | F | 13 |
| 2623 | do | 34 | 2650 | do | 15 |
| 2624 | H I | 31 | 2651 | do | 14 |
| 2625 | do | 7 | 2652 | do | 16 |
| 2626 | do | 5 | 2653 | F | 44 |

| Cat No. | Reg. No. | Cat. No. | Reg. No. |
|---------|----------|----------|-------------|
| 2547 | H 4 | 2548 | M & K |
| 2549 | " | 2550 | " |
| 2551 | " | 2552 | do |
| 2553 | " | 2554 | H. 1 |
| 2555 | " | 2556 | (N No. 119) |
| 2557 | " | 2558 | M & K |
| 2559 | " | 2560 | do |
| 2561 | " | 2562 | do |
| 2563 | " | 2564 | do |
| 2565 | " | 2566 | do |
| 2567 | " | 2568 | do |
| 2569 | " | 2570 | do |
| 2571 | " | 2572 | do |
| 2573 | " | 2574 | do |
| 2575 | " | 2576 | do |
| 2577 | " | 2578 | do |
| 2579 | " | 2580 | do |
| 2581 | " | 2582 | do |
| 2583 | " | 2584 | do |
| 2585 | " | 2586 | do |
| 2587 | " | 2588 | do |
| 2589 | " | 2590 | do |
| 2591 | " | 2592 | do |
| 2593 | " | 2594 | do |
| 2595 | " | 2596 | do |
| 2597 | " | 2598 | do |
| 2599 | " | 2600 | do |
| 2601 | " | 2602 | do |
| 2603 | " | 2604 | do |
| 2605 | " | 2606 | do |
| 2607 | " | 2608 | do |
| 2609 | " | 2610 | do |
| 2611 | " | 2612 | do |
| 2613 | " | 2614 | do |
| 2615 | " | 2616 | do |
| 2617 | " | 2618 | do |
| 2619 | " | 2620 | do |
| 2621 | " | 2622 | do |
| 2623 | " | 2624 | do |
| 2625 | " | 2626 | do |
| 2627 | " | 2628 | do |
| 2629 | " | 2630 | do |
| 2631 | " | 2632 | do |
| 2633 | " | 2634 | do |
| 2635 | " | 2636 | do |
| 2637 | " | 2638 | do |
| 2639 | " | 2640 | do |
| 2641 | " | 2642 | do |
| 2643 | " | 2644 | do |
| 2645 | " | 2646 | do |
| 2647 | " | 2648 | do |
| 2649 | " | 2650 | do |
| 2651 | " | 2652 | do |
| 2653 | " | 2654 | do |
| 2655 | " | 2656 | do |
| 2657 | " | 2658 | do |
| 2659 | " | 2660 | do |
| 2661 | " | 2662 | do |
| 2663 | " | 2664 | do |
| 2665 | " | 2666 | do |
| 2667 | " | 2668 | do |
| 2669 | " | 2670 | do |
| 2671 | " | 2672 | do |
| 2673 | " | 2674 | do |
| 2675 | " | 2676 | do |
| 2677 | " | 2678 | do |
| 2679 | " | 2680 | do |
| 2681 | " | 2682 | do |
| 2683 | " | 2684 | do |
| 2685 | " | 2686 | do |
| 2687 | " | 2688 | do |
| 2689 | " | 2690 | do |
| 2691 | " | 2692 | do |
| 2693 | " | 2694 | do |
| 2695 | " | 2696 | do |
| 2697 | " | 2698 | do |
| 2699 | " | 2700 | do |
| 2701 | " | 2702 | do |
| 2703 | " | 2704 | do |
| 2705 | " | 2706 | do |
| 2707 | " | 2708 | do |
| 2709 | " | 2710 | do |
| 2711 | " | 2712 | do |
| 2713 | " | 2714 | do |
| 2715 | " | 2716 | do |
| 2717 | " | 2718 | do |
| 2719 | " | 2720 | do |
| 2721 | " | 2722 | do |
| 2723 | " | 2724 | do |
| 2725 | " | 2726 | do |
| 2727 | " | 2728 | do |
| 2729 | " | 2730 | do |
| 2731 | " | 2732 | do |
| 2733 | " | 2734 | do |
| 2735 | " | 2736 | do |
| 2737 | " | 2738 | do |
| 2739 | " | 2740 | do |
| 2741 | " | 2742 | do |
| 2743 | " | 2744 | do |
| 2745 | " | 2746 | do |
| 2747 | " | 2748 | do |
| 2749 | " | 2750 | do |
| 2751 | " | 2752 | do |
| 2753 | " | 2754 | do |
| 2755 | " | 2756 | do |
| 2757 | " | 2758 | do |
| 2759 | " | 2760 | do |
| 2761 | " | 2762 | do |
| 2763 | " | 2764 | do |
| 2765 | " | 2766 | do |
| 2767 | " | 2768 | do |
| 2769 | " | 2770 | do |
| 2771 | " | 2772 | do |
| 2773 | " | 2774 | do |
| 2775 | " | 2776 | do |
| 2777 | " | 2778 | do |
| 2779 | " | 2780 | do |
| 2781 | " | 2782 | do |
| 2783 | " | 2784 | do |
| 2785 | " | 2786 | do |
| 2787 | " | 2788 | do |
| 2789 | " | 2790 | do |
| 2791 | " | 2792 | do |
| 2793 | " | 2794 | do |
| 2795 | " | 2796 | do |
| 2797 | " | 2798 | do |
| 2799 | " | 2800 | do |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|----|----------|----------|-----|----------|
| 2323 | l | 11 | 2324 | A | 17 |
| 2324 | d | 12 | | V N | 18 |
| 2325 | o | 2 | 2326 | D | 20 |
| 2327 | do | | 2328 | | 21 |
| 2329 | l | 13 | 2330 | A | 19 |
| 2331 | | | | | |
| 2332 | | | | A | |
| 2333 | | | | | |
| 2334 | d | 1 | | | |
| 2335 | d | 12 | | | |
| 2336 | | | | | |
| 2337 | d | 8 | | N | |
| 2338 | d | 1 | | A | 1 |
| 2339 | | | | | 1 |
| 2340 | | | | | 1 |
| 2341 | | | | | |
| 2342 | | 12 | | | |
| 2343 | | | | | |
| 2344 | | | | | |
| 2345 | | | | | |
| 2346 | | | | | |
| 2347 | | | | | |
| 2348 | | | | | |
| 2349 | | | | | |
| 2350 | do | 10 | | | 1 |
| 2351 | o | 1 | | o | 28 |
| 2352 | o | 12 | | | 24 |
| 2353 | d | 8 | 2354 | o | 21 |

| Cat No | Reg No | Cat No. | Reg. No |
|--------|--------|---------|---------|
| 241 | 1a | 241 | 47 |
| 241 | 1 | 241 | 48 |
| 241 | 1 | 241 | 49 |
| 241 | 1 | 241 | 50 |
| 241 | 1 | 241 | 51 |
| 241 | 1 | 241 | 52 |
| 241 | 1 | 241 | 53 |
| 241 | 1 | 241 | 54 |
| 241 | 1 | 241 | 55 |
| 241 | 1 | 241 | 56 |
| 241 | 1 | 241 | 57 |
| 241 | 1 | 241 | 58 |
| 241 | 1 | 241 | 59 |
| 241 | 1 | 241 | 60 |
| 241 | 1 | 241 | 61 |
| 241 | 1 | 241 | 62 |
| 241 | 1 | 241 | 63 |
| 241 | 1 | 241 | 64 |
| 241 | 1 | 241 | 65 |
| 241 | 1 | 241 | 66 |
| 241 | 1 | 241 | 67 |
| 241 | 1 | 241 | 68 |
| 241 | 1 | 241 | 69 |
| 241 | 1 | 241 | 70 |
| 241 | 1 | 241 | 71 |
| 241 | 1 | 241 | 72 |
| 241 | 1 | 241 | 73 |
| 241 | 1 | 241 | 74 |
| 241 | 1 | 241 | 75 |
| 241 | 1 | 241 | 76 |
| 241 | 1 | 241 | 77 |
| 241 | 1 | 241 | 78 |
| 241 | 1 | 241 | 79 |
| 241 | 1 | 241 | 80 |
| 241 | 1 | 241 | 81 |
| 241 | 1 | 241 | 82 |
| 241 | 1 | 241 | 83 |
| 241 | 1 | 241 | 84 |
| 241 | 1 | 241 | 85 |
| 241 | 1 | 241 | 86 |
| 241 | 1 | 241 | 87 |
| 241 | 1 | 241 | 88 |
| 241 | 1 | 241 | 89 |
| 241 | 1 | 241 | 90 |
| 241 | 1 | 241 | 91 |
| 241 | 1 | 241 | 92 |
| 241 | 1 | 241 | 93 |
| 241 | 1 | 241 | 94 |
| 241 | 1 | 241 | 95 |
| 241 | 1 | 241 | 96 |
| 241 | 1 | 241 | 97 |
| 241 | 1 | 241 | 98 |
| 241 | 1 | 241 | 99 |
| 241 | 1 | 241 | 100 |

INDEX VII

List of Concordance

Volume VII

(Persian Manuscripts)

Concordance of Catalogue Nos. with the
Sectional Register Nos.

| Cat. No | | Reg. No | Cat. No | | Reg. No |
|---------|-------|---------|---------|-------|---------|
| 2401 | Taj | 7 | 2417 | Taj. | 28 5 |
| 2402 | do | 17 | 2418 | do | 17/1 |
| 2403 | do | 10 | 2419 | do | 9 |
| 2404 | do | 11 | 2420 | do | 8 |
| 2405 | do | 15 | 2421 | do | 5 |
| 2406 | M & K | 74/2 | 2422 | F. I. | 10 |
| 2407 | Taj. | 4 | 2423 | do | 60/2 |
| 2408 | do | 18 | 2424 | Aq. | 138 2-7 |
| 2409 | do | 1 | 2425 | Taj | 6 |
| 2410 | do | 3 | 2426 | do | 7 |
| 2411 | do | 17/2 | 2427 | do | 5 |
| 2412 | do | 13 | 2428 | do | 9 |
| 2413 | do | 6 | 2429 | do | 11 |
| 2414 | do | 12 | 2430 | do | 14 |
| 2415 | do | 14 | 2431 | do | 13 |
| 2416 | do | 2 | 2432 | do | 12 |

کاتب شیخ عطاء اللہ - ۱۱۷۱ھ

Shakh 'Aẓmatu'llah (the copyist), 1171-A.H. -2688.

شیخ بہادر

Bahādur 2434

شیخ اسماعیل بن شیخ الیاس

— Isma'īl bin Shakh Iyās, -2683

شیخ محمد علی

— Muhammed 'Alī, -2722/2.

شیخ محمد علی اویس - ۱۰۹۷ھ

— — — — —, Uwins, 1097 A.H. 2505, 2578 and 2540

عبدہ الراحمی سلطان

ʿAbd al-Rahmān b. Muḥammad al-Kāzīm, 2577.

حوض آب مہر کبیرہ - ۱۰۹۷ھ + ۱۱۰۰ھ کتب مرصع جو نقش سمرقند

— Jāh (King of Oudh) -2763/3.

W

۱۱۰۰ھ حدیث - ۱۱۰۰ھ کتب مرصع + ۱۱۰۰ھ کتب مرصع جو نقش سمرقند

Wājid 'Alī Shāh (King of Oudh), -2763/2.

وزیر علی شہ قندای حسین - ۱۲۳۵ھ

Wazir 'Alī, 1235-A.H. -2852/1

وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱ھ

— — Bukhārī, 1221-A.H. -2558/2.

Y

یا صاحب الزمان ادرکی

Yā Ṣaḥību'z-Zamān Adrikī -2707/3.

یریدون... الکامرون

Yurūdun... al-Kāmrūn -2707/1

Z

زین الدین احمد خان بہادر - ۱۲۲۹ھ

Zayn al-Dīn Ahmad Bahādur, 1229-A.H. -2750.

زیدۃ العلماء شیخ الاسلام خان - ۱۱۸۹ھ

Zayn al-Ulāmā Shakh al-Islām Khān, 1189-A.H. -2746/4 and 2743.

سید حسین مرزا خان - ۱۲۲۰ •

Sayyid Husain Mirza Khān, 1220-A.H.

-2725/2.

سید کریم الدین - ۱۲۱۴ •

— Karīmud-Dīn, 1214-A.H.

2805.

سید مقبول حسین

— Maqbūl Husain,

-3000.

سید محمد علی خان

— Muḥammad 'Alī Khān,

-2822/2.

سید محمد علی خان بہادر

— — — — Bahādur,

-2607 and 2951.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱ •

— — — — , 1221-A.H.

2475/2, 2491/2, 37, 2656, 2760 and 2901.

سید ممتاز علی خان - ۱۱۸۶ •

— Muntaz 'Alī Khān, 1186-A.H.

-2907/1.

سید مرتضیٰ خان

— Martadā Khān,

-2870/2

سید مجاہد علی خان بہادر

— Sajjād 'Alī Khān Bahādur,

-2794.

سید وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱ •

— Wazīr 'Alī Bukhārī, 1221-A.H.

-2820/2.

سید وزیر علی بخاری - ۱۲۳۵ •

— — — — , 1235-A.H.

-2820/3.

صراط علی حق تملکہ - ۱۱۸۱ •

See also a noble of 'Ālam al-Dīn's Court () 1121 A.H.

2471/6, and 2, 16.

عبدہ ، شاہ نواز خان

Shāh Nawāz Khān,

-2437/1.

شیخ عبد قادر بن شیخ عبد القادر - ۱۱۶۱ •

Shaykh 'Abdu'l-Qādir, 1161-A.H.

-2412/2.

شیخ عبد القادر بن عبد القادر - ۱۱۶۶ •

— — — — b 'Abdu'l-Qādir 1166-A.H.

-2821.

صدر جهان خادم شریع نبی
- 3045/1.

Şadr-e-Jahan,

صفی قلی
- 2707/4.

Şafi Quli,

صفی قلی زجانب شده غلام شاه صفی
- 2707/5.

Şafi Quli,

سکینه بیگم بنت محمد حمفر
- 2541/2.

Sekina Begum d o Muhammad Ja'far,

سید احمد - 1138 A.H.
- 2811.

Sayyid Ahmad, 1138-A.H.

سید احمد حسینی
- 2514.

Sayyid Ahmad Husaini,

سید عالم علی
- 2637/(11).

— 'Ālam 'Alī,

سید عالم علی خان چادر - 1224 A.H.
- 2741.

— — — Khān Bahādur, 1224-A.H.

عبدہ ۱ سید علی الحسینی
- 2897.

— 'Alī a'l-Husaini,

سید انجروی خان - 1157 A.H.
- 2755.

— Anjwī Khān, 1157

سید انجروی خان
- 2836.

— — —

سید اطهر علی خان - 1200 A.H.
- 2933.

— Aṭhar 'Alī Khān, 1200 A.H.

سید اطهر علی خان - 1201 A.H.
- 2816.

— — — — , 1201-A.H.

سید حسین علی بخاری - 1200 A.H.
- 2558 I and 2820 I.

— Husain 'Alī Bakhārī, 1200-A.H.

مستقیم الدوله - ۱۲۴۶ھ

Mustaqîmu'd-Daulah, 1246-A.H.

-2540/1, 2622/2 and 2804/3.

مؤمن الدوله

M'utamanu'd-Daulah,

-2516 2.

مؤمن الدوله درگاه قل خان - ۱۱۷۲ھ

Mu'tamanu'd Daulah Dargah Qal Khan, 1172 A.H.

2873.

N

نجم الدوله ۴ ، حیدر ، خان بہادر ، شرح حکمت - ۱۱۷۱ھ

Najma'd-Daulah, Haidar Yâr-nâh Bihadar Sher Jang, 1171 A.H. 2873

Q

قابل خان خانہ زاد عالمگیر بادشاہ

Qābil-khan

2884 1

قاصی محمد قیام الدین - ۱۱۶۱ھ

Qāṣi Muḥammad Qiyāmu'd-Dīn, 1161 A.H.

-2880

قادر محمد خان

Qādir Jang Bahadur

-2777/1.

قادر الدوله - ۱۲۷۴ھ

Qādir-u'd Daulah, 1274-A.H.

-2837 2.

R

راضی خان - ۱۱۴۰ھ

Rāṣi Khān, 1140-A.H.

-2427.

رفیع الدوله - ۱۱۱۴ھ

Raṣī'u'd-Daulah, 1114-A.H.

-2688 2.

رحمت اللہ

Rahmatu'llah

-2884 2

روح الامین بن محمد امین رضوی

Ruh'u'l-Amin - Muhammad Amin Razi.

-2520.11.

رفیع الدوله

Raṣī'u'd-Daulah,

-2606/1.

محرم حنك ١٢٤٩ هـ
-2933.

Mahtaram Jung, 1249-A H

محرم خان
2883 1.

Khân

محرم خان - ١١٤٩ هـ
-2724 1.

khân, 1149-A.H

محرم الدولة - ١٢٥٧ هـ
-2507/2 and 2628/3.

-u'd Dau dh, 1257 A.H

معين الملك
-2883, 3.

M'uînu'l-Mulk

معين الملك ١٢٠٥ هـ
-2724/2.

, 1205-A H

مير الملك
-2915.

Muniru'l-Mulk

مير الملك ١٢٠٦ هـ

— — , 1206 A H

-2433 2, 2508, 2519, 2524, 2506, 2571/2,
2507, 2677, 2782, 2804, 2813, 2804, 2805,
2877, 2884/1, 2913, 2917, 2949, 2909,
2980 and 3025/2.

عدم تبديل مهر مرشد قلی خان سه
2750 1.

Murshid Qull Khân, Julûs 10,

مشر الممالك
2420.

Mushiru'l Mamâlik

مراد شريف ١١٧١ هـ
-2751.

Murâd Shatî, 1171 A H

مستقيم حنك ١٢٠٨ هـ
-2590-2

Mustaqim Jung 1208 A H

مستقيم الدولة ١٢٠٩ هـ
2591/3

Mustaqim-u'l-Danah 1209-A H

یا محمد میر

— Mir

-2707/1.

محمد مرک الحسینی

— Mirak a'l-Husami

2, 176, 1.

محمد قادری ندوی محمد شاہ بادشاہ غازی

— Qādrī

-2504 1.

دست جهان مرا کہ در رنگش شدہ + از حکم و شرف جہاں آفرین شدہ

— Qaṭṭ Shāh, (The Golconda King)

-2, 64/2

مہر سہاں ر حق گشتہ میسر مرا + نقش نگین دست حیدر صدر مرا

— Qaṭṭ Shāh, (The Golconda King)

2504 3

محمد رضا

— Riḍa

-2973.

ابو حسن امری الی افہ محمد صالح الحسینی

— Ṣāliḥ

-2473/3.

محمد شاہ

Shāh

2437/2-

محمد شکور

— Shukūr

-2405/3.

محمد تقی خاں

— Taqī khān

-2402 (11).

شفاعت ز محمد چو دارد امید

— Umid

-2683/2.

محمد ظہور احمدی

— Zubūr Ahmadi

-2405, 1

محترم جنگ

Muhtaram Jung

-2570/1.

محمد علی شیخ اویس ۱۰۶۷ هـ

Muhammad 'Alli Shaikh Awwas, 1067-A.H

-2471/2.

محمد عسکری حاکم راد محمد معظم بهادر شاه

— 'Askarī

-2478 to 2482/3.

محمد باقر - ۱۲۰۵ هـ

— Bāqir 1205 A.H

2810/1 and 2810/2.

محمد باقر ابن شیخ محمد علی - ۱۰۶۹ هـ

— Bāqir b. Shaikh Muhammad 'Alli, 1069 A.H. 2442/1 and 2442/2.

محمد باقر بن شیخ محمد علی

— — — — —

-2722/3.

الامام احمدی قاضی حامد

— Fāqir b. a'sh-Shaikh Hāmid

-2414/3.

محمد و حسن

— Fawwād

-2405/2.

محمد عیاض خان بهادر - ۱۱۴۹ هـ

— 'Uyāṣ Khān Bahādur, 1149-A.H

-2414/1.

احقر اعیاد محمد هادی بن محمد حفر

— Hādī b. Muhammad Ja'far

-2898.

محمد حیدر

— Haidar.

-2402/2.

محمد حسین مرید عالمگیر بهادشاه - ۱۰۹۹ هـ

— Husain 1099-A.H

-2721

محمد حفر

— Ja'far

2593

محمد کمال الدرحات

— Kamāl

2600/2.

محمد مهدی - ۱۲۵۷ هـ

— Mahdī, 1257-A.H

2945.

مرزا اصغر علی بیگ ۱۲۹۰ هـ

Mirza Asghar 'Ali Baig, 1290 A.H

-2947.

مرزا عصمت الله - ۱۲۳۷ هـ

'Isma'ullah, 1237 A.H

-2961.

مرزا محمد حسن علی خان - ۱۲۰۳ هـ

— Muhammad Husain Ali Khan 1203, A.H

-2608/1.

محمد محمد ۹ - ۹۳۷ هـ

Muhammad (), 937-A.H

-2819.

محمد عبد القادر مدوی آصف جاہ

— 'Abdu'l-Qādir

-2952.

محمد حسن الله - ۱۱۸۰ هـ

— Ahsanu'llah, 1180-A.H

-2602/2.

محمد اکمل - ۱۱۱۱ هـ

Akmal, 1111-A.H

-2920.

العبد المذنب محمد علی

— 'A

-4744.

رب یحیی محمد و علی

—

-4741/2.

محمد علی - ۱۲۳۱ هـ

— — , 1234-A.H

-2590/4.

بود حاشین محمد علی - ۱۲۳۷ هـ

— 1237-A.H.

-2777.

بود حاشین محمد علی

— —

-2860, 1.

زبد محمد علی اکبر است - ۱۰۹۷ هـ

— — Akbar, 1097-A.H

-2579.

محمد علی خان بہادر - ۱۲۱۹ هـ

— — Khan Bahādur, 1219-A.H

-2755/1.

M

- یا محمود
Maḥmūd -2434/1.
- المجد الله - ۱۱۶۹ هـ
Majdullah, 1169-A.H. -2478 to 2528/1
- العبد الراضی ملک محمد - ۱۱۶۸ هـ
Mark Muḥammad, 1168-A.H. 2542/3
- میر عباس علی خان بہادر - ۱۲۲۱ هـ
Mīr 'Abbās 'Alī Khān Bahādur, 1221 A.H. 2528/1.
- میر ابو الفضل
— Abu'l-Faḍal -2592/1.
- میر احمد علی - ۱۲۲۷ هـ
— Ahmad 'Alī, 1227-A.H. 2430.
- میر حسن علی - ۱۲۵۳ هـ
Hasan 'Alī, 1253-A.H. -2741.
- میر ابراہیم علی خان - ۱۲۲۰ هـ
— Ibrāhīm 'Alī Khān, 1220-A.H. -2725/1.
- میر محمد حسین شستری
— Muḥammad Husayn Shustarī -2503.
- میر سلطان حسین ہدوی احمد شاہ بادشاہ - ۱۱۶۶ هـ
— Sulṭān Husayn 1164-A.H. -2433/2.
- میر سلطان حسین ہدوی محمد شاہ بادشاہ - ۱۱۶۲ هـ
— — — 1164-A.H. -2534.
- میر یادگار علی
— Yādāgar 'Alī -2941, 2942 and 2943.
- میر یادگار علی - ۱۲۲۱ هـ
— — — 1221-A.H. -2580.
- میر یوسف علی خان - ۱۲۱۲ هـ
— Yusuf 'Alī Khān 1212-A.H. -2590/1.

اداره معارف و اوقاف و مدارس

Idāra-e-M'aurif wa Auqāf-e-I'ārīs

-2542/4.

احمد در ابدواہ ، مشیر الملک فرزند محمد شریف بی در ، سیف حاکم

I'tiḥāru'd-Daulah, Mashirujj Mu k sio Muhammad Sharif Khān

Bahādur, Saif Jung

-246/1.

از دل و جان بندہ آل علی عیسی خاں

'Isā Khān

-2842/2.

اعتصام الملک

I'tiḥāmu'l-Mulk

-2570/3.

اعتصام الملک - ۱۲۴۵ھ

— — 1245-A.H

-2628/2.

اعتصام الملک بندہ آصف جاہ - ۱۲۴۵ھ

— — 1245-A.H

-2872/1.

اعتصام الملک - ۱۲۴۵ھ

— — 1274-A.H

-2628/4, 2781 and 2782.

العد انسانی عزت طلب خان اراحدی

'Izzat Talab Khān

-2803/1.

ج

یا امام جعفر صادق ادرکنی

J'atār

-286/7.

جانشین خان بن دستم علی خان - ۱۱۷۴ھ

Jansipār Khān, 1174. A.H.

K

کفی بالله ولیا و کفی بالله نصیرا

Kaṭabillāhī Wahyann wa Kaṭā Bilāhī Naṣirā

-2750/1.

محمد چوں ابار غلام محمد است

Ghulām Muhammad

علام امام المہدی ۱۲۴۶ھ

Ghulām Muhammad Mahdī, 1226-A.H

27/6/5.

نصر من افق و فتح قریب من علام مہرام ۱۶۱ھ

Ghulām Qanbar, 1161-A.H

-2720.

II

حیدر یار خان

Haider Yār Khān

-24/2/3, 2504/2, 2505/2, 2508/1, 2570, 2581,
2597, 2638/ii, 2640/2 (a), 2840/2 (b)
2863/2, 2863/3, 2879-2890, 2989.

یا حیدر کرار ادر کنی - حیدر یار خان (

Haider Yār Khān.

24/4/1, 2505/3, 2506/1, 2612/2.

حیدر یار خان بہادر

Haider Yār Khān Bahādur

260-2.

بر فوق حسن تاج

Hasan

-2474.

حسن علی - ۱۲۰۰ھ

Hasan 'Alī, 1200-A.H

-2522/1.

حسن رضا - ۱۳۰۹ھ

Hasan Ridā, 1309-A.H.

-2847.

حسن رضا - ۱۴۰۹ھ انجیع الملک

Hasan Ridā, 1409-A.H. (Ashjū' al-Mulk

2766.

I

افو من امری الی افق النبی عبدہ ابراہیم

Ibrāhīm

-2475/1.

شہی کہ افق، لیکن ساخت مہر آل مہم + بود سپہ کرم قطب شہ ابراہیم

Ibrāhīm Qutb Shāh (King of Golconda)

-2504/1.

ماقر علی خان. ۱۲۲۰ھ
-2893.

Bâqir 'Alî Khân, 1220-A.H.

D

دانی ضامن ضامن - ۱۲۳۶ھ
-2750/4.

Dâmin, 1226 A.H.

درگاہ قلی
2971/1.

Dargâh Qulî,

صیہ اندرہ ، مطهر انک ، کلمہ علی حق پور ، دواغدر حکمت

Diyyân'd-Daulah, Muḥammadu'l-Mulk, Kāṣim 'Alî Khân Bazzā'ir.

Dhulfiqâr Jung
2780/1.

F

فصل علی خان
-2934.

Faḍal 'Alî Khân,

ار لطف حق چوں شد بفخر الدین مصیب
مرید خاص سلطان حیاں اور ننگے زیب
-2513.

Fakhr'u'd-Dîn

فتح الله بیگ
-2923.

Fathu'llah Baig

G

غالب الدولہ
-2752.

Ghâlibu'd-Daulah

غرمین فتح و دل من طمع
2989

Ghamîlu'n-Dîn

علام احمد خان - ۱۱۵۲ھ
2902/1.

Ghulâm Ahmâd Khân, 1152-A.H.

علام ضامن - ۱۲۶۳ھ
2750/2.

Ghulam Dâmin, 1263-A.H.

کرد نعلین علی موسیٰ رضا ۱۱۹۸
-2027.

'Alī Mūsā Ruzā, 1198

یا امام علی نقی
-2707/2.

— Naql,

علی یاور خان - ۱۱۷۰
-2750.

— Yāwar Khan, 1170 A.H.

لا اله الا الله. لك الحق ليس لله قس - ۱۱۱۸
-2842/1.

Allah Qul, 1118 A.H.

ناسخ بر مہر شد جوشد مسترین بر کتاب

خاتم امجد علی شاہ زمان عالی جناب ۱۲۶۲
-2763.

Amjad 'Alī Shāh King of Oudh, 1262

ارشاد خان خانہ زاد عالمگیر بادشاہ

Arshad Khan

اسد اللہ الغائب

Asad 'Allāh al-Gā'ib,

عاشق علی مشقی

'Āshiq 'Alī Mushqī (The Author's seal No. 1501/1502) -3006.

العطامن الله تعالى

'Atā

اولیا نواب - ۱۱۵۲
-2762/1.

Auliā Nawāb, 1152-A.H.

B

بہرہ مند خان مدوی مجد شاہ بادشاہ غازی
-2638/1.

Bahrahmand Khān

بندہ علی رضوی - ۱۳۱۹
-2082.

Bandha 'Alī Ruzwī, 1319 A.H.

(b) Seals

- عباس علی خان بہادر
 'Abbās 'Alī Khān Bahādur -2890/2 and 2091/3.
- عباس ابن علی
 — Ibn 'Alī -2899/1 and 2091/2.
- مہالک رام عمل حق عبد الرحیم
 'Abdu'r-Rahīm -2433/1.
- عبدہ عبد الرحیم
 — — (Probably copyist's seal). 2433, 1.
- عبد الرحیم بن محمد بیرم - ۱۹۱
 — b. Muhammad Birmān, 991 A.H. (Khān-e-Quānān's seal) -2807.
- ابو طالب خان بہادر ۱۱۹۹
 Abū Talib Khān Bahādur, 1199 -2976/2.
- ابو البقا ارجم الدین محمود - ۱۱۳۴
 Abū'l-Baqā Arhamī'l-Dīn-Mahmūdī, 1134 A.H. -2011/2 and 2058/2.
- ابو الفتح اکرم الدین محمد
 — Fath Akramu'l-Dīn Muḥammad, 1181.
- ابو الفتح محمد اکرم الدین - ۳۹
 — — Muḥammad Akramu'd-Dīn, 39 -2536/1.
- ابو المسکرم عفا عنہ - ۱۲۹۱
 — Makrīm, 1291-A.H. -2560.
- عالم علی
 'Ālam 'Alī, 2571.
- علی ابن الحسین - ۱۲۲۰
 'Alī Ibnī'l-Ḥusain, 1220 -2660.

J

مدكه ميموك ابيت الموى جعفر بن حلال السهى الرصوى

J'afar-a'r-Ridwi.

-658.

M

محمد ٩ فر - ١٢٠٥

Muhammad Bâqir 1205.

-2866/1. and 2867/2.

المهم اجملنى فاضل حامد

— Fâdil b. a'sh-Shaikh Hâmid.

-2434/3.

محمد حسين مراد عالمكير بادشاه - ١٠٩٩

— Husain, 1099-A.H

-2721.

محمد جعفر بن مرزا محمد طاهر خان

— J'afar b. Mirza Mutamir Tahir Khan.

-2722.

محترم خان - ١١٤٩

Mehtatam Khân, 1149-A.H

-2723.

معين الملك - ١٢٠٥

Mu'inu'l-Mulk, 1205.

-2724/2.

مؤمن ادواه درگاه قلى حن ١٤ صفر ١٧٢ هجرى

M'intamana'd Daulah Dargah Gulistan, 17th October 1758

-2873.

S

عبدالراحم سليمان

Sulaimân b. Muhammad Kazim.

-2874.

وللى الاعلى

Sultân Muhammad Qutb Shâh, (Qutb Shâh King of Golconda)

-2875.

Z

ظفر على بيگ

Zafar 'Ali Baig.

-2663.

INDEX VI

(Autographs and Seals with Names
and Dates found with them)

Islamic Theology

Volume VII

(Persian MSS)

(a) *Autographs*

B

Bahā'u'd-Dīn 'Āqā, 25th Shawwāl, 1027 = 12 September, 1918 -2592/1.

هره مند خان

Bahrahmand Khān, -2638

بنده علی رضوی - ۱۳۱۹

Banda 'Alī Ridwī, 1319. -2988.

D

درگاه قلی - ۱۱۷۲ھ

Dargah Qulī, 1172 A.H. 2516

ایم نظامت محبتہ بنیاد ... درگاہ قلی - ۱۱۷۳ھ

— — 1173-A.H. (When he was Governor of Astarabad) -2977

H

حیدر یار خان - ۱۰۸۳ھ

Hudar Yār Khān, 1083 A.H. -2557

I

Ibn Khātūn, (Signature on 353. f.) -2593/2.

Shirāz, Irān

[Cop., 1070/1660]-2570.

Siyālikot, Pakistān

[Cop., 1105/1664]-2611

Sûrat, Guparat

[Cop., 1172/1759]-2612.

[Cop., 1124/1712]-2679.

[Cop., 1203/1788]-2772.

Zafarâbād

[Cop., 1215/1846]-2812.



Muhammadnūr Fort

[Cop., 1068/1088]-2722'2.

Mutân Pākistān

[Cop., 1002/1052]-2904

[Cop., 1147/1154]-2911

Mun, Patan

[Cop., 1108/1607]-2885.

Murshidabad, Uttar Pradesh

[Cop., 1007/1852]-2601

[Cop., 1227/1851]-2777.

[Cop., 1327/1852]-2915

Mysāpur

[Cop., 1185/1771]-2574.

N

Natore

[Cop., 1167/1754]-2808.

P

Pangal, Mahabūbnagar District -Andhrā Pradesh

(Āshif Jāh II's camp for 2nd Mysore war).

[Cop., 1206/1792]-2414 and 2421.

Port of Patan -Serampatan, Karnataka State

[Cop., 1200/1794]-2935.

R

Rauḍa Kuldābād, Mahārāshtra

[Cop., 1103/1770]-2819.

J. P. S. 1911

[Cop., 1011/1012]-2474

J

J. P. S. 1911

[Cop., 1011/1012]-2407

[Cop., 1011/1012]-2423

J. P. S. 1911

[Cop., 1011/1012]-2412.

K

K. P. S. 1911

[Cop., 1011/1012]-2725

K. P. S. 1911

[Cop., 1011/1012]-2401

Karbalā, Irāq

[Cop., 1011/1012]-2891

Kirmān, Irān

[Cop., 1011/1012]-2579.

L

Lukhnow, Uttar Pradesh

[Cop., 1225/1810]-2634.

[Cop., 1241/1711]-240.

M

Madina Sa'ūthi 'Arabīya

[Cop., 1123/1711]-2413.

Madras, Tāmīl Nādū

[Cop., 1242/1827]-2600.

Māhūr, Berār, Madhya Pradesh

[Cop., 1125/1711]-2411.

Mecca Sa'ūthi 'Arabīya

[Cop., 1001/1503]-2711.

Copy, 10-8-17 11-2502.

(10) 1572-1573

Copy 120 1845] 2 1.

[illegible]

[Cover, 1847-1848] 2576.

1003, 1127, 1413, 2422,

[illegible]

(6) $\{a, b, c, d\} \sim \{a, b, c, d\}$

(1) 1 1 1 1 1

$$\{0, 1, \dots, 2^k - 1\} \rightarrow \{0, 1, \dots, 2^k - 1\}$$

[C] 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

$$[C_0, C_1, C_2, \dots, C_{n-1}, C_n] \quad (2.1)$$

[Copy, 15424, 15425, 15426]

[Cop. 1253/1837]-2700

[Cop., 1280/1861]-2825

[Cap. 1.8.1.8] 250

(1) 1908 年 1 月 27 日

[Cop., 1034 1625]-2855

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

1. The first is the fact that the

[Cop. 1238/1523]-2882

[Lop, 1084, 1074] 2853

1913 1914 1915 1916

[Cop. 105K/174K]-2968.

$$[(t, x) \rightarrow 1 - \frac{1}{2} \frac{t^2}{x^2} - \frac{1}{2} \frac{x^2}{t^2}] \quad (10)$$

Copy, 1245/1826, 021

1

Index

[Cop., 11th, 1700.] 25th2.

F

[Cop., 1207-1212]-2575

[Cop., 1054/1072]-2573

Bijāpūr, Mahārāshtra

[Cop., 1131/1719]-2467.

[Cop., 1055-1072]-2572.

[Cop., 950/1521]-2510

Burhānpūr

[Cop., 1007/1680]-2407.

[Cop., 1050-1041]-2513

[Cop., 1030/1027]-2522.

[Cop., late xii/xviii]-2655.

[Cop., 1033-1024]-2686.

G

Chinnāpatan, Madras, Tāmil Nādū

[Cop., 1103/1779]-2559.

J

Daryāpūr

[Cop., 1263-1284]-2715

[Cop., 1267/1851]-2793.

Daulatabad Fort, Mahārāshtra

[Cop., 1001/1610]-2458

G

Gulberg, Karnatak, late

[Cop., 1050/1079]-2573.

H

Hyderābād - Deccan, Andhrā Pradesh

[Cop., 1221/1903]-2417, 2469 and 2472.

INDEX V

Places of Transcription

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

A

Ahmadnagar, Mahārāshtra

[Cop., 1259/1843]-2692

Ajmer, Rajasthan

[Cop., 1111/1697]-2693

Akbarābād

[Cop., 1235/1820]-2648.

Amargabād, Mahārāshtra

[Cop., 1111/1697]-2605

[Cop., End of x./xvii]-2694

[Cop., 1122/1707]-2634

[Cop., 1107/1694]-2649

Azīmābād, Punjab

[Cop., 1122/1707]-2693.

B

Belasore Fort, Orissa

[Cop., 1153/1740]-2693.

Bhopāl, Madhya Pradesh

[Cop., late xiii-xix century]-2432.

| | |
|---------------------------------|----------------------------------|
| 1202/1875 | — 2031. |
| 22 Jumâda I. 1292/20 June, 1875 | — 2651. |
| 29 Dhîḥajja, 1293/15 Jan., 1877 | — 3007. |
| 25 Muḥarram, 1298/28 Dec., 1880 | — 2861. |
| 20 Rajab, 1298 27 June 1881 | — 2999. |
| 8 Ramaḍân, 1302/27 June, 1881 | — 3014. |
| 10 Ramaḍân, 1302/23 June, 1885 | — 3013. |
| 17 Dhîq'ada, 1306/15 July, 1889 | — 3012. |
| 1321/1903 | — 2417, 2469/1, 2469/2 and 2472. |
| 1 Jumâda I, 1324 23 June, 1906 | — 2518. |
| 1335/1917 | — 2520. |

(b) *Undated Manuscripts*

VIII/XIV

Late :- — 2425.

IN/V

Late:- — 2426, 2428 and 2433.

λ, XVI

Early:— 2442, 2526 and 2676.

Late :- — 2429, 2436, 2441, 2591 and 2671.

XI, XVII

Bar.v + 24,, 2437, 2411, 241,, 2432 2511, 2521, 252,, 2567,
2578, 2647, 2692, 2846 and 2849

Mid. — 2442, 2500, 2554, 2555, 2593, 2602 and 2614.

Lite - 2460, 2470, 2484, 2493, 2495, 2503, 2530, 2537, 2560,
 2655, 2658, 2659, 2657, 2741, 2742, 2734, 2744, 2745,
 2750, 2753, 2809, 2828, 2856, 2860, 2862, 2868, 2869,
 2871, 2876, 2880, 2881, 2939, 2942, 2945, 2950, 2954,
 2969, 2970, 2971, 2976, 2983, 3010 and 3029.

VII VIII

Ear v -

— 2400, 2413, 2408, 2417, 2425, 2429, 2437, 2458, 2459,
2490, 2500, 2514, 2525, 2544, 2545, 2549, 2547, 2551,
2557, 2568, 2574, 2581, 2597, 2615, 2620, 2632, 2637,
2638, 2656, 2664, 2666, 2724, 2742, 2743, 2753, 2813.

| | |
|-----------------------------------|---------|
| 21 Shawwâl, 1265, 9 Sept., 1849 | — 2698, |
| 1266/1850 | 3013, |
| 26 Rabî' II, 1266/11 March, 1850 | — 2807, |
| 11 Jumâda II, 1266/24 April, 1850 | — 294 |
| 24 Rabî' I 1267, 27 Jan., 1851 | 2, 13 |
| 11 Şafar, 1267/16 Dec., 1850 | — 292 |
| 1268/1852 | — 2945 |
| 2 Jumâda I, 1270/31 Jan., 1854 | — 2803, |
| 25 Jumâda I, 1271/15 March, 1855 | — 2800, |
| 2 Sh'abân, 1271 20 April, 1855 | — 2, 8 |
| Rabî' II, 1272/Dec., 1855 | — 2512, |
| 1272/1856 | — 2711 |
| 3 Dhîḥajja, 1272/5 Aug., 1856 | 2505, |
| 27 Sh'bân, 1273 22 April, 1857 | — 2795 |
| 1277/1860 | — 2, 11 |
| Rabî' II, 1278/Oct., 1861 | 2632 |
| 10 Rajab, 1280/21 Dec., 1863 | — 282 |
| 10 Shawwâl, 1280 25 March, 1864 | — 2825, |
| Rabî' I, 1281/Aug., 1864 | 2611, |
| 6 Muḥarram, 1282/June' 1865 | 2, 1 |
| 1284, 1867 | — 2413 |
| 26 Rabî' II, 1284 25 Aug., 1867 | 2712, |
| Jumâda I, 1285/Aug., 1868 | — 2825 |
| 13 Rajab, 1287 9 Oct., 1870 | 2425 |
| Muḥarram, 1290/March, 1873 | — 2652, |
| Farv Şafar 1291 April, 1873 | 2562, |
| 6 Şafar, 1291/25 March, 1874 | — 2642, |
| 27 Dhîq'ada, 1291/ 5 Jan., 1875 | 264, |

| | |
|-----------------------------------|---------|
| 12 Rabi' II, 1242/13 Nov., 1826 | — 2760. |
| 10 Rajab, 1242/7 Dec., 1827 | 2636. |
| 7 Rabi' I, 1242/9 Oct., 1826 | — 2416. |
| 1 Sh'abân, 1242/28 Feb., 1826 | — 2609. |
| 14 Shawwâl, 1242/24 May, 1827 | — 2738. |
| 27 Shawwâl 1242/24 May, 1827 | — 2798. |
| 30 Rajab, 1244/5 Feb., 1829 | — 2635. |
| 8 Şafar, 1245/9 Aug., 1829 | — 3020. |
| 5 Rabi' I, 1245/4 Sept., 1829 | — 2921. |
| 1245/1830 | — 2781. |
| 1 Shawwâl, 1246/15 March, 1831 | — 2770. |
| 22 Muḥarram, 1247, 1st Jun., 1831 | — 2697. |
| 5 Rabi' II, 1248, 1 Sept., 1832 | — 2714. |
| 8 Dhîq adah, 1247/19 March, 1834 | — 2636. |
| Rabi' II, 1249/Aug., 1833 | — 3002. |
| 1251/1835 | — 2922. |
| 6 Jumâda II, 1252/ 19 Aug., 1836 | — 2746. |
| 12 Şafar, 1253/18 May, 1837 | — 2712. |
| 12 Rajab, 1253 12 Oct., 1837 | 2740. |
| Sh'abân, 1254/Nov., 1838 | — 2910. |
| 1 Rabi' II, 1254/24 June, 1838 | — 2648. |
| End of Rabi' II, 1257/June, 1841 | — 2945. |
| 11 Ramaḍân 1258/9 Oct., 1842 | — 2610. |
| 21 Şafar, 1259/23 March, 1843 | — 2693. |
| 8 Ramaḍân, 1261/10 Sept., 1845 | — 2517. |
| 1262/1846 | — 2549. |
| 12 Rabi' I, 1263/28 Feb., 1847 | — 2715. |
| 1264 1848 | — 2925. |

| | | |
|----|---|---------|
| 13 | Rajab, 1207/24 Feb., 1793 | — 2865. |
| 25 | Rabi' II, 1208/30 Nov., 1793 | — 2898. |
| | 1208/1794 | — 3018. |
| 11 | Ahmadī, 1223 (an-nuḥ-ḥi Muhammad, Ippū's Innovation) i.e. 11 Muharram, 1209/8 Aug., 1794 | — 2838. |
| 7 | Šafar, 1210/23 Aug., 1795 | — 2862. |
| 14 | Šafar, 1210/30 Aug., 1795 | — 2872. |
| 14 | Rabi' I, 1213/20 Aug., 1798 | — 2878. |
| | 1214/1799 | — 2845. |
| 6 | Muharram 1214 10 June 1799 | — 2917. |
| | 1218/1803 | — 2817. |
| 1 | Rabi' II, 1218/21 July, 1803 | — 2822. |
| 22 | Rabi' II, 1225/27 May, 1810 | — 2831. |
| 26 | Ramaḍān' 1225 24 Oct., 1810 | — 2833. |
| 15 | Ramaḍān, 1227, 22 Sept., 1812 | — 2877. |
| 1 | Muharram, 1229 24 Dec. 1812 | — 2880. |
| 6 | Jumāda II, 1229 26 May, 1814 | — 2884. |
| | 1230 1815 | — 2888. |
| 6 | Rajab, 1231/2 June, 1816 | — 2891. |
| 6 | Šah'abīn, 1231 8 July, 1816 | — 2892. |
| | 1232/1817 | — 2897. |
| | 1233/1818 | — 2882. |
| 12 | Šah'abīn II, 1234 10 Aug., 1818 | — 2890. |
| 16 | Šah'abīn, 1235/24 Sept., 1820 | — 2898. |
| 24 | Šah'abīn, 1235/2 Aug., 1821 | — 2882. |
| 2 | Šah'abīn, 1240/21 Jan., 1824 | — 2895. |
| | 1240/1825 | — 2415. |
| 10 | Šah'abīn, 1240/26 July, 1825 | — 3003. |
| 19 | Jumāda I, 1241/30 Dec., 1825 | — 2892. |

| | |
|---|---------|
| 11 Rajab, 1181/6 Dec., 1767 | — 2120. |
| Jumada II, 1182/6 Oct., 1768 | 2600. |
| 17 Rabī' I, 1183/22 July, 1769 | — 2582. |
| 2 Jumāda II, 1185/12 Sept. 1771 | — 2574. |
| 2 Sh'abān, 1186/28 Sept., 1775 | — 2583. |
| 18 Dhīḥajja 1190/28 Jan., 1777 | — 2627. |
| 18 Rajab, 1192/12 Aug. 1778 | 2596. |
| 1193/1779 | — 2584. |
| 22 Muḥarram 1193/9 Feb., 1779 | — 2677. |
| 12 Jumāda I, 1194/28 May, 1779 | — 2618. |
| 16 Jumāda I, 1193/1 June, 1779 | — 2819. |
| 9 Dhīḥajja, 1193/18 Dec., 1779 | — 2550. |
| 23 Šafar, 1194/29 Feb., 1780 | — 2751. |
| 25 Rabī' I, 1194/31 March, 1780 | — 2984. |
| 1 Jumāda I, 1195/25 May, 1781 | — 2858. |
| 15 Shawwāl (25th keḥrā year) = 1175/11 Oct., 1781 | 2556. |
| 3 Rabī' I, 1196/16 Feb., 1782 | — 2995. |
| 14 Shawwāl, 1196/22 Sept., 1782 | — 2552. |
| 11 Dhīḥajja, 1196/18 Oct. 1782 | — 2614. |
| 12 Dhīq'ada, 1197/9 Oct., 1783 | — 2736. |
| 25 Rabī' I, 1203/24 Dec., 1788 | — 2772. |
| 1203/1789 | — 2589. |
| 11 Šafar, 1205/20 Oct., 1790 | — 2733. |
| 9 Rajab, 1205/14 March, 1791 | — 2619. |
| 1205/1791 | — 2943. |
| 20 Jumāda II, 1206/14 Feb., 1792 | — 2891. |
| 2 Rajab, 1206/14 Feb., 1792 | — 2421. |
| 11 Rajab, 1206/5 March, 1792 | — 2414. |

| | |
|---|-------------------------------|
| 4 Rabi' I, (3 Jafar Muhammad Shāh) = 1134/12 Dec., 1721 | — 2683. |
| 1135/1723 | — 269. |
| 19 Rabi' I, 1137/15 Nov., 1724 | — 2629. |
| 4 Shawwāl, 1140/3 May, 1728 | 265. |
| 4 Dhīq'ada, 1140/2 June, 1728 | — 2666. |
| 3 Rabi' II, 1141/26 Oct., 1728 | — 2668. |
| 9 Ramaḍān, 1144/24 Feb., 1732 | — 267. |
| 1147/1734 | — 2691. |
| 27 Dhīḥajja, 1148/27 April, 1736 | — 2723. |
| 19 Muḥarram, 1151/28 April 1738 | — 2837. |
| End of Rabi' II 1151/ Beg. of Aug., 1738 | 2762. |
| 20 Rabi' I, 1152/16 June, 1739 | — 2817. |
| 1153/1740 | — 2903. |
| 13 Rabi' I, 1155/7 M. y. 1742 | — 2665. |
| 28 Jumāda II, 1157, 28 July, 1744 | 245. |
| 23 Ramaḍān, 1158/8 Oct., 1745 | — 2404. |
| 27 Ṣafar (27 Muhammad al-Madani) = 1160/30 Jan., 1747 | 248. |
| 21 Dhīq'ada, 1165/19 Sept., 1752 | — 2694. |
| 27 Sh'abān, 1167/19 June, 1754 | — 2808. |
| 1170/1757 | — 2575. |
| 13 Ramaḍān, 1171/21 May, 1758 | — 2688. |
| 7 Rabi' II, 1172/8 Dec., 1758 | — 2633. |
| 1172/1759 | — 2853/6) (Margins) and 2703. |
| 21 Jumāda II, 1172/19 Feb., 1759 | — 2663. |
| 25 Muḥarram, 1174/6 Sept., 1760 | — 2766. |
| Rajab, 1176/Jan., 1763 | — 2558. |
| 15 Sh'abān, 1178/7 Feb., 1765 | — 2670. |
| 30 Rabi' II, 1180/5 Oct., 1766 | — 2912. |
| 15 Jumāda II, 1180/18 Nov., 1766 | — 2854. |

| | |
|---|---------|
| Jumáda II, 1104/Feb., 1693 | — 2612. |
| Rajab, 1104/March, 1693 | — 2763. |
| 15 Šafar, 1104/16 Oct., 1692 | 2575 |
| 26 Jumáda I, 1105/13 Jan., 1694 | — 2611. |
| 9 Šafar, 1106/19 Sept., 1694 | — 2556. |
| 17 Dhíḥajjāb, 1108/27 June, 1697 | — 2685. |
| 41 Jaūs ('Ālamgiri) = 1109/1698 | — 2501. |
| 21 Jumáda II (42 Jaūs ('Ālamgiri) = 1110/15 Dec., 1698 | 2676 |
| 43 ('Ālamgiri) = 1111/1699 | — 2754. |
| 22 Mubarram 1114 ~ June, 1702 | 2441. |
| End of Šafar 1114 ~ 15 July 1702 | — 2595. |
| 29 Mubarram 1115/14 May 1703 | 2811. |
| 1116/1704 | — 2404. |
| Mubarram 1118 Apr. 1706 | — 2742. |
| 29 Jumáda I, (2 Jaūs, probably of Šah 'Ālam, Bahādur Shāh I = 1119/17 Aug., 1707 | — 2697. |
| Rajab 1122/Sept., 1709. | — 2905. |
| 1122/17 | — 2834. |
| 19 Sh'abān, 1122/2nd. Oct., 1710 | — 2570. |
| 12 Ramaḍān, 1122/24 Oct., 1710 | — 2836. |
| 2 Rabī' I, 1124/30 March, 1712 | — 2679. |
| 1125/1713 | — 2607. |
| 22 Jumáda II, 1125/5 July, 1713 | — 2802. |
| 14 Rabī' II, 1126/15 April 1714 | — 2678. |
| Rabī' I, 1127/March, 1715 | — 2542. |
| Ramaḍān, 1128/Aug., 1716 | — 2752. |
| 17 Mubarram, 1129/24 Dec., 1716 | — 2764. |
| 8 Rajab, 1131/16 May, 1719 | — 2467. |
| 1133/1721 | — 2756. |

| | |
|--|----------------------|
| Dhīq'adah, 1086/Jan., 1676 | 2575. |
| 3 Rabi' I, 1088/6 May, 1677 | 2572. |
| Mubarram, 1089/ Feb., 1678 | — 2422. |
| 27 Shāb'an, 1089/4 Oct., 1678 | — 2533. |
| 21 Muharram, 1089/4 April, 1678 | — 2574. |
| 5 Rabi' II, 1089/17 May, 1678 | — 2589. |
| 2 Rabi' II, 1090/3 April, 1679 | — 2963. |
| 23 Shawwāl, 1090 17 Nov., 1679 | — 2474. |
| 1091/1680 | — 2540. |
| 19 Rabi' II, 1091/1 July, 1680 | — 2438. |
| Shawwāl, 1091/Oct., 1680 | — 2641. |
| 22 Shawwāl, 1092 25 Oct., 1681 | — 2628. |
| 12 Dhīq'ada, 1093/Nov., 1682 | — 2616. |
| 14 Jumāda I, (27 Ju ū) 1094, 1 May, 1683 | — 2475 and 2476. |
| Rajjab 1094/June, 1683 | — 2625. |
| 3 Rajjab, 1094/17, June 1683 | — 2708. |
| 29 Ramadān, 1094/11 Sept., 1683 | — 2725. |
| 1095/1684 | — 2419/1 and 2419/2. |
| 20 Jumāda II, 27 June 1684 1095/25 May 1684 | — 2527. |
| 4 Rajab, 1095/7 June, 1684 | — 2498. |
| 24 Šafar, 1096/20 Jan., 1685 | — 2608. |
| 1097/1687 | — 2405. |
| 7 Rabi' I, 1097/22 Jan, 1686 | — 2657. |
| 26 Šh'abān, 1097/7 Aug., 1686 | — 2707. |
| 11 Kaddān (27 Aug. 1687) = 1097/22 July 1687 | — 2575. |
| 1098/1686 | — 2686. |
| 30 Rajab, 1099/21 May, 1688 | — 2590. |
| 22 Rabi' II 1100/4 Jan., 1689 | — 2684. |
| 4 Jumāda II, 1103/12 Feb., 1692 | — 2523. |

| | |
|---|-------------|
| 24 Šafar, 1066/13 Dec., 1655 | — 2660. |
| 12 Ramaḍān, 1066 24 June, 1656 | — 2660. |
| 2 Rabī'-I, 1067/10 Nov., 1656 | — 2661. |
| 1068/1658 | — 2722 1/2. |
| End of Jumāda II, 1073/end of January, 1663 | — 277. |
| 1073/1664 | — 2435. |
| Rajab, 1074/ January, 1664 | — 2570. |
| 1 Jumāda-II, 1075/10 Dec., 1664 | — 2523. |
| 17 Dhiq'ada, 1075 23 May, 1665 | — 2618. |
| 4 Dhiḥaijah, 1076 28 March 1666 | — 2464. |
| Dhiq'adah, 1076/ May, 1666 | — 2870. |
| 13 Rabī'-I, 1077/3. Sept., 1666 | — 2507. |
| 2 Ramaḍān, 1078/5 Feb., 1668 | — 2516. |
| Jumāda-I, 1079/Oct., 1668 | — 2673. |
| 5 Rajab, 1079/29 Nov., 1668 | — 2983. |
| 16 Rajab, 1079/10 Dec., 1668 | — 2411. |
| 1081 1670 | — 2804. |
| 25 Dhiq'ada, 1082/14 March, 1672 | — 2873. |
| Šafar, 1082/ June, 1671 | — 2835. |
| 1083/1672 | — 2475. |
| 5 Jumāda I, 1083 14 Aug. 1672 | — 2711. |
| 8 Sh'abān, 1083/19 Nov., 1672 | — 2571. |
| 17 Šafar, 1084 /21 May., 1673 | — 2496. |
| 9 Rabī',I, 1084/14 June, 1673 | — 2605. |
| 1085/1674 | — 2511. |
| 2 Jumāda I, 1086/15 July, 1675 | — 2847. |
| 8 Jumāda I, 1086 21 July 1675 | — 2412. |

| | |
|---|--------------|
| 17 Dhīḥajja, 1017/12 Feb., 1609 | — 2966. |
| Ramaḍān, 1019 Nov. 1610 | — 2975. |
| 1023/1614 | — 2857. |
| 1024/1615 | — 2902. |
| 4 Jumāda-11, 1024/21 June, 1615 | — 2606. |
| Shawwāl, 1027/20 Sept., 1618 | — 2576. |
| 30 Dhīḥajjah, 1029/15 Nov. 1620, | — 2716. |
| Rabī'-1, 1030/January, 1621 | — 2682. |
| Dhīḥajjah, 1033/Sept., 1624 | — 2686. |
| End of Jumāda-1, 1034/End of Feb., 1625 | — 2555 (1). |
| 25 Rajjab, 1034/24 April, 1625 | — 2405. |
| Rajjab, 1036/March, 1627 | — 2522. |
| 29 Rajjab, 1037/25 March, 1628 | — 2851. |
| Ramaḍān, 1038 April, 1629 | — 2859. |
| End of 1044 Mid, 1635 | — 2543/ (1). |
| Dhīq'adah, 1045/April, 1636 | — 2463. |
| 25 Shawwāl, 1050/28 Jan., 1641 | — 2513. |
| 14, ṣafar, 1051/15 May, 1641 | — 2407. |
| 1053/1643 | — 2543 (1) |
| 20 Shawwāl, 1053/22 Dec., 1643 | — 2722/1. |
| 15 Muḥarram, 1057/10 Feb., 1647 | — 2508. |
| 1 Ramaḍān, 1057/20 Sept., 1647 | — 2491. |
| 6 Dhīq'adah, 1057 23 Nov., 1647 | — 2726. |
| 1058/1648 | — 2968. |
| 1 Ṣafar, 1058/16 Feb., 1648 | — 2755. |
| 14 Rabī'-11, 1062, 15 March, 1652 | — 2815. |
| 21 Jumāda 1, 1062 20 April, 1652 | — 2604. |
| 6 Muḥarram, 1065 6 Nov., 1654 | — 2649. |
| 9 Ramaḍān, 1065 3 July, 1655 | — 2555. |

INDEX IV

Dates of Transcription

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

| | |
|------------------------------------|---------|
| Dhulhajja, 603/9 July, 1207 | — 2427. |
| Mid Rajab, 764/ Beg. of May 1363 | — 2447. |
| Dhulhajja, 807 April, 143 | 2401 |
| 890/1485 | — 2565. |
| 25 Šafar, 918/12 May, 1512 | — 2564. |
| 13 Sh'abân, 949/28 Nov., 1542 | — 2430. |
| Dhulhajja, 950/Nov. 1553 | — 2675. |
| Muharrum, 960/Oct., 1558 | — 2717. |
| 26 Sh'abân, 970/30 April, 1566 | — 2840. |
| 20 Jamâda, I, 977/31., Oct. 1569 | — 2514. |
| 985/1577 | — 2842. |
| 1 Rajab, 989/1 Aug., 1581 | — 2710. |
| 9 Shawwâl, 993 21, July, 1591 | — 2512. |
| Rabi'-I, 1000/Dec., 1591 | — 3025 |
| Rajab, 1001 April 1592 | — 2711. |
| 14 Ramadân, 1001/4 June, 1593 | — 2845. |
| 1001/1595 | — 2672. |
| 22 Rajab, 1008/27 Jan, 1600 | — 2502. |
| 8 Jumâda II, 1014/11 October, 1605 | — 2850. |

W

Wārith 'Alī: [Cop., 1306/1889]-3012

Y

Yūsuf b. Hājī: [cop., at the end of xi/xvii]-2658.

Z

Zaynū'd-Dīn 'Alī a'sh-Shirāzi b. Darwish Muḥammad: [Cop., early xi/xvii]-2519.

Zaynū'l-'Ābidīn b. Hājī Muḥammad Bāqir'a'l-Abbāsī: [Cop., 1089/1678]-2889.

Sayyid Muḥammad Raḥīm'ud-Dīn [Cop., 1291/1874]-2642

— Mustafā Husaynī, [Cop. 1242/1827]-2609.

— Saifu'd-Dīn 'Alī Khān [Cop., 1195/1781]-2958.

Shāh 'Alī b. 'Imādud-Dīn a'sh-Sharā'a'z Zawwār: [Cop., 977/1569]-2514.

— Ibrāhīm a'z-Riqwī [Cop., at the middle of xii/xix]-2822

— Muḥammad Makki [Scribe, theol., and author Cop., 1030/1621]

Shaykh Faḍl Muḥammad: [Cop. 1166/1747]-2588.

— Ibrāhīm b. Shaykh Ismā'il of Kokan [Cop., 1289/1878]-253

— Ismā'il b. Iyās Qādiri [Cop., 1134/1721]-2583

— Karam 'Alī: [Cop., 1241/1823]-2667.

— Mahmūd [Cop., 1053/1643]-2543

— Muḥammad: [Cop. 1205/1790]-2733

— Waliu'llah, Surnamed: Muḥammad Yūsuf and Shaykh 'Azmatu'llah:
[Cop., 1171/1758]-2688.

Shamsu'd-Dīn 'Alī: [Cop., 1186/1775]-2583.

Sharifu'd-Dīn Muḥammad, [Cop., at the end of xii/xviii]-2615.

Sher 'Alī: [Cop., 1086/1675]-2847.

— Muḥammad [Cop., 1091/1680]-2540

— — b Muḥammad Sa'āh b. Uḥmān b. Mansūr Quljin [Cop.,
1003/1595]-2672.

Shujā't Khān: [Cop., 1098/1686]-2680.

Şiddiq b. Muḥammad Ibrāhīm b. Muḥammad Ḥasan Şiddiqī: [Cop., 1124/
1712]-2679.

T

Tāhūr a'l-Husaynī, [Cop., 1037/1628]-2851.

Taqī b. Muḥammad Husayn a'l-Muḥabbab a'l-Qāzwinī: [Cop., 1093/1682]
-2616.

N

Nāṣi Miskīn : [Cop., 1014/1605]-2850.

Najmu'd-Dīn : [Cop., 1078/1668]-2510.

Nizām Aḥmad : [Cop., 1210/1795]-2812.

**Nūru'd-Dīn Muḥammad [Dhu'sh-Sharāfīn b. Muḥammad Mumin a'sh-Sharīf
[Cop., 1074/1664]-2579**

P

Pir Muḥammad Anṣārī of Karā Manik, ūt : [Cop., 1002/1652]-2504

Q

Qādir Qūli : [Cop., 1172/1254]-2553.

Qanbar 'Alī : [Cop., 1101/1702]-2914.

Qāsim Khān : [Cop., 1261/1845]-2517.

R

Rābi'b. Naṣrūllah a'l-Husaynī : [Cop., beg of xiii/xiv]-2783

Raṣī' Muḥammad b. Dāniyā. b. Khwāja : [Cop., 1036/1627]-2522.

Raḥīm Bakḥsh : [Cop., 1193/1779]-2584

Rajab 'Alī : [Cop., 1117/1704]-2640

S

Sā'ir Muḥammad b. Pir Muḥammad : [Cop., 1125/1711]-2802

Sayyid 'Abdu'n-Nabī b. Mir Maḥmūd Ṣafawī : [Cop., 1180/1766]-2804.

— **Bahād'ur 'Alī Khān Naqawī :** [Cop., 1203/1847]-2715

— **Qulām Maḥdī :** [Cop., 1251/1835]-2922.

— **Hasan 'Alī Ridwī :** [Cop., 1252/1836]-2740

— **Hāshim :** [Cop., 1254/1838]-2648.

— **Muḥammad Pirān' :** [Cop., 1290/1873]-2652

Mahmud al-Sa'idi. *Muhammad al-Murshid*. (Cairo, Dar al-Fikr, 1950). 243p.

Day 6 : Mukhama'd Basha'a, Madhān, 19th October
 12:45 - 2:00

— Şa h Nizameddin Mir 'Abdu'l-Âli Musavvir Qasbi' celebrated
 birthday, and Mir 'Abdu'l-Asad Musavvir Qasbi (brother
 of Şah Nizameddin) was born. [M. 1000/1000] 2555.

[१] ग्रामिणः , कृषि-पेशे-पर्यटन-प्रोत्साहन-

$$S(\lambda, \tau) = A(\lambda, \tau) + \lambda \int_0^\tau S(\lambda, \tau - \tau') B(\lambda, \tau') d\tau' \quad (1)$$
$$D = \{ \mathbf{M} \in \mathbb{R}^{n \times n} \mid \mathbf{M}^T = \mathbf{M}, \mathbf{M} \succeq 0, \text{Tr}(\mathbf{M}) = 1 \}.$$

$\lambda = 0.00021$ A. $\alpha = 1.0$ Å. $\mu = 0.00017$ cm²/g. $\rho = 1.047$ g/cm³.

Alt: (Cop. 1158/1745 -24 H (u).

— Taqī a't-Tehrānī: [Cop., 1058-1077]-2572.

[illegible]

Mei, D., A. V. H. M. *et al.*, 1994, *7* -

Muzer Vidua 10 4

Alfred 'Al' ...

At Milwaukee, I saw a number of the person of 16th
 May, 1861, at the street of the person of 20th

1. The Management of the University of Alabama (1964, 1965)

Applicant and Applicant's mother (711) have been [redacted] (Cop., 1085/1074, -240 and 251).

Modeling, N. G. G. (1965) 153

[illegible]
$$2. \quad \text{If } M = \langle M, \wedge, \vee, \neg, \rightarrow, \perp, \top, 0, 1 \rangle \text{ is a } (C, \wedge, \vee, \neg, \rightarrow, \perp, \top, 0, 1)\text{-algebra, then } (C, \wedge, \vee, \neg, \rightarrow, \perp, \top, 0, 1) \text{ is a } (C, \wedge, \vee, \neg, \rightarrow, \perp, \top, 0, 1)\text{-algebra.}$$

Monte Alti, 1897. Col. 174th 18th 2^d 14.

Maza ar 'Ali, Mahamud Mahd Khatib Lahman [1950-1954] 214.

Muhammad Hasani b. Mullah 'Abd-Sattar. [Cop., 1036/1627]

— Hasani. [Cop., 1101/1712]

— Hasani, Matā'ir-i-Harawī—Surnamed 'Hafiz-i-'Avdhi: [Cop., 1225/1817]-229.

Irāhī—Surnamed 'Mawlaya—[Cop., 1221/1812]—Yā'uf [Cop., 1241/1832]-81.

— Jā'ir [Cop., 1211/1802]—'Abd-Allah [Cop., 1200/1791]-283.

— Kāzīm b. Muza Mahdī—[Cop., 1200/1791]-233.

— Ḥasani—[Cop., 1200/1791]-203.

— Maḥmūd [Cop., 1200/1791]-203.

— Ma'sūm b. 'Abd-Sattar—[Cop., 1200/1791]—at the end of 1151/1740.

— Mu'mayyib—[Cop., 1200/1791]-12.

— (better known as 'Abd-Sattar—Surnamed 'Imam Hasan Sa'adī) [electronic text (computerized text) of the Sa'adī collection, [Cop., 1200/1791]—1200/1791]—'Abd-Sattar in "A" Cat., No. 2855].

— Muḥib [Cop., 1200/1791]-283.

— Naṣīb b. 'Abd-Allah [Cop., 1200/1791]-203.

— Muḥammad b. 'Abd-Sattar [Cop., 1200/1791]-203.

— Qasim—[Cop., 1200/1791]-65.

— [Cop., 1200/1791]-203.

— — — [Cop., 1204/1875]-2051.

— Rihān—[Cop., 1200/1791]-203.

— Ridā [Cop., 1200/1791]—[Cop., 1200/1791]-203.

— Şāhib-i-'Udd-Zamān—[Cop., 1200/1791]-203.

— Şafī b. Isrā'īl b. Mūsawī [Cop., 1200/1791]-203.

Mir Kamāl u'd-Dīn Husain a'-Musaww [Scribe & Author, transcribed in
1275/1858].

— Mūhammad 'Alī b. Mir Husain [Cop., 1270/1853]-1272.

— Mūhammad-Dīn: [Cop., 1270/1853]-1280.

— Qanbar 'Alī: [Cop., 1190/1784]-2005.

— Sa'diyyā, surnamed: Mir Mūhammad Sa'diyyā: [Cop., 1070/1654]-
2063.

— Sayyid 'Alī Zāwar: [Cop., 1274/1858]-1278.

Mirza Abū 'Alī b. Mirza Asad [Scribe & Author, transcribed in 1291 and
1304].

— Asad 'Alī b. Mirza Asad: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Durrat 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277. (Copied by Husain in 1271/1853)-
2460/1, 2460/2 and 2473.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

Amār: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277. (Copied by Husain in 1271/1853)-
2760.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277. (Copied by Husain in 1271/1853)-
3007.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

— Fāz 'Alī: [Cop., 1277/1861]-1277.

Muhammad Abū 'Alī b. Asad [Scribe & Author, transcribed in 1277/1861]-
1277.

— Akbar Surnamed: Muhammad Abū 'Alī b. Asad [Scribe & Author, transcribed in 1277/1861]-
1277.

— 'Alī 'Ashiq: [Scribe, theologian, poet and comp. Copied during the reign
of Afghān u'd-Dīn al-Āst-Jah V of Dakan in 1280/1863]-
2825.

Hasan b. 'Alī a'l-Jurjānī : [Cop., 1060/1688] 2506.

— **Khān Ardabell** [Cop., 1051/1641]-2407

— — b. **Khuda Baksh** [Cop. 1083/1672]-2475.

I

Ibn Muḥammad Haḍī [Cop., 1231/1816]-2774.

Ibrāhīm a'l-Makkī b. 'Abd al-Rahmān a'sh-Shirāzī, [Cop., 1061/1643]-
4711.

'Iṣṣatū'llāh : [Cop. 1111/1716] 2467 [Cop., 1121/1715] 2542

Illāh-Dīn : [Cop., xi/xvii]-2422.

'Isa b. Asad Qubā Mīrānī **Iḥṣā** [Scribe (grandson of Amir Qubā)]
[Cop., 987/1577]-2842.

'Izzat 'Alī Kān : [Cop. at the end of xv/xix] 2523

u'l-**Izzat** [Cop. 1148/1733]-2523.

J

Jamī Baḡ [Cop. 1213/1795] 2872

Jān Muḥammad b. Naṣir al-Dīn [Cop., 916/1500]-2522

Jawālat Qulūb [Cop., 1170/1757] 2575

K

Kāshāw L. Muḥammad Amī [Cop., early xv/xvi]-2431

M

Masāk Maḥmūd [Cop., end of xv/xvi] 2645

Mir 'Abd al-Kāshī b. Muḥammad Sayyid All Khān [Cop., 1170/1757]-
4807.

— **Alam Jamī al-Masāfī** b. Nūḥ al-**Amī** [Cop., 1170/1757]-2712

— **Amīr-Qāsim Tawāfī** [Cop., 1222/1822]-2522

— **Al-**Amī**** [Cop. 1231/1822]-2535

— **Ghauth 'Alī 'Alawī** : [Cop., 1240/1831]-2770.

— **Hamīd al-Masāwī Surname** [Cop., 1272/1857]-2830

Fath 'All b. Hājī Hasan Irmūdī : [Cop., 1230/1815]-2778.

Fath Muhammad [Cop., 1000/1555]-265.

Fathu'llāh b. 'Umar a l-Hātī a'sh-Shirwānī (Cop., 867/1453)-2401.

Fidā' All Baig : [Cop., (xiv/xx)]-2417.

G

Ghalyāthu'd-Dīn Muhammad Mashhadī : [Cop., 1057/1647]-2491.

Gulām 'All : [Cop., 1218/1803]-2773.

— — — a' Husaini a' Rādī a' Naqwi a' Kirmānī entitled :
Muntaz Ab Khān Jahānas Arshad [Scribe and Author
Cop., 1103/1779]-281.

Imām ——— for Sayyid Fādī' Ab Khān (1267/1851)-2613.

— Ismā'il : [Cop., 1105/1694]-2611.

— Qādir [Cop., 1202/1787]-284.

Gu'l-Muhammad : [Cop., late x-xv]-2490.

Ī

Īdar : [Cop., 1084/1674]-2883.

— 'All b. Shakh Muhammad (Cop., 1140/1728)-288.

— Husain a' Husain [Cop., 1268/1850]-2801.

Īz Nūrullāh (Cop., [transcribe only the names of 14 fortunate
persons in the beginning of this work]-2894).

Ījī 'All Akbar a' Qādī a' l-Yazdī : [Cop., 1260/1852]-2840.

Darwāsh 'All Khudā Khwān : [Cop., 1007/1558]-2835.

— Muhammad Rifa Mashhadī a' Khudjānī (Cop., 1000/1670)-2474.

Sher 'All : [Cop., 1200/1785]-272.

Hasan : Cop., 970/1460]-2840.

— b. 'Abdu'l Maqd a' l-Husainī Wā'iz a' l-Isfahānī : [Cop., 1071/1655]
-2928.

— Kitābdār Khayrawān Khānī [Cop., 1024/1615]-2592.

Hibbatu'llāh b. Muhammad a' l-Khatīlī [Cop., 603/1207]-2427.

Afḡal a'l-Husaini a'r-Riḡwī [Cop., beg. xii/xviii]-2626.

— b. Ṣādiq a'r-Riḡwī, [Cop., 1114/1702]-2595.

Aḥmad 'Alī: [Cop., 1249/1833]-3002.

— 'Alī Al-rān Mustafābādī [Cop., 1285/1868]-2827.

'Alāu'd-Dīn: [Cop., flourished during the reign of Muḥammad Shāh in
Mād. xi/xviii]-2751.

'All b. 'Alī m' al-Kuḡānī: Cop. (only last folio) 1608/1600]-2502.

'All Naṣr al-Musawwī a'l-Karbala'ī [Cop., 1122/1710]-2834 at 12836.

'All Naṣr b. Ibrāhīm Astrabādhī [Cop.] at the end of xii/xvii-2887.

'All Nawāz al- [Cop. 1233/1821]-2646.

Allāh Bāghsh b. Durrat al-Kūnī [Cop., 1152/1742]-26.

'Arab Kātib Shīrāzī [celebrated calligrapher of 15th Shāhī court cop.
1034/1625]-2835. See also Mir M. m. n. b. Sharfu'd-Dīn
Hasan Shīrāzī in Cat. No. 2711.)

Ashraf Bāghshāh [Cop., 1110/1700]-2988.

'Ashraf 'Alī Kūnī [Cop., 1100/1690] 1600/1600]-2906.

B

Bahrān [Cop. 1237/1821]-2945.

Bande 'Alī Dakhnī: [Cop., 1253/1837]-2790.

Bāqir Majidi: [Scribe, theologian cop., cop. 1604/1600]-2628.

Bibahā Jun Bahādūr [Scribe 1235/1821]-2668.

Bijnāth Kashmiri [Scribe—born in Deccan] cop., 1233/1821]-2842.

D

Darwāh 'Alī Khān Afghān Multānī [Cop. 1601/1600]-2438.

F

Faḡal Khān: [Scribe and Author, cop., 1123/1711]-2413.

INDEX III

Names of Copyists

(Islamic Theology)

Volume VII

(Persian Manuscripts)

A

'Abdu'l-Bāqī a'sh-Shatīrī Zāwar : [cop. 1135/1723]-2977

— Ḥaffār Lāhūrī : [cop. 1165/1754]-2584.

'Abdu'l-lāh b. Muḥammad Jawāb b. 'Abdillāh b. Nūru d-Dīn b. 'N'mat-
u'llah a'l-Husaynī (Scribe-translator's grandson) cop.,
1210/1795-2767.

— b. Ḥakīm b. Muḥammad Šādīq Lāhūrī [Cop., 1094/1683]-
2478 to 2484.

— 'Abdullāh (Hap) [cop., 1075/1664, 1675].

'Abdu'l-lāh al-L. [cop., calligrapher of a sheet dated Salṭa Muḥammad
Qutubshāh's reign 1627-1648] 2577.

— Ma'ālī b. Sa'adī 'Abdu' Ḥakīm al-Ba'ā'ī [cop., 1090/1683]-
2608.

Wāḥid b. Samsu d-Dīn al-Šādīqī [cop., 1100/1688]-2657.

'Abdu'r-Rahmān b. Ḥasan Ḥayr : [cop. 1112/1701]-2784.

'Abdu's Šimad b. Šadr-ud-Dīn al-Nāpī Sarāzī : [cop. 1203/1803]-2947.

'Abd al-Ahī b. al-Ḥakīm al-Šādīqī [cop. of a sheet dated Wāḥid [ab] 1287/1870]-
2928.

Abū Bakr b. Muḥammad al-Ba'ūd : [Cop., 1010/1610] 2566.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.

Zander, David. 1997. *Case Law Analysis*. Pp. 1-10. *Case Law Analysis*. David Zander.



Uşul-e-Dîn [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Anon. treatise on the [?] of faith]-2711/6, 2736/2, 2737, 2738 - 2740, 2745 and 2768.

— - — [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Muhammad A'li's tract]-2022.

— - — Manzûm [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Anon. versified tract on the [?]]-2025.

— - — Jawāb-e-Fawā'id [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Majlis's review on a late [?] of [?] in favour of [?]]-2020.

— - — Khamsa [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Anon. Rare treatise on the [?] of faith written by Sayyid Muhammad Qāṭib Shāh of [?] during 1025/1712-1713-1714.

٧١

Wājibāt-e-Namāz [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Muhammad Taqī Sabzwari's treatise on Namāz comp. during Shah 'Abbas Šahawī II's reign 1052-1077/1642-1677-2730.

Waqā'iq-e-Masā'ib: [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Aṣṣāhī's treatise pertaining to Imām Husayn's martyrdom at Karbalā]-2002.

Wilādat-e-Hadrat 'Ayyat [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Anon. incomplete work dealing with the lives of 14 Immaculates]-2044.

٧٢

Yāzdaḥ Mathis [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Anon. collection of traditions and legends in 11 chapters pertaining to the deaths of Holy Prophet, Imāms and Saints]-2580.

٧٣

Zād-e-A'zam [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Sayyid Muhammad a'l-Musawī's tract on Imāms]-2726 and 2927.

1175-1761]—2558.
 Rye collection of 12 trials, with Pp. and short notes
 on the same, in the collection of the Hon.

```

    reward = A[env.get_action()]
    return (obs, reward)

```

punishments of religious practices] 2834.

theol., State beliefs) — Rashidun'd-Dhu 'l-Ik'la's work dealing

Use in form of questions and answers] 2858.

giving animals'-270.

[illegible]

2519

— *Travels, 1840-1841* (London, 1842), 1: 100-101.

— **Monday, 17th July** —
 From 10.15 to 11.00 AM. **St. Andrew's Day**
 Afternoon tea at 2.30 PM.

— - - Naqiriyah, a Jew, who has been found to be
belonging to the sect of the Jews on the side of the
on Mut'a, compiled at the instance of his Shiite
friend, Asad ibn-Hanbal's reign, during which he lived
in the city of Medina.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534].

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Faruqī's *Ḥikmat al-Hind* (Iskandariyya, 1909) A. 1.
Pp. of the abbreviated version of Ibn al-Jawzi's
Ḥisn al-Ḥaḍra [2534]-2535.

Tarjuma-e-Makrūnāt 'Alayh [Islamic theory - same] 'Alī b. Tūfayl -
 Istanbul no. of the Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

— • Muḥabbiyyat [Islamic theory - Prayers (ṣalāt) - Juḥdī'ī's
 edition - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 2720.

• Muḥabbiyyat 'Alayh [Islamic theory - same theory
 (ṣalāt) - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

Nat. Pers. no. [same theory - see Arabic Manuscript -
 Ad. 10, c. 1 - 2720]

— • [same theory - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

— • Q. 1b bā [Islamic theory - same theory - for Khawāṣṣ
 Arabic translation - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

• Sharḥ al-Muḥabbiyyat [Islamic theory - same theory - Sharḥ
 Muḥabbiyyat - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

• [Islamic theory - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

— • [Islamic theory - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

• [Islamic theory - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

— • [Islamic theory - see Arabic Manuscript - Ad. 10, c. 1
 1001/1051]-2005

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ... Muhammad ...
 ...
 ...
 ...
 ...

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 ...
 2763/12

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of Nūru'd-Dīn's Hadyatu'l-
 Mu'minin comp. 1173/1759] 2707.

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 ...

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of Ibn Bahūya's work]—2535

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 Abdulah, 2604 to 2606.

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 ...

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 ...

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...
 ...
 ...
 ...
 ...

— — — — — a'ir-kidwi's pp. of ...

Library on Nasafi's famous Arabic work, *Mantra'l-Awār* on

1. Impairment of Health — The following are the most common causes of impairment of health:

[illegible]

... ..

collection of tracks with pp 1-2503.

$$A(t) = \begin{pmatrix} 1 & 0 \\ 0 & 1 \end{pmatrix} \quad \text{for } t \in [0, \infty) \quad \text{and} \quad A(0) = \begin{pmatrix} 1 & 0 \\ 0 & 0 \end{pmatrix}.$$
[illegible]

on principles of Hindu laws]-2780.

[illegible][illegible]

pp. of white trade comp. 1039/1630]-2602.

First Half of the Twentieth Century] 2436 to 2437.

— *Kitāb al-ḥaqq fī al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God]—2439/7.

Sayyid Aḥmad Ḥusayn, *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth), *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) 2439 to 2440.

Yusuf Ḥusayn, *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2 parts, 2439 to 2440. [The Truth—The Truth] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

— *Ḥaqq al-ḥaqq* (The Truth—The Truth) [a treatise on unity of God] 2439 to 2440.

Širāṭu'l-Mustaqīm wa-ṭ-ṭarīq al-ṭayyib (Said al-Ḥayrī) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

— 'In Naṣṣ al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

1

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

Ṣawābi al-ḥaqq (ṭ-ṭarīq al-ṭayyib) - A treatise to prove that there is only one sect which is predestined for salvation]-2900

— . Naḥḥat ha-ḥayyim (State of) → VI Hymn.

— . Oḥel ha-shabbat (Shabbat) → Commentary on the Sabbath.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

— . Shirat ha-ḥayyim (Shabbat) → VI Hymn.

Shakir wa-Salwa (Number 1) [Shakir wa-Salwa]
as Risāla fi Shakiyātīḥ-Ṣalāt] 2855/11).

Sham-e-Lamān (Number 1) [Sham-e-Lamān]
[Sham-e-Lamān]

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
comp 1094/1683 — 2856 and 2857.

Sham-e-Lamān (Number 1) [Sham-e-Lamān]
[Sham-e-Lamān]

Sham-e-Lamān (Number 1) [Sham-e-Lamān]
notes on obligatory prayers]—2855 11.

Sham-e-Lamān (Number 1) [Sham-e-Lamān]
[Sham-e-Lamān]

— D (Number 1) [D] (Number 1) — 2856
2 prayers]—2856/2

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856

— D (Number 1) [D] (Number 1) — 2856
please refer Cat. No 2505 in 'F']—2505 to 2571.

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
Mu'tlaqin]—2749

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856

— Ya (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856
[Ya] (Number 1) [Ya] (Number 1) — 2856

Source: *ibid.*, p. 100. (Quoted in *ibid.*, p. 100, at [Footnote] 1, note on Shukri b. Isak Sāliḥ and Hanafī laws)-2713 to 2715.

— — — — — I have been thinking of you, and of the
 — — — — — with the only one who
 — — — — — and I am sure
 4714.

[illegible]
$$S_{\text{eff}} = S_0 + \frac{\lambda}{2} \left(\frac{1}{V} \int d^3x \phi^2 \right)^2 + \dots$$

1. $\frac{1}{2} \pi$ 2. $\frac{1}{2} \pi$ 3. $\frac{1}{2} \pi$ 4. $\frac{1}{2} \pi$ 5. $\frac{1}{2} \pi$ 6. $\frac{1}{2} \pi$ 7. $\frac{1}{2} \pi$ 8. $\frac{1}{2} \pi$ 9. $\frac{1}{2} \pi$ 10. $\frac{1}{2} \pi$

between 1273 and 1277, 1857 and 1861]-2471.

on the subject, 2055 to 2062

[illegible][illegible]

4551 b.

of Shāh Shāh in 1114/1701]-2403.

[illegible]

Risāla-e-Taūhīd (Islam: theol. (Sūfī track); Mirza Asā 'Allī's treatise on 7 principles of faith and unity of God's oneness) - 15.

— • Uṣūl-e-Ḥisām-e-theol. (Anon. Arabic tract on the old Hasan of Tūs's work) - 3029/4.

— • — — (Ḥisām-e-theol., Tūl-e-behrets — Hasan b. 'Abdūr-Rahmān's short treatise on 700 points) - 1119 - 121.

— • — — (Majma' al-Humam (Humam's), (other commentary) - Ahl-e-Bayt's or 'Ibāzī's Khawāṣṣ (treatise on 100 properties of the 12 Imams) - 1219 - 1220; Ḥumam's Ḥumam's (1211/12 to 1211/12 for S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • Wajh-e-Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • Yuhā'nā (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • Zādāt-e-Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

— • — — (Ḥisām-e-theol. (S. b. 'Abd al-Hamīd) - 1211/12 - 1211/12.

Resale e QOT át : 1 m 00 qwh) An e tr e t e correct recte

Indo-European languages. The Samudra Aranya
contains a treatise relating the Śāstras of the first
the first 3 Orthodox [Khaṇḍa]-3024.

— $\text{K} \tilde{\Delta}^{\text{p}}_{\text{A}} = 1$ (or $\tilde{\Delta}^{\text{p}}_{\text{A}} = 1$) is the basic loop Majorana set
for each state α of $\text{X}(D)$ (see Section 3.4.1).
— 2852.

— Jahanara Amirati, "The Return of the 12th State Imam," *Jahānī's short treatise on the return of the 12th State Imam Mahdī*-2014.

— James Nathan (Shelton) - Attorney at Law
 1000 Broadway, New York 20, N.Y. 10019

• *Shawcross, Ian.* *The United States Army: A History on the March*. New York: Oxford University Press, 1993. Pp. 320. \$24.95. ISBN 0-19-508346-2. This book is a history of the United States Army from its origins in 1775 to the present. It covers the American Revolution, the War of 1812, the Mexican War, the Civil War, the Spanish-American War, World War I, World War II, the Korean War, the Vietnam War, and the Gulf War. The book is written in a clear and concise style, and it is a good introduction to the history of the United States Army.

— Now I want to say that this is — A very con-
troversial topic about the supremacy of State to the over
State, to the right of the State to the right of the

1. Is there the collection of various queries
by a committee headed by Mr. S. V. N
Nhatil-30297

5. Revised 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 <

[illegible]

Short treatise on correct recitation of Glorious (L. 4n)
-2419.

[1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 8

- - 1000⁺ - Three three thirty-two Westwood Drive
Falmouth's short treatise 2036/4.

Risāla-e Kattarah, Islamic theo., Shahr-i Pāh)—Dā'ir Majma's treatise
 on the same subject, comp. 1791/12— and trans-
 cribed by collector's great [grand-father]—2704—2700— and
 2763/8.

— — Miqdāṣat-i-Islām (the Islamic weatns and Measures—
 Mir As'adim Astrābādī's treatise to the effect dedicated
 to 'Abd al-Qadr Sā'atī Gharib—2707.

— — Miḥāẓat-i-Islām (the Islamic controversial work)—'Abd al-
 Wadūd's collection of Notes on religious controversy
 between different sects, comp. 1762—2971— and
 2980/1.

— . — — [The controversy] (Sect. sect.)—Siyamāt' al-Kashī's
 controversial work, at one time prohibited by Shāh
 or Imām Husayn's authority, comp. 1233—1834—3035.

— . — — — Yū-ut wa Nūr al-Ishāq (the controversial work—
 controversy between Amir Yū'at 'Abd al-Hasan al-
 Astrābādī and Qādī Nurbarā's Siyastat on Holy
 Prophet's knowledge about the unseen men etc.)
 —2993.

— . — Namāz-e-Shabb (Islamic theo. (Shabbahes—Mir Asad's short
 treatise on night prayer, based on Miṭab, i-fa'iz, and
 Miṭab al-'Asad al-Fa'iz, comp. 1717—1717
 1104—2773.

— . — Panj Khat wa Aḥad Qadr (Islamic theo. (Five under
 Allah Whom Sahib's authority is shown in short
 prayers)—2698.

— . — Qadl Qutub (the Khatib al-Islām theo. (Shabbahes)
 Qadl al-Fa'iz al-Khatib's treatise on the subject
 2722.

— . — — Zuhd : Islamic theo. (Sect. sects)—Dā'ir Majma's and
 Ashraf's treatise on the views of Imām al-Biharī
 to Shāh Abd al-Ḥalīm—2705 and 2707.

— . — Qur'āt, Islamic theo. (Law) Anony. defective tract on
 correct recitation of Qur'ān—2434.

Kaddu'l-Buhtan-i-Mawduh (Islamic treatise, entitled 'The Anarchy of the Work of the Shu'ite delegations, pertaining to the presence of Holy prophets & authorities in the world of the dead')-231

— — — Fiqh-i-Shu'ite (Islamic treatise, entitled 'The Shu'ite jurisprudence')-Majlis Shari'ah's 100-024.

Ka'āb-e-Hayat (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-235

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-235

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-235

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-235

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-Muhaddith al-Islam, 17-1

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-234

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-234

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The House of Life')-234

Riudat-e-Abrar (Islamic treatise, entitled 'The Path of the Righteous')-V. H. B. / Jawid's collection of works of Pers. literature in 'Nahj' Balaghah comp. 047/1540¹-2576 and 2577.

— — — — — (Islamic treatise, entitled 'The Path of the Righteous')-Muhaddith al-Islam, 17-1

Rawāyat (Islamic treatise, entitled 'The Path of the Righteous')-The 5th Shiite Imām, entitled 'The Martyrdoms of the 1st 4 Shiite Imāms')-2046/3.

Risala Dar-Ādāb-e Husn (Islamic treatise, entitled 'The Path of the Righteous')-V. H. B. / Jawid's collection of works of Pers. literature in 'Nahj' Balaghah comp. 047/1540¹-2576 and 2577.

— — — 'Aqā'id (Islamic treatise, entitled 'The Path of the Righteous')-Anony tract on the subject]-2828

$$N + \kappa_{\alpha}(\eta) \left[\kappa_{\beta}(\eta) \right]^{-1} \omega^{\alpha} = \left\{ \left(\eta - 1 \right) \left(\kappa_{\beta}(\eta) \right)^{-1} \eta^{\alpha} - \kappa_{\beta}(\eta) \kappa_{\beta}(\eta) \right\} \omega^{\alpha}.$$
[illegible]

No. Name, sex, age, Army number, record of service, location of residence, to +2831 and 2832.

*All to blll2[at]-3018, 3019 and 3029/1.

So that I have a very good (and very good) Mizrahi
about the Kibbutz controversy with regard to the
[I have a very good of SHAI (A. I. A. 2) 1,000

P

Pattawaichai, J. *Journal of Statecraft*. Hsinchu: Mithras Press.
1978. In Japanese. 204p.

Q

Quinn-Nantz [redacted] Anderson [redacted] Extract from [redacted]
on the subject}-285r/2.

Qizw'it 1-10 Nov. 1968 Wed. - 11 Nov. 1968 Thurs. Sunrise — Anova
 1000 ft. 1000 ft. 1000 ft. 1000 ft. 1000 ft. 1000 ft. 1000 ft.

(c) Vertrag = contract. In the context of Muhammad's treaty
the first factor of discussion and 2nd and 3rd

1) $0, \omega_1, \dots, \omega_{n-1}$ — the same as in (C) but with $\omega_0 = 0$. Since $\omega_0 = 0$, the condition $\omega_0 \neq 0$ is not satisfied.

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

On 10 May 1967, the first of three flights was made from the
Quincy Field on Highway 100, about 10 miles north

1. The first part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $f(x)$ defined by the equation

N

Narā'i-yu'l-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2707.

Nawā' Maḥall: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise on the law of the sword]-1500-1524]-2707.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise on the law of the sword]-1500-1524]-2707.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Nawā' al-Irqaṃ: (Isām al-Thaḥī - al-Waḥī) Mubarriz al-Dīn al-
Fayyāḥ's treatise]-2703.

Muhammad-Qasbi's (1) conc. disc., Chap. 1) New title'd b. al-Imam al-Shafi'i's short treatise on correct registration of glorious deeds & their spiritual benefit. Average length 24-30

[illegible][illegible]

Must have been a very early one, as the first record of the
- - - - - from a short time after the first of the
Our 401-2409 1.

— 4 —

Moqaddim-e-Kitāb-e-Qur'ān (Introduction) - A. J. W. Durrani's comments are introduced for the Urdu paraphrase of Gl. Qur'ān's text]-2469/2.

(A') $\text{Min}_{x \in \mathbb{R}^n} \{ \langle x, v \rangle \mid v \in A(x) \}$ is a convex problem if and only if $\langle x, v \rangle$ is convex in (x, v) and $A(x)$ is a convex set for all $x \in \mathbb{R}^n$.

[illegible]

* — We know that the probability of a certain event occurring is given by the ratio of the number of favorable cases to the total number of cases.

[illegible]

(A) Statute on Mortality from Cholera. (Geneva, 1817).—Translated in Anstett's Hansen's treatise on cholera, etc., etc., 1-2803.

Manḥalū'l-'Aṣṭa' wa-Riṣā'at al-Haṣṣa; [Islamic theol., Fiqh], —
 [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's rare work pertaining to the
 [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 during Sulṭan Aḥmad-Nāṣr's reign of Ḥaṣṣa's reign
 838-840/1463-1447-2462

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious
 Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp. [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a short
 treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; [Islamic theol., Fiqh] — Maṣnū'at al-Ḥaṣṣa; a
 short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān [the Ḥaṣṣa] Ḥaṣṣa's comp.
 242/1

Maǰālisu'l-Aḥzān {Islamic theol. (Shiite), - 'Abū'l-Ja'ad Kān's legends about the deaths of Holy Prophet and his uncle as his own basis. - 1927-28.

Majmû'a: [Islamic text, Iqbal contains 3 works on correct
relation between man and] 24.

[Is not then "Lust" contains 4 works on correct
relation of "lust" with "love" & other subjects]
-2423.

[illegible]

1. The following is a list of the works of the author:

— — : — am (100) 8, 10 (100) 100, 100, 100, 100, 100, 100, 100, 100

— [1] Slav. trad. — values & attributes collections,
— 2047.

— : Thammasak, (Shree F. A.), containing 3
works on travel, river boats and slaying of
animals!-276Q.

[Is it that, note 1, ... of works]

|| 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

—

[illegible]

Abstract. The purpose of this study was to determine whether the use of a computerized program could improve the accuracy of the measurement of the angle of inclination of the trunk during static standing posture. A total of 10 subjects were recruited from a university population. They performed three trials of static standing posture while wearing a motion capture system consisting of reflective markers placed on anatomical landmarks. The angles of inclination of the trunk were measured using two different methods: a traditional method based on a goniometer and a new method based on a computerized program. The results showed that the computerized program improved the accuracy of the measurement of the angle of inclination of the trunk during static standing posture compared to the traditional method. This finding has important implications for the design of ergonomic interventions aimed at reducing the risk of low back pain in occupational settings.

$\{x \in \mathbb{R}^n : \|x\|_2 \leq 1\}$ works as a
 $\{x \in \mathbb{R}^n : \|x\|_2 \leq 1\}$

— — — — — post in the (stirring) — — — — — [The Lovers
works] 4943.

— — {Islamic theologians' (and) confusion — Anonymous
WOFAS—444

Lisānu'l-Phākiri (Islamic theo., (Shiite trad.))—Mirza Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the lives of the Holy Prophet and his family]—2035.

Lubabu'l-Aḥbār: [Islamic theo. (Sunnite trad.)—Miḥmūd Maḥmūd's popular literature based on Ahmad b. 'Aḥmad's collection of 400 selected trads.]-2522 to 2525.

31

Ma'ānu'l-Yaqūḍi (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2637.

(Aḥ)-Mabsūt (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Maḥabba (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Maḥabba (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Maḥabba (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Maḥabba (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Maḥabba (Shiite Ahl-i-Bayt's Islamic theo. (Shiite trad.))—Miḥmūd Ḥadi Naḥas's work dealing with the life of the Holy Prophet and a selected collection of 40 Traditions]-2410.

Khawātimu's-Sālihūn : [Islamic theol., Shiite trad.]—Abū 'Alī's collection of traits pertaining to a saint—[e.g., a person who carries a cane, rock, crystal, etc.]—2610.

Kifāyatū'l-I'tiqād : [Islamic theol., (Sunnite belief)—Muhammad Nizāmū'd-Dīn's relation on Shiite narrations on the topic of succession, compiled at the instance of a celebrated Divine, Shaikh 'Abdu'l-Haqq Dihlawī]—2967.

— — — **Mu'minin** : [Islamic theol., Shiite sect.—Muhammad Sa'ād Shāghir's poem in Sugh (Gujarati) in Arabic work dealing with the traits of the righteous and pious men]—2851 to 2854.

— — — **Qārī** : [Islamic theol., Shiite sect.—Pīr 'Alī's series of commentaries (Muhnawī) on the subject of the Qur'ān composed in 1130/1724]—2414.

Kitābu-Mabīn : [Islamic theol., Shiite sect.—Muhammad Husayn's assertion in Kitābu-Hadrat 'A. to support the Holy Prophet—[in 1181/1767]—2777.

— — **Nāma-e-Hukmā** : [Islamic theol., Shiite sect.—A series of treatises on the Imamate and the Imam—264.

Kitābu-l-Imānat : [Islamic theol., Shiite sect.—Imam Ali's graphic controversial treatise about the Imānat and Hadrat 'A.—[in 1181/1767]—2777 to 2974.

— — **u's Shawm** : [Islamic theol., Shiite sect.—Abū 'Alī's treatise on fasting]—2799/2.

L

Lata'if e Ghayāthiyah : [Islamic theol., Shiite sect.—Muhammad Kāzī's treatise on the Imam—262.

Layam'a-e-Sūfī : [Islamic theol., Shiite sect.—Muhammad Tahir's poem in commentaries on Kitābu-l-Imānat—[in 1181/1767]—2777 to 2745.

— — — **u'l Iāwī** : [Islamic theol., Shiite sect.—Muhammad Mu'ayyid's poem in the Shiite Imam Hasan 'Ali's 'Awā'id—Awat, that deals with the attributes of the Holy Prophet and the Imam—compiled in 1181/1767—2744.

Kanz al-Iver in the 'awā'ir: an Islamic theo., [awf - 'Abdu'l-
 ... 'Mahmūd al-... the... correct
 tion of Qur'ān comp., 1040/1675]-2412.

Kashyap-Shukla : The History of Mathematics in India from the Pre-History to the Present Day
 Part I: From the Pre-History to the Middle Ages
 Published by the Indian Council of Cultural Relations, New Delhi, India
 ISBN-10: 81-7695-188-0; ISBN-13: 978-81-7695-188-0

Khamsa-e-Mahbub and **Khamsa-e-Mahmud** Shah 'Alauddin
 Khushroo's son's treatise on the 4 principles of
 government for Asaf Jah VI of Hyderabad, Mir Mahbub
 'Ali Khan in 1755-56.

Suzana Kott, M.A., Ph.D., J.S.M., Ph.D., (Anti-Kämp) and hypote-
et-Zam. A. Naito's relation for hypocrites
[A. Naito] Anti-Kämp 17.4.2022

comp. 755/1354]-2804 to 2806.

-2796

[illegible]

— — + N = n; I have also found Muhammad's name
in other versions of his work, 'Nasab al-
Umayyad' as well as with the correct relation
of the family etc. See on this Q. no. 247

Mathias-Speak | Is auct. | An. Value system, be. | 2032/3.

2. What did you do this morning, reply to a copy of the letter and
3. What did you do this morning?

1. *Wāḡ-e Nād-e A.* [is an] *Shute* — Characteristics of Nād-e
 'Ad [the Shute Darū] 2870, iv

Janāhu'n-Najāb [Islamic theol., (Shiite belief — Faidu'llah b. Muḥammad
'Alī's short treatise based on eminent scholars' Arabic
works]-2821.

Jawāb-e-Risāla-e-Kash'ū'l-Ḥujātā [Islamic theol., (Shiite belief) — Anony.
controversial work refuting Iḥyā' al-'Ulūm 'Ashariyya
for upholding the view on the infallibility of the
Nabī al-Muḥammadī (ḥw) Prophet — cont.]

Jawāb-e-Nāma: [A treatise on the sciences, poems and other imperials]
-2711/7.

— 'Alī b. ... [controversial work refuting Muḥammad Rāzī's
treatise on the sciences of Naṣir al-Dīn]

— **Jadā'id** [Islamic theol., (Shiite belief) — Qanān 'Alī b. Ḥusayn
(author of the 'al-Ḥawāṣir' treatise) — treatise about
Ḥawāṣir, his views on the sciences and Arabic
grammar and literature]

(A) — **Jadā'id** [Islamic theol., (Shiite belief) — Qanān 'Alī b. Ḥusayn
— treatise about the sciences and literature]

Jasārū'l-Lat [Islamic theol., (Shiite belief) — Qanān 'Alī b. Ḥusayn
— treatise about the sciences and literature on
the sciences of the 'al-Ḥawāṣir' treatise and the 'Al-Ḥawāṣir'
-2440 and 2441.

in

Kaḥf [Islamic theol., (Shiite belief) — Anony. — treatise
on the sciences]

Kaḥf [Islamic theol., (Shiite belief) — Anony. — treatise on the
sciences of the 'al-Ḥawāṣir' treatise and the 'Al-Ḥawāṣir'
treatise on Namāz]-2717 and 2718

Kaḥf-e-Aḥd [Islamic theol., (Shiite belief) — Anony. —
treatise on the sciences of the 'al-Ḥawāṣir' treatise and the 'Al-Ḥawāṣir'
-2440 and 2441]

Kaḥf-e-Qudrat [Islamic theol., (Shiite belief) — Anony. — treatise on the
potence of God]-3028/5.

— [Islamic theol., Shiite belief] — Anon., treatise supporting
 the Hadrat 'Ali's direct succession to Holy Prophet's
 صلى الله عليه وآله favouring 'Ali and verse — [1000]
 - 7.

Iyqāh Iatāfat-i Maqālāt [Islamic theol. Shiite theol.] —
 Kalān'i Dīn Khan Dīnawar's controversial work con-
 taining refutation of the sunnites, which forms the 2nd
 part of this work and even the title of the main work
 at the end — 2003/2.

Iyqān'ūn-Niyām [Islamic theol. — Muqabala Kullī Li-Ann] [Islamic theol.,
 Shiite I — 1] — Muhammad Baqir Agha's critical exposit-
 ion pertaining the following of any of the 4 principal
 rituals (Imāns) or prayers based on traditions and stan-
 dard works]-2822.

Jabr wa Idtijār [Islamic theol., Shiite theol.] — Sayyid Dīn Agha
 Husayn's abstract on the topic — 2025/2 and
 3020/6.

Jalān'ī-Aḥlān wa Jawā' Ahzān dar Tafsīr-i Qur'ān [Islamic theol.,
 (S. documents) — Ahl-i Mahall's commentary
 on Qur'ān transcribed by Sayyid Dīn Husayn's time 1222/
 1591] 2512 to 2516.

Jāma'-e-Aḥbāl [Islamic theol., Shiite I] — compiled by Mahommed
 Amīn's well known work Vol. I compiled by Izzu'd
 Dīn Mahommed and Vol. II by Nigām-i Husayn
 Sa'adat composed by Shah Achay Dīnawar — 2722
 -2723 to 2735.

Jawā' Kaṭṭar [Islamic theol., Shiite I] — Aḥmad Ali Agha's
 authoritative collection of fatwas and explanations from
 scholars pertaining to Jawā' Kaṭṭar comp., 1285/18
 -2827.

Jawā'ir-i-Jawā'ir [Islamic theol. (Shite I — 1)] — Aḥmad Ali Agha's Persian
 commentary on Najmu'd Dīn al-Jawā'ir's Arabic work,
 'Sharāh'ī Isāmī' comp., 1161/1848] 2705.

Ida'atu'sh-Shar'ih Iza'at Zalam'i-Mat'a [Islamic theo., Sunnite belief]
 Anonymous treatise relating the Shiite practice of Mut'a-
 (marriage). -2901

Idar'abu'l-Mafâthih fî Azhar [Islamic theo., selection of prayers by
 Shahrânî Mashî] -2901

Ips'adu'l-Muhtam [Islamic theo., law book] -2901
 (Ips'adu'l-Muhtam) -2901
 Ips'adu'l-Muhtam [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901
 It'ad-e-Is'ad [Islamic theo., law book] -2901

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hayat Arwah (1911) [1911] 2893-2894 [1911] 2893-2894
work comp. 1109/1698] 2893 and 2894.

Hadāqu'l-Qir'āt : [Islamic theol., law]—Muhammad Asad Husam Yazli's treatise on correct recitation based on 'Āsam's version comp., 1242/1926-2416.

Hadīqa-e-Suṭāniyyah : [Islamic theol., (Sunite belief)] Sayyid Husam's treatise written for king Aqbal 'Alī Shāh of Oudh] 2429.

Ḥadiyatu'l-Muttaqin : [Islamic theol., (Sunite belief)]—Faqr Maḥṣī's treatise comp. 1064/1653]-2740 to 2748 and 2762/1.

—'sh-Shī'ah : [Islamic theol., (Shiite belief)]—Muhammad Aḥmad's treatise on attributes of 12 Imāms and their rights to Imāmat]-2843 and 2844.

Ḥadīth-e-Pisat : [Islamic theol., (Sunite belief)] Arabic saying, Ḥadrat 'Alī extracted from Muḥṣan R'āy, which is supposed to have been compiled by Ibn 'Abd al-ʿAzīz-Salīq (d. 1100) 272.

Ḥadiyatu'l-Maulā : [Islamic theol., (Shiite belief)]—Muhammad Amin Qasbi's tract on attributes, namaz and prayers etc., based on Amir Sayyid Muhammad Husam 'Āmir's teachings] 2754/2.

— — — M'uminin : [Islamic theol., (Shiite belief)] Sayyid An-Naqīb's treatise about the 12th Imām Mahdī]-2021.

— — —'s Safar : [Islamic theol., Hanafi]—Abd al-Razzāq's short treatise with some reference to obligatory prayer]-2442/3.

— — —'s Shārif : [Islamic theol., (Sunite belief)]—Husam's tract on state attributes of Imām after 'Alī Sayyid Muḥammad [abāt]-194.

— — —'s Shawm : [Islamic theol., (Sunite belief)]—Anwar's treatise on fasting dedicated to Sultan Aurangzeb, 1687-1690.

Ḥatt-band : [Islamic theol., (Sunite belief)]—'Abd al-Wadī's Persian verse comp., in Kāshī's imitation]-2080/3.

Ḥanatu'l-Iqbāl wa Ḥanatu'l-Fudalā : [Islamic theol., (Sunite belief)]—'Abd al-Din Umar Muḥṣī's collection of complicated and difficult points] 2663/1.

(Fatwā) [Islamic treatise (Sunnite High) Qaḍī Muḥammad Irṭāḍā
[عبدالقادر عیسیٰ خان عیسیٰ خان عیسیٰ خان عیسیٰ خان عیسیٰ خان]
2842]

Fawā'id-e-Mahmūd Khān: [Islamic treatise (Fāṭi-Sunnite)]—Collection of
complicated and difficult points of high dedication
to Maḥmūd Khān Sulṭān]-2068.

—Fāṭi-Mahmūd: [Islamic treatise (Shute head: Anonymous Notes)]-287

(A') — a'ī Tāḥī ḥaḥḥat 'r ka ḥḥ [Islamic treatise, controversy, Ahmad
Sāyid al-Muḥḥad's tract, relating the elevation of
some scholars that Muḥḥad Naḥḥ and follow the
Sunnite's innovation of a'ī ḥaḥḥa] - 3008

Lawāṭīḥ (Sharḥ Dīwān-e-Hadīṭ: A.) [Islamic treatise—Persian poetry—
Māḥḥ's Persian commentary on Arabic Dīwān ascri-
bed to Maḥḥat 'Alī]-2563 to 2571

High-e-Baburī [Islamic treatise, (Sunnite High) —Nāḥḥ al-Dīn's treatise
compiled by Emperor Babur's order]-2070

—Barāḥ: [Islamic treatise (Sunnite High) Nāḥḥ al-Dīn Lāḥḥ's
well know treatise comp., 980/1581]-2079.

Fīqrāt-e-'A.ī Darḥāt [Islamic treatise (Shute head: Sāḥḥ Mirza's notes
on 12 Shute Imāns based on 3 standard Shute works]
-2010 and 2011.

Faṣṣṣe-Sulṭānīyya [Islamic treatise—Collection of Shute prayers—
Maḥḥ al-Muḥḥad's collection of Arabic prayers with
their pp. comp. for Shāḥ Sulṭān ḥaḥḥ]-2003/10

Fuṣūḥ-e-Jānāḥyāḥ [Islamic treatise—Lawāṭīḥ: Anonymous and short
treatise—Collection of glorious Qur'ān]-2400/1

G

Gauḥar-e-Murād [Islamic treatise (Shute Treatise) —Abū al-Razzāq's famous
treatise—1000/1052 and 1071/112 and 1081]-2010
to 2014.

Gauḥar-e-Ma'ānī [Islamic treatise (Shute High) —All Akḥar Maḥḥ
a'ī-Husamī's treatise comp., 1172-1175]-2060

Faid-e-Qad fūd dar Ḥaṣan al-ḥalāl e-kalam-e-Ḥusn : [Islamic theol., (shute belief) Anony., controversial tract, (on the necessity of certifying in Ḥusn's assumption, on certain points)]-3022.

Fāb-Nāma : [Islamic theol., (qawl-e-ḥaṣṣ) Anony., versified tract on devotion through ḥaṣṣ (Qur'ān)]-2423/2.

Faraid-e-Irtadhiyyah : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) Muḥammad Irtadhiyyah's poem in tractise on Muḥammad's of Inheritance and partition comp., 1226/1811]-665.

— — — **al-A'zhar** : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — A'zhar's lines treatise on laws of Inheritance comp. during Aḥmad Shah's reign 1747-12-1857 to 1857-2007.

Farhang-e-Fiqh : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Farhang-e-Fiqh's treatise on ḥaṣṣ (Qur'ān) and ḥaṣṣ (Qur'ān) for the 4 sunnite schools]-2705.

Fatāwī : [Islamic theol., (shute belief) — Fatāwī's treatise on Shute 'Ummā's and a letter of war between Shute and Sunnites of Delhi and Lucknow]-3004/1.

— — — **e-Aḥmadiyah** : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Aḥmadiyah's treatise on Fiqh comp. after 1481-1541]-2672 to 2674.

Qurā' Khān : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Qurā' Khān's treatise on Hanafi's-Fiqh]-2609.

Fathu'l-Maḥām : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Fathu'l-Maḥām's treatise on ḥaṣṣ (Qur'ān) and ḥaṣṣ (Qur'ān) comp. 1472.

— — — **Muḥḥin** : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Muḥḥin's treatise on ḥaṣṣ (Qur'ān) and ḥaṣṣ (Qur'ān) comp. 1472.

Fathu'r-Raḥmān bi Farjūnāt-l-Qur'ān : [Islamic theol., (ḥijab-e-shari'at) — Fathu'r-Raḥmān's introduction to the literal text of complete text of the ḥaṣṣ (Qur'ān) comp., 1151-1738]-2469/1.

— — — **Rijāl** : [Islamic theol., short Arabic Prayers]-2870/10.

Dah-Majlis. [Islamic theol. (Sunni belief). Anony. collection of letters to
the Imam of the Holy prophet. State library, Istanbul, 1911. 1. 8. 11. Kinda al-sh-Shuhada'-2352/1-2357.

(A'd)-Dirbati, Hadrat-yah: Islamic theol. (Shiite belief). Hadrat-yah
in controversy work on Ma'na comp. 1187/232-
3002.

Dastir al-'Ama. Islamic theol. (Sunni) by Muhammad J'afar A'la-
al-'A'li's short treatise on prayers and fasting] 2764.

- Kha'fih. Islamic theol. (Sunni belief). Mu'awwidh I.D. in
Hizmat al-Mu'awwidh's rare autograph work on the Holy
observances a. 1187/232 comp. 1211/235] 2765.

Dawā' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. revealed collec-
tion of the 100 chapters pertaining to the death of Holy
Prophet Muhammad (a. 1187/232 in Khish's *Read al-
sh-Shuhadā'*)-2500.

Dawā' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Mu'awwidh I.D. in
Hizmat al-Mu'awwidh's rare autograph work on the Holy
observances a. 1187/232 comp. 1211/235] 2765.

Dhāt al-Katū' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. treatise on
Nawā' al-M. in 123/120 for Muhammad Dūshīm
'Ad *Khān Bahādur a'l-Husaini*]-2781.

Dhāt al-Katū' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. collection
of 40 Qat'ān. verses with their 3000 praise of Hadrat
'Ali comp. 1170-1755]-2820.

Dhāt al-Katū' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. treatise on
Nawā' al-M. in 123/120 for Muhammad Dūshīm
'Ad *Khān Bahādur a'l-Husaini*]-2781.

Dhāt al-Katū' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. collection
of 40 Qat'ān. verses with their 3000 praise of Hadrat
'Ali comp. 1170-1755]-2820.

Dhāt al-Katū' al-M. Islamic theol. (Sunni belief). Anony. collection
of 40 Qat'ān. verses with their 3000 praise of Hadrat
'Ali comp. 1170-1755]-2820.

Barâtu'n—Najât [Islamic theol. (Shiite faith) Muhammad 'Alī Rashīd's selection from Sayyid 'Alī Ṭabāṭabā'ī's collection of fatwās]—2774.

(A'l)-Baṣā'ir-i-h'l-Wujûh-wa'n-Nazâr [Islamic theol. Tafsir: Abu'l Fadl al-Muhammadi's old valuable and rare critical study of the Glorious Qur'ân comp. before 577/1181]—2427.

Bashâratu'l-Muṣṭafâ li-Shi'âti'l-Murtaḍâ [Islamic theol. (Shiite trad.) Anony. pp. of a collection of trads pertaining to the happiness for Hadrat 'Aṭī's friend's etc.]

— u'sh-Shi'ah : [Islamic theol. Shiite trad.] Maṭa'ah-i-'Alī Khân's commentary on the q. titles of the Shiite Imāms based on Glorious Qur'ân and trad.]—2331.

Bustānu'l-Muhaddithin [Islamic theol., trad. (Sunnite) 'Abd al-Hayy Dibrawī's Bibliography of works on trad. and commentaries together with the lives of trad. transmitters and commentators]—2560 and 2561.

Ch-h'l-Hadith : [Islamic theol. Trad. (Sunnite) collection of 40 trads. with their pp.]—2525/61.

— — — Islamic theol., Trad. (Sunnites, Anonymous collection of 40 trads. with their pp.]—2554.

— — — [Islamic theol., Trad. — Zaynu'd Din 'Aṭī's collection of 40 trads. with notes. 50 pp. comp. during Sultan Muhammad Qutb Shāh's reign.]—2851/1.

— Kalma [Islamic theol. (Shiite belief "Alm") — 'Azīm's collection of 40 paragraphs of religious and moral lessons, queries and comp. for Munir al-Muḥḥiṭi's collector]—2317.

— Sûrah, [Islamic theol. (Shiite trad.) Anony. collection of 40 trads. with pp.]—2423/7.

10

Idā'at-i-Ḥimm : [Islamic theol. (Sunnite) 'Alī Shāh's Arabic tract showing the philosophy of driving away grief and affliction]—3029/5.

Aqilah MA YA uz Bihis Syaitan (Islamic theol. (Conte High) Muhammad
 Amin, Mu'ajjah's tract on obligation of prayer 2753/1

Approved by Junta Najun's 1980 Abstract on Population, Philosophy
 T. S. S. 'Najun's 1980 Abstract on Population, Philosophy
 Wāibu' [Wuñu] - 3029/13.

Arbuthnot, Thomas. *Isidore et al. (St. Isidore)*.—*Arbuthnot* [London] 1466.
[rare and short treatise]—2830.

Avalokiteśvara = Isara-tō-ze = Light-natured Bodhi King. Synonym
short treatise on prayers)-2694

A. L. Atch'lam'te to Sarah F. Mearns [Larkin House] - copies of trial.
 (Sonnet) A. L. Atch'lam'te to Sarah F. Mearns - commentary on
 Mash Atch'lam'te to Sarah F. Mearns - date: 1901, 1902/1903-1904
 -2530 to 2545

Ad Arabic-Saudi, with Arabic text, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642

A trick on the knowledge of the man's death, ... (Shakespeare)

Lawrence, the author of "The
restoration of the nation, 1781-1789"

*Aynū'l-Hayāt. — I am a poet of the ṣūfī ṭāwīz. Muḥib's extensive record indicates a wide circulation. Our two verses are [Trad.]—2877 to 2881.

- **Infāt** (I think they ~~controversial~~ ~~are~~) Anonymous short note collected from **Kutā** (I have not) 302.

B

1341. *Maṣnawī* — *Ḥadīth* (Farsi — *Waqfiyyah*) 490ms (1 mat.
Ḥadīth) ad's exhaustive commentary on clonings qur'an
comp. before 819/1445]—2433 and 2434.

Parāḥimī, al-ʿabīdī (Islamic theocracy) Kama'u'd-Din pp. 60
 1974 Hajar's Arabic work that deals with the relation
 of state and religion to Khalifa's illegal usurpation)
 ~2061 and 2062.

Amal-e-Rūz e-Ālīyat [Islamic theol. (Shiite high) anony. collection of sayings to be recited on 'Ashura (10th of Muharram)] -2800/2.

Amāratu'l Kalām 'r Kabīr [Islamic theol. Muḥarrat al-Imam's detailed Rite Qur'ānic Index comp. 1103/1693]-2467.

'Amūl [Islamic theol. (Shiite high) anony. treatise on 2467 and 2468 on uṣūl and Furū']-2801, 2.

Anṣu'l-Akhyār [Islamic theol. (same trad.) Muḥarrat al-Imam's Autograph treatise comp. 1123/1710]-2467.

— **Atqiyā** [Islamic theol. (Shiite high) anony. work, based on Abū 'l-Raḥmān's anonymous treatise on uṣūl and Trad.]-2815.

Anisū't-Tujjār [Islamic theol. (Shiite high) Muḥarrat al-Imam's Nuā'ī's guide for business]-2478.

A note on Hadīth in Persian [Islamic theol. trad. anony. Persian notes on Hadīth]-3020/14.

A note on the position of Haḍrat 'Alī [ver. in to Muḥarrat al-Imam; [Islamic theol. (Shiite high) Muḥarrat al-Imam's continuation on Haḍrat 'Alī's Hadīth]-2485.

Anwāru'l-Abṣār [I-Iaḥiq Maḥarrat al-Imam's Maḥarrat al-Imam's -Athār: [Islamic theol. (Shiite high) Muḥarrat al-Imam's Adhkar al-sā'is treatise dealing with the issue of superiority of Imāmat over Nuḍwat comp. during 1300/1883-2013 and 3014.

Aqābu'-'Arḥ [Islamic theol. (Shiite high) [I-Iaḥiq Muḥarrat al-Imam's collection of notes on uṣūl and Furū' in Persian]-2834/2.

Aqā'id-e Dīnyā [Islamic theol. (Shiite high) Persian treatise by Dīn-e-Sā'id Aḥmad on uṣūl and Furū' in Persian]-2710/2 and 2711/2.

— — [Islamic theol. (Shiite high) anony. treatise in form of questions and answers]-2830.

— — **Onu Shāhiyāt** [Islamic theol. (Shiite high) collection of rules and regulations to be observed during Muharram, framed by Sulṭān 'Abd. al-Ōthmānī's command)-2832.

INDEX II

Names of Titles

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

A

- Ab ānu'-Mustabshir:** [Islamic theol. Shīte belief] Muḥa 'Abdu'l-Wahāb's account of 'Abdu' Ad Shīrazī's conversion to Shīte faith [Comp. 1202-1252] -227-2278 and 2802
- Ad'iyā:** [Islamic theol. collection of different prayers and Hicr] -2534/3.
- A Fatwā:** [Havāṭa'l-Arwān 'n Taqḥiq Bā'u'l-Awāwī'l 'Abid] [Islamic theol. Muḥammad u'l Qāim fatwā on fiqh] -2603/2.
- A few Persian Ghazals:** Persian poetry 'Abbās Aī's lyrical poems) -2423/7
- Abāth al-Nabūshāh:** Aī, Islamic theol. collection of Iraqī (sunrites) Anonymous collection in praise of Hadrat 'Alī compiled by a Shīte]-2640.
- Abūmu'l-Haiwār:** [Islamic theol. (Sunrite logic)] Fīshū al Dīn of Neillor's short treatise pertaining to rating of armās, lawful or forbidden by the 4 Sunrite Schools] -2690.
- U's Ḥa āt:** [Islamic theol. fiqh] Anonymous treatise question and answer type on elementary principles of Islamic faith, -2907
- Abūnu'l-Qaṣas:** [Islamic theol. Aī] Anonymous treatise of Abū Bakr b. Muhammad b. Zaidā (-Fūṣṣ Arabic work (Katabi's-sittina l-Jamū'l-l-yatāt based on Sirā-e-Yūsuf of Glorious Qur'ān -2405.

Anonymous Compilations

b) Unknown Authors

2407, 2410/1 and 2, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 2681, 2682, 2683, 2684, 2685, 2686, 2687, 2688, 2689, 2690, 2691, 2692, 2693, 2694, 2695, 2696, 2697, 2698, 2699, 2700, 2701, 2702, 2703, 2704, 2705, 2706, 2707, 2708, 2709, 2710, 2711, 2712, 2713, 2714, 2715, 2716, 2717, 2718, 2719, 2720, 2721, 2722, 2723, 2724, 2725, 2726, 2727, 2728, 2729, 2730, 2731, 2732, 2733, 2734, 2735, 2736, 2737, 2738, 2739, 2740, 2741, 2742, 2743, 2744, 2745, 2746, 2747, 2748, 2749, 2750, 2751, 2752, 2753, 2754, 2755, 2756, 2757, 2758, 2759, 2760, 2761, 2762, 2763, 2764, 2765, 2766, 2767, 2768, 2769, 2770, 2771, 2772, 2773, 2774, 2775, 2776, 2777, 2778, 2779, 2780, 2781, 2782, 2783, 2784, 2785, 2786, 2787, 2788, 2789, 2790, 2791, 2792, 2793, 2794, 2795, 2796, 2797, 2798, 2799, 2800, 2801, 2802, 2803, 2804, 2805, 2806, 2807, 2808, 2809, 2810, 2811, 2812, 2813, 2814, 2815, 2816, 2817, 2818, 2819, 2820, 2821, 2822, 2823, 2824, 2825, 2826, 2827, 2828, 2829, 2830, 2831, 2832, 2833, 2834, 2835, 2836, 2837, 2838, 2839, 2840, 2841, 2842, 2843, 2844, 2845, 2846, 2847, 2848, 2849, 2850, 2851, 2852, 2853, 2854, 2855, 2856, 2857, 2858, 2859, 2860, 2861, 2862, 2863, 2864, 2865, 2866, 2867, 2868, 2869, 2870, 2871, 2872, 2873, 2874, 2875, 2876, 2877, 2878, 2879, 2880, 2881, 2882, 2883, 2884, 2885, 2886, 2887, 2888, 2889, 2890, 2891, 2892, 2893, 2894, 2895, 2896, 2897, 2898, 2899, 2900, 2901, 2902, 2903, 2904, 2905, 2906, 2907, 2908, 2909, 2910, 2911, 2912, 2913, 2914, 2915, 2916, 2917, 2918, 2919, 2920, 2921, 2922, 2923, 2924, 2925, 2926, 2927, 2928, 2929, 2930, 2931, 2932, 2933, 2934, 2935, 2936, 2937, 2938, 2939, 2940, 2941, 2942, 2943, 2944, 2945, 2946, 2947, 2948, 2949, 2950, 2951, 2952, 2953, 2954, 2955, 2956, 2957, 2958, 2959, 2960, 2961, 2962, 2963, 2964, 2965, 2966, 2967, 2968, 2969, 2970, 2971, 2972, 2973, 2974, 2975, 2976, 2977, 2978, 2979, 2980, 2981, 2982, 2983, 2984, 2985, 2986, 2987, 2988, 2989, 2990, 2991, 2992, 2993, 2994, 2995, 2996, 2997, 2998, 2999, 3000, 3001, 3002, 3003, 3004, 3005, 3006, 3007, 3008, 3009, 3010, 3011, 3012, 3013, 3014, 3015, 3016, 3017, 3018, 3019, 3020, 3021, 3022, 3023, 3024, 3025, 3026, 3027, 3028, 3029, 3030, 3031, 3032, 3033, 3034, 3035, 3036, 3037, 3038, 3039, 3040, 3041, 3042, 3043, 3044, 3045, 3046, 3047, 3048, 3049, 3050, 3051, 3052, 3053, 3054, 3055, 3056, 3057, 3058, 3059, 3060, 3061, 3062, 3063, 3064, 3065, 3066, 3067, 3068, 3069, 3070, 3071, 3072, 3073, 3074, 3075, 3076, 3077, 3078, 3079, 3080, 3081, 3082, 3083, 3084, 3085, 3086, 3087, 3088, 3089, 309

Wahid'ul-Ah 'Abd'ul-Jah Muhammad a't-Tawzi [Heol and Tal -
2536, 2539/i and 2545/i.

Wahid'ah Saah 'Abbas [celebrated Summa Heol d 1170 m. 245/6.

Y

Yah'ib Chah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Yah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Yah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Yah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Yah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Z

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Zah'ib'ah [see comment for 145/146] 242/1.

Sayyid Murtaḍā 'Aṭm-u l-Hudā [Theol. and trad. d. 436/1046-2535/v]

— Wapba'ddin Ahmad [theol. comp. and trad. of XIII-XIX]-2562

— Zai'nu'l-'Ābidin (Shu'ā u'l-Mulk, [Nawāb of Murshidābād during 1184-1208/1772-1793]-2915/ii)

T

Ṭabir Ḥāf ḥ Iṣṭa'an [Theol. during 85-85/1146-1147 in Irān]-2402 and 2403.

Ṭān'oddīn Abū 'aḍd Abū Sa'ad Ḥasir [Turkish] [theol. comp. d. 1191/1201]-2803/i.

Ṭiabat Jung, Arcot, Aḥlu-'Ghaffar N.ān]-2997

Turao 'Ad ḥ an-Najr Sir Salar Jung II [One of the Prime Ministers of Hyderabad, Collector's Grandfather d. 1300/1882]-2471, 2531, 2825, 2826 and 2928/iv.

U

'U'adhu'lan [Shaibani, Prince during 947-949/1537-1539]-2407/v

'Umar b. Ma'attab, the Second Orthodox Caliph]-2572/v and 2613/iv

— J'afī [Theol. and trad.]-2625.

'Uḥḥān 'Ad-Nān, M. (Najr) [in Najr] [The last king of Hyderabad, 2998/v.

Uṣṭā f-Samrī [Theol. of XII/XV, II]-2439/v, 2610/iv and 2424

'Uṭhmān a'l-Dānī [comp. d. 414/1023-2421/v]

— bu Ḥarīr Abnūl [Governor of Basra]-2762/v

— u s-Samānī [Theol. and Commentator]-2472

W

Wazā Jān [Nawāb of Arcot]-2928/v

Wazī Shihīr Shams 'Umar Daurānī / Zawan [Theol. and commentator d. 849/1445]-2433 and 2434/i.

Sultân Ibrâhim Adil, Sixth (1220-1235) King of B. S., ur d. 107-162]-

2713/0 and 2960.

NEW LONDON, CT, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2

So, for $A(k) = A$ and $S = I$, $Z(n) [k = 0]$ of S is, for d
 $(-1)^{d-1} \frac{1}{d} \log 2$.

Sax and Abraham (1981) have a hypothesis regarding the 2000/1 and 2001/2

AND Mr. A. NORTON, Secretary, 111-1120 14th St. N.W.,
Washington, D.C. 20004.

Schizothorax sinensis (Steindachner) [Catfish, Cypriniformes] 002109

1882 and 1883.

reign of Nasru'd din Hyder of Oudh]-1002/1.

- Padel 'Aot hân-2011.

2171.

Mar 27, 1891

— Madaḡhiru Huanu (Theol.) 4830.

Mathematics Subject Classification. 35B45, 35B65, 35B99, 35D30, 35D45, 35D55, 35D65, 35D99, 35F30, 35F45, 35F50, 35F60, 35F99, 35G30, 35G45, 35G50, 35G60, 35G99, 35H30, 35H45, 35H50, 35H60, 35H99, 35J30, 35J45, 35J50, 35J60, 35J99, 35K30, 35K45, 35K50, 35K60, 35K99, 35L30, 35L45, 35L50, 35L60, 35L99, 35M30, 35M45, 35M50, 35M60, 35M99, 35P30, 35P45, 35P50, 35P60, 35P99, 35Q30, 35Q45, 35Q50, 35Q60, 35Q99, 35R30, 35R45, 35R50, 35R60, 35R99, 35S30, 35S45, 35S50, 35S60, 35S99, 35T30, 35T45, 35T50, 35T60, 35T99, 35U30, 35U45, 35U50, 35U60, 35U99, 35V30, 35V45, 35V50, 35V60, 35V99, 35W30, 35W45, 35W50, 35W60, 35W99, 35X30, 35X45, 35X50, 35X60, 35X99, 35Y30, 35Y45, 35Y50, 35Y60, 35Y99, 35Z30, 35Z45, 35Z50, 35Z60, 35Z99, 35A01, 35A02, 35A03, 35A04, 35A05, 35A06, 35A07, 35A08, 35A09, 35A10, 35A11, 35A12, 35A13, 35A14, 35A15, 35A16, 35A17, 35A18, 35A19, 35A20, 35A21, 35A22, 35A23, 35A24, 35A25, 35A26, 35A27, 35A28, 35A29, 35A30, 35A31, 35A32, 35A33, 35A34, 35A35, 35A36, 35A37, 35A38, 35A39, 35A40, 35A41, 35A42, 35A43, 35A44, 35A45, 35A46, 35A47, 35A48, 35A49, 35A50, 35A51, 35A52, 35A53, 35A54, 35A55, 35A56, 35A57, 35A58, 35A59, 35A60, 35A61, 35A62, 35A63, 35A64, 35A65, 35A66, 35A67, 35A68, 35A69, 35A70, 35A71, 35A72, 35A73, 35A74, 35A75, 35A76, 35A77, 35A78, 35A79, 35A80, 35A81, 35A82, 35A83, 35A84, 35A85, 35A86, 35A87, 35A88, 35A89, 35A90, 35A91, 35A92, 35A93, 35A94, 35A95, 35A96, 35A97, 35A98, 35A99, 35B01, 35B02, 35B03, 35B04, 35B05, 35B06, 35B07, 35B08, 35B09, 35B10, 35B11, 35B12, 35B13, 35B14, 35B15, 35B16, 35B17, 35B18, 35B19, 35B20, 35B21, 35B22, 35B23, 35B24, 35B25, 35B26, 35B27, 35B28, 35B29, 35B30, 35B31, 35B32, 35B33, 35B34, 35B35, 35B36, 35B37, 35B38, 35B39, 35B40, 35B41, 35B42, 35B43, 35B44, 35B45, 35B46, 35B47, 35B48, 35B49, 35B50, 35B51, 35B52, 35B53, 35B54, 35B55, 35B56, 35B57, 35B58, 35B59, 35B60, 35B61, 35B62, 35B63, 35B64, 35B65, 35B66, 35B67, 35B68, 35B69, 35B70, 35B71, 35B72, 35B73, 35B74, 35B75, 35B76, 35B77, 35B78, 35B79, 35B80, 35B81, 35B82, 35B83, 35B84, 35B85, 35B86, 35B87, 35B88, 35B89, 35B90, 35B91, 35B92, 35B93, 35B94, 35B95, 35B96, 35B97, 35B98, 35B99, 35C01, 35C02, 35C03, 35C04, 35C05, 35C06, 35C07, 35C08, 35C09, 35C10, 35C11, 35C12, 35C13, 35C14, 35C15, 35C16, 35C17, 35C18, 35C19, 35C20, 35C21, 35C22, 35C23, 35C24, 35C25, 35C26, 35C27, 35C28, 35C29, 35C30, 35C31, 35C32, 35C33, 35C34, 35C35, 35C36, 35C37, 35C38, 35C39, 35C40, 35C41, 35C42, 35C43, 35C44, 35C45, 35C46, 35C47, 35C48, 35C49, 35C50, 35C51, 35C52, 35C53, 35C54, 35C55, 35C56, 35C57, 35C58, 35C59, 35C60, 35C61, 35C62, 35C63, 35C64, 35C65, 35C66, 35C67, 35C68, 35C69, 35C70, 35C71, 35C72, 35C73, 35C74, 35C75, 35C76, 35C77, 35C78, 35C79, 35C80, 35C81, 35C82, 35C83, 35C84, 35C85, 35C86, 35C87, 35C88, 35C89, 35C90, 35C91, 35C92, 35C93, 35C94, 35C95, 35C96, 35C97, 35C98, 35C99, 35D01, 35D02, 35D03, 35D04, 35D05, 35D06, 35D07, 35D08, 35D09, 35D10, 35D11, 35D12, 35D13, 35D14, 35D15, 35D16, 35D17, 35D18, 35D19, 35D20, 35D21, 35D22, 35D23, 35D24, 35D25, 35D26, 35D27, 35D28, 35D29, 35D30, 35D31, 35D32, 35D33, 35D34, 35D35, 35D36, 35D37, 35D38, 35D39, 35D40, 35D41, 35D42, 35D43, 35D44, 35D45, 35D46, 35D47, 35D48, 35D49, 35D50, 35D51, 35D52, 35D53, 35D54, 35D55, 35D56, 35D57, 35D58, 35D59, 35D60, 35D61, 35D62, 35D63, 35D64, 35D65, 35D66, 35D67, 35D68, 35D69, 35D70, 35D71, 35D72, 35D73, 35D74, 35D75, 35D76, 35D77, 35D78, 35D79, 35D80, 35D81, 35D82, 35D83, 35D84, 35D85, 35D86, 35D87, 35D88, 35D89, 35D90, 35D91, 35D92, 35D93, 35D94, 35D95, 35D96, 35D97, 35D98, 35D99, 35E01, 35E02, 35E03, 35E04, 35E05, 35E06, 35E07, 35E08, 35E09, 35E10, 35E11, 35E12, 35E13, 35E14, 35E15, 35E16, 35E17, 35E18, 35E19, 35E20, 35E21, 35E22, 35E23, 35E24, 35E25, 35E26, 35E27, 35E28, 35E29, 35E30, 35E31, 35E32, 35E33, 35E34, 35E35, 35E36, 35E37, 35E38, 35E39, 35E40, 35E41, 35E42, 35E43, 35E44, 35E45, 35E46, 35E47, 35E48, 35E49, 35E50, 35E51, 35E52, 35E53, 35E54, 35E55, 35E56, 35E57, 35E58, 35E59, 35E60, 35E61, 35E62, 35E63, 35E64, 35E65, 35E66, 35E67, 35E68, 35E69, 35E70, 35E71, 35E72, 35E73, 35E74, 35E75, 35E76, 35E77, 35E78, 35E79, 35E80, 35E81, 35E82, 35E83, 35E84, 35E85, 35E86, 35E87, 35E88, 35E89, 35E90,

2784/1, and 2799

$$C_{\text{eff}} = C_1 + C_2 \quad \text{and} \quad \sigma_{\text{eff}} = \sqrt{\sigma_1^2 + \sigma_2^2} \quad (11)$$

1. Δ is a \mathbb{Z} -module, $\Delta \otimes \mathbb{Z} = \Delta$, $\Delta \otimes \mathbb{Q} = \Delta \otimes \mathbb{R}$.

2. *How do you feel about the way you are being treated?*

- Murtagh State Dec. and commentat. on reg. XI, XVII-
22

Shāshī Muḥammad 'Alī [Amīd al-ḥusnā in Shams al-ḥayāt] A Member of the Ḥusaynīyya Order, Government of Ḥamāh, 2732 and 2968/1 to 2974.

— — — — — Ḥizb al-Thawī comp. and poet during the reign of Aḥmad 'Alī Shāh al-Dīlī, 2823/11.

— — — — — Mahdī [Theol. and trans.]-2823/11.

— Murtadā Ansārī [Shiite Theol.]-2799/11.

— Qutub al-Ḥusaynī, Ḥamāh, 2844/12.

Sayyid al-Ḥusayn al-Dīlī, Ḥamāh, 2572, 2612 and 2646.

Shāh-nā'ib al-Sayyid al-Dīlī, Ḥamāh.

Abu'l-ḥusayn Maḥmūd al-Sayyid al-Dīlī, Ḥamāh, 2533-1429/-2532/1 and 2533/1.

— Aḥmad al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

— Abū al-Ḥusayn Maḥmūd al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

Shāh Shams al-Dīlī, Ḥamāh, 2753.

Shāh al-Dīlī Abū 'Abd al-Ḥusayn al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

— — — — — 2437/-2433, 2434 and 2499.

Sirāj al-Dīn Abū 'Abd al-Ḥusayn al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

Sayyid al-Dīlī Abū 'Abd al-Ḥusayn al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

Subhān 'Alī al-Dīlī [Shiite Theol.]-2753 [IX/XIV]-2753.

Suḥayb al-Dīlī [Theol.]-2753 [IX/XIV]-2753.

Sultān al-Dīlī, Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

— Husayn al-Dīlī [Theol. and Shari'at] of Ḥamāh, 2753 [IX/XIV]-2753.

5131. 'Alim al-Fatwa Ma'ad al-Kawthar (1170-1247) n.

— 'Alim al-Fatwa Ma'ad al-Kawthar (1170-1247) n. 2958.

— Husayn al-Hawari (1247-1314) n. 2764/n, 2905/n and 2990/n.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2910 and 2911/n.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

— 'Imad al-Din al-Hawari (1247-1314) n. 2953/n and 2963 to 2968.

Ša‘dī Shīrāzī (Muṣṣaḥḥūddīn) [celebrated Persian Shīrī Poet] 1611/1242 - 3001/vi

Šādr-Jānār (Husnī Turāsh) [celebrated poet] 1580-1581 at Golconda]-2713 to 2715

Šādr-Jānār Muḥammad ‘Aḥī [with the name Nāṣir al-Dīn ‘Aḥī (Gadberg)] [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda]

— — — — — [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda and 2910 to 2911/ii

— — — — — Tabrizi [Theol. and Trans]-2736/ii

— — — — — Yūnūs ‘Aḥī [Kātib al-Dawla] 1580-1581 at Golconda VIII, XIV cent]-2669 i.

Šādr Al-Nawā [celebrated Persian poet]

Šādr al-Dīn [celebrated Persian poet] XVI, XVII cent]

Šādr al-Dīn Kātib [celebrated Persian poet] XVI-XVII-3001

Šādr al-Dīn ‘Aḥī [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda VIII, XIV cent] 2706, 2825, 2826/ii and 2925/iv.

III — — — — — (Yūnūs ‘Aḥī) [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda VIII, XIV cent]

Šādr al-Dīn ‘Aḥī [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda 2572/i

Shāh ‘Amīn al-Shāh [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda 2721 to 2735, 2858 i, 2844/3, 2965/ii 2963 and 2964

II — — — — — [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda 2420/i, 2423/ii 2474/iv, 2912/ii, 2741/ii and 2941.

— — — — — ‘Abd al-‘Azīz [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda 2420, 2560, 2966-3006 and 3015/i.

— — — — — ‘Abd al-Wahīd Masīsha Qāhī [celebrated Persian poet] 1580-1581 at Golconda the reign of Nizām VI of Hyderabad]-2701/ii.

Q

- Qābul Qara Khān [Theol. and Comp. during VIII/XIV cent. 1060/ii.]
- Qādī 'Abdū'l-khāliq a'sh-Sharīf Qāq zādā [Theol. and comp. during the reign of Shāh 'Abbās I of Irān]-2063 and 2064.
- Qān M. Z. 'Adīn [Theol. during the reign of Majid Emperor Jahānīr]-2406/5, 2422/2, 2424/1 and 2621.
- Muḥammad Irṭisā 'An Shāh Safawī [Theol. and comp. d. 1854]-2824
- Qutb'iddīn Kāshānī [Theol. and comp. 2529]
- Zāda of Transoxanā [Theol. during the reign of Shāh 'Abbās I of Irān]-2063 and 2064, ii.
- Qāsim bin Muḥsin b. 'Aqīl 2033/5.
- Qutbu'ldīn Kānīndī [Shiite Theol. and Editor -2564/v]

R

- Rādī'iddīn Muḥammad Mūsaw (Sharīf Rādī [Shiite Theol. and comp. d. 406/1015]-2573/ii.)
- — Qazwīnī [Shiite Theol. and comp.]-2552/1.
- — Tā'īrī [Theol.]-2654/iv
- Raḥ'ū'ddīn Ḥasān Tabatāī: Muḥammad Rādī [Theol. during 1114-1162] 250
- Rajab Aī Tabrīzī [Theol. and Comp.]-2520 and 2545/3.
- Raḥīmī Maḥmūd [Shiite Theol. and comp. during Shāh Ismā'īl Safawī of Irān]-2071
- Rāqī, Sayyid Muḥammad [Theol. and poet]-3011
- Rashīd b. Shāhī Dost Muḥammad [Comp. at the end of XII/XVIII]-2674.
- R-yādu' Ḥasān Burjānī [Shiite Theol. during XIV/XIX]-3015
- Rāḥū'l Amīn Sāzwarī [Theol. and comp.]-2652/3.
- Rūmī (Jalāl'ud-dīn) [Celebrated Sūfī Poet]-2728/5 and 13001/v.

Nasir'u'd-Din Muhammad al-Astrakhanî [Theol. and Trans.] (d. 1356 in
Irân)-2603/V

— Mubn u'l (Sharāh-e Dīn) Celebrate J Shu... (1343/1342)-2608
and 2808/I

— Tusi Celebrate, Theol. and Philosophical etc.]-2857/1-2854/I
and 3020 X to XIII

Nasrullah Izakmān [Theol. and Trans.] 2604/I to 2607/I

Nawāz Baig [Kinship, Irān and Trans.] 2607/I

Nazm Ali'u'l-Asmā [Theol. and Poet. Trans.] 1941/I to 2438 and 2423/I

Ni'mat Khan-i-'Alī Poet during the reign of Emperor 'Ālamgir-2380/4

Ni'matu'd-dīn Jazīrī [Shiite Theol.] Author d. 1130-1215-2767/I

Jāhūrī Theol., Author during the reign of Emperor 'Ālamgir'-
2422/I.

Nizām Ahmadi [Theol.] 2606

— 'Alī Khān Miri, Second Asat Jahir-i-Haydarānī-2875/V

— Sāwī Theol., during the reign of Shah 'Ālam of Persia-2721 to
2725

Nizām u'd-Dīn Muhammad al-Fārisī, Sāwī Theol. M. XII-XVIII-2710 and
2911/I

Nūru'd-dīn, Compendium of Theol. and Trans. 2607/I

Hasan-i-Asmā [Theol. and Trans.]

Mohammadiyān [Theol. and Trans.] 2607/I

-- -- Jāhūrī Mag. of Emperor during 1070/27-2400/2
2517/I to 2583/I to 2587

Nūr Mahammadi Nūr-i-Haq, Bīrānī, [Theol. and Trans.]
1073-1662]-2354/I and 2553/I.

Nūru'd-dīn b. Qaṣṣabī [Theol. and Trans.] Author during Emperor Ismā'īl's reign]-2607/I

Nusrat Iskandar [Theol. and Comp. of XI-XVII]-2411

- Muḥammad Ṣāḥib al-Husayn al-Tirmidī Kashfī [Theol., commentator and poet d. 1060/1650]-2555 and 2863/1 to 2868.
- Shāh [Mughal Emperor reigned during m. XII-XVIII]-2693 ii and 2851/1.
- Shamsu'd-dīn al-Atrabāṣī [Theol. and trans.] 2866 ii.
- Sharaf al-Dīn [Theol. and trans.] 2851 ii to 2851 ii.
- Tabrizī, Mir Muḥammad [Renowned Shiite Persian poet and devoted Ṣūfī d. 1003/1682]-2816/ii.
- Tahir Nāṣir al-Qummi [Theol. and trans.] 2858 i, the period of Shāh 'Abbās I of Irān-2858 i.
- — Qummi [Renowned Shiite Theol.]-2871 i.
- Taqī al-Majlisī [Renowned Shiite Theol. d. 1080/1669]-2741 ii, 2740 to 2750, 2762/1, 2773/13 and 2987 i.
- — Mirza [Prince m. 1228-1813] 2918 i and 2919.
- — al-Māsawī [Theol. and trans.] 2866 i.
- al-Qāṣim [Theol. and com.] 2866 i.
- Yūnus Damāwandī [Shiite Theol. m. 1156/1747] 2809/1.
- Mubārak Phūl Ibrāhīm [Theol. d. 957/1545]-2405 i.
- Muhtasham Kashfī [Renowned Persian poet -2584 ii, 2585 ii-5841-2866 v, 2870/v, 2933/6 and 2980 3.
- Mukhtār al-Munkar al-Sayyid al-Jalī [One of the famous writers of Hyderabad collector's Annex to XIII/XIX cent.] 2988/v.
- Musharrat 'Alī (Sayyid al-Mustaḥsin) [Shiite Theol. d. 1230-1247]-2814/v.
- M'uāwiyyah (Haqīqat) [Companion of the Prophet] 2814/v.
- M'uṣnu'ddīn [Theol. Ṣūfī during the reign of Shāhjahān and 'Alauddīn]-2464.
- Ahmad-2875 4.
- Farahī Herātī [Theol. and Commentator 907-1502] 2435 to 2439.

Mahammad Mu. 1314 Muhsin al-Kashf al-Sayf, renowned Persian
 2708/2, 2875/1.

— Mas'um Astrucy. Hicet trans. during the reign of Shāh
‘Abbās II of Irān]-2474/11.

5. $M_A = M_B$ (i.e. $w = 1$), $\mu_1 = 0$ (i.e. $\theta = 0$), and $\mu_2 = \pi/2$ (i.e. $\theta = \pi/2$).

— Minister of Education and Religious Affairs
2654.

2322/ii 2653/iv, 2654/i and 2810/iii.

— Indrat Modak (a former Project of Mustangs) - 2014/1

— Nazariy i metody (1984) and comp. (2000).

— 91 —
C. 10. 6. 18. 5. 4. 1. K. 1. of C. 10. 6. 18. 5. 4. 1. / 1581-
1611]-2713'iv, and 2714 iii.

— Qutb Shāh, King of Golconda d. 1558 (120-1035/1112-1026)-
28547/11 28548/1 28549/1 28550/1 28551/1 28552/1 28553/1 and 28554/1

[illegible]

*Núñez, F. and Comp. 2003

— R. 1. 1002-Pin¹ and 1004: A. 1. 1002/heel, d. 1243 or 1249/
1822 or 1833)-3002/m and 3004/l.

— K. & Astoria, It. and com. as 1.

— Rıdâ'nı Kafâr [A Sunnite d. 1917]-2008/IV.

24. Kh. u. (2) b. [17]. A not [17] (17) 2

[illegible]

— said to, Oătar, Monk Bădăra (Dionysius) suggested that the
Mălaești (Forest) and Convent during the Prime Ministership
of Săvulescu I at the end of XIII-XIX]—c. 1900/1.

Salinity (Ar saturation) Theol and comp 1041/10321-2885 m.

— Oğuzlar (Trans.)—257 on and 2511 v.

Muhammad Bakir Muhammad Taqul Majid, was known to the defendant as a member of the group, from 1987 to 28,7 to 2896, 2987/m and 2988.

— 188 — *Assam, the Kingdom of Shāh, 1782-1826* [1] *Salawī of*
183 — 184 —

Had the Museum been so good as to have been directed by Sir John Lubbock's
 (1857-1920)!

[illegible]

— Hald. nat. 2847. Hb. 254.

— HASAN G. SAWHNEY, Secretary, 12-25

— Hasan Nawwari. The Author died in the reign of Shah
Hasan Nawwaf of Iran -2794.

— b. Muhammad As'ad Husayn ibn As'ad in 1237/
1810]-2034.

$$= \frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} b(k) h_0(k) e^{ikx} dk = \frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} b(k) h_0(k) e^{ikx} dk$$

— — — — — I bought from S. C. ... 2nd ... 2nd ... 2nd ...

— Ibrāhīm 'Alī al-Jān Bahādur al-Husaynī, 1245/1829

— Isfahāni [Theol. Comp. d. 1261/1845]-1793

$$= \{H_{\alpha\beta} \otimes \gamma \otimes \delta \mid \alpha, \beta \in \{1, 2, \dots, A\}, \gamma, \delta \in \{1, 2, \dots, B\}\}.$$

— Entry to Alexander Hamilton Co. per [XII, XIX]=2095h

[illegible]

1. *Urethra*, *Hydrophile* (1901) 22/

— Husain [Theol. Author]-1416.

— Mahdi a'r-Ridwi (Theol. and Trans.)—2835/11

– Minimum Theor. during std. 4 = 15.05, 16.57, 17.14, 18.41, 19.24, 20.11.

— a .-Ast ā-āji Great Theor and Scholar 1043/1020'-
2716/iv.

Muhammad Aḥmad al-Fayyūmī (Comp. of Poems, d. 1211/1822)-
303.

— b. Abnāḥ Zuhayr [Autogr. Poems, iv.

— Astron. & Cosm. (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— 'Alf. (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— — — — — (Hawāṣī, Poems and V. 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— b. 'Abdu'r-R. dā [Cop. 1244/1829]-2035.

— 'Alf. (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Juz'awā (trans. of 21st 1490-1505/1 and 1509/1.

— Rāqir b. Muhammad Akmal al-Fayyūmī [Theol.
d. 1205/1701]-2770n.

— — — — — (Hawāṣī, Poems and V. 1490-1505/1 and 1509/1.

Mirza Muhammad Hot Naf'i 10.3, an compl 26

- — *Majlis Ashrāfiyat-i Ashraf-karim Shāh-e-Muhammad* 279, IV, 1.
- — — *a'l-Husaini a'l-Mashhadi Ishqābādi [Diwān of Burhānpūr¹-2874/10]*
- — *Yās, al [The Lament of a Young Girl]* 2874/10
- *Nāz mī [Lahran, Pers. c. 1901-2] — V.*

Muhammad (S) at all times for the men of Allah
 Muhammad (S) at all times for the men of Allah

- [illegible]

Mir Ahmad Ali Khan Sadozai 30.

*Atam (one of the Prime Ministers of Hyderabad and Deccan in 1225-27-28).

Aslam Khan Sadozai 205/.

— Haidar Ali Khan Sadozai (died 1214/71-210).

— Mir Hasan Khan 125/1810-20/19.

— Mirza Aslam Khan Asil Jah VI Nazim of Hyderabad 1329/1869-1911-2701/11.

— Mirza Aslam Khan Isfahani (died 1200/1).

— Mirza Aslam Khan (died 1204/1825)-2710.

— Nazim Aslam Khan Asil Jah VI Nazim of Hyderabad 2819/iv.

Sayyid Sharif [Theol.]-3029/viii/b.

— Mirza Aslam Khan Sadozai Mirza Aslam Khan, Prime Minister of Hyderabad 1225/1825-2701/11-2825/iv.

Yusuf Aslam Sadozai (one of the Prime Ministers of Hyderabad) (died 1200/1) Mirza Aslam Sadozai Asil Jah VII]-2869/11, 2908/11.

Mirza Aslam Sadozai (died 1200/1).

— Mirza Aslam Khan Sadozai (died 1200/1).

— Mirza Aslam Khan Sadozai (died 1200/1).

— Mirza Aslam Khan Sadozai (died 1200/1).

Mirza Aslam Khan Sadozai (died 1200/1).

Mirza Aslam Khan Sadozai (died 1200/1).

— Masih (in 1182/1768)-2909/iv.

Kashfi Turmudhī (Mahammad Ṣāhib al-Dīnī) [Poet, scholar and scribe
d. 1060/1650]-2555, 2863 to 2868.

Kāzım 'Alī Khān [Poet of 'Azimātād (Iraq), died in

Kharratī Shāhib (Mazra'at al-Āl) [Poet, died in

Kharratī Qazwīn] [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Khawā, a Abū Ismā'īl 'Alī [Poet of Kharratī, died in

Mahmūd al-Dīnī [Poet of Kharratī, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Khawā, a Abū Ismā'īl 'Alī [Poet of Kharratī, died in

Kharratī Shāhib (Mazra'at al-Āl) [Poet, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Kharratī Shāhib (Mazra'at al-Āl) [Poet, died in

Kutub (Shute theol.)-2763/10

M

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

— b. Abū Ismā'īl 'Alī [Poet of Kharratī, died in

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

— b. Abū Ismā'īl 'Alī [Poet of Kharratī, died in

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

Mahmūd al-Dīnī [Poet and scribe, died in 1077]-2015 to 2018, and
2752 h.

J

Jā al-Husaynī Muhammad, [c. 1000-1300-2440].

- Šāhī (Sixth Shiite Imām d. 1477/65)-2772/6 and 12, 2772, 2848, and 2953 to 2958/4.

Jāhūdī, Abū Ishāq [c. 1100-1200] of Herat, 1281/12-8 and 2019/1.

Jahāngīr (Nūr al-Dīn Muhammad) [Mughal Emperor: Inlā reigned 1614-1637/1605-1628]-2400/1 and 2863 to 2868.

Jāhūdī, Abū Muḥammad Ashraf [Ashraf the great d. 1605 A.D.]-2445/1.

- Durrat al-Khawāṣṣ, 2743/2-2743/7 and 8.
- Kitāb al-Ḥabīb al-Šāhī, 2743/2 and 3.
- Al-Faṣl al-Thalāthī, 2743/2.
- Kitāb al-Ḥabīb al-Šāhī, 2743/2.
- Maḥabbat al-Thalāthī, 2743/2.
- Ḥasan al-Ḥabīb al-Šāhī, 2743/2.

Jāhūdī [celebrated Persian Poet] 2743/2.

K

Kāfāmī, Theol., 2743/2.

Kāfāmī, Theol., 2743/2.

Kāfāmī, Theol., 2743/2.

- Ḥabīb al-Šāhī, 2743/2.
- (Jāhūdī, Ḥabīb al-Šāhī), 2743/2.
- Jāhūdī, Theol., 2743/2.

Kāfāmī, Theol., 2743/2.

Kāfāmī (Muzā, Muḥammad) [Theol., 2743/2].

Kāfāmī, Theol., 2743/2.

Ibrāhīm Qutb Shāh, King of Gurgand during 957-8, 1000-1001, 1003-1004 and 1060.

Idrīs [Prophet]-2332.

Ittighārū'ī - or a - (Advent of Munk Shāh at Jung, Arghandab) 1000-1001.

Jahāyārū'd in Husayn Shāh [Heaven and earth and sea] 1042]-2071.

Imām Abū Hānīfā Naimān [Heaven and earth] 1500-2000.

— Bukhārī - Abū 'Alī Shāh of Muhammad [Heaven and earth] 1500-2000.

— Husayn [Heaven and earth] 1500-2000, 2001-2002, 2003-2004.

— 'Alī Shāh, Fifth State Imām, 1000-1001, 1002-1003.

— Husayn [Heaven and earth] 1500-2000, 2001-2002, 2003-2004, 2005-2006, 2007-2008.

— Jāfar Sādiq, Sixth State Imām 1000-1001, 2000-2001, 2002-2003, 2004-2005, 2006-2007, 2008-2009.

— Rāzī (Fāzī) Shāh of Muhammad [Heaven and earth] 1000-1001, 2000-2001, 2002-2003.

— 'Alī Shāh [Promised last Imām] 1000-2000, 2001-2002, 2003-2004, 2005-2006, 2007-2008.

— Zāhir Shāh of Muhammad [Heaven and earth] 1000-2000.

'Ināyatū'llah [Heaven and earth] 1000-2000.

Isān Shāh - Zūm - Arghandab XI XVII - 1000-2000.

Isān Shāh - Zūm - Arghandab - 1000-2000 / 1000-2000.

'Isma'īl Shāh - Zūm - 1000-2000.

'Isma'īl Shāh [Heaven and earth] 1000-2000.

'Isma'īl Shāh - Muhammad [Heaven and earth] 1000-2000, 2001-2002, 2003-2004, 2005-2006, 2007-2008.

— Ulugh Qutlugh Khān-2000 and 2001.

Buṣayn (Imām) [ed. Shute Imām = 51/600] 2558, 2600, 2610, 2615, 2622, 2628, and 2630 ff.

— Yazdi, (then and comp) 2500 and 25000

- Khazand, T. A., 1985.

[illegible]

2571 B.

— [trần] [theol. and comp]-2046/1 and 2.

Stellen Sie sich ein Objekt vor, das sich mit der Geschwindigkeit v bewegt. Die Zeit t ist dann gegeben durch:

1) $f(x) = \frac{1}{2}x^2 + 2x - 3$ and $g(x) = -\frac{1}{2}x^2 + 2x - 3$ are symmetric about the y-axis.

2. Environ. Sci. Technol. 1991, 25, 1000-1004.

Harrington, Edward M., 1901-

I

Let A be a linear operator on V . Then A is self-adjoint if and only if $A = A^*$.

¹Abbas II in Iran]-2409 and 2410.

$$= \frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_0^{\infty} e^{-t^2} dt = \frac{1}{\sqrt{\pi}}$$
[illegible]
$$\begin{aligned} \mathbf{A}_1 &= \begin{pmatrix} 1 & 0 \\ 0 & 1 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_2 &= \begin{pmatrix} 1 & 0 \\ 0 & 0 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_3 &= \begin{pmatrix} 0 & 1 \\ 0 & 0 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_4 &= \begin{pmatrix} 0 & 0 \\ 0 & 1 \end{pmatrix} \\ \mathbf{A}_5 &= \begin{pmatrix} 0 & 0 \\ 1 & 0 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_6 &= \begin{pmatrix} 0 & 0 \\ 0 & 0 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_7 &= \begin{pmatrix} 0 & 0 \\ 0 & 0 \end{pmatrix} & \mathbf{A}_8 &= \begin{pmatrix} 0 & 0 \\ 0 & 0 \end{pmatrix} \end{aligned}$$

Publication Address: 84011 [Division of Social and Policy Studies] 2008-01-24 11:06:11
2004/01

Astrabad (c. 1500) - 1500-1550 - 1550-1580 - 1580-1600 - 1600-1650 - 1650-1700 - 1700-1750 - 1750-1800 - 1800-1850 - 1850-1900 - 1900-1950 - 1950-2000 - 2000-2050 - 2050-2100 - 2100-2150 - 2150-2200 - 2200-2250 - 2250-2300 - 2300-2350 - 2350-2400 - 2400-2450 - 2450-2500 - 2500-2550 - 2550-2600 - 2600-2650 - 2650-2700 - 2700-2750 - 2750-2800 - 2800-2850 - 2850-2900 - 2900-2950 - 2950-3000 - 3000-3050 - 3050-3100 - 3100-3150 - 3150-3200 - 3200-3250 - 3250-3300 - 3300-3350 - 3350-3400 - 3400-3450 - 3450-3500 - 3500-3550 - 3550-3600 - 3600-3650 - 3650-3700 - 3700-3750 - 3750-3800 - 3800-3850 - 3850-3900 - 3900-3950 - 3950-4000 - 4000-4050 - 4050-4100 - 4100-4150 - 4150-4200 - 4200-4250 - 4250-4300 - 4300-4350 - 4350-4400 - 4400-4450 - 4450-4500 - 4500-4550 - 4550-4600 - 4600-4650 - 4650-4700 - 4700-4750 - 4750-4800 - 4800-4850 - 4850-4900 - 4900-4950 - 4950-5000 - 5000-5050 - 5050-5100 - 5100-5150 - 5150-5200 - 5200-5250 - 5250-5300 - 5300-5350 - 5350-5400 - 5400-5450 - 5450-5500 - 5500-5550 - 5550-5600 - 5600-5650 - 5650-5700 - 5700-5750 - 5750-5800 - 5800-5850 - 5850-5900 - 5900-5950 - 5950-6000 - 6000-6050 - 6050-6100 - 6100-6150 - 6150-6200 - 6200-6250 - 6250-6300 - 6300-6350 - 6350-6400 - 6400-6450 - 6450-6500 - 6500-6550 - 6550-6600 - 6600-6650 - 6650-6700 - 6700-6750 - 6750-6800 - 6800-6850 - 6850-6900 - 6900-6950 - 6950-7000 - 7000-7050 - 7050-7100 - 7100-7150 - 7150-7200 - 7200-7250 - 7250-7300 - 7300-7350 - 7350-7400 - 7400-7450 - 7450-7500 - 7500-7550 - 7550-7600 - 7600-7650 - 7650-7700 - 7700-7750 - 7750-7800 - 7800-7850 - 7850-7900 - 7900-7950 - 7950-8000 - 8000-8050 - 8050-8100 - 8100-8150 - 8150-8200 - 8200-8250 - 8250-8300 - 8300-8350 - 8350-8400 - 8400-8450 - 8450-8500 - 8500-8550 - 8550-8600 - 8600-8650 - 8650-8700 - 8700-8750 - 8750-8800 - 8800-8850 - 8850-8900 - 8900-8950 - 8950-9000 - 9000-9050 - 9050-9100 - 9100-9150 - 9150-9200 - 9200-9250 - 9250-9300 - 9300-9350 - 9350-9400 - 9400-9450 - 9450-9500 - 9500-9550 - 9550-9600 - 9600-9650 - 9650-9700 - 9700-9750 - 9750-9800 - 9800-9850 - 9850-9900 - 9900-9950 - 9950-10000 - 10000-10050 - 10050-10100 - 10100-10150 - 10150-10200 - 10200-10250 - 10250-10300 - 10300-10350 - 10350-10400 - 10400-10450 - 10450-10500 - 10500-10550 - 10550-10600 - 10600-10650 - 10650-10700 - 10700-10750 - 10750-10800 - 10800-10850 - 10850-10900 - 10900-10950 - 10950-11000 - 11000-11050 - 11050-11100 - 11100-11150 - 11150-11200 - 11200-11250 - 11250-11300 - 11300-11350 - 11350-11400 - 11400-11450 - 11450-11500 - 11500-11550 - 11550-11600 - 11600-11650 - 11650-11700 - 11700-11750 - 11750-11800 - 11800-11850 - 11850-11900 - 11900-11950 - 11950-12000 - 12000-12050 - 12050-12100 - 12100-12150 - 12150-12200 - 12200-12250 - 12250-12300 - 12300-12350 - 12350-12400 - 12400-12450 - 12450-12500 - 12500-12550 - 12550-12600 - 12600-12650 - 12650-12700 - 12700-12750 - 12750-12800 - 12800-12850 - 12850-12900 - 12900-12950 - 12950-13000 - 13000-13050 - 13050-13100 - 13100-13150 - 13150-13200 - 13200-13250 - 13250-13300 - 13300-13350 - 13350-13400 - 13400-13450 - 13450-13500 - 13500-13550 - 13550-13600 - 13600-13650 - 13650-13700 - 13700-13750 - 13750-13800 - 13800-13850 - 13850-13900 - 13900-13950 - 13950-14000 - 14000-14050 - 14050-14100 - 14100-14150 - 14150-14200 - 14200-14250 - 14250-14300 - 14300-14350 - 14350-14400 - 14400-14450 - 14450-14500 - 14500-14550 - 14550-14600 - 14600-14650 - 14650-14700 - 14700-14750 - 14750-14800 - 14800-14850 - 14850-14900 - 14900-14950 - 14950-15000 - 15000-15050 - 15050-15100 - 15100-15150 - 15150-15200 - 15200-15250 - 15250-15300 - 15300-15350 - 15350-15400 - 15400-15450 - 15450-15500 - 15500-15550 - 15550-15600 - 15600-15650 - 15650-15700 - 15700-15750 - 15750-15800 - 15800-15850 - 15850-15900 - 15900-15950 - 15950-16000 - 16000-16050 - 16050-16100 - 16100-16150 - 16150-16200 - 16200-16250 - 16250-16300 - 16300-16350 - 16350-16400 - 16400-16450 - 16450-16500 - 16500-16550 - 16550-16600 - 16600-16650 - 16650-16700 - 16700-16750 - 16750-16800 - 16800-16850 - 16850-16900 - 16900-16950 - 16950-17000 - 17000-17050 - 17050-17100 - 17100-17150 - 17150-17200 - 17200-17250 - 17250-17300 - 17300-17350 - 17350-17400 - 17400-17450 - 17450-17500 - 17500-17550 - 17550-17600 - 17600-17650 - 17650-17700 - 17700-17750 - 17750-17800 - 17800-17850 - 17850-17900 - 17900-17950 - 17950-18000 - 18000-18050 - 18050-18100 - 18100-18150 - 18150-18200 - 18200-18250 - 18250-18300 - 18300-18350 - 18350-18400 - 18400-18450 - 18

— b. Husain, *Sunnite theo.*—2617

Is there a "complicated" \mathbb{Z} ?

Hafiz Ghulām H. [Shute Theol.] - 2054

Hafiz, [Theol. comp. and poet] - 2420 b

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

Hafiz 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— a'l-Khādīm - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— a'l-'Askar - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— b. 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— b. 'Abdūn - A. u'l-larkāt 'A. u'l-lah [Theol.] - 2040/11 and 2040/12

— Yazdī [trans. and Theol.] - 2704/11

— (Mir) [famous Urdu poet] - 2424/8

— b. Yūsuf [theo.] - 3024/11

Hasanvayh (Husanvayh, Lady theol. during Abbāsid reign 2054/3 to 2058/3)

Humāyat Husan Nishāpūrī [trans. and comp.] - 2707/11

Farīd al-Dīn Muḥammad [Farīd al-Dīn al-Iḥṣānī, poet]-1016/IV, 2001/3
[Theor.]-2001/IV.

Farīd al-Dīn Aṭṭār (known as Ḥāfi, Poet)-1001/IV.

Fayḍ al-Dīn [Theor. and Comp.]-1016/IV.

Fāṭma [Theor. and wife of Ḥafīz al-Aṭṭār, 4th Orthodox Caliph of Ismāʿīl]-
3558/III and 2019/III.

Faṭḥ al-Ḥusaynī Kān al-Faṭḥ and comp.-2019/IV.

— Muḥammad al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor.]-2019/IV.

Faḥr al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

Faḥr al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

Faḥr al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

G

Ghāṭ al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

Ghāṭ al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

Ghāṭ al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ (Mantaz al-Khāṭir al-Faṭḥ) [Theor. and comp.]-1016/IV.

— Ḥasan Mirza al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV.

— Ḥafīz al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV.

Yāḥyā al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV.

Gurgin Ibrāhīm Aṣṭarābādī [Theor. and Trans. in 1016/IV, 2001/3, 2011 and 2019/IV].

H

Ḥafīz al-Dīn al-Faṭḥ al-Faṭḥ [Theor. and comp.]-1016/IV.

— Shīrāzī [Celebrated Persian Poet]-1016/IV and 1001/IV.

C

Chiragh-e-Dilī (Nasir-ud-dīn Muḥammad) [Celebrated Sūfī Saint in India
d. 793/1392]-2608 and 2508/1.

D

Dā'ir al-Ma'arifa (compiled by 1441/1549) [see 1441/1549]

Dawwāmī [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603]-
2939/7 and 8

Dawūd al-Ghawṣī [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603] and
2939/6 to 2940/2

Dawūd al-Jawāzī [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603]
commentator d. 1235/1820]-2749/1 and 2749.

Dawūd al-Zāhid [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603]

Dayāf al-Sādīqāt [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603]

Dost Muḥammad [d. 1011/1603] [see 1011/1603] [see 1011/1603]

F

Faḍal 'Alī Kāshānī-2631.

— 'Aẓīm Kāshānī [During 1201/1800-2011/1811]

— al-Ḥāshīyah 'alā al-Ḥāshīyah [During 1201/1800-2011/1811]

Faḥr al-Dīn 'Awāzī [d. 1011/1603] [see 1011/1603]

Faḥr al-Dīn al-Fārisī [d. 1011/1603] [see 1011/1603]

Kashf (Muḥammad Muḥsin) [During 1201/1800-2011/1811]
2755 to 2761, 2762 to 2768, 2769 to 2775 and 2776

Faḍl al-Dīn al-Muḥammadi [d. 1011/1603] [see 1011/1603]

Faḥr al-Dīn 'Awāzī (Muḥammad al-Fārisī) [During 1201/1800-2011/1811]

— Ḥamīd al-Dīn [During 1080/1670-2011/1811]

— Ḥamīd al-Dīn [During 1080/1670-2011/1811]
2802/1

*Avastha Śūlaka. [The beloved wife of Holy Preceptor] 2282/11.

Azamū'sunārā, born 12, 1877 at Hyderabad—2048/11.

Azamū'sunārā Arastū Jai. Prime Minister to Aṣṭ Jāh Lād 1216/1804.

L

Lāṣṭa (Lāṣṭa) Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Alāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Śūl Saint of Gumbaga, Deccan d. 815/1421]-2048/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

to 2032, 2045, 2046-2853

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Lāṣṭa Nāṣṭa. [The eighth son of Lāṣṭa] 2282/11.

Amir Nūmān [A Şah of X/XVI Cent.]-24/n.

— Sayyid Muhammad [A Şah of X/XVI Cent.]-22-41/n.

Şahm'addin Muhammed [Şah of X/XVI Cent.]-260, 290/n,
2010/n and 2911/n

Yūsuf 'Alī Huseinī Asr [A Şah of X/XVI Cent.]-261/n.

Amirzādah Ismailī [Theol. and Comp.]-262/n.

Anad 'Alī Şah [King of Ch. Pers.]-263/n and 2620/n.

Anas Malik [Tra.]-2621/n.

Anis Āfrin 'Alī Khān [A noble of U P.]-2622/n.

Āl Sayyid Muhammad [Theol. and Comp.]-2623/n.

Arfa, (Ghuām 'Alī Kirmānī) [Theol. and Comp.]-2624/n.

Ashraf Khan [d. 1606] [2625/n]

Āshiq 'Alī Khān Mushāf Şah [A Şah of X/XVI Cent.]-2626/n.

— Muhammed 'Alī [Theol. and Comp.]-2627/n.

Ad 'Alī Qarash [Theol. and Comp.]-2628/n.

Ad 'Alī H (Mir Nazer 'Alī) [Theol. and Comp.]-2629/n.

Āḡā 'Alī VI 'Alī Muḥammad [A Şah of X/XVI Cent.]-2630/n.

Āḡā 'Alī VI 'Alī Muḥammad [A Şah of X/XVI Cent.]-2631/n.

Aslahi [Theol. and Comp.]-2632/n.

As 'Alī Daulah [King of Ch. Pers.]-2633/n.

'Ata 'Alī Jumān [Theol. and Comp.]-2634/n.

Ātish Khān [A noble]-2635/n.

Āttār (Faridu'd-dīn 'Aḡhār) [S.H. Cent.]-2636/n.

Abu'n-Naṣr Shāh Kāz Bahadur (son of Isfahan, reigned during
1225/1857 to 1241/1864).

Afḡān'd-Daulah Āsif Jah V Nizām of Hyderabad, reigned during 1275-
1285/1857 to 1869[-2004/1].

Attāb Khān (Thro. 121/1209/1894-1897).

Abmāl 'Alī Ahrārī Mustawfī (Thro. 121/1209/1894-1897) Prime Minister-
ship of Sā'ār Jung I]-2527.

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897) Indian Com-
ment, and trad. d. 1170/1702]-2469/1.

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

— — — — — (Thro. 121/1209/1894-1897)

'A'adīb Muḥammad, (Thro. 121/1209/1894-1897)

'A'adīb Muḥammad (Thro. 121/1209/1894-1897)

'A'adīb Muḥammad, (Thro. 121/1209/1894-1897)

Atiq-i Parandah A. [CHI 23] /
1110 or 1111]-2664/1 to 2666/11.

— — — — — [CHI 23]

— Fakhr Shakh Yūsuf-2427/1. A. /
1181]-2427/1.

— Fakhr Shakh Yūsuf-2556 m.

— Fakhr Shakh Yūsuf-2556 m. /
1104-1117]-2802 m.

— Fakhr Shakh Yūsuf-2556 m. /
1104-1117]-2802 m.

— Fakhr Shakh Yūsuf-2556 m. /
1104-1117]-2802 m.

— H. A. /
Comment. Trad. of XII/XIX Cent]-2551/1.

— H. /
2-84/1.

— H. /
299 m.

— H. /
299 m.

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

— — — — — Sharif (theol. comp)-2830/1

INDEX I

Names of Persons

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

(a) Known persons

A

Abbās Pakr Šāh [Theol. & Trad.]—2423/7.

‘Abbās ‘Alī (Mir). [Persian Poet]—2423/7.

— Šāwī [Theol., Trad., Comp.]—2463/ii, 2464 and 2465/1 (ii).

— Šāwī II [Theol., Trad., Comp.]—2465/2.

‘Abū’u’-‘Alī a’l-Kark (a’l-Kark) [Theol., Trad., Comp.]—2708/(ii).

— ‘Abū’u’-‘Alī a’l-Kark [Theol., Trad., Comp.]—2708/(ii).

— Shirāzī—2977/(ii).

— Awwā’l [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii).

— Azim Isfahānī [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii).

— ‘Azīz Shāh [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii), 2537/(ii), 2538/(ii), 2539/(ii), 2540/(ii), 2541/(ii), 2542/(ii), 2543/(ii), 2544/(ii), 2545/(ii), 2546/(ii), 2547/(ii), 2548/(ii), 2549/(ii), 2550/(ii), 2551/(ii), 2552/(ii), 2553/(ii), 2554/(ii), 2555/(ii), 2556/(ii), 2557/(ii), 2558/(ii), 2559/(ii), 2560/(ii), 2561/(ii), 2562/(ii), 2563/(ii), 2564/(ii), 2565/(ii), 2566/(ii), 2567/(ii), 2568/(ii), 2569/(ii), 2570/(ii), 2571/(ii), 2572/(ii), 2573/(ii), 2574/(ii), 2575/(ii), 2576/(ii), 2577/(ii), 2578/(ii), 2579/(ii), 2580/(ii), 2581/(ii), 2582/(ii), 2583/(ii), 2584/(ii), 2585/(ii), 2586/(ii), 2587/(ii), 2588/(ii), 2589/(ii), 2590/(ii), 2591/(ii), 2592/(ii), 2593/(ii), 2594/(ii), 2595/(ii), 2596/(ii), 2597/(ii), 2598/(ii), 2599/(ii), 2600/(ii), 2601/(ii), 2602/(ii), 2603/(ii), 2604/(ii), 2605/(ii), 2606/(ii), 2607/(ii), 2608/(ii), 2609/(ii), 2610/(ii), 2611/(ii), 2612/(ii), 2613/(ii), 2614/(ii), 2615/(ii), 2616/(ii), 2617/(ii), 2618/(ii), 2619/(ii), 2620/(ii), 2621/(ii), 2622/(ii), 2623/(ii), 2624/(ii), 2625/(ii), 2626/(ii), 2627/(ii), 2628/(ii), 2629/(ii), 2630/(ii), 2631/(ii), 2632/(ii), 2633/(ii), 2634/(ii), 2635/(ii), 2636/(ii), 2637/(ii), 2638/(ii), 2639/(ii), 2640/(ii), 2641/(ii), 2642/(ii), 2643/(ii), 2644/(ii), 2645/(ii), 2646/(ii), 2647/(ii), 2648/(ii), 2649/(ii), 2650/(ii), 2651/(ii), 2652/(ii), 2653/(ii), 2654/(ii), 2655/(ii), 2656/(ii), 2657/(ii), 2658/(ii), 2659/(ii), 2660/(ii), 2661/(ii), 2662/(ii), 2663/(ii), 2664/(ii), 2665/(ii), 2666/(ii), 2667/(ii), 2668/(ii), 2669/(ii), 2670/(ii), 2671/(ii), 2672/(ii), 2673/(ii), 2674/(ii), 2675/(ii), 2676/(ii), 2677/(ii), 2678/(ii), 2679/(ii), 2680/(ii), 2681/(ii), 2682/(ii), 2683/(ii), 2684/(ii), 2685/(ii), 2686/(ii), 2687/(ii), 2688/(ii), 2689/(ii), 2690/(ii), 2691/(ii), 2692/(ii), 2693/(ii), 2694/(ii), 2695/(ii), 2696/(ii), 2697/(ii), 2698/(ii), 2699/(ii), 2700/(ii), 2701/(ii), 2702/(ii), 2703/(ii), 2704/(ii), 2705/(ii), 2706/(ii), 2707/(ii), 2708/(ii), 2709/(ii), 2710/(ii), 2711/(ii), 2712/(ii), 2713/(ii), 2714/(ii), 2715/(ii), 2716/(ii), 2717/(ii), 2718/(ii), 2719/(ii), 2720/(ii), 2721/(ii), 2722/(ii), 2723/(ii), 2724/(ii), 2725/(ii), 2726/(ii), 2727/(ii), 2728/(ii), 2729/(ii), 2730/(ii), 2731/(ii), 2732/(ii), 2733/(ii), 2734/(ii), 2735/(ii), 2736/(ii), 2737/(ii), 2738/(ii), 2739/(ii), 2740/(ii), 2741/(ii), 2742/(ii), 2743/(ii), 2744/(ii), 2745/(ii), 2746/(ii), 2747/(ii), 2748/(ii), 2749/(ii), 2750/(ii), 2751/(ii), 2752/(ii), 2753/(ii), 2754/(ii), 2755/(ii), 2756/(ii), 2757/(ii), 2758/(ii), 2759/(ii), 2760/(ii), 2761/(ii), 2762/(ii), 2763/(ii), 2764/(ii), 2765/(ii), 2766/(ii), 2767/(ii), 2768/(ii), 2769/(ii), 2770/(ii), 2771/(ii), 2772/(ii), 2773/(ii), 2774/(ii), 2775/(ii), 2776/(ii), 2777/(ii), 2778/(ii), 2779/(ii), 2780/(ii), 2781/(ii), 2782/(ii), 2783/(ii), 2784/(ii), 2785/(ii), 2786/(ii), 2787/(ii), 2788/(ii), 2789/(ii), 2790/(ii), 2791/(ii), 2792/(ii), 2793/(ii), 2794/(ii), 2795/(ii), 2796/(ii), 2797/(ii), 2798/(ii), 2799/(ii), 2800/(ii), 2801/(ii), 2802/(ii), 2803/(ii), 2804/(ii), 2805/(ii), 2806/(ii), 2807/(ii), 2808/(ii), 2809/(ii), 2810/(ii), 2811/(ii), 2812/(ii), 2813/(ii), 2814/(ii), 2815/(ii), 2816/(ii), 2817/(ii), 2818/(ii), 2819/(ii), 2820/(ii), 2821/(ii), 2822/(ii), 2823/(ii), 2824/(ii), 2825/(ii), 2826/(ii), 2827/(ii), 2828/(ii), 2829/(ii), 2830/(ii), 2831/(ii), 2832/(ii), 2833/(ii), 2834/(ii), 2835/(ii), 2836/(ii), 2837/(ii), 2838/(ii), 2839/(ii), 2840/(ii), 2841/(ii), 2842/(ii), 2843/(ii), 2844/(ii), 2845/(ii), 2846/(ii), 2847/(ii), 2848/(ii), 2849/(ii), 2850/(ii), 2851/(ii), 2852/(ii), 2853/(ii), 2854/(ii), 2855/(ii), 2856/(ii), 2857/(ii), 2858/(ii), 2859/(ii), 2860/(ii), 2861/(ii), 2862/(ii), 2863/(ii), 2864/(ii), 2865/(ii), 2866/(ii), 2867/(ii), 2868/(ii), 2869/(ii), 2870/(ii), 2871/(ii), 2872/(ii), 2873/(ii), 2874/(ii), 2875/(ii), 2876/(ii), 2877/(ii), 2878/(ii), 2879/(ii), 2880/(ii), 2881/(ii), 2882/(ii), 2883/(ii), 2884/(ii), 2885/(ii), 2886/(ii), 2887/(ii), 2888/(ii), 2889/(ii), 2890/(ii), 2891/(ii), 2892/(ii), 2893/(ii), 2894/(ii), 2895/(ii), 2896/(ii), 2897/(ii), 2898/(ii), 2899/(ii), 2900/(ii), 2901/(ii), 2902/(ii), 2903/(ii), 2904/(ii), 2905/(ii), 2906/(ii), 2907/(ii), 2908/(ii), 2909/(ii), 2910/(ii), 2911/(ii), 2912/(ii), 2913/(ii), 2914/(ii), 2915/(ii), 2916/(ii), 2917/(ii), 2918/(ii), 2919/(ii), 2920/(ii), 2921/(ii), 2922/(ii), 2923/(ii), 2924/(ii), 2925/(ii), 2926/(ii), 2927/(ii), 2928/(ii), 2929/(ii), 2930/(ii), 2931/(ii), 2932/(ii), 2933/(ii), 2934/(ii), 2935/(ii), 2936/(ii), 2937/(ii), 2938/(ii), 2939/(ii), 2940/(ii), 2941/(ii), 2942/(ii), 2943/(ii), 2944/(ii), 2945/(ii), 2946/(ii), 2947/(ii), 2948/(ii), 2949/(ii), 2950/(ii), 2951/(ii), 2952/(ii), 2953/(ii), 2954/(ii), 2955/(ii), 2956/(ii), 2957/(ii), 2958/(ii), 2959/(ii), 2960/(ii), 2961/(ii), 2962/(ii), 2963/(ii), 2964/(ii), 2965/(ii), 2966/(ii), 2967/(ii), 2968/(ii), 2969/(ii), 2970/(ii), 2971/(ii), 2972/(ii), 2973/(ii), 2974/(ii), 2975/(ii), 2976/(ii), 2977/(ii), 2978/(ii), 2979/(ii), 2980/(ii), 2981/(ii), 2982/(ii), 2983/(ii), 2984/(ii), 2985/(ii), 2986/(ii), 2987/(ii), 2988/(ii), 2989/(ii), 2990/(ii), 2991/(ii), 2992/(ii), 2993/(ii), 2994/(ii), 2995/(ii), 2996/(ii), 2997/(ii), 2998/(ii), 2999/(ii), 3000/(ii), 3001/(ii), 3002/(ii), 3003/(ii), 3004/(ii), 3005/(ii), 3006/(ii), 3007/(ii), 3008/(ii), 3009/(ii), 3010/(ii), 3011/(ii), 3012/(ii), 3013/(ii), 3014/(ii), 3015/(ii).

— Bārī Tāwū’idīn Muḥammad al-Hamadī [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii).

— Ghaṭāt Nān [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii).

— Qān Kashmīr [Theol., Trad., Comp.]—2536/(ii).

13. A reply to the above by Tūsī, on fl. 49v-51

Beginning: قل مولانا المعظم، امام اعظم ملك الحكمة - شيخ

Ending: واقع من المبول لأول و بين واحد من اهل الوجود كلام

14. A note on Hārith, in Persian, defective at the end, on f. 51v.

Beginning: وداكه حديث در اصطلاح محدثين قول و سن و قري
رسول را نامند - الشيخ

Ending: abrupt ویر که از طاقت یروست مکر اصرار دوام

fl. 51. ll. varying, 20.3 X 6.7, 8, X 4.7⁶/20.1 X 17.2, 21.2 X 12.0 cms.

Written in good nast'liq. Late 11th cent. copy.

Spacings for text sprinkled with silver dust. Gold ruled borders.

Worm holes. Fair condition. In no repaired, and reset in existing covers.



8. R sâa dar Haqiqat-e-Marc wo kûh on n. 30v-42v

A tract on death and soul, in ten fast.

Beginning الحمد لله... اما بعد این رساله مشتمل بر ده فصل - است

وادی ارآتش در قی مرین - واقعہ المسد و علیہ السلام

q. *Ar-Risālat fi'n-Nafs*, on ff. 42v-44v.

An Arabic tract on life, ascribed to Hasan b. Yusuf b. Muṭahhar.
It is in nine chapters.

Begining . بقول الحمد لله رب العالمين

Ending المنع من الكفر، والحكمة ... وآله الطاهرين

10. A'r-Risālat fi Taḥqīq-Nafs Insān vaḥid on ff. 45v-46v

An Arabic tract of Tusi.

Beginning : قال الحكيم اخص الكمل فخص المتقدمين - الخ

Ending والأصم: الكلام عهد والله الحمد . . . لمعدومين

11. A'r-Risālat fī Kayfiyātī Şadur-r-Ra'ūdāt 'an Maḥdī'l-'Awṣā on
ff. 45v-46v.

Another Arabic tract on psychology by the same Tûsî

Beginning : قال سأأتي قصي مع فمليت العبد - اسع

Ending و هو ولی التوفیق و هم اصحاب اسمعید و ایه لیل

1. *Hydrocotyle-Wasser-Wendel*, 1847: 43

An Arabic tract on philosophy attributed to Najmaddin Abū
‘Umar a’l Kātib a’l-Qazwini

Begining . قال ، ما من الحكمة عجمية واديس على اس صمد - خ

Ending صلي الله عليه وآله اجمعين اى يوم الدين'

3. *Al-Risālat al-Jawāb 'alā Nishātan*, on ff. 11v-20v.

An Arabic treatise on resurrection attributed to Abū-Qāsim al-Rāghib. It is in thirty-three bab.

Beginning: الحمد لله الذي أرسل إلى عباده على ما يشاء من رسله - بح

Ending: سلام عليكم يا خيركم، ومن حصل به على ما يشاء قدر

4. *Risāla Uṣūl-e-Dīn*, on ff. 20v-29.

A tract, in Arabic, on the foundation of Dīn's work.

Beginning: الحمد لله وسبحه ارحمه و - بح - بح

Ending: وهو حمد ونعم الله على كل واحد من عباده

5. *Daf' u'l-Ḥamm*, on ff. 29-30v.

A tract, in Arabic, on how to drive away grief and affliction, attributed to Shaikh Bu 'Alī Sinā.

Beginning: الحمد لله . . . لما كان اعظم ما يعوق الإنسان - بح

Ending: وغير هذا ما يشاء الله من شئ واحد، والحمد لله رب العالمين

6. *Risāla-e-Jabr wa Juhd*, on ff. 30v-35v.

Another copy of the same. Refer Nos. 1, 2 and 3 at 1302/60.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

7. *Risāla-e-Sawāl wa Jawāb*, on ff. 39-39v.

A collection of queries made by Amirzāda Ismā'il, and the replies given by Mir Sayyid Sharif.

Beginning: و به صفحه كل سقمه، مؤالای که امور را به - بح - بح

Ending: و اشاره اشان بنوحید را آنچه دشی کرده . . .
 "او هو اعلم بمخایق اشکل"

3. Samā', on ff. 5v-9.

A tract on the controversial topic of religious music, by the same.

4. Ĥawāb, on ff. 9-10v.

A reply to a query on nocturnal pollution.

5. Kamāl-e-Qudrat, on ff. 10v-13.

A tract on the omnipotence of God

Beginning:

حمد و ثناء بعد مر حدا برا که مومنان را - "خ

Ending:

بر واقع است - و چه ندی آید ، در ایمان ، م بعد

ff. 13. ll. 15. S. 9.3 x 6.2"/23.8 x 15.6 cms.

Written in ordinary script. A late 13th cent. copy.

Worm holes. Fair condition. Not bound.

3029

Aq. 146.

مجموعه

(MAJMU'AH)

This copy contains the following works —

1. Nūru'l-Hidāya, on ff. 1v-9.

Another copy of the same. Kater No. 3018, 4017 and 3020/1

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2. Nāṭru'l-Lu'ālī, on ff. 10v-11v.

A collection of the Arabic saying of Haḡrat 'Alī, arranged alphabetically.

Beginning:

حرف الالف - ایمان المرء بعرفه ، أحرك من

ولحاك في الشدة - الخ

Ending:

ياس القلب راحة اعنى ، بعد الرحمن لصاحبة السعيد - ثم

A controversy on the parentage of Raqiyyah and Umm-e-Kulthūm (wives of Hadrat 'Uthmān) whom the Sunnites claim as the daughters of the holy Prophet. After the death of Raqiyyah Umm-e-Kulthūm was married to Hadrat 'Uthmān.

Beginning

ترقیہ - کہ بود کہ مص شیعہ میگو - کہ حصر ہیں رقیہ
و ام کلثوم - الخ

Ending

شیعہ - بت کبری - کبریت کلمہ مخرج من افواهہم -
والسلام من اتبع الهدی

2. Tanbihu's-Sâlik, on ff. 6v-8v.

A tract refuting the Shiite allegation that muta' is permissible with the Mâlikî school of the Sunnites.

Beginning :

رحمہم ر ہل تدقیق و امداد نظر محفی و مستر خواہد
بود کہ - الخ

Ending :

رحمہم آل احبار برقیہ چرا - والسلام علی من اسع ہدی

ff. 8. ll. 12. S. 7.1 x 4.5" / 18.0 x 11.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 15th cent. copy.

Rubrications. Good condition. Bound.

3028

Nos. 248/5-9.

مجموعہ

(MAJMO'A)

This copy contains the following notes

1. Rûyat-e-Haqq, on ff. 1v-3.

A tract on God's vision.

2. Jahr wa Ihtiyâr, on ff. 3-5v

Another tract on Sunnite benefits by Shajâ'uddîn Abû 'Abdullah a'-Hasan.

2. Saba' Sayyāra dar Radd-e-Mulhid n-e-Badkārāh, a ff. 22v-54v

A short treatise relating a note written by a Shute of Ellore. The work is in seven parts, hence the title. It deals with the following points:-

- a. Is it in order to make fun of Allah and the Quranic text? on f. 24v.
- b. God is the best judge, on f. 30v
- c. Godhead (**الهيات**) on f. 36.
- d. Cleanliness (**طهارت**) on f. 40.
- e. Prayers, on f. 45.
- f. Marriage, on f. 49.

A few rubā'is in which the Shute had mentioned many controversial topics, on f. 51v.

List of Shute works at the end.

Beginning: بعد حمد حضرت الهی تعالیٰ و تعظیم و عت حجاب رسالت
یناهی - الخ

Ending: خدام حدیث ما کہ شیعه باشند - هتد بدان خلق و افادہ ار رحال

ff. 54. ll. 12. S. 7.1 x 4.4"/18.0 x 11.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

3027

Aq 140.

مجموعه

(MAJMA'U)

This copy contains a few folios out of a bigger copy as per original notation. It has two works:-

1. Radda'l-Bubtān'i'l-Maushūm, on ff. 2v-6.

2. *Risāla dar khilāfat*, on ff. 3-68.

A treatise dealing with the Shiite claims for the right of Hadrat 'Ali to the khilāfat. This copy is defective in the beginning.

Beginning : abruptly در استخراج مسائل از قرآن یا قول حضرت رسالت
پناه علیه السلام - الخ

Ending : امید که عذر مقبول اقتدا ایشاء الله تعالی والحمد لله -
یا ارحم الراحمین

ff. 68. ll. 12. S. 7.3 x 4.7⁸/18.4 x 11.8 cms.

Written in clear nasta'liq, in Kalb. I, 1000 December, 1591.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Preserved in a portfolio

Seals 1. Nadr-e Jahān.

صدر حمول خادم شرع دی

2. Muntru'l-Mulk, 1206.

میر الملک - ۱۲۰۶

3026

Aq. 13.

مجموعه

(MAJMC'A)

This copy contains two works:-

1. *Ida'atu'sh Shama' li Izāḥati Zalāmi'l Muta'*, on ff. 1-21v.

An anonymous treatise relating the Shiite claim for the legality of muta'. The title means 'kindling of light for driving away the darkness of muta').

Beginning : الحمد لله الهی متع أهل السنة و الجماعة باحیة كتاب و سنة
نبي الشفاعة - الخ

Ending : و مصیب این بحال در رسایل ایستاد باد دید
و السلام علی من اتبع الهدی

Beginning الحمد لله و صلاة على محمد وآله وصحبه بعد اربع معلوم - الخ

Ending على كرم اسجيت وعلى محبوه ارفيه المقامات

ff. 7. ll. 12. S. 7.1 × 4.3⁸/18.0 × 10.8 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Fair condition. Bound.

3024

Aq. 70. رسالة رد شيعه

RISALAH-RADD-E-SHI'AH

An anonymous treatise refuting the Shiite allegations against the first three Orthodox Imams.

Beginning الحمد لله الذي قدس عن دنس الخوثة والإمكان - الخ

Ending. فضل في ذلك ابو ربه مشارى لسعدى شعر

ff. 14. ll. 23. S. 10.6 × 6.9⁸/27.0 × 17.4 cms.

Written in good nasta'li and nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper. Good condition. Not bound.

3025

Aq. 120. مجموعه

(MAJMA'A)

This copy contains two works -

1. Miftāḥu'l-Ghaib, on ff. 1v-2v.

Just two folios out of a work.

Beginning بدان حدك الله كه چون آدمى قس عد و تكليف
مكلف است - الخ

Ending: abruptly. این معنی اورا بقی میشود سو می که اصلا احتمال - الخ

Beginning:

معص شیعہ ائمہ عشریہ بن زمان از مقدمہ شرح

دیوانی کہ - النسخ

Ending:

آن امامیہ را کہ مخالف خود اند بر ائمتہ عشریہ محول نمودند

والسلام علی من اتبع الهدی

ff. 7. ll. 12. S. 7.1 X 4.4" 18.0 X 11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. A few worm holes. Good condition. Bound.

3022

فیض قدوسی در بیان اختلال کلام طوسی. Aq. 105.

FAIḤ ḤUḌŪṢI DĀR-I-ʿAYN E-IRSHAD AL-JADID

An anonymous tract explaining the confusion found in Nasīr al-Dīn Ṭūsī's assumptions on certain basic points of Shiite creed.

Beginning: حمد و ثناء و شکر بر این حضرت حکیمی و سرزد که - ا ج

Ending: علی سید موجودات و آفرین ابرحمت و احسان
ارباب المقامات

ff. 15. ll. 12. S. 7.1 X 4.5" / 18.0 X 11.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Worm holes. Fair condition. Bound.

3023

Aq. 101.

عین الانصاف

'AYNU'L-INŞĀF

A collection of short critical notes on a few points selected from the first six risālas of Kitāb al-Rasā'il, compiled by a Sūfī whose name is not given.

A. Nm. 686/2.

رسالة سؤال وجواب

RISĀLA-E-SAWĀI WA JAWĀB

A treatise on controversial topic about the supremacy of the Shiite faith over sunnism, compiled by an anonymous person in the form of questions and answers. The answers are by a person of Ladābad.

Beginning

الحمد لله الذي هدانا لهذا...

مفصل - الخ

Ending:

وإياك عن يد كرم الله وجهه كرى

ff. 53. ll. 10. S. 9.0x5.5"/23.0 x 14.8 cms

Written in bad script, by Mirza Shāh-sawār Baig, on 8 Šafar 1245 9 August, 1829, at Hyderabad

Dampness stains. Fair condition Not bound

Aq 59.

رد الفضول

RADDU'L-FUDOL

An anonymous tract refuting the Shiite claim based on the work of the celebrated author of Jam' al-'Uṣal fi Ahwāl al-'Arab, Ibn Aṭīr-Jazarī, (d. 606/1210), a Sunniite quoted by Mir Ḥasan Maibachī, (1890/1487). Maibachī was the commentator of Hidāyat al-Hikmat, and Fawā'id, a commentary on the Diwān of Hadrat 'Alī. According to him the eighth Shiite Imām states in his preface that 'Alī b-Ḥusayn Kidā (d. 203/818) was the founder of the Shiite sect.

The full title of the work is رد فضول المتعق بقول جامع الأصول

f. 39. ll. 9 S. $67 \times 4.4^{\circ}/16.8 \times 11.0$ cms.

Written in ordinary nashī. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound

3018

نور الهداية

Aq. 145 I.

NÖRU'L-HIDĀYA

An anonymous tract showing how a born Shiite having studied religious books had become a Shiite, and advocated the rights of Hadrat 'Alī to the khalāfat.

Beginning

حقیقت محمد مختص بحبيب حضرت و حواری است

عز و حل - الخ

Ending.

و رحمہ لایہ و کی من الثا ترین

f. 16. ll. 15. S. $9.6 \times 5.3^{\circ}/24.2 \times 13.4$ cms

Written in clear nashī and nasta'īl in 1208 17 H.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Not bound.

3019

Fas. 148/3.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 12. ll. 15. S. $9.2 \times 5.6^{\circ}/23.4 \times 14.2$ cms.

Written in ordinary nashī by Mullā Mahammad Yūsuf on 27
[Dhī]ḥajja, 5 Jūlūs = 1124/14 January, 1713.

Worm holes. Fair condition. Not bound

H. 25. ll. 12. S. 7.1 X 4.5, 4.7 X 2.6*, 17.8 X 11.2, 12.0 X 6.0 cms.

Written in good nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper. 'Unwan. Gold ruled borders. Rubrications. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

3016

Aq. 68. رساله در اثبات خلافت حضرت علی

RISĀLA DAR ITHBĀT-E-KHILĀFAT-I-HADRAT 'ALĪ

A few pages out of a work that deals with the right of Hadrat 'Alī to succeed the holy Prophet.

Beginning: abruptly خلافت نداشته و نصی بر خلافت او نبوت پیوسته - ایخ

Ending: abruptly. و بر طلاق آن اعتقاد هم عقل شهادت میدهد

H. 7. ll. 15. S. 7.0 X 4.3, 4.8 X 2.0* 19.0 X 10, 12.0 X 6.0 cms.

Written in excellent nasta'liq. A late 17th cent. copy.

Gold sprinkled paper. Gold ruled borders. Good condition. Not bound.

3017

Aq. 133. نصرة المؤمنین فی کشف شبهات المعاندین

NUṢRATU'L-MU'MININ FI KASHF SH-SHUBHĀTU'L-MU'ANIDIN

An anonymous treatise by a Shiite in which he has refuted the Sunni claim for the Khilāfat of the first three Orthodox Khalīfas. Marginal glosses.

Beginning: الحمد لله الذي... امر الله جبرئيل به ان يقول ان هذا هو علي بن ابي طالب

ایست - ایخ

Ending

آن شبیر دلاوری که بر وی طمع نفس
در خوان جهان پند نهالود علی بود

ff. ii+142 ll. 17. S. 31.5 x 7.7⁶/29.0 x 19.6 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Warith 'Adi, on 17

Dhīqa'da, 1306/15 July, 1889.

European paper. Rubric at ~~beginning~~. To be repaired, and re-bound.

Autograph of the author.

3013

Aq 14. انوار الأبصار في تحقيق مراتب
النبي المختار وائمة الأظهرار

ANWĀR I-ABṢĀR FĪ TAḤQĪQ MĀRĀTIB-N NABĪH -
MUKHTĀR WA A'IMMATI'L-A'T-HĀR

A treatise on Shiite beliefs composed by Miḥammad Abī al-Ḥasanī, dealing with the supremacy of Imāmat over Nabuwat. Ever since, during 1302-1889, the Shiites of Hyderabad had divergent views.

The work is divided into a ~~main part~~ and ~~five~~ ~~parts~~.

Beginning الحمد لله الذي وفقك لهدى (إسلام ...) من يقول
أخرج الناس إلى وجه أمني - الغ

Ending بك ... من محمد الله ...
شاكرًا على نعمائه

The work ends on f. 138 followed by Mas'ala-e-Murāṭ on ff. 139-140, a short treatise on the question of Ascension of the Holy Prophet. It is in reply to the question of a pūsh whether the Ascension was as a Prophet or in the capacity of Walāyat. It forms an appendix to the bigger work.

Beginning: و الحمد لله و مداین خوب روای و تشکیکی است که
مهمیدن آن ارجحت - الغ

Ending وحسرت يوم اشد و قد فرغت من نسود الجواب و انا المحبب
محمد على الخراساني

Aq. 90. السيف المسلول في قتل اعداء الرسول

AS-SAYF UL-MASLUL FI QTLI A'DÄYR-RASUL

A treatise on Shite beliefs dedicated to Maḥmūd al-Milk Sir Salar Jung, (d. 1906/1325), by the author Mir Ahmad Ad-Dinawi

The work is divided into a *muqaddima* (five pages) and a *ghayba*, 41 pages

Muqaddima, on f. 2. مقصد اول در تحقيق معنی اولی الامر و هلیت و آن عا

Maṣṣaḥ 1, on f. 3. مقصد اول در ذکر و تمیز و سلام

Maṣṣaḥ 2, on f. 3 v. مقصد دوم در ذکر اختلاف مسائل بینی که واصل در آن اختلاف بسیار دارد

Maṣṣaḥ 3 on f. 4. مقصد سوم در ذکر علامات مسائلی که ظاهر و آبی محس و مسائل و صو و غیره

Maṣṣaḥ 4, on f. 4 v. مقصد چهارم در ذکر اختلافات مسائل در

Maṣṣaḥ 5 on f. 4 v. مقصد پنجم در ذکر مسئله عصمت حضرت امام محمد مهدی صاحب الزمان و غیره

ghayba, on f. 1-2. همه که در ذکر شریکات مسائل

Table of contents in the beginning

Beginning : سپس بیفیس سرحد یراست که قد کرده معنی بی مشابیش - الخ

Ending : فی الجود و لا کرام وی دفعه ابرحم و انساب لاه ولی تلخیر و الصواب

Beginning الحمد لله ... من حود چه کس که در تهمری شه با در صف
هل دل سواری باشم - الخ

Ending abrupt. این الامم در راه هدایت است خلاف قید خود
بی منتهاست پس چرا

ff. 104. ll. 10 to 15. S. 7.1 x 6.0⁸/23.4 x 14.2 cms.

Written in good nasta'liq. A few lines in ulugh.

Rubrications in blue ink. Some lines in red ink. Preserved in a portfolio.

3011

Aq. 106. القول المبین

A'L-QAWLU'L-MUBIN

A tract compiled by Sayyid Muhammad Ghāthi (Ghāthi), takhtu Rāqm, with a view to prove the Adrat of the Prophet to the said Sayyid. This work was undertaken to relate what the Prophet had to say in this regard. The full title is

(القول المبین فی اثبات مبارکات رسول الله)

Beginning ... محمد حضرت نبی و مبعوت حسب ما استدل به من معلوم
طالان آگاهی باد که - الخ

Ending * و هیچکس را محال نیست که ... و بحمد الله ولا و آخر
والصلاة والسلام ... باطنا و ظاهرا

ff. 9. ll. 12. S. 7.1 x 4.0⁸/17.8 x 11.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A few lines in ulugh.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

3009

Aq. 27. تحفة ناصريه و فوائد حيدريه

ḤUṬ-VA-NĀṢIRIYAH WA FAWĀ'ID ḤAIDARIYAH

A tract on the Shiite succession murā'. The author Sa'īd Ḥabīb Dīdar 'Adī was a fully versed doctor of the religion of Nāṣirū'd-Dīn Ḥabīb Ḍā'ī-jāl IV (d. 1117/1826 A.D.) and the former minister of Munrūf Mulk. He compiled this work at the instance of his Shiite friends. The title contains the names of Nizār and 'Adī, from the master Ḥabīb Yār Kān Nūrī, Mālik.

Beginning

الحمد لله الذي ... أمم محمد بموافاة حس
مرداران ایمان - السخ

Ending

انچه ... هر و خبر ع شرقر این ... است

B, 18 cm x 14.5 cm x 6.6, 7 cm x 4.2 x 24.0 x 15.2 cm. Weight 400 g.

Written on a paper pasted on to a ... A ... th cent ... dy

Ordinary utwān. Red ruled borders, and rubrications. Entirely good condition. To be re-set in existing covers.

3110

Aq. 151/1.

ترك جوش

TARK-E-JOSH

A treatise on the Shiite claim for the right of Ḥaḍrat 'Adī to succeed the holy Prophet. The author, 'Alī Qū, has criticised the Shiites

List of contents in the beginning.

Beginning الحمد لله . طهر . حق . حسب . لاد . ا . رعد . ا . صبح
ولا یح باد بر جمیع کائنات اقام که - الله

پہلی تاریخ گشت دی شب سے رات ۱۰ بجے

fl. vii + xiv, ll. 17. S. 8.5 x 5.7" (21.4 x 14.4 cms.

[illegible]

M. J. Griffin

3008

أمرائد نصائمه في ثبات الرابطة

A L-LAWA, D. I-TAUSHI, L. H. D. A. I. K. F. A. H. H. H.

A track company, Albany and Northern, has
rented the meadows on the same land owers
of the United States National Forest was that
the usual reason for the same is very important
(see).

the replies (اقول) I say

Beginning الحمد لله العلى لاى .. .
المجددى - الخ

سبحان رب ، فاعلم هؤلاء رب اعلم

II, II, II, II, S, 10.0 x 6.1"/26.8 x 15.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq, in 1200/1850.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

RISĀLA-E-MUNĀẒIRAH

A controversial work composed by Sa'imat'ullah 'Abdus Kadir, in about 1250/1844, on a religious query instituted by the Shites on the martyrdom of Imam Husain.

The editor, Ahmad ul-Munir Latif, a ~~well-known~~ ^{well-known} ~~author~~ ^{author}, who was a pupil of the author, having ~~arrived~~ ^{arrived} the post office ~~at~~ ^{at} Hyderabad, and then left for Lucknow and finally arrived at Lucknow in 1240/1825. Since he was fond of knowledge he became a good disciple and friend of Shah Sa'imat'ullah and completed this composition under him.

Eventually on 10 Muharram, 1240/30 May, A.D., Sa'imat'ullah held a munnas and began his sermon on the martyrdom of Imam Husain, based on the famous book of Shah 'Abd ul-Aziz Sirr-us-Sa'adatan. This sermon was highly appreciated by the whole congregation of the Sunnites, but the Shites who were sent there did not ~~agree~~ ^{agree}. Thereupon the Shites advocated that the martyrdom of Imam Husain is not acceptable to the Sunnites whereas the Shariat of Yazdgerd is. They pressed for a reply in writing to which the author instantly agreed. He wanted to reply verbally.

The ~~shita~~ ^{shita} (religious query) was instituted through a judge of Lucknow (Qadi Zulfar'han) after which the Shites wrote a letter ~~in~~ ⁱⁿ the name of 'Imamat'ul-Philatit in which Sa'imat'ullah was severely ridiculed, and was ~~beamed~~ ^{beamed} so much that he had to flee from Lucknow and took refuge in Kānūr. Here also he was put to a lot of inconvenience, whereupon he dictated this work to the editor. It was completed in 1250/1844.

Beginning

الحمد لله الذي خلق عبده واولاده
أما بعد برکاتہ

محرز شیوۂ انصاف - الخ

Ending :

کشمی جمنش کہ حصہ تو مہمی شمس بست

ہا ہنچو کس راع و محاکمہ حاجت است ، ادا مع الخطاب...

والاعتصام فی کل مرام

H. 183. H. 17. S. $9.2 \times 5.8''/23.4 \times 14.8$ cms.

Written ordinary hand, and containing 100 lines of text.
[U.S. 152]

| | |
|---|--------|
| Robertson, Dimpless stars, Good condition | Bount. |
|---|--------|

3004

ايضاح الطاقة الممال في تفصيل الجواب

ISPAH LATAVIU I MA'AN II IAH ITHI IAWAB

This copy contains two works :—

1. Katáwi, on fl. lv-63v.

A collection of two hundred riddles, both in *Urdu* together with their answers, not only with commentaries and illustrations. A little of wits between the poet and the solver creates a new Deed and Rashidy'ddin Khan Dihlawi

Beginning:

چه می فرماید امیدی دیر و صفتان شریعتی را از او
مسئله که در کتاب اشباه نظایر واقع است .

Ending -

و ن بحث في تحت و . و . و الال ، الاسيط

2. The main work, on ff. 64^{3v}-408.

It agrees with the relations of the Samites copied by the late
Rashidu'd-din Khān.

Beginning:

الحمد لله الذي جعل العلم عماداً . . . و أقول بحمد رب العالمين
و بحمد رب العظم - الخ

Ending.

وعلى آله حمداً وآل وأمه به حمداً صاحب فضل رب المتعدل

$$H_0 = 40^\circ, H_{\text{exp}} = 10 \times 5 + 85 - 44^{\circ}/27.2 \times 14^{\circ} = 21.4 \times 11.0 \text{ cm},$$

Written in ordinary nasta'liq. A well-preserved copy.

Coloured ruled borders. Worm Holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Beginning

الحمد لله الذي هدانا لهذا الذي كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله

المربوبين إلى رحمه ربه الجاري - الخ

Ending

و رثمه به كل منتهى رحمة ربه . . . من سعة الطاهرين

إلى يوم الدين

ff 250. x 250 mm. 122 lines. 6X 1/2" 250 x 250 mm. 4.2 cms

Written in Arabic by Ahmad al-Muhallab al-Hafsi, a prominent scholar of the 12th century, who was a student of the famous scholar al-Ghazali.

Known as the "Book of the Prophet" (Kitab al-Nabi) and the "Book of the Prophet" (Kitab al-Nabi). Written in Arabic by Ahmad al-Muhallab al-Hafsi.

3003

Aq

ذروة سنام الإسلام لتأييد دين الإسلام

DR. K. W. AL-SAYID, F. R. S. E., F. R. S. E., F. R. S. E., F. R. S. E., F. R. S. E.

A treatise on the life of the Prophet Muhammad (peace be upon him) and his teachings, written by the author in 1297/1881. The author, Muhammad al-Sayid, was a prominent scholar and a member of the Egyptian government. The book was written in Arabic and was one of the first books to be printed in Egypt. It was a response to the challenges of the time and was a landmark work in the history of Islamic literature.

The date of composition is 1297/1881. The author, Muhammad al-Sayid, was a prominent scholar and a member of the Egyptian government. The book was written in Arabic and was one of the first books to be printed in Egypt.

Beginning

ربنا لا تفرغ قلوبنا... بعد سنائش ونيايش

حسرت أمريد كار عالم - الخ

Ending

بالطاهر... من سعة رحمة ربه... على وصي الله على جبر حقه...

يا أرحم الراحمين

Part II, on ff. lv-40v.

Beginning ثبات صوت هذا هي ... سور ربيده كه رعو اي
نوت - النخ

Ending هذا . فمحت و لله اعز . هذا اب . . و الحمد لله رب . من

Part III on ff. 47-124v. It was the twenty-second volume of the

Beginning شارة بخط يد . يد . موية و اعلام . امر و حب
الامر عليه السلام - النخ

Ending من حور اعظم من . همه حصوف من و م .
المحرمة او المشقة

The work is of Arabic origin, but contains many marginal glosses and Persian verse.

ff. 122, ll. 12. S. 7.8 x 4.6"/10.8 x 11.4 cms.

Written in clear nashq. A late 13th cent. copy.

Reproduced from the original by permission of the British Library.

3002

Aq 9b. الضربة الحيدرية

أَدْوَاتُ الْحَيَاةِ الْخَيْرَاتُ

YOUTHFULNESS AND WELL-BEING IN THE SUN by Hamid-ud-Din, better known as Sayyid-i-Sayyid al-Nasir al-Din al-Daghi

It is stated that Sayyid al-Daghi wrote a book called *Paraphrase of the Qur'an* which was copied by a certain *Muhammad bin al-Daghi* (d. 1442/1504) and was used by him in his work *al-Daw' al-Daghi*. When a few copies of this work were obtained by *Musharra' Af* (d. 1442/1504) he sent them to Hamid-ud-Din the moment that he was in Hamid-ud-Din, 1521, for relating the same to his school, but when the work came to him he undertook the work, the full title of which is:-

الضربة الحيدرية لحراشوك عمريه و منه يا طوه ملويه على
العداوة البديرة

The work is in five volumes, but this copy contains Vol II.

Beginning: الحمد لله ادى حسن رحل مايد حديث... بعد راین یں مجلد
ثالث است - الخ

Ending: پشت و پهلویش رد آمد نه هوش شد

ff. 117. ll. 19. S. 10.0 x 6.2"/20.8 x 15.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq. V. 10.0 x 6.2 cm.

Dampness stains. Worn down. A lot of correction. Good.

Seat of Sayyid Maḥmūd Ḥasan سعید، مقبول حسن

Ref: Hk. 1339.

3001

Aq 44 جواب رساله کشف الغطا

JAWAB-I-RISĀLA-I-KASHFU'L-GHITA

A treatise relating what the same 'Abu'l-'Aziz has written in his book regarding the right of Hadrat Abū Bakr Siddiq to succeed the holy Prophet. Taking an extract from his work (ff. lv-2 and lvi-12) a Shiite, whose name is not given, has rendered his assertions, also attested in favour of Hadrat Ali, proving what Aḥmad Maḥmūd Rūmī, Sa'ad and Ḥāfiz have said.

This controversial work is divided into three parts —

Part I, on ff. lv-10v.

Beginning: زدت موت طریمی که حمیم هر قدر غیر آن
مملکتی نیست - الخ

Ending: والحمد لله من به واصلاته والسلام...
اوله واصله و آخره

ff. 60. ll. 19. S. 10.2x6.4, 7.4x3.5"/20.0x16.2 18.8x9.8 cms

Written in excellent nasta'iq by Hasan b. Ahmad Ma'ad al-'Ajlani wa'iz al-'Isfahani on 2 Sha'bân, 1271/20 April, 1355.

Glazed and gold bespangled paper, a few of which are coloured blue and light green. Double gold lined borders. Good condition. To be repaired, and re-bound.

Ref: Mashhad Library, No. 70.

2999

Aq. 7. إحياء السنة وإماتة البدعة بطعن الأسنة

A IYAHUS-SUNNAI WA IMATATI'L-BID'AT
BIT TANI'L-ASINNAI

A controversial work compiled by Sayyid 'Adi, better known as Dildâr 'Adi Nasir-i-Majlis of Lucknow (c. 1235-1290).

Beginning الحمد لله الذي اقامت دينه . . . بعد جهد وسفر راجع من
الاعمار الاربعة - الخ

Ending: بحمد الله تبارك وتعالى . . . كتب هذه حتى
ان واصلت كتاب

ff. 137. ll. 13 to 17. S. 9.0x5.8" 22.6x14.8 cms.

Written in clear nasta'iq by Mirza Asadullah Khan, copy

European paper. 16.6 cms. x 10.0 cms. No. 10450. B. 10.0

Printed in 1281/1864

3000

Aq. 130. نزهة الاثناعشرية

NUZHATU'L-ITHNA 'ASHARIYYAH

A controversial work compiled by Mirza Muhammad Taqi 'Ustad Ahmad Khan, better known as Mirza Asadullah Khan, the well known 'Allamah 'Aziz-Mahmud al-Din, who was also known as Tuhfa-e-Ithna 'Ashariyyah

Fath 'Ali Shâh Qâçar of Persia, (1211-1250/1797-1834). The date of compilation is given on f. 9:—

و تاریخش از عقل کردم - و ال + نگفتا که هذا کتاب من - ۱۲۳۱ هـ

The work is divided into five bâhs and Khâtima

This copy is left incomplete at the end

Beginning : ای نام نویسنده سر عالم + بی نام نویسنده کی کنیم در

Ending یعنی که چیزی که - در - عثمان چه میبرد بدست که
حکم رجم کند

f. 158 l. 14. S. 45x59, 6.3x36" 240x150, 190x90 cms

Written in good nasâh. A mid 19th cent. copy

Good 'anwân. First two pages decorated. Gold ruled borders, Headings in red. Good condition. Bound

2998

اسلم الاسلام (حجة الاسلام وبرهان الملة) Aq 40

SULLAMU'L-ISLAM HUJJATU'L-ISLÂM WA
BURHANU'L-MILLAT

A treatise compiled in 1231 SH. by Mulla Ali Nuri surnamed Hakim, relating Christian belief, and asserting the right of the holy Prophet and other matters pertaining to his life and times according to Shiite viewpoint

This copy is defective in the beginning. One or two lines missing between ff. 52 and 53. It was sent to the collector, Nawab Sa'adat Jung with a letter written by a Shiite ~~author~~ man, Abd al-Husayn Isfahani through his son, Muhammad Ridâ al-Karîm who appeared to be present during the Silver Jubilee celebrations of H. E. H. the Nizam, in 1943

Beginning aboutly سر فرار است پس منی بر ای من و ملک و ملت - بخ

Ending اکیون عاصی را عده آن نمی ستند . الحمد لله ایدی ... مهدی

Aq. 115. كشف الشبهة عن حكم المتعة

KASHI'U'SH-SHUBHA 'AN HUKMI'L-MUTA'

A tract compiled in 1225/1810, by Ahmad b. Muhammad 'Ad b. Râqir a'l-Ishâni better known as Bihbâni, in reply to Shâh 'Abdu'l-'Aziz Dihlawi's work entitled Tuhfa-e-Ihna 'Ashariyyah. The Shiite practice of muta', (temporary marriage) is upheld. Amongst the Sunnite this practice is illegal. This controversial work was written at the instance of Kâz im 'Ali Khan of 'Azimâbâd (Patna).

Beginning : الحمد لله الذي ارسل محمدا لإرشاد الأمة وكشف اشبهة ...
و بعد چنين گوید مذهب جاتی - الخ

Ending وفه المراءغ من - و بعد عدم بر - انه لمعة في شهر اثنى ...
من الهجرة النبوية على صاحبها

f. ll. 21. S. 8 2 x 4 8"/20.6 x 12.2 cms.

Written in clear nasta'liq script, for Mir Mâj id Husain on 26 Ramadân, 1225/24 October, 1810.

Dampness stains Worm holes Fair condition Bound

Seal of Ittishari' d-Dinab Must a' d-Mah Larzad Muhammad Sharif Khan Bahâdur Saif Jung.

انتحر ادوه مشير ملك نور محمد شريف جانم در سيف حکم

Aq. 113. کتاب مبین

KITÂB-E-MUBÎN

A treatise compiled in 1225/1810 by Ahmad b. Muhammad Husain a'l-Alawi a'l-Husaini d'Astrabadh in which he asserts the rights of Hadrat 'Alî on sacred the holy Prophet. This work is dedicated to

The work is divided into twelve bābs and a khātma.

Beginning. الحمد لله و كفى و اسلام على عباده الذين اصطفى . . .
اما بعد ميگويد فنده درگاه - الشيخ

Ending برحمتك يا ارحم الراحمين و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

ff. 247. ll. 19. S. 11.9 x 8.4"/30.0 x 21.4 cms

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent copy, made from a printed work of 1215/1800.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. To be restored.

2995

Aq. 60/l. رسالة اثبات لعن بر منافقين

RISĀLA-E ITIHĀT-E LĀ'N BAR MUNĀFIQIN

A Persian paraphrase of the Arabic work of Zayn al-Dīn 'Alī b. 'Abdū'l 'Adī, compiled by Muḥammad b. Abī Fāḍl Aḥmadī for those who are not well versed in Arabic. It asserts the right of the 'Ahl al-Bayt to abuse those who according to their creed have usurped the rights of Ḥadrat 'Alī to succeed the holy Prophet.

The work is divided into a ~~chapter~~ introduction, six parts, and a khātma in two bābs.

Beginning. پس بعد از این حقاقت است ... آنگاه و مخاصم در درگاه
را باشد - الشيخ

Ending. حدثت بآیات بعدی شریف و معجز و درود و شهادت
إلى صراط مستقیم

ff. 33. ll. 14. S. 9.4 x 6.1"/23.8 x 15.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq and in ~~the~~ 12th c. by Muḥammad Aḥmadī. Rabī' I, 1196/16 February, 1782.

Rubrications. Worm holes. Repair. Fair condition. To be repaired, and re-set in existing covers of another work.

ff. 37. ll. 15. S. 8.4 X 4.1. 6.2 X 3.2" / 12.4 X 12.4. 15.2 X 8.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2993

Aq. 71. رسالة مناظرة يوسف و نور الله

RISÂLE MU'NÂZIRAT YUSUF WA NÛRILLAH

A collection of letters concerning controversy between Amir Yusuf 'Adil, a'-'Husaini a'-'Astâbadi and 'Ughî Nûrullah a'-'Husaini 'ash-Shaistari on the topic of the knowledge of the Holy Prophet about conscience of all men etc.

در باب صلاح حضرت پیغمبر صلی الله علیه و سلم و همه بر جمیع

مردمان از جمیع احوال واقع شده

Beginning

الحمد لله ... امد بكونه مدته انم رحي من عمر

الملك الكريم الهادي - الشيخ

Ending: درین کتب به یکی برائش و ر ... که گنبد هرچه کوئی کو دست

ff. 85. ll. 17. S. 8.9 X 5.7" / 22.4 X 14.6 cms.

Written in good nasta'liq. 15.5 X 11.4 cm. at Belasore Port in Orissa.

Heavily stained. Worm holes required. Fairly good condition. Bound.

2994

Aq. 24. تحفة اثنا عشرية

TUHFA-E-ITHNÂ 'ASHARIYAH

An exposition of Sûrat al-'Imrân compiled in 1200-1201 by Hâfiz Qasim Halim b. Shaikh Qasim Ahmad b. Shaikh Abu 'Ud-Dihlawi, a Sunnite.

ff. 147, ll. 17. S. 10 x 5.5" 22.5 x 14.0 cms.

Written in primary nasskh. An early 12th cent. copy.

Worm holes, repaired. Fairly good condition. Bound.

Seal of Haidar Yār khān.

حیدر یار خان

2990

Aq. 91

سيف المؤمنين في قتال المشركين

SAIFU'L-MU'MININ FI QITĀLI'L-MUSHRIKIN

A treatise refuting Judaism and Christianity compiled by 'Alī Qun, a Christian convert to Shiite faith during the reign of Sulṭān Shāh Husain Ṣāliḥī, (1101-1135/1144-1172). He quotes Bahāddīn Muḥammad, better known as Fāṭile-Hind, who helped him with the Arabic and Persian paraphrase of the Latin Old Testament.

Since the Old Testament is in five Books, the author has also divided this work into five Kitābs. This copy, however, contains Kitāb I, which deals with the Book of Genesis (سفر تکوین احلاق) on f. 6v.

Beginning: بهترین نفعه که عسبیب ردن در اوستان زید گئی بآن ترنم
تواند نمود - الفخ

Ending: روزگار نت گردد نم، والله الموفق والسع . . . اعلى المطبع

ff. 251, ll. 27. S. 13.1 x 8.3" 33.0 x 20.8 cms.

Written in good nasta'liq, on 26 Rajab, 1298/27 June, 1881.

Rubrications. A few worm holes. Good condition. To be repaired, and re-bound.

Seal in autograph of Sulaimān b. Muḥammad Kāzīm عمده لراحمی سلطان

2991

Aq. 136.

اثبات حق لطیف

ITHBĀT-E-HAQQIN LATĪF

A treatise dealing with the rights of the Shiite Imāms to the Khilāfat, and abuses for the three Orthodox Khāifs, compiled by

2988

اثبات عقائد اثنا عشرية

Aq. 4

ITHBÂT E-AQÂ'ID-E ITHNÂ 'ASHARÎYAH

A controversial treatise in which Mohammedi Khatir Mulla has upheld the Shiite beliefs, and refuted those of the Sunnites.

This copy is defective in the beginning.

Beginning abruptly. و دامن حقه حقه شد و پروايزه بيكر درم صبح
و درم صبح

Ending و درم صبح حقه حقه شد و پروايزه بيكر درم صبح
المؤمنين ... الطيبين الطاهرين

1. 149 ff. 12 to 14. S. 8.0 x 4.5; 6.5 x 4.5; 6.5 x 11.4; 6.5 x 8.5 cm.

Written in clear shafi'a and nasta'liq. An early parchment copy in two different hands.

Coloured red border. Worn edges. Far collection. Bound in a portfolio.

Sea of Banda 'Ali Ridwi, 1219

دوره بیستمی - ۱۳۱۹

2989

تلخیص المرام فی علم الکلام

Aq. 40.

TALKHÎSUT MARAM Fİ ILMİ 'KALÂM

An anonymous compilation of views of the great teachers and scholastic theology.

Beginning الحمد لله كما هو اعلم و مستحق ... بعد از تمام شدن نامی
پروودگار عالمیان - الخ

Ending شکر الله شکر الله لا حول ولا قوة الا بالله اعني العظيم

2984

Aq. 78.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 45. ll. 13. S. $9.8 \times 0.2^{\circ}/24.8 \times 15.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. Date 1194. A fine copy.

Arabic text. A few words in Persian. No illustrations.

2985

Aq. 144/1

Another copy of the same.

Beginning as usual.

Ending: بسم الله الرحمن الرحيم

انشاء الله تعالى والحمد لله رب العالمين

f. 28. ll. 15. S. $7.8 \times 5.0^{\circ}/10.8 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Written in Persian. A few words in Arabic.

2986

Man 52/2.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: بسم الله الرحمن الرحيم

f. 12. ll. 15. S. $9.7 \times 6.1^{\circ}/24.8 \times 15.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Arabic text. A few words in Persian. No illustrations.

الحمد لله الذي نور قلوب المؤمنين و نور نبيهم ... محمد و آله و سلم
روح الامين - امين

و- لائن - طبعہ بر مواع و اصح و غاف لا یح کر .

fl. 272. ll. 27. S. $11.0 \times 7.7^{\circ}$ 27.8×19.4 cms.

Written 1906, by son of the author. An early 12th cent. copy.

| Parameter | Known data | Unknown data | With noise |
|----------------|------------|--------------|------------|
| Fair condition | Bound | | |

2983

رسالة يوحنا

RISÂLA-E-YÜHANNÂ

A. T. Smith, Jr., President, New York
 State Bar Association, New York City
 J. H. Smith, Jr., Secretary, New York
 State Bar Association, New York City
 The New York State Bar Association
 New York City

از خاطر همه کساں مرا وع کر داناد - این

روزنامه‌ی مردم - شماره ۱۱۱ - ۱۳۸۵

1. 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 103

Written in clear nasta'liq. A late 15th cent. copy.

Figure 1. The effect of the concentration of the H_2O_2 solution on the amount of the released H_2O from the H_2O_2 -loaded hydrogel. The amount of the released H_2O was measured by the weight difference of the hydrogel before and after the release. The concentration of the H_2O_2 solution was 0.1, 0.2, 0.3, 0.4, 0.5, 0.6, 0.7, 0.8, 0.9, and 1.0 wt. %.

Rel: IVASH, 1006; Blk, 1331.

2981

Aq 77,1.

Another copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh* containing lesser notes than the previous one.

Beginning: as usual

Ending: *و هو خير من غيره*

It is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh*.

With the same notes as the previous one, but in a different copy.

It is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh*.

2982

Aq 1 *درایه الامه فی معرفه الامه*

It is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh*.

It is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh* which is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh* and is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh*.

It is a copy of the same *Ḥusn al-Muʿawwidh* as under:—

Muqaddima, on f. 2

Maṭlab 1, on f. 12v.

Maṭlab 2, on f. 13v. on f. 24

Maṭlab 3, on f. 14v.

Maṭlab 4, on f. 15v. on f. 145v.

Maṭlab 5, on f. 16v. on f. 177

Maṭlab 6, on f. 17v. on f. 214

ff. 58, ll. 15, S. 7.8 x 4.7⁸/19.8 x 14.0 cms

Written in ~~na'asta'iq~~ ~~na'asta'iq~~ A date 12 cent. copy

Reproduction ~~as~~ Worm holes, repaired Fair condition. Bound.

2980

Aq. 76. مجموعه.

MAJMO'A

This copy contains three works by the same 'Abd al-'Wahid

1. (Risāla-e-Munāẓirah), on ff. 1v-53.

A revised version of the same. Incl. No. 2070.

Beginning: as usu

2. Absāru'l-Mustaqerriin, on ff. 53v-100

Another copy of the same. Incl. Nos. 2071-2072

Ending: as usual

3. Haft-band, on ff. 110v-116v.

Persian verse in imitation of Kāshī.

Beginning ای که میجوئی هفت و دستکارد و دست
از پیرا عمر چون مؤمان سر بر مخاب

Ending جو - و ددیوی می ریزی من و - ادم 4-هه

MS. No. 2073, written by Nūmat Khatm. A. 12 cent. 101-115

ff. 1+120, ll. 17- S. 8.5 x 4.8⁸/21.4 x 12.2 cms.

Written in ~~na'asta'iq~~ ~~na'asta'iq~~ A date 12th cent. 115.

Reproduction ~~as~~ Worm holes, repaired Fair good condition
Bound

Seals of Mumtaz-Mah. 1200. مهر ملک 1200

2976

Aq. 3.

اثبات امامت

ITHBAT-E-IMAMAT

A treatise on the necessity of Imam 'Ali's authority or direct succession to the Imamate after the Holy Prophet. This work is based on the preceding work written by the same author who's number of editions has added some more (new) verses and lines for support of his stand.

Beginning

ای از و کتاب این شریف و نویسی حمزه و بیست و سه صفحه

الحمد لله حق حمده ... مریدان و مریدان محمد - پی

و قیام بلوارم - الخ

Ending

مکن مکن که ره حور را گناره نباشد

مکن مکن که پشیمان شوی و چاره نباشد

1. 15 2. 15 3. 15 4. 15 5. 15 6. 15 7. 15 8. 15 9. 15 10. 15

11. 15 12. 15 13. 15 14. 15 15. 15 16. 15 17. 15 18. 15 19. 15 20. 15

21. 15 22. 15 23. 15 24. 15 25. 15 26. 15 27. 15 28. 15 29. 15 30. 15

Fair condition, Bound

Number of Pages: 23

محمد مریدان - پی

2. 15 3. 15 4. 15 5. 15 6. 15 7. 15 8. 15 9. 15 10. 15

2977

Aq. 1/1.

ابصار المستبصرين

ABŞARU'L-MUSTABŞERIN

A treatise on the Law of the Imam 'Ali's authority or direct succession to the Imamate after the Holy Prophet. This work is based on the preceding work written by the same author who's number of editions has added some more (new) verses and lines for support of his stand.

ff. 113, ll. 16. S. 10.1 x 7.8"/25.8 x 20.0 cms.

Written in 'cursive' script. An early copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fat con-
Not bound.

Seal of Muhammad Riqā.

محمد رضا

2974

Aq. 108.

Another copy of the same work as the one in Aq. 107.

Beginning: as usual

Ending: corrupt.

و الحمد لله رب العالمين

ff. 240, ll. 17. S. 9.1 x 6.2"/24.2 x 15.6 cms

Written in 'cursive' script. An early copy.

Rubrications. Worn edges. Fat con-

2975

اثبات امامت

Aq. 121.

ITHBÂT-E-IMÂMAT

A selection of the 'cursive' work of the Imam Muhammad
Arif as appears in the 'cursive' script of the 'cursive' copy of the
holy Prophet.

This copy is defective at the end

Beginning

الحمد لله رب العالمين

بسم الله الرحمن الرحيم

Ending: corrupt. بسم الله الرحمن الرحيم

ff. 348, ll. 14. S. 8.0 x 4.8"/40.2 x 12.2 cms

Written in 'cursive' script. An early copy.

Rubrications. Dampness stains. Worn edges. Fat con-
served in a portfolio.

ff. iv x 391 + 7. ll. 17. S. 9.5 x 6.5⁶/24.0 x 16.4 cms.

Written in good nastica. A late 11th cent. copy.

Contains 50 folios. Full connection, bound.

2971

Aq 109

Another copy of the same

Beginning, as usual.

Ending: as usual.

ff. 613. ll. 19. S. 9.1 x 5.2⁶/24.2 x 13.0 cms.

Written in good nastica. A late 11th cent. copy.

Contains 50 folios. Full connection, bound.

2972

Aq 110

Another

Beginning, as usual.

Ending: as usual.

ff. 222. ll. 24. S. 14.3 x 5.0⁶/36.0 x 21.8 cms.

Written in good nastica. A late 11th cent. copy.

Contains 50 folios. Full connection, bound.

2973

Man. 4b/2.

Another copy of the same, containing last two faps and the
stemma, 100 folios. Full connection, bound.
that till the end of fap 10

Beginning, as usual.

Ending: as usual.

The work is divided into a number of two parts and a third part, and was completed in 1200 in a handwritten manuscript in Hyderabad.

Beginning حمدی کہ عادلان ملائک ہیں وہ کرتے عبادت الہی کی
عاجز آیتند ۔ الخ

Ending : بود بہ خواہ بوشت بعد ہزار
کہ بہ پایان رسید این گفتار

ft. 11 1/2 x 8 1/2 in. (29 x 21 cm) $\times 8.0^{\circ}/32.2 \times 20.4$
cms

Written in ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~

Decorations: ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~

re-bound

2969

Aq. 111

Another copy of the same.

Beginning : as usual

Ending : as usual.

4 1/2 x 8 1/2 in. (11 1/2 x 21 cm) $\times 8.0^{\circ}/32.2 \times 20.4$

Written in ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~

Excellent copy. Gold leaf used for ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~

tion. Bound

Seals of Munir-ul-Mulk, 1200.

میر الملک ۱۲۰۰

2970

Aq. 107.

Another copy of the same with ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~ ~~Arabic script~~

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

2965

رساله دریان‌سیادت

Ag 69.

KISĀLA DAR BAYĀN-E-SİYĀDAT

A treatise on (*ḥikmat al-ḥayāt*) relating to the conduct of those who claim to be engaged exclusively with the service of God, and the rights of 'Ad and 'Itimāl. The work was composed by the author in the year '1100 'Abdāl, by Mithravarī Ḥanī, and was printed at Meshed in the year 1295 sh. Safāzī. The Dvārī edition is a reprint of the original.

Безопасность

۱۰۰

وہندو لایزال - ۱۳۳

Index :

میں نے اس کے لئے ایک اور چیز بھی کر لی۔

[illegible]fl. 40. ll. 12. S. $8.6 \times 5.2''$ 21.8×13.2 cms.

Written by _____

Worm eaten. Poor condition. Not bound

2966

ترجمة الحقائق

Aq. 30.

TARJUMATU'L-HAQĀ'IQ

A collection of poems arranged under various heads by a learned
man, person with a view to setting forth a full and complete picture of
the holy Prophet.

Beginning

[illegible]

اسماء بنت - الزبير

نات رمنزم و کج تر سعدی و کج تر + کلام بحث ۱-۲ که در جلد ۲۰۰ Ending

هر کرا روی به و د نود + دین روی سود بود

2961

براهین قاضیه

Aq. 18.

IRAKHINEH AL-AH

A Persian manuscript on the subject of the law of inheritance, written in clear nasta'liq script. The work is a collection of legal opinions and is divided into three parts: the first part deals with the law of inheritance, the second part deals with the law of marriage, and the third part deals with the law of divorce. The work is written in Persian and is a valuable source of information on the law of inheritance in Persia.

The work is written in clear nasta'liq script and is a valuable source of information on the law of inheritance in Persia. It is a collection of legal opinions and is divided into three parts: the first part deals with the law of inheritance, the second part deals with the law of marriage, and the third part deals with the law of divorce.

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا... لا اله الا هو

Ending: بحسب كتاب ميرزا محمد...

fl. 26b. ll. 21. S. 9.9 x 5.8⁹/25.0 x 14.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications in red ink. The text is written in clear nasta'liq script.

Seals of Mirza Isma'il al-Bukhari.

مرزا محمد...

Ref. in the index.

2962

Aq. 17.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. 23b. ll. 17. S. 8.4 x 6.2⁹/21.1 x 15.4 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Europe paper. A late 12th cent. copy. The work is written in clear nasta'liq script and is a valuable source of information on the law of inheritance in Persia. It is a collection of legal opinions and is divided into three parts: the first part deals with the law of inheritance, the second part deals with the law of marriage, and the third part deals with the law of divorce.

detected at 1000 cm^{-1} (KBr disk, 100000x). It was
found to be a mixture of $\text{C}_{10}\text{H}_{18}\text{O}$ and $\text{C}_{12}\text{H}_{22}\text{O}$.
found 80.0% C, 10.0% H, 0.0% O. Molar mass 140.0.

نیمده در کره ای مقیم ، احمد عمر وی بی بی ن و شکر
شکر این فراوان - الشکر

۱۔ کربلا کے شہداء کا ذکر
۲۔ اربعہ ائمہ کی تعریف و تحسین

11, 220. 11, 23. S. 11 2x8 0"/28 4x40 2 cms.

Written in ear nasal to by Minneapolis Nov 6. At 1 hour
1st to 12 varied, for 4 hrs, 1956

A few worm holes. Good condition.

2960

صراط مستقیم و دین دوم

S. S. A. I. E. M. S. I. N. I. D. W. A. D. I. N. I. Q. A. W. I. M.

An original treatise which will show that the state is the only amongst the Muslims that is predestined for salvation.
The work is intended to show the reason of God on this.
L. P. 1850 100.

This copy is defective at the end.

حمداً مدح و ث و شکر آلاء و نعمت خداوندی
را سراوا و ست که - ایغ

Findings: *See above.*

$$1.5 \times 4^{1.524} = 11.1$$
$$N_1 \text{ (non-} x \text{ - substituted) } = A - (0.5 + 4^{\frac{1}{2}} + 0.5)E = 0.45N$$

Bound in quarter cloth. 100 pages. Reprints. With
fair condition. Bound.

2957

Aq. 34.

Another copy of the same, but defective by a few lines at the end.

Beginning : —

Ending : —
 ٧٠٠

fl. 70. ll. 15. S. 8.5 x 4.5 / 21.0 x 12.2 cm.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Impressions : — Worn but still legible. Preserved in a portfolio.

Seals of Muniru'l-Mulk, 1200.

مهر الملك - ١٢٠٠

2958

Aq. 33.

Another copy of the same. A few lines are missing at the end found in this copy.

Beginning : —

Ending : abruptly. معونين في الاولى والاخرى

fl. 14. ll. 17. S. 12.2 x 4.5 / 21.0 x 12.2 cm.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy. Preserved in a portfolio. Shawwal, 607 (1208) at Sā'ī. A small = 11 lines at the end.

Coloured red and blue. Impressions : — Worn but still legible. Bound.

2959

Aq. 99 طراوة المصائب في ترجمة كتاب الطرائف

TARAWATU'L-MASABIB FI TARJUMATI KUTUBI'L-TARAF

A Persian paper manuscript, 1414. 4 vols. Hasan a'z Zawwār of the Arabic work of Abu'l-Qasim Abu'l-Mas'ūd, Muhammad

Beginning: روایت میکند که در خلافت هارون ارشدی مری و - حریر
شهر بغداد - الخ

Ending: و هر يك بجای ملائقی شدید ، الحرفه علی محله آخر
الیت - تمت الكتاب

ff. 38, ll. 17. S. 9.5 x 5.9"/24.8 x 14.8 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Another copy of the same. Fair condition. Not bound.

2955

Aq. 145, 2.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: و اگر ای ترین زمین می خدایت بر حد و کره چین

ff. 105, ll. 13. S. 9.6 x 5.7"/24.4 x 14.6 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Another copy of the same. Fair condition. Not bound.

2956

Aq. 31.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual

ff. 117, ll. 14. S. 9.2 x 6.2"/23.4 x 15.8 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Another copy of the same. Fair condition. To be rebound.

RISĀLA-E-HASANIYAH

A Persian version of Arabic work alleged to have been composed by the author, Ibrāhīm Astrābādī, scribe: G. 10. 12. 1551, 958/1551. It deals with a controversy over the Imamate of Husayniah which took part in 1051 between a learned Shiite divines in the presence of the Imam Astrābādī, the Rasbid of Bagdad (120-130), and the learned of the arguments in defence of Shiite faith. This work was written by a woman belonging to a rich merchant. She had served Imam Jaffar al-Baqir for 10 years, and had become well-versed in the Shari'ah. When the Imam died, she begged him to sever to the Shari'ah in this manner: one lakh dinars. This high price being for presentation and respect to him, she should defeat all the learned men of the Empire.

The work is dedicated to Shāh Tānīshī, an Ismaili of high rank and value for the Shiites.

Marginal corrections. Notes on last folios.

Beginning: الحمد لله الذي من عباده عظماء . . . أمم مدحهم كويلد فقير حقير
في مصاعف - انا

Ending: دعؤكم به يبع لاني ومصدق امره و . . .

ff. 116 + 1. ff. 14. S. 81 x 4.6"/20.6 x 11.6 cms

Written in cursive nasḥ, by Muḥammad . . . M . . .
9 Ramaḍān, 1065/3, July, 1655

Worm holes, partly repaired. Bound in . . .

Ref: IvC. 397; Bk. 1300.

Another copy of the same.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Condition: fair. Dampness stains. Words: fair condition. To be repaired and re-bound.

2951

Aq. 117.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 332. ll. 15. S. 98x61"/24.8x15.4 cms.

Written in nasta'liq, by Muhammad Kāzim b. Mirza Muhammad 'Alī, on 23 Šafar, 1104/29 February, 1780.

Condition: fair. Words: fair condition. To be repaired and re-bound.

Seals of Sayyid Muhammad 'Alī Kān Pāshā - سيد محمد علي خان پادشاه

2952

Aq. 117. مباحثہ طاہر دکنی با علما اہل سنت

MALĀDĪHAT TAHR DAKANĪ LĀ 'ULAMĀ L. AHL E-SUNNAT

A treatise on the creed which the champion of that faith in the Deccan Saib Tahir al-Dīn and Dakani, d. 924/1540 under Burhān Nizām Shāh I of Bidār, 1508-1540 had with the Sunni divines of the period.

Beginning: فرجہ الحق و رقی . ظل . چوں کہ حسب امر من قد
جریان شهر یار - الخ

Ending: عہد بیت و افضل بر سادات بحرمت امی و . لا یجد

ff. 61. ll. 10. S. 86x56"/21.8x14.2 cms

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy

Condition: fair. Words: fair condition. Bound

Bāb 2, in five manḥals, on f. 64.

در دوم بر آید و در آن حضرت در آن مؤمنان علیه صلوات

Bāb 3, in seventeen dalils, on f. 145v.

باب - یوم در آید امامت باقی از آنکه اثنا عشر

Bāb 4, in five faṣls, on f. 156.

باب چهارم در کرامت است کردن مردم را و دیگر و بعضی از مطاعن
او و عمر و آنکه در آن است بر طلاق امامت ایشان

Bāb 5, in six faṣls, on f. 177.

باب - در آنکه در آن زمان بزرگ خود ایراد کرده اند -

Khatma, on f. 208. -

Beginning: الحمد لله رب العالمین و بسم الله الرحمن الرحیم
والسلطان والمؤمن

Ending: وصی محمدی است - و به آنکه این و الهی

f. 231, ll. 21. S. 121 x 6.9"/30.6 x 17.2 cms.

Written in clear nasta'liq script.

Plate I (top) - Plate II (bottom) -

Reproduced from the original.

condition, Bound.

A rare work.

Seals of Munir'u'l-Mulk, 1206.

میر الملک - ۱۲۰۶

2950

Aq 126/1.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 223, ll. 17-18. S. 115 x 6.9"/29.2 x 17.2 cms.

Table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: *المضرت نرساند بجهت بی که کو دکان دمر و بی مار کسد*
و در آن زمان

fl. iv + 133. ll. 12. S. 6.1 x 3.2⁹/15.4 x 8.0 cms.

Written in clear shikast nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications: Dimpri system. A few initials. Fair illumination.
Not bound.

2949

Ag 125. *منهج العاضلین فی معرفة ائمة*
الهداة الکاملین

MANHAJUL-I-TĀDILIN FI MARIFATIL-IMMĀTIL- HUDĀIL KĀMILIN

A controversial work on the right of Imam to be held by the States for Hadrat Ali and his successors, as against the legitimacy of the first three Orthodox Khalifas. Composed by Agha Muhammad Isfahani, Muhammad Ali Hanawi, *qadiri*, *ladun*. The work was undertaken at the instance of the ruler's son, the late Shah Tahmāsp I, the Safavide, (930-984/1524-1576).

The date of composition is given in a quatrain f. 7 —

سالی آید این کتب کریم + ۴۰۰ هج و ده اب می شد - ۹۳۹ هـ

The work is divided into 17 chapters, five of which are in the form of a per table of contents on fl. 3-7, and as under.

Muqaddima, on f. 7.

مقدمه در بیان معتقد امامیه و اشاعره عن سبیل التوحید در مسئله مذکور

Table, on f. 8.

*باب اول در بیان آنکه مذهب امامیه واجب
الاباع است*

6. CONTROVERSIAL WORKS

2947

Aq. 23.

تحفة الأبرار

TUHFATU'L-ABRĀR

A treatise on the rights of Hadith. Author: 'Adi al-Muhammadi al-Hasani al-Tabrasi (70/1272). The position of Hadith (religious law) and the eminence of 'Adi's family together with the part played by the University of Tabriz, according to Shiite viewpoint, is the theme of the work, which was specially written for Naim al-Muhammad al-Mas'ûr. It is a guide for the Shites against the Sunnites.

The work is not properly classified in this copy.

Arabic and Persian notes, by a later hand, at the end.

Beginning

و منه التوفيق و يده أرمه التحقيق حمد بيعد و تدي بي عد
بادشاهی راکه - الخ

Ending:

و مع ذلك شمد وجه خصه حدایرا عدل نگوید -
عود باقه من ذلك

n. 136+8 ll 17. S. 8.1 x 5.2" 20.6 x 13.0 cms

Written in good nasta'liq by Ab. Is. Samad b. Sa'ad al-Din 'Ali Naqi, Shirazi in mid Rajab, 704/commence of May 1303.

Rubrications: Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
To be repaired, and re bound.

2948

Aq. 22.1.

Another copy of the same, a revised edition, is this, classified to a maqalat ma'ani tenths. This copy is however defective at the end, and contains first four bâbs.

The work is divided into five lam'as.

Beginning :

سبحانك لا احمى ذنوبك . . . در آء رحمت
توای ذوالجلال - الخ

Ending

ما دمت الاین مظلمة و اصدء النهار - قدیم سحر و اسعد ده

2. Mir'ātu'l-Haqlqat, on ff. 74v-115.

A treatise on the attributes of Imānāt based on Qur'ānī verse, traces it to the same author who has written this to elaborate whatever he had written in the preceding work under Lam'at 4.

Beginning

بسم الله . . . ده چه و خود یعنی علی وی جداوند
ذوالجلال - الخ

Ending :

امدی که حادث و از نو مخلوق شده

3. Riwāyat, on ff. 115v-131v.

A collection of narratives pertaining to the martyrdoms of the first four Shi'a Imāms attributed to the fifth Imām, Muḥammad Baqir.

Beginning

از امام محمد باقر روایت کرده اند که آنحضرت فرمود که -

Ending

آه ارسیده بر آورد و حمله بروی من رکش کشید

Miscellaneous notes in the beginning.

1. n. f. 31. 1. 15 to 2. 5. 8. 1. 6. 21. 0. 15. 2. 0. 8.

Written in ordinary Pers. by Hujj'at Akbar al-Qaddūs al-Yazdi, from 1262 to 1268/1846 to 1852.

European paper. Good condition. To be rebound.



2. Risāla dar 'Ilm-e-Kalām, on ff. 92v-139.

A short treatise on metaphysics and scholastic theology, compiled by Rati' ud-Dīn b. Hajar al-Husaynī at Kashgar.

The work is divided into two parts, *ḥukm*, a *muqaddima* and a *khudma*.

Beginning

الحمد لله الواحد لا اله الا هو . . . بر اوست هر د و هو ش
پوشیده نیست که - الخ

Ending

و درود بر حیر البشر و حاتم العین و اهل الطیبین . . .

3. Risāla fī ḥudūd . . . ff. 149-151.

A tract on the unity of God by Rajab 'Alī.

The work is divided into two parts, five *ḥudūd* and a *khudma*.

Ref. No. 2939/2.

Beginning

درین معنی . قط و حور و و و حود و شرک بطی
و معنوی - الخ

Ending:

مقرر آن است که صرف نقص است از نه . . .

ff. 149. ll. 12. S. 6.5 x 4 1⁷/16.4 x 10.4 cms.

Written in *ghalib* script, by Bazarān at the end of Rabi' II, 1257, June, 1841.

European paper. *Kutubkhana-i-Ghalib* collection. Bound.

Seals of Muhammad M. ff. 125v

۱۲۵۷ - هجری

2946

Aq. 139.

مجموعه

(MA MC A)

This copy contains the following:

1. Partawa-e-Anwār, on ff. 1v-73.

A treatise on Sufi theology by Hasan b. Muhammad al-Bashīr Jānī.

2. (Hurmusu'l-Harâmisah,) on ff. 44-45.

A tract, in Arabic, attributed to Ishaq ibn Ibrahim.

Beginning در باب شتمن علی عدة قصول مرفوعة هر من انهرامه
- انخ

Ending حسن الاخلاق و بهر گونه بحسن درم

3. (Kitâb Nâmir-e-Hikmah) on ff. 46-47.

A treatise on the virtues of the Imam, in Arabic.

Beginning: الحمد لله الذي جعل في هذه الدنيا رادياي كه - انخ

Ending: بخامی - در که جامی در دنیا شده - هیچ نمی که اران
به گرمی بود با دانسته نمید

ff. 101, ll. 11. S. 7.3x4.3"/19.8x10.8 cms.

Written in cursive at Shiraz, in the year 1120 A.H.

Heading in re. W. 1120 A.H. 1120 A.H.

Seal of Mir Yâdgâr 'Alî. میر یادگار علی

2944

Man 52 مجموعه
(1120 A.H.)

This collection was written by

1. (Wilâdat-e-Hadrât-e-'Âhiyât,) on ff. 1-4.

Part 4 out of some work on the lives of the Fourteen Imams, in Arabic.

Beginning در باب ولادت ائمه و انوار و انوار
و مولودهم - انخ

Ending ولادت او و اصول عمرش می و فصل

The work is written in a ...

Beginning: الحمد لله ... چس کو ... منتحی عبد ...
الاحدی - مجوزاته عنه - که - ایخ

Ending: ...
والحمد لله اولاً و آخراً

...

...

Beginning: ...
وعداً - ایخ

Ending: ...
کریه ...

...

Written in ...

Damp ...

...

Seal of Mīr Yādgār 'Alī.

میر یادگار علی

2942

M & A. 36/3-5

بکریه

(AJMCA)

...

1. Risāla-e-Uṣūl e-Dīn, on ff. 1v-32v

A short treatise on ...

Beginning: ...
بر امت - ایخ

Ending: ...
...

(17) (1) شرح حصّة (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

A commentary on the Araḥ ṣayyid of Hadrat 'Alī, compiled by M. 'Abd al-Ḥalīm, surnamed Durr al-Durr, based on sufic beliefs.

Beginning الحمد لله الذي خلقنا - ن عليه ... جس کو نہ ہمار
گفتار - الخ

Ending اَللّٰهُمَّ عَمِّدْ رِيْقِيْ لَدُنْكَ لَا يَحْزَنُ وَلَا يَسِيْ

(17) (1) شرح حصّة (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

A treatise on the way of an ascetic, compiled by Mr Muḥsin Asrā'ādī (1791-1853) and dedicated to Abdu'l-Qādir Shāh of Gharb (1791-1853).

It is written in the style of a madīya.

An autograph, on two leaves, Nos. 188 and 189.

Beginning: بعد از حمد و سپاس بفرق از حمد و مقدار - الخ

Ending بشر مردم بر دل و دماغ و دماغ و دماغ

ff. 41. ll. 19 S 94x59/24.2x15.0 cms.

Written in the style of a madīya. A few lines at the end are written in the style of a madīya.

Demographic data: Written in the style of a madīya. A few lines at the end are written in the style of a madīya.

Poor condition. Bound.

2941

مجموعه

Aq. 85.

(MAJMO'AH)

This copy contains two works:-

1. Sarmāya-a-lymān, on ff. 1v-178

A treatise on the way of an ascetic, compiled by 'Abdu'r-Razzāq a'l-Āhī, author of Gauhar-e-Murād who flourished under Shāh 'Abdus-Samānī, (1052-1077/1642-1666).

7. *Tafsīr-e Kalām-e-Tahid* (1119-1500).

A short treatise on sufiism, by Jalālud-Dīn Muḥammad As'ad a'-Dawwānī (d. 908-1502).

Beginning: ادب حوال قدم راں متعایت کہ - بخ

Ending: کہ اند کہ مورون ، مہ بدو ، یہ مور کل شیہ

8. *A'r-Risālah fī Ḥikmat-i-Tān* (1119-1543).

A short treatise on sufiism, by As'ad a'-Dawwānī written by 'Abdūl-ḥakīm as-Sayyid al-Zayn al-Dīn al-Muḥsin al-Batānī.

Beginning: ولس عمر وندی ان وحید و صلاۃ ہی من حدیث - بخ

Ending: انوحید لہ فقط الحدیث و زیارت مرید

A few verses at the end.

ff. 206+3, ff. 17, 8-5 x 18-5 cm., 184 gms., 141 x 55 cms.

Written in ~~and~~ naskh. A ~~late~~ 17th century copy.

Gold ruled borders, Headlines, Marginalia, Written in, Fair condition. Bound

2940

Man 25.

مجموعہ

MAJMO'AH

This collection

: *Risālah fī Ḥikmat-i-Tān* (1119-1543)

(رسالہ در آثار و اولاد انجہ)

A tract on the twelve signs of the coming of the Mahdi, of births and deaths and the future of the world.

Beginning: در آثار و اولاد انجہ علام و مری بحث باد کثیر - بخ

Ending: و محمد ص ، انجہ و مری ، رب و انجہ

The work is divided into a nūqa-lima, five maṭlubs and a khātuma.

Beginning الحمد لله... بدانکه بن نوشته مشتمل است بر مقدمه... حج

Ending : و بمعنی و خوب و احب چه بچه در نمک است

3. Naf'isul-Arūd (ff. 122v-141v).

A short treatise by 'awja' al-Dihdar, entitled Dihdar, tibt al-15
Fānī (d. 1010/1608).

The work is divided into nine raqams.

Beginning نه و سیرش مر خداوندی را که... حج

Ending بوحشی از وجود ذری بیست و الحمد لله و حمده و صلوات علی
محمد و آله اجمعین

4. Risāla-e-Tauhid (ff. 148-159).

Another short treatise on unity by the same Dihdar.

Beginning ث الحمد و ست هن محمد باو حمد ط... حج

Ending : و مهر کسوفش دور و محفوظ بحق خلق و... اجمعین

5. Risāla-e-Jabr-wa-lkhiyār (ff. 159v-174).

Another short tract by the same.

The work is divided into ten fasls.

Beginning : الحمد لله رب الارباب و مسبب الاسباب و منفع لا و اب... حج

Ending : انکلام الی الله و انکوار... بم بحمد الله و حسن توفیق

6. Risāla dar 'Ilm-e-'Arūd, (ff. 176v-181v).

A short treatise on prosody, by the same.

Beginning : بدانکه اخری که شعر در آن مرکب میگرد... هفت (هفت)
است... الخ

Ending : براهن فعل دین... سرور... بم بحمد الله و حسن توفیق

2938

Aq. 142 l.

رسالة صفات ثبوتيه

(RISALA-I SHAY-I THUBUTIYAH)

An anonymous tract on the attributes of Allah

Beginning:

الحمد لله رب العالمين... و قد جاوزت هذه معنى ما ذكره
و حالات دستگاه - الشيخ

Ending

معدود و در آن حدیثی از محضر پدر

ff. 7, ll. 15, S. 9.6 x 6.0^o, 24.2 x 15.1 cms

Written in ordinary nash and shikasta. A few lines copied

European paper. Rubrications. Worm holes. For protection of the repaired and rest in it

2939

Aq. 143.

مجموعه

(MAJMO'A)

This copy preserved in two volumes

1. Risala dar Taubid (ff. 1-113)

A treatise on the principles of Taubid, by Mirza Taqi Ali
Lahuti. The copy is preserved in two volumes

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم و الحمد لله رب العالمين

Ending

و بعد از این که در آخر آمد این دو در این کتاب

2. Risala-e-Taubid (ff. 113v-122).

Another treatise on the same topic by the same author. All

2936

f. 40.

سراج المؤمنین

SHARAJ MU'MININ

An anonymous treatise on elementary principles of Shiite theology.

It was written in the 10th century. It is on beliefs in Islam and in, on faith.

Beginning اللهم اهدنا الصراط المستقيم... وهدنا لهدى محمد بن علي وعلى
ارعت رسول - سبح

Ending هدي رحمت كبرياء - سور + الحمد - كبرياء - عرو -
والسلام على من اتبع الهدى

ff. 10. ll. 13. S. 6.1 x 4.1" / 10.5 x 10.4 cms.

Written on parchment. A single copy.

European paper. Rustic. Dampness stains. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

2937

f. l. 16/2.

کلید بهشت

KU'ID-E-BIHISHT

An incomplete and anonymous treatise on aqâ'id.

Beginning لا اله الا الله... والاسماء الحسنى... وهدنا لهدى محمد بن علي
مع - مع

Ending آنچه از حدیث و بیای در حدیث

ff. 40 ll. 17. S. 7.8 x 5.8" 20.0 x 14.8 cms.

Written on parchment. An early, but not a copy.

European paper. Rustic. Dampness stains. Worm holes.
Good condition. Bound.

This copy is defective in the beginning. The name of the author is missing.

Beginning: abruptly, و آن پروا ارد موت محوری آست که - الخ

Ending: از مدینه رسیده ماموری و جوان حداد و کرم و است بخود و احتتام رسیده

ff. 113, ll. 15. S. 9.1 x 5.1* 23.0 x 12.8 cms.

Written in cursive hand. A little faded, copy.

Heavily stained. Worm holes, partly repaired. Fair condition. Bound.

Seals: Faql-e-'Alī Khān, مصل علی خان

2935

Aq. 62. رسالة عقائد

(RISALAT-E-'AQAID)

An anonymous treatise on Sufi doctrine, in Persian.

The work is divided into four bābs.

Beginning بسم الله الرحمن الرحيم و الحمد لله رب العالمين و است - الخ

Ending و صلاهی شده و حرره محمد رحیم و صلاهی

ff. 68, ll. 15. S. 9.0 x 5.0* 22.7 x 12.5 cms

Written in cursive hand. A little faded, copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

fl. 9. ll. 20. S. 11.8 x 7.0; 5.8 x 4.5" 150 x 186 - 22.7 x 11.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 12th cent. copy

Ruinations. C. at outer borders. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. Not bound.

2933

Man. 39.

مجالس

MAJALIS

A collection of six manas marked 1 to 6. These are on the
imitation of Hadrat 'Abi Ja'far. From Masnun's sons, Hurr and
Ghann. Each manas begins with a short Ardu prayer, and a few
verses by Masnun and his family.

Beginning

الحمد لله الذي
صلا زنده - الشيخ

Ending

ان بكمت و حق شمس سخن - امير ارسل

fl. 53. ll. 11. S. 10.0 x 6.2" / 25.0 x 15.3 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 12th cent. copy.

Reflections. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not
bound.

Sec. of Mat.

1540

مختم حركت - 1116

2934

Aq. 80.

زبدة العقائد

ZUBDATU'L-AQA'ID

A treatise on Shari'as performed by Hadrat Abi Sa'ad
Khatib. It begins with articles of Iman and Islam.

2931

بشارت الشيعة

Man. 6.

BASHĀRAṬU'SH-SHI'AH

A commentary on the ninety-nine titles of Sa'ad al-Da'irah based on the Glorious Qur'ān and the traditions composed by Mirza Khayr al-Dīn al-Kharrātibī Ḥusayn Ḥusaynī 'A. The titles are followed by the commentary on each.

Arabic Text: 100 titles of Sa'ad al-Da'irah

Beginning

الحمد لله الذي جعل من الامم
مواياح من ادان ما خ

Ending

وحيي كه امر ردم حميم كه من شيعة عي عليه سلام
وحيان ايشان را

f. n + 100 + 1. ll. 13. S. 7.9 x 5 1", 20.2 x 13.0 cms

Written in clear shikast-nasta'liq, 1292/1875.

Kubrication: Dam, new stains. Water-damaged, repaired, and re-bound.

2932

الرسالة في الرجعة

Man. 26.

A'R-RISĀLAT FĪ R RAJ'AT

A treatise on the subject of the return of the dead to life, written by an anonymous person.

Beginning

حمد لله وحملاه عي
بر صر ار باب دانش

Ending

عه را از فرم مدحي م كه سيرة م د نه حردل
بمنه و كرمه

Aq 83.

سلطانیہ و ارشاد العوام

SULTĀNĪYYAH AND IRSHĀDU'L-'AWĀM

This copy contains two works by Karīm b. Ibrāhīm on Shīte theology.

1. Sultānīyah, on ff. 1v-90.

A treatise on the prophets and twelve Shīte Imāms. It was expressly undertaken by the commands of Nāṣirū'd-dīn Shāh Qāchār of Persia, (1264-1313/1848-1890).

The work is divided into a muqaddima, two mahāḥith and a Khatima.

Beginning شکر و مدح و روضه از حضرت و حدیث و روایات
را منقذ - اخ

Ending . مرحمت و مکرمت سرکار اشرف احمد پر دین و اهل دین
بی چند و چون شود

2. Irshādu'l-'Awām on ff. 91v-148.

Another treatise written for the benefit of a' 'lām who are not conversant with Arabic.

The work is divided into four qasnas.

This copy is left incomplete at the end with lacunae on ff. 123, 134 and 140.

Beginning سنجش حدیث و روایات که بر سر حدیث و روایات
است - الخ

Ending about 14 معلوم شد که باب حدیث کسی است که چون او نظر کنی

ff. 148, ll. 17. S. 8.7 x 6.9"/22.0 x 17.4 cms.

Written in 1261/1845, by Mirza Muḥammad b. Karīm ll. 12, 8/
October, 1861.

Rubricated, no dampness stains. Good condition, bound.

The work is divided into fasls and majlis.

Beginning .

مؤنه : حول حسن خوش دهد هر صباح و شام
تا تحت حدائق کند در حین قیام - الخ

Ending .

شیع ارس مصرع بحر در مخ تالیف کتب . . . ۳۰۰ میں
واعلت ابد و حزن المؤمنین

ff. 250+1. ll. 20. S. 13.1 x 8.2¹/33.4 x 31.0 cms.

Written in clear naskh and shikast nast'aliq by 'Abd 'All Khān Bahādar, a descendant of Walā Jāh (or Muḥtār) Muḥ on 13 Rajab, 1287/9 October, 1870, at Hyderābad.

This copy was transcribed from a copy printed at Bombay in 1260, 1844.

European bluish paper rubrications Good condition Bound

2929

Aq. 48.

حديقة سلطانية

HADIQA-E-SULTĀNĪYAH

A treatise on white theology written for King Amjad Ali Shāh of Oudh, by Sayyid Husain b. Sayyid Bahādar Ali of Lucknow.

The work is divided into two main parts. This copy however contains part of Majma'ī which is subdivided into a muqaddima, five bābs and a khata'at. fā 34, 35 are al-qāṭina and the rest of it is copy.

Beginning

حمد لله الحمد لله رب العالمين الحمد لله رب العالمين

Ending .

در مباحث اہمیت ہم سجدہ اراں بحر ص بیانی حوہ
آمد انشاء الله عالی

f. 387. ll. 17. S. 13.4 x 7.7¹/33.4 x 31.0 cms.

Written in shikast nast'aliq by 'Abd 'All Khān Bahādar.

Excellent, 1844. Two bābs of the original missing. Deep reddish ruled borders rubrications. Good condition.

Printed in 1265 1849, at Lucknow.

The work is divided into twelve rukns. Table of contents in the beginning.

Beginning انما وایکم فہ ورسوہ . . . در بیان احوال ملاہ مس
وجہ - الخ

Ending نعظیم ایشان شد آرید و تہمت و شان نمایند

ff. iii+555, ll. 15. S. 11.8 x 8.0" 30.0 x 20.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. Bound.

2927

Man. 3.

Another copy of the same, but defective in the beginning.

Beginning - abrupt. جون . ی گون و کونم د ایشان چون روش
اشتران - الخ

Ending - as usual

ll. 502, ll. 21. S. 11.5 x 6.6" 20.6 x 17.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A mid 14th cent. copy.

Rubrications. Worm hole. Fair condition. Bound.

2928

Tn. 226

حزن المؤمنین

HUZNU'U-MU'MININ

A treatise on the excessive grief of the Prophet (sallā), the holy Prophet, as described, followed by the first eight out of twelve Shite Imāms, compiled by Muḥammad 'Alī al-Shayḥ al-Mā'ān-Najāt al-Kāzimi (taken from his manuscript, dated 1285/1868, during the reign of Kāẓim al-Ash'arī, on the 12th/13th/14th/15th century). The title is (حزن المؤمنین فی مصائب آل طہ و بسین).

(حزن المؤمنین فی مصائب آل طہ و بسین)

No. 23.

سراج الهداية في نهاية الظهور

SIRĀJU'L-HIDĀYA FI NIHĀYATI'Z-ZUHĀR

A treatise on Shiite theology composed by Husain a'l-Husaini a'l-Khurāsānī.

The work is divided into twelve sukhs (chapters), a muqaddima, in the form of questions and answers, from f. 3v and a blattina on f. 104v.

Beginning:

الحمد لله جامع الخفيات و نور ومكور الارملة
والظهور - الخ

Ending:

اگر دعوتم رد کنی و رد قبول
من و دست و دامن آل رسول

ff. 135, ll. 4. S. 44 x 50, 40 x 30" 21.4 x 12 h. 12.5 x 7.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Muḥammad a'l-Khurāsānī on 11 Šafar, 1267/16 December, 1850.

Gold ḥunwan. Decorative lined borders. Rubrications. Worm holes, 10 mm. L. Paper white. Bound.

Man. 31.

زاد اعظم

ZĀD E-A'ẒAM

A treatise on the lives and attributes of Shiite Imams, compiled by Sayyid Muḥammad a'l-Mū'awī, a descendant of Sāhib whose ancestors were ministers to the Qutb Shāhī kings of Golkonda and two of them are buried in Mugha pūra, Hyderābād.

Bāb 3, on Qur'ānic verses in praise of 'Alī, on f. 29.

باب سوم در بیان معنی آیات قرآن که مخصوص بر شأن جناب
علی رضی نازل شده

Bāb 4, on the Sayings of the holy Prophet about the Khilāfat and Imānat
of 'Alī, on f. 39v.

باب چهارم در بیان معنی احادیث که حدیث رسول خداست در باب خلافت
و امامت جناب علی رضی فرموده اند

Bāb 5, on Ghāṭir Khamm, on f. 48.

Bāb 6, on the Sayings of 'Alī, on f. 69.

باب ششم در بیان معنی کلمات حدیث علی رضی که در آن معجزات و امور
فرموده اند

Bāb 7, on the happenings in the Mosque at Kūta on f. 73.

باب هفتم در بیان امر شامی که خود را از امام میترسید و در مسجد جامع کوفه
از حدیث علی رضی سوالات کرد و آن حدیث حوالت آور فرمود.

Khātima, on the attributes of 'Alī, on f. 75v.

خاتمه در بیان معنی روایات و احادیث و غیره

Beginning به پیش و سپس حائمی را که از کار آملای بی احمد و به متمم بی
بی متمم پیش - الخ

Ending احضرت علی و سایر ائمه را بعد از آن صلوات و تسبیح
بمقتضای سبحان ربك... رب العالمین

H. 63, 11, 12 x 6, 8 x 6 1/2 cm. x 10/24.5 x 10 x 10 x 12 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by the author on 11 Jamāda II,
1266/24 April, 1850.

European paper, white and blue. Rubrications. Coloured ruled
borders. Good condition. Bound.

M & K. 79.

مرشد الواعظین

MURSHIDU'L-WĀ'IZĪN

A treatise on Shiite theology, compiled by Muḥammad Rida b. Muḥammad Ṣādiq Astrūbādi, who has cited his work on traditions, and collected anecdotes about the family of the holy Prophet showing therein their eminence and piety together with their sufferings. The work is dedicated to Fatḥ 'Alī Shāh Qāchār (1231-1244-1245-1246).

Beginning :

بعد بیعت خداوندی را سزید که در هر مری که یزد
اشیاء کرد به النج

Ending :

در به بق مد کور حمله محبت حذمه کردند -
واقعه التوفیق و المعین

H. 259 H. 19 11.4 x 7.3 430.4 mm 298 x 18.2 20.2 x 11.8 cms

Written in good naskh and nasta'liq in 1244/1948

Rubrications. Zangār has detached the written space from the borders. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Aq. 86.

سرور المؤمنین

SURŪRU'L-MU'MININ

A treatise on the attributes of Holiness (Aṭṭif) compiled by Mir Muḥammad Ṭālib Mir Hāsen.

The work is divided into seven fārs and a Maṭnā.

Bāb 1 on Imāmat, on f. 5v

باب اول در اثبات امامت

Bāb 2, on miracles, on f. 12v.

باب دوم در بیان معجزات معجزه

2921

Man. St.

هدية المؤمنین

HADIYATUL-MU'MININ:

A translation of the text about the twelfth Imam, Mahdi, compiled by Sardar 'Ali Naqwi.

The work is divided into a main volume and five tabs

Beginning الحمد لله رب العالمين ...

Ending نذر الهی حادثات دهر میشود و عیبت رمن است
رحمت جو اهدا کرد

[illegible]

— Written in cursive pasted on 3 Jan. 1845 (4 September 1829)

Unwan Rubrications. Coloured red borders. Good condition.
Bound.

2922

Aug. 138/1.

أصول دين

USCIB 012

A trip to on-site technology conducted by Muhammad 'Abid

الحمد لله .. امر بعد .. ل اصول .. ی معنی چرہ نیکہ - - -

Feeding: سروں آمدن اراں دین میتود

ff. 14. ll. 11. S. $94 \times 6.4^{\circ} / 23.6 \times 10.2$ cm.

Written in ordinary handwriting by Sayyid ~~Qasim~~ Mahmud in 1251
1835.

~~Dampness stays~~ ~~Worn lines~~ ~~Far on it on~~ ~~Not bound~~

Ref: 1vAS.6 1040

Aq. 5.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 518. ll. 16. S. 8.7 x 6.9² 22.0 x 15.2 cms.

Written in good naskh, in 1177-1800.

European glossy paper. Rubrications, up to f. 12v. Good condition. Not bound.

Aq. 114.

معرفت الہیات

(MA'RIFAT-E-ILAHİYÂI)

A treatise on divine knowledge (معرفت حق) compiled by Mirza Muḥammad Taqī al-Māsawī. In the preface it is stated that since works on this topic are in Arabic, the author has undertaken this work. It is divided into a mujaḥḥad, at a five-leaf on usual terms.

Beginning: لک حمد من بدی فی دل ... ام عدد صفحات
صورت اولی ابصار - اسخ

Ending: حدا م ولا - مددی اندر و حمد رب اعلم و صلوة
والسلام علی محمد و عترته الطاهرين

ff. 208. ll. 15. S. 8.5 x 6.1² 21.4 x 15.4 cms.

Written in a few different hands, in nasta'liq, with a few letters by Muḥammad Bâqir aḥ-Husayn at-Ṭabāṭai, on 12 Jumada II, 1244, 5 April, 1819.

European bluish paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

How much ... and ...
...

Beginning ... الحمد لله ...
... الكرم ... الخ

Ending ... هر امر به بخواند هیچ روزی و همیشه ...

...

Written in good nashq, in 1218/1803.

...

Seals of Muniru'l-Mulk, 1206. میر الملک - 1206

2918

إجابة المضطرين في بيان الأصول وفروع الدين

...

...

...

Beginning ... کلام ...
... الخ

Ending ... من ورثتی ...
... علی عهد و آه اجمیر

...

Written ...

For pear ... Red borders. ... decorations
in brass powder. Good condition. Bound.

Printed in ... 1889, in Persia.

Written in Persian by the late Mirza Asaf-ud-Daula, 1772-1812, at Murshidābād.

Publications Department. Where a reference is made to the
tion. Bound.

Seal of Munfru'l-Malk.

عنصر الميك

2916

Aq 144,2 and 3.

تنبیه الغافلین

TANBIRU'L-GHAFII IN

Admitted to membership 10/10/1910

Member of the following societies:

[illegible]

A short tract on slander (عيت) on fl. 36v-40v.

Beginning

الحمد لله الذي صرف دموعي عن وجهي - يا ذا الجلال والإكرام

trying

که به این سپاری، تنی حرکت
هکون نکردد طبعش هکون شود

ff. 36+4. ll. 15. S $7.8 \times 50^{\circ}$, 11.7×12.6 cms
$$W_1, \Gamma_1, \dots, \Gamma_{n-1}, \Gamma_n, \Gamma_{n+1}, \dots, \Gamma_{n+m-1}, \Gamma_{n+m},$$

Wolfe, S. J., & L. H. Wolfe. 1993. *Journal of the American Water Resources Association* 29:111-121.

Ref: Iv ASB 1001.

2917

Aq. 09.

چہل کلمہ

CHIHIL KALIMA

A collection of early genealogical records with
topics compiled by "Aunt" Azubah K. Adams, daughter of
Maturd Meloy (grandfather of Maturd Adams). Maturd
died in 1248 (1832).

2914

Aq 592

رسالة رجعت صاحب الامر

RESALATU'N-NAJJATIN SAHIBU'L-AMAR

Author: Mirza Asadullah Khan, known as Fā'iz, Muhi'l, and others. Written in the year 1196/18 October, 1782.

Beginning: الحمد لله الذي جعل في الدنيا رجعت صاحب الامر

Ending: والله مبرئ من كل ما لا يليق به

ff. 118, ll. 17. S. 8.0 x 5.0 / 20.2 x 12.0 cms.

Written in the year 1196/18 October, 1782. Dhika'da 1196/18 October, 1782.

Repaired and re-bound.

2915

Aq 82.

زينة الهداية

ZINATU'L-HIDAYA

Author: Mirza Asadullah Khan, known as Fā'iz, Muhi'l, and others. Written in the year 1196/18 October, 1782.

ff. 118, ll. 17. S. 8.0 x 5.0 / 20.2 x 12.0 cms.

Beginning: الحمد لله الذي جعل في الدنيا رجعت صاحب الامر مالك الملك والابن وصي الله

Ending: والله مبرئ من كل ما لا يليق به

ff. 108, ll. 17. S. 8.0 x 5.0 / 20.2 x 12.0 cms.

2912

Aq. 131.

نشاء سرشار ارباب ایمان

NISHA E-SAR FAR AB ARB AL-IMAN

A Persian paraphrase of a Shia short commentary, on Hilya (d. 720/1320) Arak was a'la-shay' Haqi Asrar was one of the five principles of Shiite faith.

Beginning.

حمد لله رب العالمین اللهم صل علی محمد و آل محمد
اسب مختصر در بیان معنی اصول حمیه - ا ج

Ending

حمد لله رب العالمین فی الاول و الآخر و صبرا و بطنا - و - لام

ff. 85, ll. 13. S. 7.2 x 4.3", 18.1 x 10.8 cms.

Written in clear nasta'liq. by Mir Asad Jafar al-Madani, a'n-Nishajuri, on 30 Rabi' II 1198, October, 1790.

Rubricated in brown ink. The title is in red.

Seal of Hujar Yâ. a

حیدر در راز گیتی - حیدر در راز

2913

Aq. 132.

Another copy of the same

Beginning : as usual

Ending : as usual

ff. 49, ll. 17. S. 7.3 x 4.4", 18.4 x 11.0 cms.

Rubrications. Dampness stains. Written in brown ink. Preserved in a portfolio.

Seal of Munir al-Malik, 1200

مدیر الملک - ۱۲۰۰

Written for and dedicated to Mirza Muhiyunnal Masha, in Jazāla II, 1182/October, 1768.

Incipit: W. in be es. Good condition. Bound.

A rare work.

2910

Aq. 102.

فقرات عالی درجات

FIQRAT-UL-ILAKAJALI

A collection of verses on the twelve Shiite Imams based on Waṣīyat of Sa'adud-din Muḥammad al-Sarāzi and Maḥasin-i-Muḥammad of Niruoch and Ilghā Asadī of Isfahān compiled by Abū Maḥāzīr Nizāmī al-Muḥammadi Hādī (c. 1180 of as-Safawi) better known as Shaḥ Mirza. Works by him and other authors in other works refer Index.

Beginning سپس بقیوس ستر او رماک لمسیست حق شاء که - ابع

Ending . و شیعه امامیه اند عشیره بلاحلاف معصوم اما رفرو ن
و سجده و ندی رهن فر ن که ات موجود است

ff. 72. ll. 13. S. 8.1 x 5.4"/20.4 x 13.5 cms.

Written for secondary school and dedicated to Shaḥā al- / November, 1834.

Incipit: W. in be es. Good condition. Bound.

2911

Aq. 103

Another copy of the same, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : ادر این که ...
هر که از برادرش بشناسد و در روی شود

ff. 48. ll. 7. S. 7.6 x 4.6"/19.2 x 11.7 cms

Written for secondary school. A handwritten copy.

Kubrick. W. in be es. Good condition. Not bound.

2908

Man. 24.

رساله در اثبات امامت

(RISĀLA DAR ITHBĀT E IMĀMAH)

A tract on the rights of the House of 'Alī (i.e. Imāmat) compiled by an anonymous person.

Stray notes at both ends

Beginning : مر محمد صبح داشمی مدس سر ائمت مد قب مرانوی
خود چنین آورده است که - الخ

Ending پس خدا که مخصوص بحضرت عبده سلام و ده شد

l. x 11 + 4, + 4 l. 10. S. 8.0 x 4.5" / 11.4 x 11.0 cms

Written in good nashī - An early 12th cent. copy

Rubrications - Worm holes - Fair condition - Not bound

2909

Aq. 119.

مفتاح اسرار الحسينی

MIFTĀH-E-ASRĀRU'Ū-HU-SAINI

A treatise on Shī'ite law compiled by the 11th/17c. by Muḥammad Yūsuf Damawandī in a single strain.

The author considers himself a spiritual disciple of Hadrat Husain and claims that his work is a talisman for the 'ulama - the work in which he has included his own mukaddāts (rev. ed. -)

The work is divided into twenty-seven chapters

Beginning : الحمد لله الذي نزل من العلوم الرشيده عليه السلام بعد ميگوید
خير الى الله - الخ

Ending و آله اطهرين و صلوات الله عليهم اجمعين في يوم الدين

fl. 105. ll. 21. S. 8.3 x 5.3" / 21.0 x 13.2 cms.

2906

Man. 2.

رسالة اثنا عشرية

RISĀLA-E-ITHNĀ 'ASHARIYAH

A treatise dealing with Salāte aḡā'id on the twelve Imāms, compiled by an anonymous person

The work is based on the sayings of Amir Saifu'd-din Muhammad al-Sayid al-Hafid (Amir) Majd al-Mu'minin et

Beginning سر من يقیوس سر و رمانك كيكیت حق شاه كه - اسخ

Ending اس من اول بیوه و طوبی و حسن مراد

ff. 80 ll. 10 s. 70x45, 47x22¹/₂ 124x125 122x50 cms

Written in good nasta'liq by Hadrat Amir Saifu'd-din Muhammad I, on 4 Dhilqa'da, 1140/2 June, 1725.

Coloured ruled borders. Daminess stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2907

Man. 1

Another copy of the same

Beginning 1582

Ending 1582

ff. 80 ll. 10 s. 70x45, 48x22¹/₂ 124x125 122x50 cms

Written in good nasta'liq. Anonymous 12th cent. copy

Coloured ruled borders. Daminess stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2904

Aq. 73.

رسالة غيبت امام موعود

KINH AN (GHI) ALE MAM MAY CH

A collection of traditions in Arabic with Persian glosses and explanatory notes, pertaining to the mysterious disappearance of the Promised Imam, compiled by Mirza Asad 'Adh-Dhahab.

Beginning

محمد بن عبد الله الشافعي

Findings :

اعلیٰ محسن مولیٰ صاحب ارض و آسمان
و آہ احمق و سلف تسلیم گذرا کثرتاً

H. 90. H. 15. S. $8.7 \times 5.6^{\circ}$, 22.7×14.1 cms.

Writing $\alpha = \alpha_1 + \alpha_2 + \alpha_3 + \alpha_4$ and $\beta = \beta_1 + \beta_2 + \beta_3 + \beta_4$, $\alpha_1, \alpha_2, \alpha_3, \alpha_4, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4 \in \mathbb{Z}$, we have

Rub: at the Congress of the Workers' International Association. Bound.

2905

Ag 124.

منهج الرشاد

MANHA IL' R-RISHAD

A treatise on the principles of Shintō, entitled *Shintō no Honjō* (The Origin of Shintō), by Arai Hakuseki (1657-1734), was published in 1700. It was the first systematic attempt to define Shintō as a distinct religious system, and it played a major role in the development of Shintō as a state religion. The book was written in response to a request from the government to clarify the nature of Shintō and its relationship to Buddhism and Christianity. Arai Hakuseki, a prominent scholar and statesman, argued that Shintō was a naturalistic religion based on the worship of the kami (gods) and the emperor. He distinguished Shintō from Buddhism by emphasizing its focus on the emperor and the state, and from Christianity by rejecting its monotheistic beliefs. The *Honjō* became a foundational text for Shintō and influenced subsequent Shintō thought and practice.

† The word *substantia* is used in a technical sense in this paper.

Beginning

اصطلاح ریاضی - در ریاضیات، عبارت از هر ص ۸۱

موردی - الف

' + chong

و حسب رتب الله . فاما من بعد الله . في الله

[illegible]

When you report results, you should include the following information:

September 1764.

Good 'twán. Dotted with red, black, & green stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Prayer Manual. This is the specific prayers for
the fast month of Muharram.

Beginning: الحمد لله الذي لا يحب المرحوم ونحب الممومين

Ending: مصطفىا زنده راضي دار + بعلی و آه الار

fl. 80. ll. 17. S. 8.2 x 4.9" 21.2 x 11.5 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy

Shah Muhammad Taqi Khan, 11th century

Shah Muhammad Taqi Khan, 11th century

Muhammad Taqi Khan

محمد تقي خان

2903

fl. 23/1.

شجرة الإلهية

SHAJRATU'L-ILĀHIYAH

A small treatise on the history of the world, written by
Shah Muhammad Taqi Khan, better known as Shah Muhammad Taqi Khan, undertaken during the reign of Shah Safi.

The work is written in the style of a mathnawī.

The copy is in good condition.

Beginning: الحمد لله الذي بيده معبودي راسد كه -

Ending: abruptly كل حوادث قصه و قدر است و اثر مراد بقصه

fl. 45. ll. 9. S. 7.3 x 4.5" 18.5 x 11.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2901

Man. 30. رياض الابرار في مناقب الكرار

RIYĀDU'L-ABRĀR FI MANĀQIBI L-KARRĀR

A treatise on the attributes of Haqrat 'Alī and the other Shī'ite Imāms compiled by Fath 'a'l-Hasanī a'l-Hasanī, surnamed Kamālu'd-dīn

The work is divided into *ashars*, *ghubans*, *hagiographies* and *chapters* interspersed with *hikayāt*

This copy is defective at the end.

Beginning: و لا استعانة في الاتساع و اتتمية ريس احديث صحيح
التحديث نوات و طروحات - الغ

Ending abruptly. نود محمد بن حفيه رضى الله عنه آمدم وكعتد به انا اسم
ما عرم بوقال ابن لعين

H. 03. ll. 17 - 8.5 x 5.4"/21.5 x 13.8 cms

Written in good nasta'liq - Late 17th cent. - 1048

Rubrications - Dampness stain - Worm holes - Paper getting brittle.
Poor condition. Not bound.

Seal of Sayyid Muhammad 'Alī Ḥajjāb - 1221.

سید محمد علی حان جادو - ۱۲۲۱

2902

M and K 14/2. وقایع المصائب

WAQĀ'U'L-MAŞĀ'IB

A treatise on Shī'ite *ahwāl* according to the martyrdom of Imam Husain at Karbala compiled by A. al-... It is based on other Shī'ite works. The name of the author and the work are on the title.

It contains several anecdotes illustrating the miracles performed by Imām Husain

جواهر العقائد

Aq. 45.

JAWĀHIRU'L-'AQĀ'ID

A treatise on the five principles of Shiite faith, compiled by Muḥammad Rāfi b. Ḥājj, Muḥsin Qazwini, and dedicated to Āqash Khān.

The work is divided into a maqālahma, five bābs and a khātma.

Maqālahma, on f. 3v

مقدمه در معنی معرفت و علم و حکمت

Bāb 1, on f. 10v.

باب اول در توحید و احب الوجود

Bāb 2, on f. 29.

باب دوم در عدل

Bāb 3, on f. 37v.

باب سیم در نبوت

Bāb 4, on f. 42v.

باب چهارم در امامت

Bāb 5, on f. 108v.

باب پنجم در معاد

Khātma in three maqāla is:-

خاتمه مشتمل بر سه مقاله

Maqāla i, on f. 127

مقاله اول در بیان معنی ارادتای حقیقت - -

Maqāla ii, on f. 132.

مقاله دوم در رد کربنخی در احبار روح و آحاد ارض

Maqāla iii on f. 154v

مقاله ثالث در رد کربنخی از وراد و ادعیه مأثور و مجر

This copy is defective at the end.

Beginning:

حمد و سپاس بفرمان حضرت محمدی جوید سزااست

که ذات پاکش از مشابیهت - الخ

Ending: abrupt

مد کور کرده و سطرش و نه کیده سپر کرده که هر که این

ff. 192. ll. 12. S. 8.5×4.7*/21.6×11.8 cms.

Written in 1011/1584. A late 11th. cent. copy.

Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

A rare work.

2898

Aq. 95.

شمع یقین (اثینه دین)

SHAMA I-YA'IN (AINA-FIDIN)

A treatise on the five pillars of Islam, written in Persian known as *Shama-i-Ya'in* by H. al-Khatib al-Kazwini. It was written in the year 1208/30 November, 1793.

Beginning: الحمد لله رب العالمین و صلی الله علیه و آله و سلم

Ending: و بعد از این وقت این فقیر لایق و حق نهد و تمام
عبدیه افضل الصلاة والسلام

ff. 274. ll. 20. S. 9.2 x 6.6"/23.4 x 16.6 cms.

Written in clear nasta'liq script by Muhammad 'Abbās Rabi' II, 1208/30 November, 1793.

Decorated with gold and red. Title written in red on the first cover.

Seals of Muhammad 'Abbās Rabi' II.

احقر العبد محمد هادی بن محمد حعفر

2899

Aq. 96

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 418. ll. 17. S. 10.4 x 5.5"/26.7 x 14.0/18.0 x 4 cms.

Written in clear nasta'liq. About 17th cent. copy.

Kibrications. Coloured ruled borders. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals: 1. 'Abbās Ibn 'Alī.

عباس ابن علی

2. 'Abbās 'Alī Khān Bahādur.

عباس علی خان بهادر

f. 103. d. 10. S. 42. 26. 4. 18°, 15.8 x 6.8, 7.9 x 4.4 cms

Written in ordinary naskh by Muhammad Rahim b. Hājī Rajab
'Aḥ on 18 Rajab, 1192/12 August, 1771.

Cowan. Isolated letters. Worm holes. Fair condition. To be
rebound, if reset in existing covers.

2897

M & K. 78.

منهج اليقين

MANHAJU'L-YAQĪN

A treatise on the 'asā'id (seals) of the sayyids of their Imams,
collected, arranged and written by 'Abū ḥur Muḥammad b. 'Abū
Tutah Qul-stān. The work was completed in Shawwā, 1251 Muḥarrir,
1671.

Table of contents in the beginning.

Beginning: روح امرای حمیدی که مستم مقام در ملاه اعلی
واسر کرم - الخ

Ending: صوات الله - و سلامه علیه و آله و سلم من محشور کرد
اشاء الله تعالی

f. ii + 301. ll. 14. S. 7.9 x 5.0°/20.0 x 12.6 cms.

Written in ordinary naskh by Muḥammad Šāh b. Hājī Šāh, on
29 Jumāda I, 2 Jalūs (probably of Shāh 'Alām Bahādur Shāh I) = 1111/
17 August 1707.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not
bound.

Seals of Sayyid 'Alī al-Ḥusainī.

عده سید علی الحسینی

Ref: EIO. 2667.

Man. 20.

The third volume of the same work. It deals with the *Imānat* in support of which some traditions are quoted.

Beginning. الحمد لله الذي أوضح . . . ما هدانا إلى هذا
 سيرة است - الشيخ

Ending. الحمد لله الذي هدانا لهذا الذي كنا نكذب أنفسنا
 وانها كه عداوت ایشان داشته اند

ff. 295. ll. 18 to 20. S. 8.0 x 5.7¹/₂, 20.5 x 14.6 cms.

Written in clear naskh, on 21 *ḥaḍḥa* ll. 12-13. Written at Karbalā, and collated on 17 Rajab.

Rubrication. Dampness stain. Worn here & there. Collated, repaired and re-bound.

تذكرة الأئمة

Man. 11.

TADHKIRATU'L-A'IMMAH

The biographies of the fourteen *Immaculata*, composed by the same [Bāqir Majāsī]. There is more controversial matter in the first three Orthodox *Ḥajj*is than history in this work.

The work is divided into a normal *ḥaḍḥa* fourteen babs and a *khāṭma*.

Beginning الحمد لله الذي جعل الدنيا . . . ما هدانا إلى هذا
 كنهكار محمد باقر -

Ending: الحمد لله الذي هدانا لهذا الذي كنا نكذب أنفسنا
 إلى صراط مستقيم

Epilogue by the scribe on ff. 195-197v.

2887

H. I. 24.

Another copy of the same.

Herioiding

Ending: as usual.

fl. 207, fl. 15 to 19, $S = 0.5 \times 5$, $r = 244 \times 5.8$ cms

Written in or before the 12th century, by An. Nep. b. It. 82. In Astrakhan. A late 12th cent. copy.

Rubrications: Dampness stains. Worn toes. A few lesions at the end damaged. Poor condition. Not bound.

2888

H. I. 21.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

lt. 316. ll. 19. S. 9.2 x 5.5", 23.6 x 14.0 cms.

Written in test case file by Jerry J. Smith, Jr.

Replacements: Happiness etc. Worm holes that need to be repaired, and reset in existing covers.

2889

Mar. 14.

حياة القلوب

HAYATU'L-QULUB

An epitome of the Arabic work *Ḥikāyat*. A work in two or three volumes, which is the encyclopedia of state history by the *ḥakīm* Mafṣṣ. This Persian work is by the same author in three volumes, out of which this copy contains the second volume, and it gives a full account of the holy Prophet and his mission from the *ṣūrah* *al-ḥakīm*.

ff. 107. ll. 11. S. $8.2 \times 5.2^{\circ} / 20.8 \times 13.2$ cms

Written in clear naskh and nasta'iq by Mir Abul-Qāsim Jihātī, al.,
on 24 Dhīqa'da 1238 = August, 1823 at Hyderābād

Rubrications: Dimpless stars, and decoration: Faint floral

Ref: Bk. 1316

2883

حلیۃ المتقین

H. I. 19.

HILYATU'L-MUTTAQIN

The practice and observances of the twelve Shāhī orders in
the precepts and examples of their forms, written by the same Faqīr
Muhammad in complete on 5 Rabi' al-Thani 1238 = 23 November 1823

The work is written in the form of a dialogue between the author

Beginning الحمد لله رب العالمین علیٰ سائرہ من خلقہ . . . مدح جن کو ر
ترابہ فدایم مؤمنین

Ending . و ہر مردی سنی است کہ مرید روضہ مع شہرہ

ff. 299. ll. 18. S. $9.0 \times 5.2^{\circ} / 23.2 \times 13.4$ cms.

Written in clear naskh and nasta'iq by Hadrat Mirza Asadullah Khan,
1084/17 January, 1674, at Hyderābād

Rubrications: Dimpless stars. Decoration: Faint floral

Seals: 1. Muhtaram Khān. محرم خان

2. Mu'inn'l-Mulk. مومن الملک

Ref: Bk. 1314.

2884

H. I. 21.

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2880

M & K. 65.

Another copy of same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 282. ll. 26. S. 11.8 x 6.8; 4.6 x 4.4^o/29.8 x 17.2; 24.2 x 11.0 cms.

Written in clear nasta'liq. Late 12th cent. copy.

Rubrication. Red ruled borders. Dampness stains. Wormholes.

Fair condition. Bound.

2881

M & K. 69/1.

Another copy of the same. Title in live at the end.

Beginning : as usual.

Ending abruptly. رحمت الهی خلاص مینماید اگر عمر کنی شایسته

f. 118. ll. 21. S. 11.7 x 7.0^o; 26.0 x 17.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Wormholes. Fair condition.

Bound.

2882

Aq. 67.

رسالة رجعت

RISÁLA L-RAJ'AT

A short treatise compiled in 1078/1667 by the same Faqir Majnun.

It deals with the return of the two Pleiade Imāms, Mahdi.

Beginning

الحمد لله ... ما بعد چنين گوید فقير خدا كبر محمد مافرو
محمد تقی - الشيخ

Ending

امجد امجد امجد امولا ، صاحب روضه صلاحه
الفه و سلامه

Good 'unwān Gold ruled borders Dampness stains Worm
holes Fair condition In the repair and re-bound.

Seals of Munirū'l-Mulk, 1200

مدر اميك - ۱۲۰۹

Ref: IvC, 388; Bk. 1311.

2878

M & K. 67

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual

Prayers, in Arabic, at the end, by a later hand, in 421-453

f. 42+0. ll. 15. S. 8.2x4.7^o/20.6x11.8 cms.

Written in good nasta'iq This copy is alleged to have been
transcribed by the author, on 15 qatir, 1104 (10 October 1172)

Rubrications Dampness stains Worm holes Fair condition.
Bound.

2879

M & K. 66

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 345. ll. 22. S. 10.2x6.6; 7.0x3.7^o/25.8x17.2; 17.8x9.2 cms.

Written in clear nashq. A late 12th cent. copy

Rubrications Gold ruled borders Worm holes Fair condition.
Bound.

Seals of Haidar Yār Khān.

حيدر يار خان

then when it is advisable to attack them. The Jews thereupon sent him a tax of fifty thousand gold pieces with 1400 pounds (مئة واربعة عشر ألف دينار) and two very unusual presents which according to them were beyond human comprehension. When I saw I paid all those presents to the holy Prophet to reward him for the destruction of Samiri. Thereupon Samiri and his followers were sentenced to be crucified by 'Abdullah bin Salam.

The manuscript is written in good nasta'liq by a contemporary of the author.

A. S. 1310. MS. No. 100. 100. 100. 100. 100. 100. 100. 100. 100. 100.

Beginning: *الحمد لله الذي هدانا لهذا...*

Ending: *والحمد لله رب العالمين...*

It is written in good nasta'liq. A late 18th cent. copy.

Written in good nasta'liq. A late 18th cent. copy.

Bound in leather. The binding is in good condition.

2877

عين الحياة

M & K. 16

'AYNU'L-HAYAT

An extensive work on Shiite cosmology and ethics compiled by Muhammad 'Ali of Aghajari, a famous Shiite scholar of the 18th or 19th cent. It is based on Shiite cosmological traditions.

The work is written in good nasta'liq and is preserved in good condition.

Beginning: *الحمد لله الذي هدانا لهذا...*

Ending: *والحمد لله رب العالمين...*

It is written in good nasta'liq. A late 18th cent. copy.

Written in good nasta'liq by the author at the end of Jumada II

1075/ end of January 1665.

A tract on cleanliness written for his son, Muḥammad Abnād

Beginning هست حدایرا - تقدست اسماءه که روح مؤمنان را -

Ending عذرش را نمی شود مستحب است که تکرار اعاده
کند - و الله التواب

5. *Risāla-e-Jawāb*, on ff. 40-42v

A reply to the Şulḥ-e-Muḥan who wrote to the 'Abd al-Sulān of Isfahān regarding the truth about State talk.

Beginning: اما بعد غرض ازین نوشته بیان آنست که طایفه شیخ

Ending. پوشش پیش روی شون و در عید فقه و عید و صلاة
... اهل بیت رسول الله

A poem of 'Ismat Bukhārā at the beginning.

ff. 42. ll. 19. S. 9.6x6.0"/24.2x15.2 cms

Written in good nasta'liq by Muḥammad al-Jā'iz for 'Alī Muḥammad.
An early 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair on the inside. To be repaired
and re-bound.

2876

M & K. 10.

تحفة القرائب

FUḤFATU'L-GHARĀ IB

A Persian paraphrase of the Arabic work *al-Muḥāḍḍat* "Aḥadith
biḥ Sanān", refer Arabic *Mawā'iz* 48, of our library. The translation
was done by 'Alī b. Tāḥir al-Buhārā (d. after 1081), who was
attached to the Courts of Sultan 'Alī al-Qāsim and Ibrāhīm of
Golconda.

It is said that when the Holy Prophet revealed the laws of Islam
towards Islām, they consulted Saḥm who was held in esteem for his
erudition. He told the Jews that there are several signs about the last
prophet in the Old Testament and the Prophet of Arabia were to possess

Aq. 142, 2-5.

مجموعه رسائل کاشی

(MAJMO'U'L-KASHĀ'IL FĪ KĀSHĪ)

This is a collection of the works of Muḥammad Murtadā al-Anṣārī (d. 1070/1674). For his other works refer Nos: 1903 and 1904.

1. Sharā'iṭu'l-Imān, on ff. 1v-8.

A tract on Shiite theology

Beginning: میت و یمن حدیر حل شاه که مسعود کل تیر ار
طلیحات حیالت - الخ

Ending: و لست حلاق پسندم و نه دهنم و نه دهنم
و علیہ اشکلا

2. 'Ā'ina e-shāhi on ff. 8v-15v.

A Persian prose version of the tract of the Arabic work Dīwān-e-Qurūb, compiled in 1070/1660

Beginning: پیاس شائسته و ستایش نامه سزاوار نشر
پرورد گاری که - الخ

Ending: آنکه حال و ممکن حسب دلخواه
نارنجیت

3. Tarjamatu'sh-Shar'i'at, on ff. 35v-39v.

A short treatise dedicated to Shāh 'Abbās II

Beginning: پیاس و - شمس مرحد و در که حلاق سزاوار نشر
خود آمزید - الخ

Ending: و چه مقصود و نه کرب خود مد

4. Tarjamatu'l-Tahārat, on ff. 33v-40

Aq. 92.

شرح تجرید العقائد

SHARH TAJRĪDU'L-'AQĀ'ID

A commentary on Nasir-i-Din Tusi's famous work compiled by Mirza, Imād-ud-Dīn Mahmūd b. Mirza Mas'ūd-i ḥanān of Burhānpur, when he was engaged at Burhānpur in a service connected with this work. Since he could not write a preface to his work, he entrusted it to Mirza Mahd-i-Mahd al-Husaini a.k.a. Mashhūr-i-Jadid known as 'Isa al-Jadid, Diwān of Burhānpur. The original copy is in the possession of Mirza Asad Ali Khan b. Muhammad Mu'min ḥayrāsānī 'Isa'īyāh who was a pupil of the commentator. He, therefore, wrote a short preface to this work on 1 Rabi', 1088/20 August, 1677, vide ff. lv-zv.

Beginning: Preface - سپس دستش مرصہ می ز کہ دلا - میکند پر وجود او
و حدوث مصنوعات

Commentary - امر بعد حمد و احب و وجود علی تعالیٰ و صلاة علی
سید انبیاءه - الخ

Ending: Preface - آن چه در رتبه تعالیٰ حق را بدست خود آوری کلام

Commentary - علی توفیق الهی ... الصلاة علی محمد و آله کرام ...
کثیرا کثیرا

ff. 261, ff. 34, 8 88 x 60 mm 22 x 1 mm

Written in clear shikast-nasta'iq on 2 June 1677 (12 September 1071, at Mirzapore).

European paper. Dampness stain. Written on es. Fair condition.
Binding damaged

M & K. 78.

Another copy of the same, but less than half of the above work.

The cover has printed the name of Sultân 'Abd al-lah Qutb Shâh of the court of the Sultan 'Abd al-lah. Thus a leaf like.

A treatise on short-beard, compiled by an anonymous person by the command of Sultan 'Abd al-lah Qutb Shâh of Leonia (1035-1083/1620-1674).

The work is divided into a preface, a few rules and a chapter on the subject, which is repeated at the end of the work.

Madduna, a treatise of knowledge and contemplation of ignorance, on f. 4v.

مقدمه در تعریف علم و مذمت جهل

Bâb 1, on cleanliness, prayers, etc., on f. 4v.

باب اول در سعه و ذکر و سجده و مسواک و کفش و امثال آن

Bâb 2, on friendship and enmity, also on sincerity and love, on f. 17v.

باب دوم در دوستی و دشمنی و صداقت و محبت

Bâb 3, on contracting men, etc., on f. 24.

باب سوم در معاشرت مردم و سیوک و احسن مدینه و احسن نسبی و غیره

Bâb 4, on forgiveness, etc., on f. 52v.

باب چهارم در عفو و عذاب و عفو و عذر و عذر و غیره

Beginning

انندی کلامم حد ویدی سراسر است که شدی هر چه

ارادت = الخ

Ending abruptly

در راه را طلبید، مدار، کار محکم رسید،

چون معمول قلعه محکم

f. o. ll. 19. S. 9.7 x 5.7/24.4 x 14.4 cms.

Written in good nasta'liq. A 12th cent. copy

rubrications. Worn edges. For correction. Found

Tos. 121.

FAWĀ'ID-E-MUNJĪ

An anonymous collection containing notes on Shiite beliefs. The work is dedicated to some Sufi path-shah. It is divided into a muqaddima and six bâbs:-

Margaduma, on f. مقادمه

اب اول در دعاء و ذکر و محرم، مسوالت و نکستر
وامثال ادهی

ب. دوم : در دستهای ریختنی و صدف

Red 2, on f 28

باب سوم در معرفت مصلحت و مصلحت

باب چهارم در بیان عقوبات و ثواب و مدار پادشاهی و عمره

Bib 5, on f. 97v. الباب الخامس في صمد و اشكر

۱۱۴
 فیل ۵، عن ۴. ۱۱۴
 ایت ساری فی حد و لحد و ط و لحد
 و عم

It is a very rare find, and is a very rare find in the Arab world (عرب و عجم).

beginning

دیتا ہے کہ $\frac{1}{2} \times 10^{-10}$ میٹر ہے۔

fl. 709. ll. 15. S. 10.1 x 5.8" 25.8 x 14.8 cms.

Written in good cursive on 25 x 3 1/2 in. paper, 14 March, 1872, at 1544

Rubbers - Damaged states - Worm tires - Fair condition - To be repaired and re-bounded

Seal of Mu'taman, d-Dau al-Darghāl. مؤمن الدولة د' داو ال د' رغال

Autograph of Dargah Quli khân dated 14 Şatar, 1172, 17 October 1758.

The author left the 'Adh Shāh Court and joined the North. The weather did not suit him and on his request he was transferred to Aurangābād.

The collector (Nawab Nāzar Jang) directly descended from him in seventh line.

The work appears to have been composed when the author was still in Bijāpūr.

Beginning الحمد لله الذي جرح من طه... اصلا لا...
این فصول نهمه

Ending شانه شانه به شک... لا حول ولا قوة الا بالله

ff. 351. ll. 17. S. 11.7x0.9" 29.0x17.7 cms.

Written on ex-leather. Marginalia in ṣumṭā and ṣafī. Qawm-e-Dhulqadar. A late 11th cent. copy.

Damages stains. Worm holes. Faint red ink.

An heirloom of the collector

Seal: Haidar Yār khān. یا حیدر یار خان

Author's short notes at the end of every page. (وقف) of every page. of every page. of every page. of every page.

2870

Aq. 100.

عقائد دینیہ

'AQĀ'ID E-DINIYAH

A collection of questions and answers. It ends on p. 15.

i. Fathu'r-Rijāl, short prayers, on p. 77v-78
ii. Fathu'r-Rijāl, short prayers, on p. 77v-78
iii. Fathu'r-Rijāl, short prayers, on p. 77v-78
iv. Khwās-e-Nāde 'Aid, on p. 79v-80v

2867

Man. 45.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 264, ll. 21. S. $11.5 \times 7.0^{\circ}/29.4 \times 18.0$ cms.

Written on heavy white paper with red ink.

Reproduction of the text on a separate sheet of paper in good condition. 16 ms.

Seal of Ja'far.

بإمام جعفر صادق أدر كنى

2868

Man. 40/1.

A manuscript of the same text as the previous one.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ادى سيم از كمش عيب مسم

بسمه شهاب لا ريب آمدم

ff. 318, ll. 17. S. $5.0 \times 8.7^{\circ}/12.8 \times 21.2$ cms.

Written on heavy white paper with red ink.

Reproduction of the text on a separate sheet of paper in good condition.

A reproduction of the text on a separate sheet of paper.

2869

Aq 79

روضة الأنوار و ردة الأفكار

RAWDA'U'L-ANWAR WA ZUBDATU'L-FKĀR

A manuscript of the same text as the previous one.

Reproduction of the text on a separate sheet of paper in good condition.

A reproduction of the text on a separate sheet of paper.

Reproduction of the text on a separate sheet of paper in good condition.

A reproduction of the text on a separate sheet of paper.

$$H_2 = 11, 17, 23, 29, 35, 41, 47, 53, 59, 65, 71, 77, 83, 89, 95, 101, 107, 113, 119, 125, 131, 137, 143, 149, 155, 161, 167, 173, 179, 185, 191, 197, 203, 209, 215, 221, 227, 233, 239, 245, 251, 257, 263, 269, 275, 281, 287, 293, 299, 305, 311, 317, 323, 329, 335, 341, 347, 353, 359, 365, 371, 377, 383, 389, 395, 401, 407, 413, 419, 425, 431, 437, 443, 449, 455, 461, 467, 473, 479, 485, 491, 497, 503, 509, 515, 521, 527, 533, 539, 545, 551, 557, 563, 569, 575, 581, 587, 593, 599, 605, 611, 617, 623, 629, 635, 641, 647, 653, 659, 665, 671, 677, 683, 689, 695, 701, 707, 713, 719, 725, 731, 737, 743, 749, 755, 761, 767, 773, 779, 785, 791, 797, 803, 809, 815, 821, 827, 833, 839, 845, 851, 857, 863, 869, 875, 881, 887, 893, 899, 905, 911, 917, 923, 929, 935, 941, 947, 953, 959, 965, 971, 977, 983, 989, 995, 1001, 1007, 1013, 1019, 1025, 1031, 1037, 1043, 1049, 1055, 1061, 1067, 1073, 1079, 1085, 1091, 1097, 1103, 1109, 1115, 1121, 1127, 1133, 1139, 1145, 1151, 1157, 1163, 1169, 1175, 1181, 1187, 1193, 1199, 1205, 1211, 1217, 1223, 1229, 1235, 1241, 1247, 1253, 1259, 1265, 1271, 1277, 1283, 1289, 1295, 1301, 1307, 1313, 1319, 1325, 1331, 1337, 1343, 1349, 1355, 1361, 1367, 1373, 1379, 1385, 1391, 1397, 1403, 1409, 1415, 1421, 1427, 1433, 1439, 1445, 1451, 1457, 1463, 1469, 1475, 1481, 1487, 1493, 1499, 1505, 1511, 1517, 1523, 1529, 1535, 1541, 1547, 1553, 1559, 1565, 1571, 1577, 1583, 1589, 1595, 1601, 1607, 1613, 1619, 1625, 1631, 1637, 1643, 1649, 1655, 1661, 1667, 1673, 1679, 1685, 1691, 1697, 1703, 1709, 1715, 1721, 1727, 1733, 1739, 1745, 1751, 1757, 1763, 1769, 1775, 1781, 1787, 1793, 1799, 1805, 1811, 1817, 1823, 1829, 1835, 1841, 1847, 1853, 1859, 1865, 1871, 1877, 1883, 1889, 1895, 1901, 1907, 1913, 1919, 1925, 1931, 1937, 1943, 1949, 1955, 1961, 1967, 1973, 1979, 1985, 1991, 1997, 2003, 2009, 2015, 2021, 2027, 2033, 2039, 2045, 2051, 2057, 2063, 2069, 2075, 2081, 2087, 2093, 2099, 2105, 2111, 2117, 2123, 2129, 2135, 2141, 2147, 2153, 2159, 2165, 2171, 2177, 2183, 2189, 2195, 2201, 2207, 2213, 2219, 2225, 2231, 2237, 2243, 2249, 2255, 2261, 2267, 2273, 2279, 2285, 2291, 2297, 2303, 2309, 2315, 2321, 2327, 2333, 2339, 2345, 2351, 2357, 2363, 2369, 2375, 2381, 2387, 2393, 2399, 2405, 2411, 2417, 2423, 2429, 2435, 2441, 2447, 2453, 2459, 2465, 2471, 2477, 2483, 2489, 2495, 2501, 2507, 2513, 2519, 2525, 2531, 2537, 2543, 2549, 2555, 2561, 2567, 2573, 2579, 2585, 2591, 2597, 2603, 2609, 2615, 2621, 2627, 2633, 2639, 2645, 2651, 2657, 2663, 2669, 2675, 2681, 2687, 2693, 2699, 2705, 2711, 2717, 2723, 2729, 2735, 2741, 2747, 2753, 2759, 2765, 2771, 2777, 2783, 2789, 2795, 2801, 2807, 2813, 2819, 2825, 2831, 2837, 2843, 2849, 2855, 2861, 2867, 2873, 2879, 2885, 2891, 2897, 2903, 2909, 2915, 2921, 2927, 2933, 2939, 2945, 2951, 2957, 2963, 2969, 2975, 2981, 2987, 2993, 2999, 3005, 3011, 3017, 3023, 3029, 3035, 3041, 3047, 3053, 3059, 3065, 3071, 3077, 3083, 3089, 3095, 3101, 3107, 3113, 3119, 3125, 3131, 3137, 3143, 3149, 3155, 3161, 3167, 3173, 3179, 3185, 3191, 3197, 3203, 3209, 3215, 3221, 3227, 3233, 3239, 3245, 3251, 3257, 3263, 3269, 3275, 3281, 3287, 3293, 3299, 3305, 3311, 3317, 3323, 3329, 3335, 3341, 3347, 3353, 3359, 3365, 3371, 3377, 3383, 3389, 3395, 3401, 3407, 3413, 3419, 3425, 3431, 3437, 3443, 3449, 3455, 3461, 3467, 3473, 3479, 3485, 3491, 3497, 3503, 3509, 3515, 3521, 3527, 3533, 3539, 3545, 3551, 3557, 3563, 3569, 3575, 3581, 3587, 3593, 3599, 3605, 3611, 3617, 3623, 3629, 3635, 3641, 3647, 3653, 3659, 3665, 3671, 3677, 3683, 3689, 3695, 3701, 3707, 3713, 3719, 3725, 3731, 3737, 3743, 3749, 3755, 3761, 3767, 3773, 3779, 3785, 3791, 3797, 3803, 3809, 3815, 3821, 3827, 3833, 3839, 3845, 3851, 3857, 3863, 3869, 3875, 3881, 3887, 3893, 3899, 3905, 3911, 3917, 3923, 3929, 3935, 3941, 3947, 3953, 3959, 3965, 3971, 3977, 3983, 3989, 3995, 4001, 4007, 4013, 4019, 4025, 4031, 4037, 4043, 4049, 4055, 4061, 4067, 4073, 4079, 4085, 4091, 4097, 4103, 4109, 4115, 4121, 4127, 4133, 4139, 4145, 4151, 4157, 4163, 4169, 4175, 4181, 4187, 4193, 4199, 4205, 4211, 4217, 4223, 4229, 4235, 4241, 4247, 4253, 4259, 4265, 4271,$$

Written by, MAHMOUD SYTAWA at Hydrabad on 15 June 1941 at 11:25 in Number 17 at Hydrabad.

Rubricated, 10 ruled, 20 blank. Durable, less stains. Worn
holes. Fair condition. Bound.

Seals of Muntru'l-Muk, 1200

مسجد الملك - ٩ - ١٢

2865

No. 41

Beginning : as usual.

Feeding: as usual

A'zainu' l-Umarā (Arasṭū Jāh)

bo es, Fair condition. Not bound.

Seal of Muniru'l Mulk, 1206

مَمْلُوكٌ

2866

Num. 44.

Beginning: as usual

1144

Written in ordinary nasta'liq. An early 15th cent. copy.

1884 1885 1886 1887 1888 1889 1890 1891 1892 1893 1894 1895 1896 1897 1898 1899 1900 1901 1902 1903 1904 1905 1906 1907 1908 1909 1910 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702

... .. 11 7 ✖

2. $\alpha_1 = 2$, $\beta_1 = 1$, $\gamma_1 = 1$, $\delta_1 = 1$, $\epsilon_1 = 1$.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

2863

Man 42.

مناقب المرتضوی

MANAQB AL-MURTADAWI

A fine copy of the manuscript 'Manaqib al-Murtadawī' by Mirza Asadullah Khan, a famous Kashmiri, (d. 1709), written in the year 1120 (1708) in the town of Srinagar, Kashmir. The manuscript is written in the Shikasta script and is a very fine copy.

The manuscript is written in the Shikasta script and is a very fine copy. It was completed in three years time.

Beginning: الحمد لله رب العالمین - لا اله الا الله - محمد بن عبد الله

Ending: تا شود مقبول طبع و تصحیح و تمام
فلسفی منافع بحیث و سلام

ff. 278 ff. 1 v. 5. 8.9 x 5.3" 22.8 x 13.0 cms.

Written in the Shikasta script and is a very fine copy. The manuscript is written in the Shikasta script and is a very fine copy.

Bound.

لا اله الا الله - محمد بن عبد الله

Handar Yār hyān (two patterns)

حیدر یار جان

Ref. R. 154, 1081; lvASB 68; lvC 175, 743.

2864

Man 43.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2861

In. 445.

Another copy of the same

Beginning 'as usua

Ending : as usual,

fl. 24. fl. 1 - S. 1. 5X5 1/2" 2 5X 1 1/2" 2 1/2"

Written in clear shikasta script by a hand of the calligrapher,
 on 25, Muharram, 1298/ 28 December, 1880

Full pean paper. Heavily aged. Very good condition. Good
 condition. Bound.

2862

M & K. 98.

نصیحت نامہ

NAṢIHAṬ-NĀMA

A collection of admonitions as given by the Holy Prophet (S.A.)
 have given to Hadrat 'Alī.

An anonymous compilation

Beginning

بسم اللہ الرحمن الرحیم
فرمودہ اند کہ با علی - ا ع

Ending :

اے علی - کہ جو رسول خدا - فرمودہ شد

fl. 45 fl. 1 - S. 1. 5X5 1/2" 2 5X 1 1/2" 2 1/2"

Written in clear shikasta script by a hand of the calligrapher

Heavily aged. Very good condition. Good condition. Bound.

dition. Bound.

The work is divided into forty maslaks.

Beginning: حمدی حد حامی ر رواست که به کان مسکت احو رر
طریق به الیج

Ending: این حور از اتفاق مرقه ناحیه ست ملا من الله احمر
حاجه اموره حیرا

ff. 67. ll. 14. S. 8.5x5.8"/21.6x14.8 cms.

Written in good calligraphy, in Rika'at, on 8 April, 1629.

Longest line: 26 letters. 1 line on 10 lines. To be returned.

2860

16 479. نکات دوام دودمان قطب شاهی

نکات دوام دودمان قطب شاهی

A short treatise on the history of the Durrani dynasty, written by a member of the family, Sayyid Muhammad 'Ali, who was a member of the family of the Durrani dynasty. The work is a short history of the Durrani dynasty, written in a simple and straightforward style. It is a good example of the style of the Durrani dynasty, and is a valuable source of information on the history of the Durrani dynasty. The work is written in a simple and straightforward style, and is a good example of the style of the Durrani dynasty. It is a valuable source of information on the history of the Durrani dynasty.

Beginning: حمد و سوس و سوس مرشدی سرور است که
صیغتش را بامر کی

Ending: شامت همه صیغ کد و شب همه دوری
رورت همه ماهی کد و مه همه علی

ff. 61. ll. 9. S. 7.0x4.1; 4.5x2.7

Written in good calligraphy, in Rika'at, on 8 April, 1629.

late 11th cent. copy.

Longest line: 26 letters. 1 line on 10 lines. To be returned.

Seals: 1. Muhammad 'Ali.

2. Sayyid Murtadā Khān.

Seal: 1. Muhammad 'Ali.

2. Sayyid Murtadā Khān.

Seal: 1. Muhammad 'Ali.

2. Sayyid Murtadā Khān.

ff. 171 ll. 17 S 8.4x50.6/22.7x12.2x126, 160x72 cms.

Written in good nash and nqā, in 1023-1014

Gold rule borders. Ribat at top. Lengthen status. Fair condition on bound.

A rare work and a presentation copy for the Sultan

2858

Aq. 145/3.

تحفة عباسی

TOHFA E 'ABRASI

A treatise on laws compiled by the Sultan of the Hindustan Timurid, Muhammad Husayn, in 1023-1014. It is a copy of the original manuscript (1005-1037/1587-1624).

Beginning *الحمد لله رب العالمين...*

Ending *...*

ff. 101, ll. 14. S 9.4x56"/23.8x14.2 cms

Written in good nash and nqā. It is a copy of the original manuscript at Hyderabad.

Reprinted in 1905. It is a copy of the original manuscript and re-bound.

Ref. IVANIS, 1024

2859

Tas 178/1 مسالك الاصوار و مشارق الانوار

MASALIKU'L AVWAR WA MASHARIQU'L ANWAR

A treatise on state secrets compiled by Muhammad Bāqir Wā'iz Tabrizi.

Beginning: بعد حمد دوا بخلال و ذروشی و ل بر روح حی و هر کمال
می نگارند که - الخ

Ending: و ذوات رور و روش و ذوات محضت مصلح و بی
و آه صلوات الله علیه

f. 10, ll. 12. S. 70 x 4.5°/17.5 x 11.4 cm.

Written in *Shikasta* script. A good copy.

Represents *Qasida* by *Wahid Durrani*.

Bound

A rare work.

2857

Aq. 11

تحفة شاهي و عطیة اهی

ICHFA-E-HIĀHI WA 'ATIYYA-E-ILĀHI

A Persian *Qasida* by *Nasiruddin Tusi* (d. 1274) on Nasiruddin Tusi (d. 1274) 'Aqā'id, by Zainu'ddin 'Abd. 'Abdu'lloh Badakhshi.

The *Qasida* is written in *Shikasta* script. The first two lines of the *Qasida* are written in *Shikasta* script. The first two lines of the *Qasida* are written in *Shikasta* script.

The translation begins from l. 6 and ends on l. 170v.

The translation begins from l. 6 and ends on l. 170v.

Beginning

شاهي و عطیة اهی و ذوات رور و روش و ذوات محضت مصلح و بی
و آه صلوات الله علیه

Ending:

بحیر اسمك بحر اقص الشبك دحوالی موحا بحر ل
حزاک و من یاه سواء ارضك و سمك

Beginning:

الحمد لله... أما بعد فحيى كوكب الشرق...

Ending:

در کتب مسوط مد کوراست الحمد لله اولاً
و آخراً... آله الطهرین

n. Shikḥ wa Shihīr Nuzāz in 1280/90.

A tract on doubts and omissions in nuzāz.

The work is by the author of the nuzāz in 1280/90. It is the same as Risāla Shikḥ wa Shihīr Nuzāz. Referred to in 2012/4.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 4, 6, 21 or 22, 10, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000.

The original work is written in excellent nasta'liq in the hand of 'Abd al-Kāfir Shirāzī at the end of Jamā'at 1024/1616 or the middle of 1025/1617 at Hyderabad and those in the margins in 'ulugh nasta'liq and nasta'liq, in 1172/1759.

Good and well-preserved. The work is in good condition. The paper is slightly discoloured. The binding is in good condition. To be repaired, and re-bound.

A note dated Sha'bān 1041/February, 1632, by Muḥammad Shāh 'Abd al-Ḥamīd on the fly-leaf.

A rare work.

2856

Aq. 11.

اصول خمسة

UṢŪL-I-KHAMSĀ

A short treatise on the five principles of state law compiled by an anonymous person. The work was written by the orders of Sultan Muḥammad Qutb Shāh of Golconda, who had ordained the learned men of his time to collect five Qur'ānic verses for each uṣūl (principle).

This copy which is defective after the first folio contains folios 2 to 5, and the ḡāṭima.

H. 8 1/2 x 14 1/8 in. (21.5 x 36.5 cm) S. 24.2 x 15.6, 14.8 x 7.9 cm

Written in good shikasta. An early 12th cent. copy.

Gold sprinkled space for text. Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders up to 1/2 in. on 1 and 2 sides up to 1 1/4 in. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2855

رسالة اصول و احكام

RISALA-E-USUL WA AHKAM

A treatise on the principles and laws of the Shikasta script, compiled by the celebrated calligrapher, Mirza Asadullah Khan, the author of the 'Fatawa-i-Alamgiri'. It was written in the year 1112 (1700) and was first printed in Kanadgaon, October 2, 1712.

The work is divided into four parts.

Bāb 1, in 5 fasls, on f. 4.

باب اول در اصول دین

Bāb 2, in 8 kitābs, on f. 9v

باب دوم در عبادات

Bāb 3, in 4 kitābs, on f. 10v

باب سوم در معاملات

Bāb 4, in 3 kitābs, on f. 10v

باب چهارم در احکام

Beginning

الحمد لله وحده، والصلاة على من لا نبي بعده، وآله واهله

فرمان - الشيخ

Ending

هو جده الله عز وجل محمد بن عبد الله بن عبد المطلب

besides there are two short tracts on Shikasta by Muḥammad Bāqir a'l-Majlisi on the margins:—

1. Sharā'ih wa Ādāb-e-Namāz, on ff. 1v-27v.

Notes on obligatory prayers.

2852

Man. 37.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

H. 253. ll. 15. S. $89 \times 4.9^{\circ}/22.8 \times 12.6$ cm.

Written in ...

... on ...

Bound.

2853

Man. 35

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: ...
... در عرصه یحسین

H. 130. ll. 15 or 23. S. $90 \times 5.5^{\circ}/23.0 \times 14.0$ cm.

cent. copy.

... ..

... ..

Scale of Baqic 'Alī Ḍān, 1220

ماوراء النهر - ۱۴۲۰

2854

Aq. 110.

Another copy of the same, defective in bāb 7

Beginning: as usual.

Ending:

Beginning

درب شرح فی حدیث و سری امری محمد اسیر
و محدود و احب او جوئی که حاکم بر سر امری

Ending

باشد که هائی آن بر عترت محصل و مسر جو حد شد

He is now in the library of the

1. Chihil Hadith, on ff. 2v-40

A collection of forty sayings of the Holy Prophet with Persian paraphrase and introduction by Zayn al-'Adin 'Abdullah Buzkhi-
stani, the representative of Sultan Mahmud I of the Quth Shah of Gilan (ca. 1035/1612-1626).

Beginning

محمد و بناس محدود و محب و جوئی که

Ending

حکایت حکم و روئے و سبب که در حدیث
محمد و آل اجمعین و رحمتک یا ارحم الراحمین

2. Qaus-nāma, on ff. 44v-45v.

A collection of twelve masā'ir, or journeys, of the Holy Prophet, with Persian paraphrase and introduction by Zayn al-'Adin 'Abdullah Buzkhi-
stani, the representative of Sultan Mahmud I of the Quth Shah of Gilan (ca. 1035/1612-1626).

3. (Qāṣṣa-e-Firūz Bagh), on ff. 53v-64v

A collection of twelve masā'ir, or journeys, of the Holy Prophet, with Persian paraphrase and introduction by Zayn al-'Adin 'Abdullah Buzkhi-
stani, the representative of Sultan Mahmud I of the Quth Shah of Gilan (ca. 1035/1612-1626).

4. (Majmū'a-e-Ruq'at), on ff. 65-84v.

A collection of letters.

He is now in the library of the

A collection of twelve masā'ir, or journeys, of the Holy Prophet, with Persian paraphrase and introduction by Zayn al-'Adin 'Abdullah Buzkhi-
stani, the representative of Sultan Mahmud I of the Quth Shah of Gilan (ca. 1035/1612-1626).

6. Scrappy notes

ff. 130. ll. 21. S. 10 1/2 x 5.7"/28.2 x 14.6 cms.

Written by the author, Zayn al-'Adin 'Abdullah Buzkhi-
stani, the representative of Sultan Mahmud I of the Quth Shah of Gilan (ca. 1035/1612-1626), at Hyderabad

He is now in the library of the
He is now in the library of the

H. 115. Il. 11. S. 7.3 X 4.4⁹/18.4 X 11.0 cms.

Written in excellent nasta'liq. An early 17th cent. copy.

Gold sprinkled paper. Dampness stains. Worn edges. Fair condition. Not bound.

2850

H. 115 اعلام الاحياء في حرمة الغنا في القرآن

ILĀMUL-ĀHYĀ FĪ HURMATI'L-GHINĀ FĪL-QUR'ĀN

A treatise on shrine benefits compiled by Muḥammad Ḥusayn b. Ishaq b. Musawwib al-Hasan al-Samirani. The work is based on the traditions etc. and pertains to the sanctity of various shrines (عقبات) in reciting the glorious Qur'ān, and in praying (صلاة).

The work is divided into a total of nine chapters (fāsilāt).

Beginning: محمد بيحد غريزي در سواست كه گوشه كبريان - الشيخ

Ending: وهذا تحريم أرد ابراهيم في هذه الرتبة صلاة والسلام
ارحم الراحمين

H. 58. Il. 15. S. 6.5 X 4.1⁹ 16.8 X 10.4 cms.

Written in good nasta'liq by Nā'ir al-Muḥsin on 8/10/1104 H., 10/14/11 October, 1605.

Kulīyat is. Dampness stains. Worn edges. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2851

Man. 30. كفاية المؤمنين

KIFĀYATU'L-MU'MININ

A Persian paraphrase of an Arabic work of Sa'ad al-Qadiri 'Abd al-Hasan Sa'id b. Hibatu'd-Din al-Hasan al-Husayni (d. 1177) compiled by Muḥammad al-Samirani. The work deals with the miracles performed by the fourteen Imams, and is divided into fourteen bābs.

2847

Aq. 66

Another copy of the same.

Beginning : as usual

Ending : as usual

ff. 69 ll. 12 to 16. S. $8.0 \times 4.5^{\circ} / 20.6 \times 11.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq by Sher Ali, on 2 Jumāda I, 1080/15 July, 1675

Rebreathings. Dimples, stains. Worm eaten. Fair condition. Bound

Seal of Hasan Ridā, 1309.

حسن رضا - ۱۳۰۹

2848

Aq. 65.

Another copy of the same

Beginning : as usual

Ending : as usual.

ff. 82 ll. 14 to 18. S. $8.0 \times 4.5^{\circ} / 21.4 \times 11.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq by Mirza Mirza, 12/24 September, 1820, at Akharābād.

Ruled, etc. Worm eaten. Poor condition. preserved in a portfolio.

2849

Aq. 64

Another copy of the same, etc. etc. at both ends

Beginning at 20, fly. سے عامہ مصلحت سے مصلحت رکھتے ہیں

Ending at 20, fly. کہ شرع کے امام دین سے ہیں

The work is divided into a preface, two parts and a conclusion.

Beginning . محمد یحییٰ وندی پور مراد احب و خودی را که نظام اصول
ار فیض خود او مدت - الثمن

امروزی و حب شد پس اگر درین حال ترك كند عاصی
در گناه آله باشد

Beaver, the 1st water the ...

1. A few people are going to my class on Friday.

11. A tract on ethics, on 1. 68v

$$f_1(t) = 1 + 2 \cdot d, \quad 1 \leq t \leq 50 = 50, \quad f_2(t) = 2^4 / 20 = 8.14, \quad 1 \leq t \leq 50, \quad f_3(t) = 0.5 \cdot f_2(t)$$

Written to E. J. Nash, on 4 November 1964. 140, 1, 1.

Good 'n'win - Good and encouraged to help - Damages states
Worm holes - Fair condition - to be repaired and re-bought

Ref: Bk. 1343

2846

Ag. 03.

Another copy of the same

Beginning : as usual

Ending : as usual

И 52 II. 15 75x50*, 100x128 см.

When is $\mathcal{C} = \mathcal{C}^*$? As easily as it can be.

First and last lines by a later hand. *Interpretations* Dampness stains. Worm eaten. *Copy on* Preserved in a portfolio.

A note states that this map was sent to the former Library by
 Trần Xuân 10/10/1954.

Seal: سرپرستی دادرار لطف محسن

The work is written in two parts, the first deals with the attributes of the Prophet, the second with the attributes of the Imam. The copy is of the second part.

Beginning: رب وارش عرواحم، موت وصدت ایدی عه م
و اوصیای کرام حمد و سپاس - الخ

Ending اردوستان رو - ن مر مؤمنین سیه - لام کند بحق محمد
و آله الطاهرین، آمین رب العالمین

ff. 287. ll. 25. S. 11.3x6.9"/28.8x17.4 cms.

Written in one hand by Mirza Mirza Ali Mulla Mahanrad
1st Jilafan - Mahanrad, 1057/4 Apr. 1978

Worn by the depositor. Wormholes. For attention. To be
repaired, and re-bound

2844

Aq. 50.

Another copy of the same. A few lines at the end are left blank in
this copy.

Beginning: as usual.

Ending در کتب رسیده در کتب دیگر نوشته
موازی آنکه در کتب دیگر نوشته

ff. 312. ll. 20. S. 11.8x8.5"/35.0x21.0 cms.

Written in one hand by Mirza Mirza Ali Mulla Mahanrad

1st Jilafan - Mahanrad, 1057/4 Apr. 1978

2845

رسالة حسنیة

Aq. 141 l

RISĀLA-E-HASANIYAH

A treatise on Sufi theology written in an abridged form by an
anonymous person

Beginning : شرح من ينهيه له روى سرادق حويل بر روى ارباب حل
حيوه ميشود - الخ

Ending : و امثال آن در است حديث حم كلام و محمد ملك كلام
و صلاة بر سيد امام ما توانت اللبالي و الابهام

ff. 55. ll. 15. S. 6.8x3.6*/17.2x9.2 cms.

Written in clear nasta'liq in Nakhshabani script, ca. 15th c.

Rubrications: Dampness stains. Fair condition. Preserved in a portfolio.

A rare work

Sea of Mahumud 1337 on 1378

امام محمد ٩٠٧ - ٩٠٧

2840

رجمة المناقب

Man. 15.

TARJAMATU'L-MANÂQIB

A Persian paraphrase of the Arabic work *Manâqib al-Imam al-Mahdi* of Bal'adh al-Fath Arkan (1072-1271) composed in 1704/1303, by Abu Hamza / Zawwār. It contains the lives and virtues of the twelve Imams from Imam Ali to Imam al-Mahdi.

Beginning : حمد لاحد و حصه من حسن الاحد و حسن الاحد و حسن الاحد
رواست که - الخ

Ending : من است اسبقه الله روى من روى و روى و روى
و آله و عترته اکرام

ff. 535. ll. 17. S. 11.0x7.0*/28.2x18.0 cms

Written in good nashk in *shikasta* script, and nasta'liq from f. 234 to the end, by Hasan, on 20 Sha'ban 1207 or 1 April, 1406.

Rubrications: Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Beginning

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه
وكاتب اين كتاب - الخ

Ending

بسم الله الرحمن الرحيم
بالحق

0.125 1.11 5.82 4.87 21.4 12.6 cm.

Written in shikasta style by Muhammad Jahid on 11 Ahmad
1, Muharrar, 1209/1, i.e. 1, Muharrar, 1209/1
8 August 1724 in the town of Patan (Sindh).

Preserved in one copy. Impress stains. Worm holes. Fair condition.
To be read in one direction.

2839

Aq 9.

اركان الايمان

ARKÂNUL-İYMAN

A short treatise in Shikasta style, compiled by Abd'ul Hasat Sharif
and dedicated to Shahzâdî Saif who appears to be a queen of
some place.

The work is divided into five aqs :-

Aql 1, in 12 maqābs, on f. 2v.

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه

Aql 2, in 5 maqābs, on f. 19v

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه

Aql 3, in 6 maqābs, on f. 25

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه

Aql 4, in 7 maqābs, on f. 3v

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه

Aql 5, in 4 maqābs, on f. 2v

الحمد لله الذي ابرأنا من شر ما كنا فيه

ft 100, ll. 14. S. 88 x 56¹/₂ / 42,6 x 14,4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'Alī Naqī al-Mā'ūf al-Karbāsī,
on 12 Ramadān, 1142/ 24 October, 1710.

Repaired by J. D. Jones. A few words. I am a man.
To be repaired, and re-bound.

Seal of Sybil Andrews.

محمد شہزاد

Ref: Hk, 1320.

2837

Aq. 93/1.

Another copy of the same.

Beginning 25 IS 11

Ending AS USJ4

fl. 67. ll. 17. S. 102 x 6.3"/258 x 160 cms.

Written by Johnathan harris, is April 18, 2012

Rubrications: Brightness, worn & faded far condition. To be re-bound

2838

Map 5

رجمة بحر الأنساب

TARJAMA E BAHRU' L-ANSĀB

A Persian copy of the *Asrar al-Nabi* in the State Library, Jafar Sadik (1000) with some additions by the eleventh State Imam, Hassan Ali (1125), was written in the Holy Mosque of Paveh (1540-45). It was copied in 1255, by Abu Tahir b. Ali, later b. Imam b. Musa b. Imam Muhammad Taqi. Eventually Sayyid Murtada 'Ali b. al-Hadi (1614) translated it. It deals with the trials and tribulations related upon the family of the Holy Prophet according to the Shia beliefs.

2835

Ac. 28.

ترجمہ اعتقادات قمی

ṬARJAMA-E-ṬTIQĀDĀT-E-QUMMI

A Persian translation of a Sanskrit work compiled by Muḥammad Maḥmūd al-Qāsimī, dedicated to Shāh Tabnāspī, the Salavī (1600-1641/24-25).

The work is divided into forty five bābs.

Beginning شریف محمدی سے رشیدی راہروں کے مدد سے لکھی گئی
گرامت - اربع

Ending توفیق ملک عبدالرحمن ... مؤلفین رب ربہم منہم

ft. 80. ll. 15. S. 100 x 5.7"/25.2 x 14.4 cms.

Written in Shikasta, in Sharīfī script.

Rubrications in yellow, less sharp. Some lines repaired. A few folios at the end damaged. Fair condition. Bound.

2836

Ac. 192/4.

حل العقائد

HALLU'L-'AQĀ'ID

Another Persian translation of a Sanskrit work of the same Arabic work on Hinduism compiled by Muḥammad al-Qāsimī (the author is Istahbānādī) (Astrābādī).

The work is divided into four parts.

Beginning در ردی حلا و مدح و مذمت موجودات محمد
مدح نبوت - اربع

Ending اور برای محمد بیان آن کتب تصنیف کیم بحسب فہم
و معرفت و الحقیقہ و رب العالمین

2834

Ad 1921-2. ثواب الاعمال وعقاب الاعمال

THAWABU'L-A'MÂL WA 'IQABU'L-A'MÂL

This copy contains two short treatises on Sûrat Yûsuf by Abū Ja'far Muhammad b. A. b. Ḥusayn, Mûsā b. Ḥusayn's son, a'l-Qummi, (d. 381 or 391/991 or 1001).—

1. Thawabu'l-A'mâl, on ff. 1v-74

A collection of notes on righteous practices which earn a reward (ثواب).

Beginning الحمد لله اے خدا ہم دعا کرتے ہیں کہ یہ کتاب

Ending اور یہ دعا ہو کہ تیرے روز قیامت اسے قہر سے بچا دے
قہر سے بچا دے

2 'Iqābu'l-A'mâl, on ff. 75v-98.

Another collection of notes on acts which bring forth punishment (عقاب).

Beginning الحمد لله ... اے خدا ہم دعا کرتے ہیں کہ یہ کتاب

Ending : عقاب کسی کے لئے ہے جو اللہ کی نافرمانی کرے
اُن کی لعنت ہو اور وہ دوزخ میں جائے گا

ff. 98. ll. 17. S. 88 x 56⁶/22.6 x 14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Aḥmad b. al-Miswāq, Karbala, in 1122-1710 at Aurangabad.

Rubrications: A few worm holes. Fair condition. For sale and re-bound.

2833

شمع ایمان

Aq. 148.

SHAMA' IYMÂN

A defective manuscript acquired by an anonymous collector. This copy is defective at the end.

Beginning الحمد لله رب العالمين که ما را در عهدی حفظ فرمود

Ending بیرون و ما است را که عذاب و سعادت

f. 48, ll. 9. S. 50x41⁸/12.8x10.4 cms.

Author or scribe, place, date, etc.

Number of leaves, number of lines, etc.

٨
٠
/

2831

Sl. 70.

نورنامہ

NUR-NĀMA

A descriptive account of the **Life** of the Holy Prophet (ﷺ) from its creation down to his death as a **biography**, composed by an anonymous person. It is based on **Qur'ān** verse and **Hadith**.

Isnād-e-Tāpnāma on last page

Beginning

قال بی عیہ سلام واول و حیم و من نور و

اول جو ہے کہ حضرت حدی نبی حد کہ ثابت ہے

Ending.

در آخر حال نور امی در لای د فہرست

آمین یا رب العالمین

f. 11. ll. 15. S. 4.6 X 5.4"/24.2 X 13.5 cms.

Written in ordinary script. A late 12th century copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition, not bound.

2832

Sl. 69.

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending:

و خود کہ دشمن ہو حال کہ نور

من حد پر امتنان من و اویدا

f. 7. ll. 15. S. 7.4 X 4.5"/18.0 X 11.4 cms.

Written in ordinary Nast'liq. A late 13th century copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

ff. 10. ll. 27. S. 10.5 x 4.4* 19.0 x 7.8 cms.

Written in excellent handwriting. A late 11th cent. copy.

Good and well preserved. Wormholes reported. Borders
narrow. Fair condition. Not bound.

2829

Aq. 1472 رسالة قاضي قطب الدين كاشاني

RSALA-I QADII QUTB-DIN KASHANI

A tract on the beliefs of Qutbuddin Kashani, whose identity
cannot be established.

Beginning الحمد لله . . . بدانکه این دوازده است و این است این

Ending و بختی عبادت این عبادت که هر مصلحت

ff. 10. ll. 11. S. 7.0 x 4.4* 19.2 x 11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq script. An early 12th cent. copy.

Worm-eaten. Poor condition. Not bound.

2830

N. 7/2. رساله در عقائد

RSALA-I DAR 'AQAID

A treatise on Sumat ta'qat about the attributes and essence of
Hadrat 'Ali and his family on account of their correlations with the
Holy Prophet compiled by Sayyid Mulkhatib Mirza Husayn al-
Husami.

Beginning : بحمد محمد و آله و مراد می که

Ending تا تمام که مومن در وی دال مومنی شد

ff. 41. ll. 11. S. 8.5 x 5.0 x 2.5* 19.1 x 12.1 cms.

Written in nasta'liq script. An early 12th cent. copy.

Relatively well preserved. Wormholes. Fairness stains. Worm
holes. Fair condition. Not bound.

2827

جام کوثر

Aq. 44.

JAM-E-KAÜTHAR

A critical study of the term 'kaüthar' which is considered to mean
 1. abundant good (حیر کثر) 2. stream (نهر) 3. and prophethood
 (نبوة) The author Ahmad Ali Akbar of Multan has taken an
 extract from the printed copy of an Arabic work named Ahmadiyah
 Laahidh (factually Ahmadiyah) written by Asadullah Khan the treatise
 which is dedicated to Saad Jung Mungra's Murad. He has taken pains
 to consult several standard works on al-fih al-Hadith and issued
 fatwās from learned men of the age who are also mentioned in this work
 which begins with a short preface (مقدمه) حکم الله ان کثر = سوره.

This copy is defective at the end.

Beginning در حمد و صلاة خدم اعلیاء دین محمدی احمد علی احمد ری
 میگوید کہ الخ

Ending : فرمود کہ است کہ کر تا بخو مر - و ر کت صم دحر

f. 72. ll. 16. S. 7.1 x 4.9" / 18.0 x 12.4 cms.

Written in clear nasta'liq, most probably by the author in Jurnâda I
 1215/August, 1868

European paper Good condition Bound

2828

رساله در عقائد

Aq. 72.

(RISÂLA DAR 'AQÂ'ID)

An anonymous tract on Sunnite beliefs.

Beginning درم حدای مہربان بحث بندہ ، حقیقتہای چہر ہادر ہمس الامر
 قیت است = الخ

Ending و سلامت ایمان در میان ہم و امید است

Background

محمد بن عظیم . کہ بر اوصی مہم رہے ۔

طوالی - الخمر

Feeding

(۷) پٹ لکھتے اور منہ لکھتے و ہمیں کا۔

H. 533 H. 17 or 18 S. $11.6 \times 7.3^{\circ}$ 129.0×18.0 cms.

Written at the residence of the author on 12 Sept. 1857 at
 Worcester, Mass. at the request of the Rev. Mr. Abigail Doremus
 Agent J. A. V.

European. Known to be present in the Western European condition. Banded

An autograph copy.

2826

مرقاۃ الجنات

Ak. 50

1100

[illegible]

Beginning :

۱۰۰ ر سینه جلدی و ۲۰۰ ر می - بند

上 部 封 閉

عبدك السعداء المقبولين . . . أعضاء أسرة الاحبار

10. 288 II 11. 5. 9.7 X 7.9"/25.6 X 19.8 cm>

Written by *Ernest R. House* and *James C. House*. Copyright © 1978 by J. B. Hyster & Co.

1. How can we find a better condition? Recall

2824

A. N. 356/6.

فتوی

فتاویٰ

A fatwâ on pool and bad (حر و نه) given by ʿĀli Muḥammad Irādâ ('Alli khân) a's Ḥa'awî (a.k.a. ʿĀli Muḥammad), (d. 1277/1854).

Beginning

اگر حق حق حر و نه بدگان حق است
معنی - البغ

Ending

معنی لا حر و لا نه رو کن امر من لا من است .. و قد اعلم
بصواب

H. 5. H. 13. S. 8.3 x 5.9"/20.8 x 14.8 cms

Written in ordinary nash and nast'liq. A late 19th cent. copy.
Rubrications. Fair & good condition. Bound.

2825

Man. 34

عمدة المقاصد والمطالب

ʿUMDATU'L-MĀQASID WA'L-MĀTALIB

A collection of notes and extracts from well known works on Salafite 'arjâ'id about the Holy Prophet, and the four orthodox schools, compiled by Muhammad 'Alī Taḥṣīṣi 'Āshūr, or Shāh 'Alī Muḥammad 'Ashūr Murk.

The contents are:—

- i. a commentary on the distinct characteristics of the four schools, f. 41
- ii. the four schools, their founders and their views on the four Ash'arī Ḥaḥal, on f. 41.
- iii. the attributes of the Glorious Prophet on f. 72.
- iv. the lives and attributes of the Holy Prophet, and the four orthodox Ḥaḥal on f. 139v.
- v. the attributes of Hadrat 'Alī, on forty waḥid on f. 175.
- vi. his martyrdom on f. 312.
- vii. his life and attributes, in two parts, on f. 175.

Beginning: الحمد لله الذي جعل سيد أحمد الكل و محمد بك و حسن . . .
و بعد ارس ار آگاه هبچمدان - جان ه و کل ن - سغ

Ending: ولم يفرق بينهم رذل و القس - صلى الله عليه و عليه و سلم
في كل غدوة و أصيل

ff. 154. ll. 11. S. 7.1 x 5.5^o/18.0 x 13.8 cms.

Written in clear nasta'liq by Sayyid Muhammad Ali Akbar. A mid 13th
cent. copy.

Rectangular. Port. less stain. Good condition. Bound.

Seals: 1. Hasan 'Ali, 1200.

حسن علی - ۱۲۰۰

2. Sayyid Muhammad Ali Akbar

سید محمد علی خان

2823

F. 9.

ترجمة سراج الإيمان

TARJAMA-E-SIRĀJU'L-İYMĀN

A Persian paraphrase of a Hindu work of Haziz Ahmad Khān, compiled by Shaikh Muhammad Ma'ruf Mubayyidin b. Haziz Muhammad Ma'ruf. The work is in two parts, the first on 'aqā'id, and other on fiqh.

Beginning: الحمد لله والصلوة على سيدنا محمد وآله وصحبه
وآله و سلم . . .

Ending: الحمد لله والصلوة على سيدنا محمد وآله وصحبه
وآله و سلم . . .

ff. 76. ll. 13. S. 7.9 x 5.7^o/20.0 x 14.6 cms.

Written in secondary nasta'liq by Sayyid 'Ali Akbar b. Akbar 'Ali
Khān, from the autograph copy dated 1247 to Akbar, 1252.
A late 13th cent. copy.

Rectangular. Port. less stain. Fairness stain. Wormholes.
Fair condition. Preserved in a portfolio.

Beginning: الحمد لله ادى خلق الحة و النار . . . امد جيبى گوید
احقرمى کان درگاه نوید کار - الخ

Ending: در نوح حدودان باشد ، الحمد لله ادى صدق . . . وعده
فنعلم أحر العاملين

ff. 22. ll. 11. S. 7.8 x 4.4⁸/19.8 x 11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 12 Jumādā I, 1167, 28 May, 1774.

Rubrications. Dampress stains. Worm holes. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

A rare work.

2819

Man. 17. **جوهر الفضائل**

JAWHARU'L-FADĀ'IL

A treatise on the Sunnite beliefs about the lineage of the Holy Prophet, based on traditions intermixed with Arabic quotations, in prose and verse, together with Persian verse of the compiler and others. The work was completed in 1167, the title is chronogrammatic by date on 'Allā' al-Husayn al-Ridwān-Nāṣir al-Karīm al-Muṭāz 'Alī Khān, takhta's Arshad. He was Mutawallī of the shrine of Zahrā' al-Shirāzi, at Rauda-shāhābād in whose premises the 'Alī al-Rasūl is buried.

Epilogue of the author on l. 72

Beginning: الحمد لله مررت بالموت لئلا . . . بعد حمد و ست
ومديح لكرام - الخ

Ending: ذكره ام حبيب ابن اسباب و كلام + پرورد رسول و آل كرام

ff. 71+1. ll. 14+26 on margins. S. 6.4 x 5.5⁸ 24.2 x 14.8 cms.

Beginning

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على رسوله محمد
وآله وأصحابه أجمعين، أما بعد فيكتب هذا الكتاب بخط

Ending

باموی های او ایستادم شد حورده شود -
و نه اندام صواب و ایبه المرجع و انساب

2 142. ll. 11 to 15 8 1/2 x 5 1/2 20.5 x 12.5 cms

Written in ordinary nasta'liq, by Muhammad 'Azim b. 'Abdu'l-
'Aziz, a student in Kari' I, 1152 to June, 1154.

Refutations: One (on f. 10v, l. 10n).

2818

اخبار المماد

Aq. 8.

AKHBARU'L-MA'AD

A short treatise on the other world, and forthcoming events before
the end of this world, compiled by Shams Muhammad b. Darwish, 'Ali in
1154-1152.

The work is divided into seven bābs:

Bāb 1, on the Area of Election on f. 10v. باب اول در بیان ملک ثبوت

Bāb 2, on taking a warning on f. 11v. باب دوم در بیان گرفتار عت

Bāb 3, on spirits on f. 12v. باب سوم در بیان روح

Bāb 4, on the b... of the Prophets on f. 12v.

باب چهارم در بیان نبوت و انبیا و اولیای الهی شود -

Bāb 5, on Dajjal, on f. 13v. باب پنجم در بیان دجال

Bāb 6, on the advent of Imān Mahdī, and Christ on f. 14v.

باب ششم در بیان ظهور حضرت مهدی و حضرت عیسی علیه السلام

Bāb 7, on Gog and Magog, on f. 18.

باب هفتم در بیان باجور و ماجور و ج مغاص و ی لارص

Mar. 3.

احوال و فضائل ائمه طاهرين

(AHWAI WA FADÁH-E 'ATMA E JAMRÍN)

A treatise in prose has been written by Shriwadhwa-Nandāt on 'Mūlān Jām', and verse of Maqshub Tabrizi (d. 1061, 1082) compiled by him, a synopsis prepared by the author is also available in the same library. Shriwadhwa.

Mr. Mubārak al-Farāhī Khayyūmī, a learned scholar, a friend of the compiler, and a well-known author, has written a *Shams al-Naṣā*, and *Qasas al-Furās al-Hanz*. He was a learned scholar, and his *diwān* refer No. 1057, in Vol. V.

Beginning

نہایت سے زیادہ فاضل و فاضلہ + راجہ راجہ راجہ راجہ

ბიძგ

حدیث و اقوال و کرامات و حواریہ و شہادتہ ہاں است
رسول اللہ علیہ السلام

fl. 210-410. S. 10.0 x 0.2⁺/25.6 x 16.0 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubricated. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. Bound

[illegible]

• — — — — —

11

ارشاد انجیل

IRSHĀDU'L-MU'MININ

An excellent and treatise on Sunnite beliefs compiled by Ibrahim b. Husain, for children in the form of questions and answers. The author has based his work on several standard works on fiqh, and composed this work on the lines of *Abkāmū's-Salāt*.

2814

Aq 38,

Another copy of the same text defective at the end

Beginning

Ending: و سلامتی بدان سرزمینیم و میداست

ll. 8q, ll. 15. S. 7.2 x 4.2", 18.2 x 10.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. Aq 12th cent. c. 11.

Illuminated. Damages stains. Poor condition. Bound.

Seals of Sayyid Ahmad al-Hasani

سید احمد حسینی

2815

M & K. 13.

انیس الاتقیاء

ANISU'L-ATQIYĀ

A rare work on Sūrat al-Ā'raf based on the commentaries of the Glorious Qur'ān at the Iṣṭiṣṣā' by Abū'l-Ḥasan.

The work is divided into eight chapters.

Table of contents in the beginning

Beginning الحمد لله الذي هدانا لهذا
موب العارفين - الجمع

Ending: حاصه فی ایوم ابو یوسف بر حمت و ارحمه
و صل الله علی خیر خلقه محمد و آله اجمعین

ll. 8+35 ll. 15 S. 9.3 x 6.4 10.5 x 5"/23.4 x 16.2 15 S x 8.8 cms

Written in ordinary nasta'liq by Muḥammad 'Abd al-Qādir on 14 Kabi' II, 1062/15 March, 1652.

Illuminated. Dams. Coloured borders. Rubrications. Damages stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2812

تکمل الإيمان

Aq. 39.

TAKMILU L-İYMÂN

A well-known treatise describing the outlines of Muslim doctrines, compiled by Shaikh 'Abdu'r-Hayy Muhaddith Dandawi (d. 1052/1642). The full title of the work is Takmilu l-ymân wa l-ahwâtu'l-lyân li-lar Bayân al-'Aqâ'id al-Islâmiyya.

Beginning:

الحمد لله... من كتب هذا الكتاب...

اسمى - الشيخ

Ending:

اشهد ان لا اله الا الله محمد عبده...

والله اعلم...

ff. 80, ll. 13 S. 7.4 x 4.5"/18.8 x 11.2 cms

Written in clear nasta'liq by Nizam Ahma on 14 Ş 12, 1210/13 August, 1795.

lubrications Worm holes Fair condition, bound

Ref EIO. 2583 2585 İvA-B 10-8, İVL 307, İA 1283 1284

2813

Aq. 147/1.

Another copy of the same.

Beginning: 15 1891

Ending:

و اماكن شقيه داشت ارا در آخر رساله جدا نوشتم

ff. 110, ll. 17, S. 7.6 x 4.4"/19.2 x 11.0 cms

Written in ordinary nasta'liq. An early 12th cent. copy

Badly worm eaten Poor condition Preserved in a portfolio.

Seals of Munirul-Mulk, 1260.

مير الملك - ۱۲۶۰

2810

P. 7.

تحفة حسین شاہی

TUHFA-E HUSAIN SHAHI

A short treatise in Sadr-ul-Jawāhid on practical ethics in the form of questions and answers by Aḥmad Ḥusayn. It is dedicated to Sulṭān Husain Ṣādiq Ṣayyid, dated 1205/1401 (at of Jauhar) (d. 905/1411).

Beginning

حمد بر حمدتِ حمید و صف ذاب شری حرمین مر
حد او بد برا که - اشیخ

Ending

همچون هر بسج وقت هرچند حکم ملاحد رد

f. 31. ll. 15. S. 9.3 x 5.5"/23.5 x 14.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Repetitions, happy. No water. Fair and very sound.

2811

P. 8.

تحفة الصلاة

TUHFA-UṢṢĀLAH

A treatise on presenting business on the day of Prophet. It begins with a prayer. First is a repetition of a later hand. The work by Ḥusayn Ḥusayn Ḥusayn, of 1205/1401 has eight fash and 1000 lines, whereas this work is divided into 100 lines and 100 fash.

Beginning

فصل اول ، حائمه در تحفة سلوک بر راجع بر فتوح مدید
السادات - الشیخ

Ending

دور نعمت بر نگردد و در حدی ولی

f. 11. ll. 10. S. 8.5 x 5.5"/21.5 x 14.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Red ruled borders. Damp stains. Water damage. Fair condition.

Not bound.

Seal of Sayyid Abul Ḥ, 1208.

سید احمد - 1208

Ref: Bk. 1251.

Marginal glosses in good nasta'liq.

Beginning : حمد بیحد و ندی بیحد - مر افرید کاری را که - سبح

Ending : کامر شود و همه خطاه من حکم است - و نه
اعلم بالصواب

f. 52. ll. 15. S. 9.0 x 5.1⁸/22.0 x 12.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq. c. 27 Shabân, 1102/17 June 1784,
at Nellore.

Rubrications. Dampness stain. Worm holes. Fair condition. Not
bound.

Ref: IvC 370.

2809

Man. 23.

مناقب سادات

MANÂQIB-E-SÂDÂI

A treatise on the attributes of the descendants of the Holy Pro-
phet compiled by Mankub 'Ulamâ Qadî Sulâh al-Dîn b. Shams-'ud-dîn
'Umar al-Zawâ'ir al-Da'iratabâdî, (d. 847/1445). He is the author of
Bahar-e-Mawwâj; refer Nos. 2433 and 2434.

The work is divided into ten parts.

An Arabic tract on the same topic is bound, Iv 12.

Beginning الحمد لله ... اما بعد عرض میسر شد مدد - درگاه نوی
و خودم بارگاه مصطفوی -

Ending : ادب ... که میسر گویند گفته است و اصلاح فرموده
والطالحون لی

f. 21 + 82. ll. 13. S. 7.7 x 4.5⁸/19.6 x 11.6 cms.

Written in good nasta'liq and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

نتيجة العالم لنفع العالم

NAIJJALU LAJUM II NAFILJALAM

A commentary on the *Suwwat-i Arif* of Iqbal, **اغانى بحر**, compiled by 'Alam b. Muhammad b. Ad b. Mahmud, and dedicated to Sultan Faraz-shah, **pr. 2590** (1351/1885). The author has also written another work called *Jawahir-e Faraz-shahi*.

It works turned into six books in which each book deals with the Father, the Angels, the Angels, the Holy Scriptures, the Prophets, the Last Day, and the Fate respectively.

Beginning

وَلَوْ أَنَّ مَرْيَمَ ظَنَّ أَنَّهُ نَجَسٌ
مَوْلَا

$$\text{fit } 1 + 172 \text{ d } 13.5 \pm 10.1 \pm 0.2, \quad x^2 = 20.2, \text{ d } 4 \text{ } 1.4 \times 10^8 \text{ cm/s}$$

Written in ordinary hand and fastened by Mr. Abdu'r-Rahmān b. Mula Mir Sayyid 'Ali Khatun on 25 1290 11 12 11 March, 1890.

Ordinary snowshoes - some run 1 barbers. Worn holes - fairly good condition. To be repaired, and rebound.

Seal of 'Abdu'r-Rahim.

عيدہ عبد الرحیم

1. 00.

منافع القلوب

MANAFI'U'L-QULUB

A collection of complicated and difficult points compiled by an anonymous person. It is dedicated to the author's spiritual guide Pfr Nasir'u'ddin Mahmūd Chiragh-i-Darbī (d. 793/1392). The name of the patron is given as Isā' al-'u'ddin Ahmad b. Hujjāh (l. 2).

The work is divided into two qismas one on 'aḳā'id, and the other on usual rules governing daily observances.

AL-MU'AMMAD FI'L-MU'IAQID

A treatise on principal beliefs and other connected matters compiled by Iqbal b. Ali b. al-Hasan al-Husaini al-Yusuf Turqushli, (d. 101/1272). The work is presented to Sultan Sa'ad al-Ashraf and Bakr Sa'd b. Zayn al-Din, (d. 658/1269).

The work is written on three tabs and each tab is written on both sides.

Beginning

قال مولانا احمد الاعظم . . . حمد لله رب العالمين

مدرسان ميدان فصاحت راء الله

Ending

نور مكر دن انك ت رحيم ميان و حمد لله رب العالمين

ff. 153. ll. 15. S. 11.3 x 7.6⁶/25.0 x 10.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq script. Muzim b. al-Jamal I 1270/31 January, 1654.

European paper. Very good condition. 15x100

KHULĀṢATU'L-AHKAM FI DĪNI'L-ĪSLAM

A treatise on the principles of Islamic law and rules governing the observances that are to be followed by Muslims in relation to faith and worship compiled in 75/1254 by Muhibb Ahmad b. Ali al-Qasbi al-Ahmad Th'if al-Husaini.

A few lines from an Urdu mathnawi on last page

5. 'AQĀ'ID

1. SUNNITES

THEOLOGY, MORAL DOCTRINES, AND FORMS OF WORSHIP

2802

Tas. 146/1.

لطائف غیاثیه

LATĀ'IF-E-GHIYĀTHIYAH

A treatise on scholastic theology compiled by Imām Fakhruddīn Muḥammad b. 'Umar Kāzī, (d. 1161/1170). It is dedicated to Mu'izzu l-Dunya wa'l-Dīn Shihābu'l-Islām wa'l-Muslīm Abū Fath Muḥammad b. Markshah, (d. 511/1104-1117). The dedication however is questionable, but the authorship is accepted.

The work is divided into three maqālas:-

Maqāla 1, on the attributes of knowledge in 7 fasṣ, on f. 2v

Maqāla 2, on proofs for the existence of the Creator in 11 fasṣ, on f. 25.

Maqāla 3, on other proofs in 5 fasṣ, on f. 50

Beginning حمد بعد ولی نہایت و مدح بی عدو بیعت حضرت حلال آن
خدا را کہ - الشیخ

Ending تفکر کند او را نموداری حاصل آید و تو مدد و توفیق در
... دلایل تفکر کند

ff. 107. 17. S. 8.5 x 6.0⁸/21.8 x 15 ± cms.

Written in clear nasta'liq by Sālār Muḥammad b. Pīr Muḥammad, on 22 Jumāda II, 1125/5 July, 1713.

Dampness stains. Fair condition. To be repaired, and re-bound

Ref: R. 127; Bk. 1279-1280.

Beginning

سپاس و ستایش حدای راست که بدم سر
بادشاهی اول - الخ

Ending :

نبوت و ولایت را با دوستداری ایشان بر انگیزد
انشاء الله تعالی

2. 'Amdah on ff. 82v-138.

A treatise on 'Amdah and Turah' of State fiqh by an anonymous author.
The work is divided into two qism.

Beginning

حمد و سجده و وحسی را که هرکی موحودات بیک کر شده
خود او قدم در دایره و خود نهاده اند - الخ

Ending :

حد و حدود و مام عمرات اندازن و شد

ff. 138, ff. 17. S. 9.1 X 5 5⁸/23.2 X 14.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early recent copy.

Rubrications: Dampoc's signs. Written boxes. Fair condition.

To be re-bound.

selections from the works of the famous lawyer dealing with death
(حکام موات) specially collected by Sayyid Ahmad for Ruyādār All
Khān Bahādur Maḥbūb Yār Jung (d. 1325/1907).

Beginning: الحمد لله رب العالمين، ميگويد سید احمد -

Ending: هفت مرتبه سوره اذ قرأ بحمد

2. Aṣṣal e Rūz e-'Ashūrāh on 1. 32v-132

A collection of prayers to be recited on the ten-day of Muharram
compiled on 21 Šafar, 1293/18 March, 1876

Beginning: چون روز عشوره در بهار برود روی
مستحق است

Ending: حق است مؤمنین را روز مستمع گردانند

ff. 102. ll. 5 or 6. S. 4.8 X 3.4" 12.4 X 8.6 cms

Written in good nasta'liq and nasta'liq. An original parchment copy.

Worm holes. Fair condition. To be repaired and reset in existing
covers.

2801

f. l. 13. رسایل فقه

(RASĀ'IL-E-FIQH)

This copy contains two works:-

1. Targuma-e Tabṣīratu'l-Muta'alimīn fi Ahkām'ī'l Dīn, on ff. 1v-81v

A Persian paraphrase of a treatise on Shīte fiqh (furu'ū'), for the benefit
of the beginners attributed to Jamāl al-Dīn Ḥasan b. Yūsuf al-Hafīf,
(d. 726/1326). The translator's name is not given.

The work is divided into usual kitābs.

Beginning

الحمد لله... أم بعد، چون مرجه اعلام شد و ارم - ارج

Ending

در آن زمان رجوع، و دست شده شد

4. Hadyatu's-Şalihîn, on ff. 86v-90v

A tract on the principle of truth composed by Qulâm Hasan, surnamed Mirza Hasan of Isfahân after the death of Aqâ Sayyid Muhammad Ta'âţon Karakani, and dedicated to Mirza Muhiyiddin Mahallî Astrâbâdî.

The work is written in two parts, three bâbs and a tawalla

Beginning

الحمد لله على لائه... ما بعد، چس کو نه قدر صبر

کثیر التفصیر - الخ

Ending

و مطعون الاحبار و مشاكك لاحسن - مقدم است -

واقف بهدی من يشاء إلى صراط مستقیم

5. Şirâtu'n-Najat, on ff. 91v-263.

Another tract on an intricate series of Shiite laws dealing with legal and moral acts composed by the same Qulâm al-'A' Yaz.

The work is written in two parts, seven bâbs and a ghazal ma

Beginning: as usual.

Ending

و خوردن هر چیر که صبر و ر... بد شخص را اگر چه

طعام باشد حرام است

ff. 263. ll. 13. S. 8.1 x 5.2"/20.8 x 13.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq by Muhammad Hâfiz, in 1272/1856

European coated paper. Good condition. Bound

2800

مجموعه

F. 1. 3H.

(MAJMO'A)

This copy contains the following works:

1. Intiqâb e-Zinatu'l-Idâd, on ff. 1v-30v

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mir Sayyid 'Ali / rawār
on 27 Shawwāl, 1242/ 24 May, 1827.

Rubrications. Coloured lined borders. Dampness stains. Worm holes.
Poor condition. Not bound.

2799

P. I. 70.

مجموعه

(MAJMC'A)

This copy contains the following works:

1. A'ḥ-Kisā'atūs-Ṣaghira, on ff. 1v-1o

A treatise on 'shari' laws dealing with adultery and Nafāqah. This
work is by an anonymous person, and contains two parts.

- i. Kitābu ṭ-Ṭharaf, devoted to a mujaḥidima (the ma'sūm) and a
ḥijābima.
- ii. Kitābu'ṣ-Ṣa'āt, from 20v to 2o, on a few ma'sās.

Beginning

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام

مقصود الخ

Ending

و مسعد كوه و حریر ادا، بحسب سید شهادی علیه السلام

2. Kitābu'ṣ-Ṣawm, on ff. 61v-82v

An anonymous treatise on fasting

Beginning

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام

Ending:

و كاهن آهوی حواری است اسمی نه بر کن احوط و گشت

3. Ṣirāṭu'n-Najāt, on ff. 83v-8o.

A collection of intricate points (مناظرات) pertaining to the legality
or otherwise of following the imitations (مقلدین) compiled by Muḥammad
'Alī Yazdī under the guidance of Shaikh Murtaḍā Ansārī

This copy contains the following works:-

1. Uṣūl-e-Dīn, on ff. 1v-9.

Another copy of the same. Refer Nos 2711/b, 2735/2, 2738, 2739 and 2740.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2. Tarjumatu ṣ-Ṣarāṭ, on ff. 9v-17v.

Another copy of the same. Refer Nos 2755, 2756, 2757, 2758, and 2763/1.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

3. Uṣūl-e-Dīn Marzūm, on margins of ff. 1v-5v.

A versified tract on Shiite principles of faith composed by an anonymous person.

Beginning ای دل اول نگو تو به من + شاه مردب عیوی

Ending هست این نحو مهر آل رسول + بارب این را کن. مصقول

4. Tarjumat-e Ḥadīth Ḥadīth on margins of ff. 6-u

A Persian paraphrase of forty Shiite traditions.

Beginning این چهل کلام است که صاحب او تبت حق مع الکلم - اخ

Ending: مهر حیل انبیه فرمود که علی از من است و من ز علی

5. A note on the position of Hadrat 'Alī according to Maulana Rūmī's estimation, on margins of ff. 9-v.

ff. 17, 11, 17. S. 13.9 x 8.1; 10.6 x 5.1; 6.9 x 3.1⁶ / 35.8 x 20⁸, 27.2 x 13.2, 17.8 x 7.8 cms.

2796

F. I. 67.

هدية الصوم

HADYATU'S-SAWM

A short treatise on fasting according to Shiite faith dedicated to Sir Sa'ât Jung (d. 1301/1884) by an author whose name is not given.

The work is divided into two halves and a few lines.

Beginning

حمد محمد مرادى رحمت که در نهى منتهى

Ending

عه و خود اری ست - و نه اعز و اب

ff. 24. ll. 13. S. 7.7 x 5.1⁸/19.7 x 13.1 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 27 Sha'bân 1273 = 22 April, 1857.

European paper, some coloured. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound. Preserved in a portfolio.

2797

F. I. 54.

زينة العباد

ZINATU'L-'IBÂD

Selections from the works on Shiite fiqh made by Zafnu'l-'Abidin a'l-Mázindaránî. This copy is left incomplete at the end.

Beginning: الحمد لله... و بعد چس که بد افش در درین امر در رفی
اصلا - ایغ

Ending abruptly

میشید تکمیل و ار و - کر می کنید

ff. 265. ll. 14. S. 7.8 x 5.7⁸/20.0 x 14.6 cms

Written in clear nasta'liq. A notable 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

A tract on Shute useful of fish.

الحمد لله على توہدہ... میں بگوئی کہ آدم سے مذہب
 جھڑی - الخ

اختیار را از من بخواه - و فقه را از خدا

2. Dastûru'l-'Amal, on ff. 4-25.

A ~~series of~~ ~~experiments~~ ~~is~~ ~~to~~ ~~be~~ ~~carried~~ ~~out~~ ~~in~~ ~~the~~ ~~near~~ ~~future~~

Regioning الحمد لله على نواله .. الحمد يس ميكون الحمد حمير
استرا ادي - الشيخ

ملکہ مجموعہ دومہ در مسوی را در آخر - وقفہ -
بالاحکام

fl. 95, l. 12, S. $7.6 \times 4.5''/19.4 \times 11.4$ cms

Written in original script A copy with correct copy

Coloured figure on paper Wm. 25s. 1s. 6d. condition Not bound.

Preserved in a portion.

Sea. Sayyid Nemat 'Abd al-Qadir, 1943-1944

2795

خلاصة الاحكام

KHULĀSATU'L-AHKĀM

A short treatise containing an abstract of State laws pertaining to marriage, divorce, etc. compiled by an anonymous author.

Beginning: الحمد لله رب العالمين

Ending: , محمول الحمول و للاحمول حول حـ الى احسن حل

fl. 68, ll. 23, S. 10.0 x 5.9^o/25.7 x 15.3 cms.

Written in good naskh, and nasta'liq. A. 13th cent. copy.

Rubrications: Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2792

Another copy of the same.

F. I. 45.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

H. 102, ll. 17, S. 6.0 x 4.0^o/15.2 x 10.2 cms.

Written in good nasta'liq. A mid. 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Pound

2793

Ad. 90 2.

نخبه

NAKHBAH

A treatise on fiqh compiled by Muhammad Ibrāhīm Isfahānī b. Muhammad Hasan a'l Qarāsān. (1-1263/1845)

Beginning: حمد و ثنی بی حد، احمدی مخصوص برگزیده حکیمی
است = استخ

Ending: و در طرف اگر پاره صلا و قره پیدا ارداب حور زن زن
عی ندارد

H. 11, ll. 15, S. 8.5 x 5.7^o/21.8 x 14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mirza Salāmat 'Alī, on 24 Rabi' I, 1267/27 January, 1851, at Daryāpūr.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref: Bk. 1276.

2794

F. I. 56.

رسائل فقه

(RASÂ'IL-FI FQH)

This copy contains two short works by Muhammad Jā'far Astrābādī.

1. Shākh-e-Nabāt, on ff. 1-4.

2790

P. 1. 43.

رسالہ باقریہ

RISĀLA-E-BAQIRIYAH

A treatise on ablutions and prayers by an anonymous author.

The work is divided into a muqaddima, and twelve fāhm's.

Beginning

الحمد لله... الحمد لله، من مختصر عمید در معنی و حقیقت

است - اسخ

Ending

پسچہ رائے شک در چہرہ و بیچ و لب

fl. 8. ll. 11. S. 8.5 x 9.6"/21.5 x 14.3 cms

Written in clear nasta'liq, by Bānir A. Dakani, on 12 Rajab 1253 (2 October 1837), at Hyderabad.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2791

P. 1. 44.

رسالہ در مسائل طہارت و صلاۃ

RISĀLA DAR MASĀ'IL-E-TAHĀRAI WA SALAI

Another treatise on ablutions and prayers compiled by Miḥammad Husayn b. Raḥīm.

The work is divided into two bābs.

Beginning

الحمد لله... جس کے مدد سے رحمت رب کریم محمد حسن

ابن محمد رحیم کہ - اسخ

Ending

مثل این کہ در اندی صورت در تکرار الاحرام شک

نماید التماس نمی کند بآن شک

fl. 209. ll. 7. S. 7.1 x 5.1"/18.2 x 13.1 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 13th cent copy

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and reset in existing covers.

2788

F. 1. 53.

زهر الرياض

ZAHIRU'R-RIYAD

Sections from Riyāḥ al-Ma'ārif Sayyid 'Alī Tabataba'i and translated into Persian by Muḥammad b. Ismā'il, surnamed Shāghī Abū 'Alī 'Arab.

The work is divided into nine bābs.

Beginning: الحمد لله... وبعد بحمد الله تعالى... في رمي... - الح

Ending: برورة... و... بعد... كوره... - مت

f. 119. ll. 11. S. 6.7 x 4.5⁸, 16.9 x 11.3 cms

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. Not bound.

2789

F. 1. 9.

نحفة الخاقانية

TUHFATU'L-KHĀQĀNIYAH

A treatise on State laws compiled by Muḥammad Ḥusayn b. Ma'sum al-Qazwini, at the behest of the Ḥ. Shah Qasr (1231/2 - 1271/2-1234).

Beginning: انذاح... شاه... روايت... - ت

ماتبع... - الخ

Ending: ... و... السلام على من اتبع الهدى

ll. 128. ll. 18. S. 8.0 x 5.3⁸/20.5 x 13.6 cms

Written in clear nasta'liq. A fairly 13th cent. copy.

Kubrications. Dampness stains. A few worm holes. Good condition. Not bound.

2785

رسالة النجاة

F. 1. 69/1

RISALATU'N-NAJAT

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 83. ll. 10 S. 6.0x4.2⁵/15.2x10.8 cms.

Written in ordinary naskh. An early 13th cent. copy.

Dampness stains. Fair good condition. To be repaired and re-bound.

2786

F. 50.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 78 ll. 10. S. 5.9x4.0⁵/15.0x10.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 14th cent. copy.

Rubrications. Good condition. Bound.

2787

F. 1. 51.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 63. ll. 12. S. 6.1x4.0⁵/15.6x10.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worn leaves. Fair condition.
Bound.

This copy contains two works :—

1. Intikhab-e-Ishâbu'l-'Amal, on ff. 1v-22

Selections from the same compiled by Abul Hasan Ali Husaini a'li-Ishâkânî, better known as Khush mazâh

Beginning:

الحمد لله . . بعد مدّة عاصی درگاه رب العالمین
ابوالحسن - ابن

Ending .

و مرق میں روئے واجب و مستحب - تحت ر - ۴

2. Risâlatu'n-Najât, on ff. 23v-120v

Selections made by Muhammad Husain Jafarî from the Persian paraphrase of Muhammad b. Ismâ'îl, surnamed Shaikh Abu 'Alî 'Arâbî of the Arabic commentary of Sayyid 'Alî Tabâtabâ' on Mukhtasaru'l-Khulâṣa, better known as Mukhtasaru'n-Nafîs of Zainuddin 'Alî b. Ahmad a'sh-Shahîd ath-Thâni (d. 900/1553), which is a well-known work on Shiite laws

Beginning

شکری حد و ندی حد مرحدی راسر د کہ
بنی نوع انسان را - ابن

Ending

اس سے روئے کسی حد درمی باشد روئے کر من حرم است -
واقعہ اعلا باحکامہ و رسوہ و اهل بیت

ff. 120 ll. 11 or 13. S. 6.5 x 4.3⁰/10.8 x 11.2 cms.

Written in ordinary nasḥ, and nasta'liq Late 15th cent. copies

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition
Not bound.

Beginning .

المحمدية الذي أرشدنا إلى إصلاح الأعمال... وبعد جيل
أخذ أحكام ومعرفة - الخ

Ending

بعض محاور كونه الله و... إن اشكال و... است
والمحمدية... الطاهرين

f. 201, ll. 18, S. 8.2 x 5.9"/21.0 x 15.0 cms.

Written in good nashī by Muḥammad b. Ḥajar al-ʿAsqalānī in
1233/1818.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fairly good condi-
tion. The text is on the left next to covers.

Seals of Muḥammad b. Muḥammad 1206

مدرسة الملك - ١٠٠٩

Ref: IvA5B, 1020.

2783

f. 1, 64.

مصباح الطريق

MİŞBĀHU'T-TARİQ

Another Persian copy, trace of the same dealing with abutions, prayers
and fasting.

The work is divided into three maqāsid

Beginning

المحمدية الذي أوضح لنا طريق العمل... وبعد جيل
كوبد - الخ

Ending

عنه أن جواب رور و... جواب رور رور

f. 110, ll. 13, S. 10.6 x 4.1"/15.0 x 10.5 cms

Written in good nashī by Kalī b. Naṣr al-Ḥamadī. An
early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preser-
ved in a portfolio.

2781

F. 1. 37.

ذخيرة السعادة

DHAKHĪRATU'S-SA'ĀDAT

A treatise on namāz compiled for Muhammad Ibrāhīm 'Alī Khān Bahādur a'l-Husainī, in 1235/1820

The work is divided into a muqaddima, three maqālis and a khātima.

Beginning :

الحمد لله الرحمن الرحيم . . . أم بعد . . . كج . . .
زبان ضعیف النیان - . . .

Ending

لا اله الا الله محمد رسول الله

ff 53. ll 3 5 12 X 21 5 0 X 2 1 23 4 X 15 6 12 8 X 6 cms

Written in good shafi'a, by Muhammad Ibrāhīm surnamed Mirza Sayyid, for Mirza Muhammad Yūsuf in 1245/1830

Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Margins renewed. Good condition. Bound.

Seal of Fīrghānūt-Mulk 1274

اعزى م الملك - ١٢٧٤

2782

F. 1. 65

ترجمة اصلاح العمل

TARJAMA-E-ISLĀHU'L-'AMAL

A Persian paraphrase of the Arabic work of Sayyid Muhammad b. Sayyid 'Alī Tahātabāī, (d. 1240/1825), compiled by his disciple, Hasan b. Muhammad 'Alī Yazdī.

The work is divided into a muqaddima and several maqāls

ff. 148, ll. 15. S. 9.0x5 7⁸/20.4x14.0 ins.

Written in good naskh, on 15 Ramadān, 1227-22 September 1812,
at Murshidābād.

Rubrications: Dampness stains, Worm holes. Fair good condition.
To be repaired and re-bound.

Seal of Muḥammad Ali 1237.

نود حاشین محمد علی - ۱۲۳۷

2778

f. 1, 6.

انيس التجار

ANISU'L-TUJJAR

A guide for businessmen based on State laws, compiled by
Mahdī b. Abi-Ḥarrā a'n-Nirāqī.

The work is divided into seven books.

Beginning: محمد و سپس ی حد کریمی راسرست که رعایت رحمت - ح

Ending: که رید مدعی یکس مثلاً در آن حد - کی شود - واقع
تعالی علی

ll. 211, ll. 15. S. 8.1x5.8⁸/20.8x14.8 cms.

Written in ḥaṣ script by ḥaṣ Abū Ḥasan Ḥusaynī in
1230-1815.

Rubrications: Dampness stains, Worm holes. Fair condition. Bound.

2779

f. 63.

مرشد العوام

MURSHIDU'L-AWAM

A treatise dealing with the basic principles of Shiite faith, compiled by
Abu'l-Qāsim Ibn Muḥsin a'l-Jānī, (d. after 1231/1815)

2776

F. 13.

أجوبة المسائل

AJWIBATU'L-MASÂIL

A collection of questions and answers on different points of Shiite laws by an anonymous person.

This copy is defective at both ends.

Beginning abrupt

• کتاب طهارت و مستحبات و حرکات و سکنات
باحتیاجیه کثیره غسل کرد - الخ

Ending: abrupt

مصنعت دل شدت بطریقہ عرف و صاحب کلام

ff. 179, ll. 30. S. 11.6 x 7.9"/29.6 x 20.2 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy

Headings in red. Dampness stains. Good condition. Not bound.

2777

F. I. 55/1.

زينة الهداية

ZINATU'L-HIDAYA

A treatise on Shiite laws compiled by Muhammad Rati' Nuri.

The work is divided into a muqaddima, a few matlabs and a hištuna.

Beginning

الحمد لله الذي ... امير سلطان محمد ملك الملوك ر لائق
ومزانت که - الخ

Ending

عن اصوات مرومند سال في العمر ن وهو لمسدان وعليه
التكلا ن

2774

412

مرآت النجاة

PARATUN-NAJAT

(d) $\tau_n \rightarrow 1$ as $n \rightarrow \infty$ by (15) and (16). By (14) and (15), $\tau_n \rightarrow 1$ as $n \rightarrow \infty$ by (15) and (16).

الخديعة... شطرنج... ر... ا... ت... Beginning

Ending ورو سپه در م شته بی گاه ، شه

tl. 132. ll. 19. S. $7.0 \times 5.0^{\circ}$ 10.4×15.0 cms.

bound.

2775

6. 1. 10.

تَحْفَةُ لَارِه

TÜHFA-E-LÂKIYAH

A. H. C. ...
 A. H. C. ...

Beginning

رام رب - و به آید ، ر م لای احد
الكاهن

fl. 162, ll. 18 S. 8.6 x 6.2^o / 12.0 x 10.2 cm.

Written in cursive hand, and fastened. An early title label on fly-
 leaf. Lubrications. Dampness stains. A few wormholes. Fair condition.
 Bound.

Ad. 112.

مجموعه

MAJMU'A

This bay'âd contains the following works

1. Ziyârat-nâma, on ff. 1v-93.

A collection of prayers for the twelve Shiite Imâms.

Beginning

اسلام علی رسول خداست و من الله ، من رحمته - بیخ

Ending

علیه و علی جمیع اهل البیت و الارض

2. Tuhfatu'l-Husamiyah, on ff. 93v-191v.

A treatise on Shiite laws compiled by Muhammad Baqir b. Muhammad Akmal a'-'Iṣṭahānī, surnamed Bihbahānī, (d. 1205/1721).

The work is divided into three sections :

i. on namāz, and its pre-requisites, from f. 93v

ii. on zakāt, from f. 101.

iii. on khums, from f. 182v.

Beginning

الحمد لله ... اما بعد بر خیر طالع در حیات عالیہ احرار و به نحقی

نماید که - الخ

Ending :

اورا گفت که دست بردار تا بنویسم دهه - و الله یعلم

3. Du'â-e-Saḥar, on ff. 192v-194.

An Arabic prayer attributed to Imâm Ja'far ṣādiq

4. Uṣûl-e-Dīn, on ff. 195-200.

A tract on Shiite principles of faith.

Beginning :

الحمد لله ... بعد بدانکه اصول دین پنج است اول

توحید - الخ

Ending :

و اخبار و ادله بر این معنی متعدد است

The work is divided into four bābs.

Beginning

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لِمَا هُوَ شَاءَ
قَادِرٌ عَزِيزٌ ذُو جَلَالٍ أَلِيمٌ

Ending

وَمَوْعِدُهُمْ فِي الْحَقِّ وَوَعْدُهُمْ فِي الْحَقِّ
الْكَلَامِ ... الطاهر بن الكرام

f. 47. ll. 17. S. 9.6 x 6.3"/24.6 x 16.4 cms.

Written in clear naskh. A late 18th cent. copy by Mirza Asadullah Khan, on 1 Shawwāl, 1246/ 15 March, 1831.

Remarks: Dampness stains. Worm holes repaired. Fairly good condition. Bound.

Seal: Zaynu'ddīn Ahmad Khān Bahādar, 1220

زین الدین احمد خان بہادر ۱۲۲۰

2771

رسالة فقه

F. 62.

AL-ILAH

A treatise on the law of the land and the rights of the author are not given.

The work is divided into eighteen kitābs

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي هدانا لهذا
الذي كنا لنهتدي لہ

Ending

لا إله إلا الله محمد رسول الله

f. 288. ll. 21. S. 9.3 x 5.7"/23.8 x 14.6 cms

Written in clear naskh. A late 18th cent. copy

Remarks: Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2769

Ad. 23.

مجموعه

(MAJMO'AH)

A bayâd containing the following:-

1. Risâla-e-Âdâb-e-Safar, on ff. 1-47v.

A short treatise on various aspects of traveling defective in the beginning and in the middle.

Beginning: abrupt. در و رجمه مترو شد و هیچ روزی شوم بر روز دوشنبه نیست - الخ

Ending: پس هر حاجتی که خواهد از حق مسعود آید بخواند بعد از که البته بر آورده است

2. Miscellaneous prayers, notes on magic and talismans, on ff. 48-180v.
3. Şairiyah, on ff. 180v-200v.

Another copy of the same by Hazin (Ref. No. 2768)

Beginning: as usual.

Ending: as usual

A few more notes, and some verse at the end

ff. 200 + 17 ll. varying 8.5 x 11.5 - 22.5 x 11.8 cms.

Written in cursive hand (mostly in nasta'liq) - A fine 12th cent. copy.

Rubrications, Diacritical signs, Written lines for notation. Not bound.

2770

تحفة اصفیه

P.J. 8.

TUHFA-E-ÂŞİFIYAH

A treatise on short precepts on hunting and saving of animals, compiled by Kashra'ân Alwand, servant of Muḥammad Juvānī, who dedicated the same to Âşifu d-Da'ib al-Dīn, (1188-1212/1175-1207).

2766

Man. 38.

گل گزار معانی

GUL-E-GULZÂR-E MA'ÂNÎ

A treatise in seven laws, compiled in 1172-1178, by 'Alî Asghar Mûsawî a'l Husainî Safâjungî. The title is chronogrammatic.

The work is divided into two parts and two parts.

Beginning

رب مصریه فی آبی ۷۸۶، جموں میر ملکہ -

Ending

کرد در، و همیشه فریم و میر یکی که کم به صاحب را

H. 196. H. 13 S. 72x4.8"/202x12.0 cms.

Written in Ghar nast'ûq by Mirza Mahammad b. Mirza Ali Naqi Musnadî, on 23 Muharram, 1174 (September 1170).

Worm Eaten Fair condition To be repaired and reset in existing covers

Seals of Hasan Ridâ, 120. (Abbasid Mu.)

حسن رضا - ۱۲۰۹ - محمد الملك

2767

F 1 to 1

ترجمہ ہدیۃ المؤمنین

TARJAMA E-HADYATU'L-MU'MININ

A Persian paraphrase of the work on the Holy Mu'aminin, written by the author of the work, Mirza Mahammad a'l Husainî a'l Husainî, and compiled by 'Abd al-Husainî a'l Husainî a'l Husainî, who completed the same on 2 Muharram, 1174 (August, 1170).

Beginning

الحمد لله . . . و بعد سورت بن معمر و عیسیٰ مؤمن حق

شماس - اربع

Ending

انکار او مصنف، مفرجه را دعای هر درید

The work is divided into a maqduṭṭa, twelve bābs and a khātma.

Beginning ملک حوان حق شاهی شور انگیزی - پس و فرس
منعم جهان آفرینی است که - الخ

Ending و اوست آغار و بسوی اوست محمد و الله اعلم
و به الاعتصام

H. 176, ll. 21 S. 9.3 x 5.9^o 23.8 x 15.0 cms

Written in 1700 (naskh), in Muharram, 1121, 24 December, 1716.

Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2765

P. I. 17. جامع الرضوی

JÂME'U'R-RIDWÎ

A Persian commentary on Sharai'u'l-Islâm of Najmuddin a'l-Hakî, (d. 1271/1272) completed in 1141/1142 by 'Abd al-Janî b. 'Alî Fâris Kachmîrî. The title is the chronogram for the beginning of the commentary.

Beginning الحمد لله الذي أوضح
مخرد این اوراق مستغرق بحار - الخ

Ending : مراث مرند تعلق
پس عاقل هم آنها خواهد بود

H. 601 + 1. 21 S. 14.4 x 7.7^o 41.9 x 13.8 cms

Written in ordinary nasta'liq, by Muhammad Qasim 'Alî, on 2 Rabi'ul-Thani, 1240/21 January, 1874.

European paper. Good condition. Preserved in a portfolio.

Ref: Bk. 1268.

13. Sharh-e-Hadith, on fl. 141-154v.

A Persian paraphrase of and a commentary on the sayings of Imam Ja'far Ṣadiq based on Kahtā's version, and completed by Taq Majest.

Beginning: نقہ الإسلام و رئیس المحدثین محمد بن یعقوب کلینی - الخ

Ending: و بدی چو گردان بشرط مراد مکی ،
که دوست خود روشن بنده پروری داد

fl. 154. ll. 18. S. 80 x 5.2"/20.6 x 13.4 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad Kāẓim Ṣayyid Ḥusaynī a'l-Isfahānī, in Kājab 1104 March, 1693.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

These works have been copied from the autograph, folios of the compilers.

Seals: 1. Amjad 'Alī Shāh.

ناسخ هر مهر شد چون شد منیر و کتاب . . . حامد احد علی شاه زمان
عالیهاب . . . ۱۲۶۳

2. Wājid 'Alī Shāh.

حامد واحد علی سلطان عالم بر کتاب ثبت و بر نور نادان و فروغ آفتاب - ۱۲۶۳

3. Sulaimān Jāh.

خوش است هر کتبخانه . . . میان حاه هر کتاب منیر چو نقش بر آینه

2764

F. 1. 63.

مائدة السهاویة

MA'IDATU'S-SAMĀWIYAH

A treatise dealing with the legality or otherwise of animals, birds, etc., and of cooking utensils and crockery, compiled by Muḥammad Raḍī ḥ Husayn Ḥwansāri who dedicated the same to Shāh Ḥusayn Ṣafawi (1106-1142/1694-1729).

10. *Fusûl-e-Sulaimaniyah* on ff. 13-136v.

A collection of Arabic prayers with their Persian paraphrase compiled by Abul Fazl Muhammad al-Husayni al-Shahrastani for Shâh Sulaiman Safawi, (1077-1105/1666-1694).

Beginning امر ارحم و غفر و محي مدائمه آثار -

Ending رفته اعتراض بحر و ابرار تصور حتم
نمائیم و بنا لا تو احدا الکافریں

11. *Istajama-e-Kutâb-e-'Alî*, on ff. 107-137v.

A Persian paraphrase of the sayings of Hadrat 'Alî completed in Rabi' I 1175/February, 1694, by the same Bâqir Majusi.

The work is divided into two parts.

Faṣl (a) deals with the admonitions of Hadrat 'Alî to Mâlik a'l-Ushair a'n-Nakh'î, on f. 107.

Faṣl (a) contains the sayings of others.

(a) From Hadrat 'Alî to 'Uyaynab b. Hamîl Anṣârî, Governor of Basrah on f. 125v.

(b). From Ja'far Sâdiq to Najâshî on f. 128v.

(c). An anecdote about Muṣṣur Dja-Iyraqi in the Holy Ka'bah, on f. 135.

Beginning الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى ...
أما بعد، این رساله است در ترجمه - النسخ

Ending حاجت را او تمام تر کردند، واقعه تعالی بود حدیثی
الأمور وهو المأدب إلى سواء السبيل

12. *Istajama-e-Halikh* & *'Uyân Anṣâr* & *Riḍâ* on ff. 11, v 141v.

A Persian paraphrase of the sayings of 'Alî b. Musî Riḍâ completed in Rabi' I 1175/August, 1697, by the same Bâqir Majusi. It is based on Ibn Babūya's famous work.

Beginning : الحمد لله ... أما بعد ، بدرستی که رئیس
المحدثین محمد بن بابویه قمی - النسخ

Ending و بلند کرد ایندین نام و ، استعاجم شد رجمه این حدیث حسب
التامس . . . حاجی محمد علی وقفه الله تعالی

A tract dealing with the Shiite views on the fate of the martyrdom of Hadrat 'Umar, the second Orthodox Khalif, which is texted as 'Raf' I when they celebrate Id-e-Nahum. It is by the same Bâgh Majlis and is full of abuses.

Beginning :

الحمد لله ... اما بعد ، جس کی بد زبانی

طالبان حق - ایغ

Ending :

اگر جس کی شدائی شرف و برتری او کا است

6. Risâla fi'l-Jabr wa'l-Ikhtiyâr on fl. 70v-71r.

A tract on predestination and choice by the same Bâgh Majlis, completed on 10 Rayab, 1088/18 August, 1678.

Beginning

الحمد لله و سلام علی محمد و آلین اصحبی اما بعد - ایغ

Ending :

و حدی از حسن است محمدیم کردیم - جس را

7. Risâla-e-Zakât, on fl. 72v-76.

A tract on poor rate by the same

Beginning :

الحمد لله . . . بدانکه ، ریاضت در به چهر و حب میشود - ایغ

Ending

و برای ضرورت پس قدر کتد محمود - و السلام

8. Risâla-e-Kaflârah, on fl. 76v-82v.

Another copy of the same. Relet No : 2760

Beginning : as usual

Ending : as usual.

9. Risâla dar Madh Rûda-e-Mu'atlasa-e-Narâ wa Karbâlâ, on fl. 82v-87r.

A tract in praise of the mausoleums at Najaf and Karlatâ completed on 15 Ramađân, 1097/26 July, 1687 by the same Bâgh Majlis.

Beginning :

محبت رنگان و ی وراقی را صلاح است

Ending :

و و بچه طاف و احسن تو امر - آم

و بر حرم الله عدا قال آمین

المحمدية ... و بعد چين گويد احقر عارف محمد باقر بن - الشيخ

و حکام ديگر است که در کتب مسروطه مذکور است
و الحمد لله اولاً ... آله الطاهرين

2. Tarjuma-e-Ta'ûhidu'r-Rida, on ff. 14-44.

A Persian paraphrase of the sermons of the eighth Shiite Imâm 'Adh-Dhâ'ir Rida, compiled by the same Bâqir Majlesi.

Beginning: ... ج و در رب برای عطا نمودن - شيخ

Ending: ... مشارکي من حصه در ذکر ذات بحر الانوار
(مذکور) شده است و الحمد لله ... الطاهرين

3. Risala fi Ahkâm-i-Nawâhib wa'l-Hawâhib, on ff. 1-52.

An anonymous tract on State beads pertaining to the enemies of Hadrit. All based on the orders of their Imams. The enemies (عواصب) are considered as usurpers (مواصب).

Beginning: الحمد لله و سلام على سيدنا محمد و آله الطاهرين - شيخ

Ending: ... امري را که از جانب خداست ... او مقرر است

4. Risala-e-Waql, on ff. 52v-59.

An anonymous tract on endowment

Beginning: الحمد لله امري و حق على كل حامد و مؤيد - محقق
آداء محمديه - شيخ

Ending: ... على ما يحل بكونه موصوفاً ... است كما هو المذکور -
والسلام على من اجمع عليه و دين الحق

5. Risala dar Tahqiq-e Ila'riq-i-Kusha Shu'lan - Umar, on ff. 59-69v.

1. *Ḥadiqatu'l-Muttaqin*, on ff. 1-74v.

Another copy of the same by Taqī Maḥlisī containing only three bāḥs and defective in the beginning:

Beginning: abrupt.

باسمہ معبودہ و شریعتہ - ۱

Ending:

و حالات - آنکہ میں کہارہ بحر است چون کہ رة رمضان
بانہ، اشہر و اقرب اولست

2. *Ki-ā a ḥ Shakkīyāt*'s *Ṣalāt*, on ff. 13v-84v.

Another copy of the same by Taqī Maḥlisī.

Beginning: as usual.

Ending:

حق تعالیٰ جمیع ... در سایہ حوالی رشتہ او محفوظ دارد
بمحمد و آلہ الطاہرین ... یا ارحم الراحمین

ff. 84. ll. 22. S. 7.0x4.4" 18.0x11.2 cms.

Written in ornate nashī, by Muḥammad Ḥasan b. Ḥāḍi Muḥammad Qāsim at the end of Rabi' II 1151/beginning of August, 1738.

Reproductions: Dimples stains. Worm eaten. Poor condition.

Not bound.

2763

ff. 1-68.

مجموعہ رسائل

(MAJMU'AT RASĀ'ID)

This copy contains the following works:

1. *Tarjumatu's-Ṣalāt*, on ff. 1v-13v.

Another copy of the same. Refer Nos: 2755 to 2758.

F. 10. 11. 10. S. 12 x 4. 1/2. 8. 1/2. 10. 8 x 12. 2. 14. 8 x 8. cms.

Written in ordinary script, by Mohammad 'Abd Khan Bahadur Shāh Jang (great-grandfather of the Collector) on 12 Rabi' II 1242/13 November, 1826.

European type letter-head, (mounted ruled borders. Fair condition. In the receipt and set of existing covers.

Autograph copy of the Collector's ancestor.

Shah of Sayyid Mahomed of 'Aomir' (Shahid, 1221)

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱

2761

F. 1. 39. رسالة في الحدود والديات

RISALAH N FI L-HUDUD WA'D-DIYAR

A treatise on penal laws of execution and expiatory muel for murder according to Shite faith compiled by the same Bāqir Majlis.

Beginning الحرف الذي شرع به في قصص و حدود الزنا - ايج

Ending و كذا قصص الكفر - ت ح من - ت

H. 127 ll. 14. S. 8.7 x 4. 1/2. 22.6 x 11.8 cms.

Written in clear shikast-tastat in 1 Muharram 1229/24 December, 1812.

Letter-head. Express stops. Worm holes in wood. Good condition. Bound.

2762

F. 1. 47. رسائل فقه

RA-SALAH FI FIGH

This copy contains two series

2759

f. 1. 49. رسالة في شكيات الصلاة

RISÂLATUN FI SHAKKIYATI'L-ŞALÂI

A treatise dealing with doubts in prayers composed in 1054/1055/40 January, 1055 by the same Bâqir Maḥṣal.

The work is divided into a non-prefixed five bâ- and a ḥatama

Beginning الحمد لله الذى ارجى صلوات اشبهت و شجوة ... ام محمد
چين كويد حاكرداه سالكان - الخ

Ending : على محمد وآله القديسين

f. 49. ll. 12. S. 6.3 x 3.6"/16.2 x 9.0 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Ref: IvASB. 1034.

2760

f. 1. 48. رسالة كفاره

RISÂLA E-KAFFÂRAH

A treatise dealing with atonement composed in Şafar 1091/February, 1080 by the same Bâqir Maḥṣal.

Beginning. الحمد لله و سلام على عباده ... اما بعد ، كدره بر دوزخ
است - الخ

Ending : كدره را بعمل تاورد و بپنجادم كردم رساله را ،
والحمد لله أولا و آخرا

2756

Ad. 44

Another copy of the same

Beginning: as usual

Ending: as usual

It is followed by:

i. *Kisāḥ* Zakāt wa ḥibums, on ff. 27-30v.

A tract on poor rate.

ii. Miscellaneous notes, on ff. 30v-36.

ff. 20+10. ff. 15. S. $9.0 \times 5.3^{\circ}$ 22.6 x 13.8 cms.

Written in *nasta'liq* in 12th cent.

Incipit at 105. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2757

Ad. 43

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 49. ff. 9. S. $5.6 \times 3.4^{\circ}$ 14.32 x 8.8 cms.

Written in *cezarika* in 11th. A 12th cent. copy.

Ruinations. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2758

Ad. 45.

Another copy of the same.

Beginning: as usual

Ending: as usual

• 27+11. ff. 15. S. $8.0 \times 5.5^{\circ}$ 20.6 x 14.1 cms.

Written in *nasta'liq*. A 12th cent. copy.

Ruinations. Coloured ruled borders. A few worm holes. Good condition. Bound.

Beginning . الحمد لله و سلام على عباده الذي اصطفى ام محمد ، بداسدي ط مان
حق كه - الخ

Ending و مرر ، يكون به به الذي لا اله الا هو ، غيب و شمادة
هو الرحمن الرحيم اذهب عنى الغم والحزن

f. 2^r - l. 12 S. 500x45, 62x25" 128x110 - 118x94 cms.

Written in good shikast, by Ashraf Khanân al-Âm Qân in 43
'Âlamgiri = 1111/1699, at Ajmere

Rubrications: Gold ruled borders Dimples stains Worm holes
Fair condition. Bound.

2755

Ad 192/3. ترجمة الصلاة

TARJAMATU'S ŞALÂT

A Persian paraphrase of the Arabic treatise on namâz by Mu lā
Muhammad b. Muṭṭaḍā, surnamed Muḥsin al-Kāfī, (astallās Faḍ
(d. 1090-1073) or whose poetical works refer Nov. 1033-1034, II, Vol. V

The work is divided into eight parts and was completed in 1043-1034
by Muḥsin, and the translation on 29 Jumādā I, 1090-2 March 1688 by
Muhammad Bāqī b. Muhammad Faḍl al-Muḥḥi (d. 1110-3 1111-1673
or 1700).

Beginning . هر كه كه اتم ح موش - هرچه به - و بر موش 4
سياص و ستایش امر كرمی را كه - مع

Ending . ضرائط عرض بوده الحمد لله ... تمام كنتم

ll. 13. ll. 21, S. 88+56^o/226x144 cms.

Written in ordinary nasta'iq by Muhammad Kāfī Qā'nā on 1
Şafar, 1058/16 February, 1648.

Rubrications: Dimples stains Worm holes Fair condition Not
bound

Seal Sayyid Anjwī Khān, 1157.

سید انجو - حال - 1157

Ref: Bk. 1257.

Beginning بدایکه علی ربه ان الله عليهم اجمعين مقرر شدته اند که - ا ج

Ending و رحمت عاب شد بر بکار مستوران ، دست آخر کلام
درین مقام

ff. 408, ll. 22. S 3.7 x 4.8^o/22.4 x 12.4 cms.

Written in clear nasta'liq. Late 17th cent. Oxy.

Extremities, Dampness etc. Worm holes in condition. To be repaired and rebound.

A few autographs on the flyleaf

2754

2754

رسائل عشقه

RASĀIL-Ī-ʿIṢṬIQĪH

This is a very interesting work by Muḥammad Aḥmad Mīstaghfirī

1. A ḥadīma Yūz bīnā ṣayr (اقول بحور و اهلوف) on ff. 1v-5

A tract on obligatory prayer written for his friend, Abū al-Naḥ

This work is filled with quotations from ḥadīth and ṭiqāṭiḥ

Beginning: مدد از حمد نگاه محمد و درود بر محمد و آله و صحبه
میدارد - لبح

Ending: واضح احوال آنکه در صورت اول نوازه و ...
و احب هست

2. Ḥadīthū ʿalī-nā (هدیه مولی) ff. 1v-5

Another tract on variations in azān and prayers thereafter written for Abū al-Riqā

The work is based on the treatise of Aḥmad ṣayyid Muḥammad Khān 'Āmī, and is divided into a muqaddima, five ahādīḥ and a khātima.

2752

قِبْلَةُ الْآفَاقِ

F.I. 66.

QIBLATU'L-ĀFAQ

A treatise on the direction of the Holy Ka'ba, compiled by Rihā'at-din Muhammad Qazwini, who mentions his teacher, Mu'ī' al-din Qazwini (d. 1087/1675) the author of *as-Sūrah Shāh-e Ka'ba*, who was alive at the time this work was compiled (1115).

The work is divided into four rukus.

Beginning اللهم كما ویت سبک فانه رخصه . و بعد هر حرمان کند
 بقی و حرمان من متن پوشیده است نه - ا ب خ

Ending تاجی سبب و نه و سبغ می و نه مرحله

fl. 49. ll. 16. S. 80x5.4"/20.6x13.8 cms.

Written in clear nasta'liq, by Muhammad Hadīq, Karadān 1115
 August, 1716.

Damone's stamp. Fair condition. To be rebound.

2753

I. I. 36. ترجمه کنز العرفان فی فقه القرآن

TARJUMA-KANZU'L-'IRFAN FI FIGHI'L-QUR'ĀN

A Persian paraphrase of the Arabic work *Kanz al-'Uqūd fi Fiqh al-Qur'an*, dealing with *ṣaḥīḥ* law based on *ḥadīth* and *fatāwa*. The name of the author and the translator are unknown, but according to Kashf al-Hajūb the author is reported to be Shāh-e-Jafā 'Abd al-ḥayy Maṣṣād b. Jān al-Mīn 'Abd al-ḥayy al-Asadī al-Hafīz (d. 1107/1705).

The work is divided into a maqaddim, a few *kitābs* and a *fatāwa*. Each *kitāb* is sub-divided into a few *āyāt*.

This copy does not contain the *shāhna*, and ends with a *ḥawāṣṣ* of *Kitābu'l-Qaḍā wa'sh-Shahādat*.

4. Dar in, 1220.

تاس صامن صامن صامن - ۱۲۲۰

5. Qutub al-Muhammadiyah, 1220.

علام امام محمد المهدی - ۱۲۲۰

6. Kutub al-Muhammadiyah wa Khat al-Muhammadiyah.

کتاب الله و لیا و کنی الله نصیرا

7. Al-Yawar Khan, 1220.

علی یاور خان قندل - ۱۲۲۰

2751

اجوبة المسائل

F. 1. 2.

AJWIBATU'L-MASÂ'IL

A collection of questions and answers on Fiqh compiled by Ahmad b. Muhammad al-Husayn al-Hajjani and dedicated to Shâh Sulaimân Şalawî (1077-1105/1007-1134).

Beginning

الحمد لله بحسب رعوه مصطفىين

معاني و معاني - الشيخ

Ending

و الله كرم بشو به طهرا تصور بد و شه محصر

H. 130, ll. 17, 2, 9.1 x 0.1 / 23.0 x 15.8 cms.

Written in the city of Qandahar during the reign of Muhammad Shâh. A mid 12th cent. copy

Rubrics in red. Dated in the margin. Worm holes. Poor condition. Not bound.

See: Marasid, 1171

مراد ضرر به - ۱۱۷۱

This copy contains Bāb 4 on fasting and is defective in the beginning.

Beginning abruptiv یعنی در بیان احکام صوم ست و صواب رہے۔ الخ

Ending. بحرمت نبی و آئمہ معصومین۔ صلوات اللہ علیہم اجمعین

ff. 227. ll. 21. S. 10.4 x 6.3⁸/26.8 x 16.2 cms.

Written in good nasta'liq. A good 13th cent. copy.

Rubrications. Dams in stamp. Some loss of decoration.
Bound.

2750

f. f. 46.

رسالة الرضاع

RISALA'U'R-RIDÄ'

A treatise dealing with the problems of marriage vis-a-vis milk (sucking), compiled by the same Taqī Maqṣūd.

Beginning: الحمد لله... وبعد چنین گوید آنچه از روایتی رسیده
و به القی۔ الخ

Ending. حصرت در بیان این مکروهات و شمر و کوفت۔
آن پاکی ندارد، و الحمد لله... المعصومین

ff. 17. ll. 15. S. 8.7 x 4.8. C. 8.3. 22.4 x 12.4. 1.2 x 5.0 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Gold and colour lined borders. Rubrications. Stamp impressions.
Good condition. Bound.

Seals. 1. Murshid Qulī Khān. عدم بدر مهر مرشد قلیخان۔

2. Ghulam Dāmin. 1243.

علامہ ضامن۔ ۱۲۴۳

3. 'Alī Yāwar Khān, 1170.

علی یاور خان۔ ۱۱۷۰

2747

f. l. 34

Another copy of the same text containing first four bāts on v.

Beginning: as usual.

Ending: ستمنا لاطن می کند امکاف را بی دست و پا در
می دهد احتیاط

ff. 222. ll. 17. S. $9.5 \times 6.3^{\circ}/24.6 \times 16.0$ cms.

Written in ordinary nasta'liq by Mirza Asadullah Khan Masadadi on 9 Jumada II, 1229/26 May, 1814.

Rubricated. Dampness stain. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Mirza Asghar Ali Khan 1228

سرر اصغر علی بیگ - ۱۲۲۸

2748

f. l. 35

Another copy of the same, defective in table 4. Table of contents on the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: در تنهایی شب هم رحب میشود و برایش حرام است

ff. 10 + 64. ll. 17. S. 9.1×4.7 , 57° 2.4×12.6 , 12.2×7.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 18th cent. copy.

'Unwān, good ruled borders. Rubrications. Dampness stain. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2749

f. l. 87

شرح حقیقة المتقين

SHARH HAQIQATU'L-MUTTAQIN

A commentary on the same by Dardār 'Ab Lakhnawi, (d. 1255/1829).

H. I. 27.

Another copy of the same dating with ramāz. It is called Risālat al-Faṭih. This copy is defective in the beginning.

Beginning, abruptly واگر اهدب حیات حاکمیش از این دو لایب - بخ

Ending و در بیست که مثال است و ب صلاة باشد

ff. 97, ll. 17, S. 7.5 x 4.9"/19.4 x 12.6 cms

Written in ordinary black ink on paper. A later addition of copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

F. I. 33.

حديقة المتقين

HADIQATUL-MUTTAQIN

A treatise on fiqh compiled in 1254/1837 by the same Taqī Maṣṣūṭ.

The work is divided into a maqālāt naḥw five bābs and a shāḥ ma. Marginal glosses.

Beginning: الحمد لله... اما بعد. چنان که در أصحاح عد الله است
محمد بن مجلسی الاصفهانی - الخ

Ending میدهد از ثواب رکعت کرم و رحمت و رحمت اعدا و
من الشيطان ابراهيم

ff. 302, ll. 15, S. 9.1 x 6.1 or 5.6"/23.4 x 15.2 or 14.2 x 14.2 cms

Written in ordinary black ink on paper. It is signed Hasan 'Alī Ridwī, on 6 Jumāda I, 1252/19 August, 1836.

Unruled ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Mir Hasan 'Alī, 1253.

مر حسن علی - ۱۲۵۳

Ref: Bk. 1261-1264.

2743

H. I. 40.

Another copy of the same but starting a different tab from (صلاة الجمعة) at two parts.

Beginning

سید لایبیه و ادرستین محمد سره هری دی حق
و ایقین - النخ

Ending

قامصرت صاحب الامر خروج فرمود و الله می ده

ff. 249, ll. 31. S. 13.4 x 8.9⁹/31.3 x 22.8 cms.

Part 2 missing from the middle of the text. The text is already defective at the end of the first part.

Reproduction: Damaged text to be reported, and the end.

2744

H. I. 42.

Another copy of the same (صلاة الجمعة) (و حوت جمعه)

defective at both the ends.

Beginning: ... و حوت جمعه ...
... و حوت جمعه ...

... و حوت جمعه ...
... و حوت جمعه ...

ff. 117, ll. 25. S. 12.0 x 8.5⁹/30.4 x 21.2 cms.

Written in clear nashq. A late 18th cent. copy.

Part 2 missing from the middle of the text.

2741

H. L. 39.

لوامع صاحبقرانی

LAWĀMIYYAT-ŞĀHIBQIRĀNĪ

A Persian paraphrase of a commentary on Mafīẓ by the Ḥafẓh of Ibn-e-Babūya at-Qummī, (c. 381/991), compiled by Muḥammad Taqī al-Majlisī. An Majlisī Ḥafẓh (d. 1070/1660) was dedicated the work to his patron, Shah Abbas II, having completed the same in 1055/1654.

This copy contains from the beginning to (ب و سر صوت)

Beginning حمدی که ایلام مخور و مدد بخورر صفحہ پہل و نہار - سخ

Ending : و این قانون مصنفین است کہ ترتیب محکم معلوم و دہ باشد

ff. iv + 600, ll. 24-5. 12.9 x 7.4" (33.1 x 18.2 cms)

Written in good naskh, by Muḥammad Darw sh 'Ālī al-Mashnādī, on 22 Muharram, 1114, 7 June, 1702.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition, to be repaired, and re-bound.

Seals: Sayyid 'Ā am 'Alī Khān Bā ādur, 1224.

سید عالم علی خان چادر - ۱۲۲۴

Ref: Bk. 1258-1260.

2742

H. L. 41.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : ذکر آنها فائده ندارد

ff. 410, ll. 22-5. 9.1 x 6.2" (6.7 x 4.0"/23.4 x 10.1" (23.4 x 10.1 cms)

Written in good naskh, in Maragha, 1156 A.H.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Fair condition. Not bound.

2737

£ 1. 12.

ترجمة الاثنى عشرية

ARJAMATI 11 NA CHAKIYAL

Another copy of the same.

Regimenting: as usual.

Ending as usual

H. 12. H. 15. S. $90 \times 53^{\circ} 230 \times 135$ cms

Written on ~~1st~~ ~~14th~~ 19 ~~8~~ 40 12th Sept 1908

Substrates: Worm tubes. Location: In beach.

$$w_{\alpha} = 1 - \left\{ \frac{1}{2} \left(1 + \frac{1}{2} \right) \right\} = \frac{1}{4}$$

در حدیث

2. Qādiru'd-Daulah, 1274.

قدر الدوا - ١٢٧٤

2738

51.43.

اصول دین

USCLE DIN

Another copy of the same.

Regiment: as usual.

Ending : as usual.

H. 22, ll. 7. S. $57 \times 3.8^{\circ}$ 145×9.7 cms.

Warrant for arrest of Mir Asad Ali Khan
No. 1244/11 May, 1827 at Hyderabad

KU-02340-065 Wormholes - 1987-1988

Rubrications. Dampness stain. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Seals. Mubammad 'Istān nadur 1219. محمد علی خان چتر - ۱۲۱۹

Qālibu'd-Da'lah.

عالم الدوله -

2736

P. 11.

رسائل فقه

RA'Ā'II L-IḤQ

This copy contains two works:-

1. Tarjamatu'l-Iḥqā 'Ashariyah (fl. IV-19).

Persian paraphrase of Ashari's text on purification, prayers, and fasting and its Arabic translation by Muhammad Ishaq. has taken out the portion on prayers for his work and divided the same in twelve fasls

Beginning محمد و پرستش معبودی - راست است آداب عبادت ج

Ending: سر عمر بخو هی ' زبری شهید و ...

2. Uṣūl-e-Dīn (اصول دین) (fl. I, v-31).

A short treatise on the principles of religion by an anonymous person.

Beginning احمد فقه... اما بعد... که بر هر دینی و عمن واحد و لازم است شناختن ج ابع

Ending کارش هر است... میکند - و ه ع

Written in the city of... Aḥmad al-Haw...
Iḥyā'dah, 1197/9 October, 1783.

Light brown... bound.

2733

F. L. 27.

Another copy of the same

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 44 ll. 23. S. 14.4×8.2 , $9.3 \times 4.7^{\circ}$ / 137.0×21.1 , 23.8×11.9 cms

Written in clear naskh and nasta'liq, by Shakh Muhammad for Muhammad Şâd (Khân Ghâ) b. Jur' on 11 Şatir 1205 20 October, 1790

Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2734

F. L. 31.

Another copy of the same, defective by last folio

Beginning : as usual.

Ending : abruptly صاحب مال میرسد و اگر فوت ، او سعد اراں

f. 199. ll. 14. S. 9.7×5.6 , $0.8 \times 3.2^{\circ}$ / 24.5×14.2 , 17.4×8.1 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold sprinkled spacing for text. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2735

F. L. 32.

Another copy of the same containing fols. 6 to 20, defective in the beginning and in between at many places.

Beginning : abruptly.

Ending : as usual.

f. 437. (ll. 1-10, 23, 24, 341, 342, 356, 357, 380-388, in all 31 folios missing leaving 406), ll. 12. S. $9.2 \times 5.4^{\circ}$ / 23.5×14.9 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 13th cent. copy.

2730

F. I. 30.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 153, ll. 15. S. $8.1 \times 4.8''$, 20.8×12.3 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A middle 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

2731

F. I. 25

Another copy of the same, with marginal glosses by Shamsu'ddin Muhammad better known as Ibn-Khâṭ in a'.-Āmilī (d. 1059/1649).

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. m + 277 + 1, ll. 12. S. $12.6 \times 7.6''$, 32.2×19.4 cms.

Written in clear naskh. A middle 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2732

F. I. 26.

Another copy of the same, with marginal glosses as in preceding copy.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 201, ll. 12. S. $12.1 \times 7.4''$, 30.9×18.9 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound

2727

F. I. 29.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 210, ll. 2. S. 6.1×4.3^6 , 15.6×10.9 cms.

Written in clear naskh and ~~castig~~. A late 11th cent. copy.

Rubrications: ~~Dampness stain~~. Worm holes: ~~2 at addition~~. Not bound.

2728

F. I. 24.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ll. 207, ll. 12. S. 8.3×5.6 , 5.5×3.4^6 21.3×14.2 ; 14.1×8.6 cms.

Written in clear naskh by Muhammad H. a. y. of 14 Rabi' II, 1116, 18 April, 1714.

Ordinary muwān. Coloured green letters. Rubrications: ~~Discusses~~ ~~lines~~. Worm holes: ~~Four each at~~ ~~on recto~~.

2729

F. I. 28.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 248, ll. 13. S. 6.4×3.7^6 10.4×9.4 cms.

Written in clear naskh. A ~~new~~ ~~copy~~.

Rubrications: ~~Dampness stain~~. Worm holes: ~~on recto~~. Condition: ~~Poor~~.

2725

P. 1. 22.

Another copy of the same with two ghazals etc., in praise of Hadrat Allāh between ~~1111~~ 1115.

This copy is defective in bāb 10.

Beginning : as usual.

Ending : *چهار کبیر جو سی سہ، ویکاح کرڈل کبیر*

f. 254+1. ll. 15. S. 9.0×5.0"/23.0×12.9 cms.

Written in ~~na'uni~~ nash (first five bābs, in ordinary nasta'liq (the rest) the former by Muhammad I. I. b. (Shaykh 'ud-dīn Muḥammad al-Qutashī a'l-Jurābā'ī a' Khurasānī), Ramadān 1034 (11 September, 1623, at Kalyān in the Deccan.

Rubrications : ~~Dampness stains~~ . Worn holes . Fair condition. Bound.

Seals : 1. Mr Pirahīn 'Alī Khān, 1220 میرا پرہیم علی خان - ۱۲۲۰

2. Sayyid Husam Mirza Khān 1220 سید حسین میرزا خان - ۱۲۲۰

2726

P. 1. 23

Another copy of the same containing first five bābs (Panj Bāb)

Beginning : as usual.

Ending : *بعضی برآید کہ درین وقت کل مقام کہ وجہ آخرہ است
تواریث او دہد - نمٹ*

f. 209. ll. 9 and 14 on margins 4.2×2.9; 3.4×1.7; 2.0×1.1"/11.0×6.4; 9.8×4.3; 0.8×2.7 cms.

Written in clear nasta'liq, on ṣafīya dah 1057/2 November, 1747.

Good 'anwan, and gold decoration on first two pages. Gold-~~lined~~ borders. Rubrications : ~~Dampness stains~~. Fair condition. Bound.

2723

F. L. 21.

Another copy of the same, with several couplets in praise of Hadrat 'All at the end (ll. 211-228v)

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 210+18. ll. 23 S. 10.5 x 5.8, 7.9 x 4.3"/20.9 x 14.5 20.2 x 11.0 cms

Written in clear nasta'liq by Izzatu'llah, in 27 [2h1h4]ja 1148/27 April, 1736, at Jahānābād.

Coloured paper Ordinary 'unwāns on ff. lv and 69v Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2724

F. L. 20.

Another copy of the same, in two different hands.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

First 5 bābs : ff. 153 ll. 15 S. 10.4 x 6.6 6.2 x 2.8"/26.7 x 16.7, 16.0 x 7.3 cms.

The rest ff. 182, in all ff. 335 ll. 18 or 19 S. 10.4 x 6.6"/26.7 x 16.7 cms.

Written in good naskh and ordinary nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Gold ruled borders, for first 5 bābs Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Muhtaram Khān, 1149

محرر محال - 1149

2. Mu'nu'l-Mulk, 1205

معين الملك - 1205

With their autographs.

Written in clear **nasta'liq** A late 11th cent. copy.

Good 'unwans on ff. Iv and lxxv Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound

Seal Muhammad Husain 1099 and his autograph

محمد حسین مرید عالمگیر بادشاہ - ۱۰۹۹

Ref B.10 2551 Iv ASB 1112 1113 IvC 1213-1214 Bk 1253-1256

2722

F. l. 19.

Another complete copy of the same in two different hands. First five bābs end on f. 95v followed by extracts from *Saḍiyah* on ff. 96-99v, and table of contents of bābs 6-25 on ff. 100v-101 followed by the work on ff. 102v-306.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 306. ll. 19 or 25 diagonal. $25 \frac{1}{2} \times 37^{\circ}$ (25.3 x 14.5 cms.

First five bābs written in ordinary *nasta'liq* by Muhammad Husain b. Mirzā 'Alī Shirāzī, on 20 Shawwāl 1053/ 22 December, 1643, and the rest by a different hand in 1068-69, at Mahanvādūr Fort.

Rubrications. Red ruled borders from f. 102v to end. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound

Endowment note by Muhammad Baqir b. Shaikh Muhammad 'Alī

Seals of Muhammad 'Alī Shaikh Awais 1097

محمد علی شیخ اوئیس - ۱۰۹۷

Shaikh Muhammad 'Alī

شیخ محمد علی -

Muhammad Baqir b. Shaikh Muhammad 'Alī

محمد باقر بن شیخ محمد علی -

2720

Ad. 94

Another copy of the same defective by two folios at the end

Beginning: as usual.

Ending: abrupt v.

و بحر یمن و در ملاحظه مدعی آنچه که بد

ff. 164, ll. 11 to 22. S. 7 8 x 4.9⁶, 20.0 x 12.3 cms

Written in good naskh and readable. A rather recent copy.

Incubations. Dampness stains. Worn holes. Fair condition.
Bound.

Seals. (Jalām Qantar 1101.

بصر من الله و فتح قريب
من علام قنبرام - ۱۱۶۱

2721

F.1. 18.

جامع عباسی

JĀMA'-E-'ABBĀSĪ

The well-known Shiite exposition of high command by Ismā'īl al-Muhammad al-'Āmilī (d. 1041/1622) dedicated to Shah Abbas I, the Safawide (995-1037/1587-1628).

The author died having left the work incomplete. The first volume containing parts 1 to 5 was revised and edited by 'Izzat al-Muhammad b. Abi'l Hasan b. Muhammad Ismā'īl al-Husayn al-'Alawī; the second half of the work in 14 parts were written by Nizām al-Husaynī, some by the commands of the Shah and completed in 1042/1632.

Beginning الحمد لله... و بعد، چون توحه حاضر مدکات ناصر شاه
افدس - بخ

Ending: همیشه معبود و مایوب گردد و بحق او... و آیه الایحیاء...
عی من حاضر آب صلاة و آب محبة

ff. 321, ll. 16. S. 21.7 x 5.1, 6.0 x 3.1 - 22.2 x 13.0, 15.2 x 9.4 cms.

fl. 282. ll. 19. S. $9.6 \times 5.4^{\circ}/24.4 \times 13.8$ cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications Damaged stains, worm holes. Fair condition.

Not bound

2718

Ad. 142.

Another copy of the same.

Beginning as usual.

Ending: as usual.

fl. 394. ll. 17. S. $10.0 \times 6.3^{\circ}/25.8 \times 16.2$ cms.

Written in clear naskh and nast'iq. A late 12th cent. copy.

Rubrications Damaged stains. Worm holes. Fair condition.

Bound.

2719

Ad. 53.

ترجمه مفتاح الفلاح

TARJAMA E MIFTAH U'L FALĀH

Another Persian paraphrase of the same by Jamā' u' l-ān Muḥammad b. Husayn Khwansārī (fl. 2v)

The work is divided into six bābs.

Beginning

مفتاح فلاح - باب و معنی و مقدمه شجاع - تحریر و تالیف - محمد
و ثانی بارگاه - ابن

Ending

معنی بعد از جدول اراک مکر کمراهی - مدینه اعلی

fl. 124 + 4. ll. 20 + 8. S. $8.1 \times 5.7^{\circ}/20.7 \times 14.5$ cms

Written in good naskh and nasta'iq. A middle 13th cent. copy.

Rubrications Worm holes. Fair condition. Not bound

Ref: Bk. 1430-1431.

2714

P. 32.

Another copy of the same in which the name is given as Quthb hâh.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. B2, ll. 15, S. 7.7 X 4.8", 19.0 X 12.1 cms.

Written in ordinary nasta'liq by Mirzaqâh Husarî, on 5 Rabi' II, 1248/1 September, 1832.

Europea paper. Khabr. Fine. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Round.

2715

E. 29

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. 15, ll. 15, S. 9.5 X 5.7", 24.0 X 14.5 cms.

Written in clear nasta'liq by Sayyid Bahâdur 'A. Naqwî on 12 Rabi' I 1248, 28 February, 1841 at Darvaqûr.

Ink ricatens. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Round.

2716

et.

Dec. I 15

ترجمة فقه الرصوى

TARJAMA-E-FIQHU'R-RIDWÎ

Bâ. A Persian paraphrase of the Arabic work ascribed to the fifth Shiite Imam 'Abû Mu'îd 'Abd. 2. S. 1. Translated by the commands of Sultan Muhammad Quthb al-Dîn 'Alauddîn 'Aziz al-Dîn (1615-1635), by Muhammad Aslam Khan, was completed on 22 Dhija'da 1027/1 October, 1620, under the supervision Muhammad Mu'min a'l-Astrâbâdî.

Bâb IV, on animals, on f. 8v.

باب چهارم در ذکر حیوانات

Bâb V, on hunting by spear, sword, arrow, etc., on f. 13v.

باب پنجم در ذکر صید کردن به نره و شمشیر و بر و تی آلات

Bâb VI, on fishing, on f. 18

باب ششم در ذکر صید کردن ماهی

Bâb VII, on how the hunters work, on f. 20v

باب هفتم در بیان آنکه صید و شکاری بچه و ع و بک صید و بگردد

Bâb VIII, on rules of slaughter (zabâh) and forbidden on f. 24

باب هشتم در مسائل ذبح

Bâb IX, on animals, on f. 30.

باب نهم در بیان حلت و حرمت حیوانات

Bâb X, on rules governing the remains of edible touched by animals on f. 35.

باب دهم در بیان عروق و عروق و عروق و عروق حیوانات

Khâtima, on names and rules governing animals. The names arranged alphabetically, on f. 36.

خاتمه در بیان اسمی و حکام حلت و حرمت و کراهیت حیوانات

Beginning :

شکر و سپاس بی قیاس و شکر عبادت

اساس بادشهی را مژا و اراست که الله

Ending :

و خون و یوغ و نه خلا نماید دیگر

موی بر نماید و السلام و الا کرام

H. 77. ll. 17. S. 101 x 56, 73 x 3.7⁶ (25.5 x 141, 18.4 x 9.2 cms.

Written in ordinary nast'liq, for Aminu'l-Mulk (brother of Muniru'l-Mulk), on 9 Sha'bân, 1231/5 July, 1816.

Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes fair condition. Not bound.

Ref: Bk. 1251.

The work is divided into three parts and a *Klātuna*.

Beginning

سعد و سپاس بادشاهی را بر صرخ ۳ - ۲ - ۱

Indexing

برای حفظ نفس و رو و جیب می شود .

11, 21, 11, 13 to 23, S, 14.3 x 6.0", 31.0 x 20.0 cms.

Written & corrected by J. H. D. S. 1254 18 May 1937

Author. Watson, J. E. Paper. ~~unknown~~ to pieces. Poor condition. Bound.

2713

p. 31

صید

541013 AH

A treatise on *shikāṅg* (see *shikāṅg*), by Husam al-Husamī al-Jabart al-Harāzī, who had studied his work with Shalāh al-Dharī. He explains a caveat that he could not consult works on Mālikī laws.

This work is referred to *Itar-ni Jap-sa* (No. 2850-51) which does not appear to be identical as the preface of *Shah-doo-ni* by *Shah Jantar Daksati* to which we turn. The text of *Mahmudad* is in *Qutub Shahi* (No. 100, 102, 104) hence the location appears to be certain. The name of *Itar Jap-sa* to *Shah* is not found in No. 4704.

In work with a child, a teacher, for example, should not be disturbed.

مقدمه در بیان لغت و تحقیق و معنی کلمات -

on the work said, on 1. 3.

Part I, on rules for hunters and religious slaughterers, on f. 4.

بمب اول در بیان شروط و مصادیق دايع

Tab 11, on instruments used by writers at 18 age centers, on p. 58.

باب دوم در بیان آلات اصطیاد و ذبح

Table III, on what to expect when you get to the top of the 7

باب میوم در ذکر قسمه

Beginning : در بیان سنن آدم روایت است از حضرت میر المؤمنین - الخ

Ending : حواصی ثمره شریعت و ما و ثمره طریقت و ما و ثمر حقیقت قیامت

6. Uṣūl-e-Dīn, on ff. 80v-83.

A tract on the five principles of Shiite faith

Beginning : الحمد لله ... بدینکه اصول در پنج است - الخ

Ending : بقیه نمی باید نشنق

7. Jawāhir-nān 1 on ff. 62-64 and in margins of ff. 64v-65

A tract on precious stones, pearls and other minerals

The work is divided into twelve bābs :-

1. on diamonds 2. on scaphire 3. on ruby 4. on emerald
5. on pearl 6. on turquoise 7. on bezoar stone, 8. on white amber
9. on lapis lazuli 10. on coral 11. on carnelian 12. on jade

Beginning آن در سجده حواصی هر چه بر زبان میسر رود ندلی مجموعه
آفرینش هر و کل امتیاز قدرت اوست - الخ

Ending هر که بشم دارد - خود رست من شد و رنگ و مدام
مرح و دوشین و بر من در من شد صغف دل را امید
باشد - تمت

f. 83. ll. 15-8 81x55. 54r 2*, 204x138 130x82 cm

Written in good nā'liq by Durr-i-Mulk, 'Abd al-Rahmān
a'ish-Shirāzi, in Rajab 1001 April 1-11 at Mecca

Good tanwān Good blue ruled borders Headings in blue or red
Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and
re-bound

2712

F. I. 59. صیدیة طہا سب صفوی

ṢAIDIYA-I-TAHMĀSP ṢAFĀWĪ

A treatise compiled by one Dā'i for Shāh Tahmāsp Ṣafawī, (c. 1530-
984/1524-1576). It deals with the legality of hunting, etc., and the meat
of such animals.

Aq. 141/2.

مجموعه رسائل

(MAJMU'AT-E-RASÂ'IL)

This copy contains the following works:-

1. Si wa Hatt Lab dat Hayân-e-Wajihât 1 1v-62

Another copy of the same

Beginning الحمد لله... که این رساله است مختصر در بیان واحیات
نماز و آنچه پیوسته - الخ

Ending: as usual

2. 'Aqâ'id-e-Diniyah, on ff. 64v-73

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending و بعد آن هر چه وقوع آن و حسب و...

3. Risâlat Layan la wa Arkân-e-Mashar'at on ff. v-7.

A tract on the interpretation of Layt town

Beginning أما بعد، بدانکه مردم معظم و عریضی ملام
و مرشد حلائق حضرت امام محمد باقر - الخ

Ending قرآن و سنت و فقه ائمه و حساب

4. Saigh-e-Nikâh, on ff. 77-78.

Arabic sermon of Shite doctrine with a few lines in Persian

Beginning الحمد لله حمد و تسبیح - الخ

Ending و ما یرم شدم که بر مبلغ نور...

5. (Risâla-e-'Aqâ'id), on ff. 78-80.

A tract on Shite beliefs.

The work begins without any preface, and with Kitābu't-talāfat.
This copy is defective at the end.

Beginning:

کتاب الطهارة تفهیم کلام چمن ست ای هدا
کتاب الطهارة - الخ

Ending abruptly.

واکر شرط در هر عدد هم در
بواسطه حزب او دور

ff. 298, ll. 18 to 21. S. 11.9×7.6^o 30.4×19.4 cms.

Written in clear naskh at Irastān. An early, thirteenth-century copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. A few holes.
Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: K. II. 1844.

2710

Aq. 23/2. سی و همت باب در بیان واجبات

SIWAHA I BĀB-i AR-I AYĀN-E-WAJIBĀT

A short treatise of high complexity by Dīvān-i Na'is, a Jilā-e-Jurām.

The work is divided into 30 chapters, which is treated as a separate work and given the title of 'Aqa'id-e Diniyah', on ff. 1v-5v, followed by 37 bābs on usual topics.

Beginning:

الحمد لله... من چمن کو به فقر حفر حای صبه من
بن سدید الجرحانی - الخ

Ending:

تمام دارن هر مسکبی را یک مدد و هدایم بامو ب

ff. 37, ll. 21. S. 8.2×5.2^o 20.8×13.2 cms.

Written in clear nasta'liq, on 1 kağıt, bought August 1, 1881, at Bijāpūr.

Rubrications. Dampness stains. Wormholes. Fair condition. Bound.

2707

ii. SHIITES

نیل المرام

F.1. 66.

NAILU'L-MARĀM

A treatise in ḥifẓ compiled by Rahn b. Ma'rūf

This work is of the composition of Shaikh Isma'īl Sa'wī, 1000-10150 (= 1524), who is praised as the liberator of al-rāṣa from the yoke of the Sunnites.

Beginning: حمد و ثناء متکثر حضرت مہدی کہ حج

Ending: بر آری کہ روایت واقع مشور

ff. 385. ll. 11. S. 7.4 X 5.4"/19.0 X 14.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq and calligraphed in 'Uthmānī, 1077/ August, 1686.

Rubrication: Dampress, 100. A. 110. — Encre: blue-black.

Seals:— 1. Muḥammad Mir. یا محمد میر

2. 'Alī Naql. یا امام علی البقی

3. Yā Saḥib al-Zamān Aḥmad. یا صاحب الزمان احمد

4. Ṣaḥī Qulī. صنی قلی

5. Saḥī Qulī. صنی قلی رحمت اللام شریف

Ref: K. H. 3370

2708

رسائل فقہ

F. 14.

RASĀ'IL-E-FIQH

This copy contains two works:—

1. Tarjumat al-Ja'fariyah (ترجمہ جعفریہ) on ff. 1v-35v

Beginning :

حدول در بیان احکام طه و حرمت و کره
حیوانات - الخ

Ending :

باقی هرکی مکروه است - حرام

f. 12, ll. 7 Colours. 20.3 x 14.4 cms.

Written in ~~Arabic~~ nasta'liq. Late 17th cent. copy

European paper. Red thread border. Purchased in a
portfolio.

2706

f. 50.

قواعد نماز و وضو

QAWA'ID-E-NAMAZ WA WADU

A short treatise on ~~Arabic~~ and prayers. 17th cent. version

Beginning

بسم و صو اولاً بجمه می هر دو دست
سه مرتبه بشوید - الخ

Ending .

و بک الحمد لله ، و همه مسجدها و ... است

f. 13, ll. 8. S. 8.0 x 5.7"/20.3 x 14.4 cms.

Written in ~~Arabic~~ nasta'liq. Late 17th cent. copy

European ~~most likely paper~~. ~~various~~ stains. Worn holes. Good
condition. Not bound.

3. 55.5 x 50.10. 17.5. 2.4 x 3.5. 50 x 20. 18.7 x 4. 17.5 x 5.

Written in clear naskh. A very fine copy.

Rubrications. Red ruled borders. Dampress stains. Worm holes.

Poor condition. Preserved in a portfolio.

2704

رساله در فقه

F. 36.

ṚISĀLA DAR FIQH

A short treatise explaining the principles of the law (fiqh) and three other compets (the other two are not mentioned in the text) with commentaries on important points with a commentary on the text by a devout Muslim.

The work is preceded by suras (text) on the subject of the law.

Beginning

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيدنا محمد وآله

داستن فر ص بر عاقل و دافع - الشيخ

Ending :

آمین گفتن حبه بعد از تمامی مانجه

ff. ii+3. ll. 9. S. 81 x 4.6"/20.3 x 11.5 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy.

Preserved in a portfolio. Dampress stains. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

2705

فرهنگ فقه

F. 53.

FARHANG-E-FIQH

A treatise of 10 chapters. Arranged with the principles in Persian with four columns for the four schools of Shari'ah (Hanafi, Shafi'i, Maliki and Hanbali) giving against each an answer to the question of permissibility or "Harām" forbidden. Notes on some where there is difference of opinion.

2702

مسائل فقہ

Fat. 7.

MA AL FIQH

A where
At the
sister's son Shakh Ahmad b. Sunatman.

Beginning الحمد لله

Ending

Q

W

F

Fair condition. Preserved in a portfolio.

2703

(رساله در فقہ)

F. 35.

(RISÁLA DAR FIQH)

A
by
was

Fab 1, nas 15

Fab 2

Fab 3

Fab 4

Fab 5

Beginning

Ending

Beginning: سپاس مراون وندی پیدایش این ملک شاهی که
نظام عالم را بدل - الخ

Ending حد و رسول و مؤمنان را و صلوات الله علی همه حقه بعد
و آله و صحبه و سلم

ff. i+47. ll. 9. S. 7.7×5.8"/19.5×14.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq script by Qāṭib II, 124th 25 August 1807.

Refined, as a miniature in addition. Bound.

Autograph copy presented by the author to the Collector's grandfather.

2701

F. 26. *خمسة محوَب شاهي*

KHAMSA-E-MAHBUB SHĀHI

A short treatise on the five virtues of Iran *khamsa-i-irānī* by Shāh 'Abdū'lrah Māsūm Qāṭib. It was written for the young Nizām, Mīr Mahbūb 'Alī Khān Āsif Jahā VI (1825-1848), when he was seven years old, and is dedicated to the Nizām.

Beginning ایامی محمد صلی الله علیه و آله و سلم
صفت سرور ابد

Ending من پیش چه نه من
خمسة محوَب شاه والی ملک دکن

f. 20. ll. 13. S. 13.1×2.7"/4.8×6.2/12.4 cms.

Written in clear nasta'liq. A fine, elegant copy.

European paper. Gaily unworn. Coloured ink, borders, rubrications. Good condition. Bound.

Illustrated with calligraphic poems and drawings.

H. 78. H. II. S. 9.1x6.3"/22.9x15.9 cms.

Written in 'nastaliq' on Kash' 1287/ August 1864, at Hyderabad.

Coloured paper. Heavy. Fine. A few worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

A work of local interest, written by the collector's ancestor in highly Persianised Urdu.

2700

F. 69.

منهاج العدالة

MINHAJ AL ADALAT

A short treatise, written in 'nastaliq' on a bit of high, imported Mahomedan script, by Mirza Asadullah Khan, u'l-lahat, Mebra.

The work was dedicated to Mirza Asadullah Khan, the then Mirza of Hyderabad, and is dated 1287.

The work is written in 'nastaliq' on a bit of high, imported Mahomedan script, by Mirza Asadullah Khan, u'l-lahat, Mebra.

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat

منهاج العدالة

Minhaj al Adalat on correct application of laws and award of justice illustrated by several anecdotes on f. 41v.

Part 2, on the general rule for all animals, on f. 12v.

Manuscript in the library of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Beginning.

الحمد لله الذي جعل الحيوان حياوات

من ربه في طيئه مشتمل برين حكمة حلت وحكمة

وكم اهيت حيوانات - الخ

Ending.

حرره ورشته حور كرامه يدني بر مكرم كرامه

Manuscript in the library of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Written by the scribe of the manuscript, MS. A. 1. 1. 1.

Manuscript in the library of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Round.

Printed in Manuscript.

2697

احكام الصلاة

F. 73.

AHKAMU'S-SALĀT

A treatise on the rules of prayer, in Arabic, written by a scholar of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Beginning

الحمد لله الذي جعل الصلاة من عبادته

Ending

و من ربه في طيئه مشتمل برين حكمة حلت وحكمة

Manuscript in the library of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Written by the scribe of the manuscript, MS. A. 1. 1. 1.

Manuscript in the library of the University of Cambridge, MS. A. 1. 1. 1.

Ref: 1v ASB 1094.

2695

فرائض ارتضائية

F. 51.

FARĀ'ID-E-IRTADĀ'YAH

A popular treatise on Muslim laws of inheritance and partition compiled in 1228 1811 by Mahammad Isma'īl 'Alī Khan Palādur, Mufti of Madras Presidency.

The work is divided into 10 chapters, a few lines at the end of each chapter. This copy is made from a printed copy and contains a foreword by Hasan 'Adīl-Māhīlī on pp. 1 and 11. Marginal notes.

Beginning فرص عن است محمد ردیه + که بقسی دعه داد حدت

اما بعد این رساله است موسومه فرائض ارتضیه - الخ

Ending و الله اعلم بالصواب

کماله بختم علی بن محمد فی علی الخ

ff. ii+30. ll. 17 S. 10.0 x 7.0" 17.2 x 7.6. cms.

Written in ordinary nasta'liq script. A later bound copy.

2666

احکام الحيوان

F. 2.

AHKĀMU'L-HAIWĀN

A short treatise on the laws relating to animals forbidden for eating by the Muslims, based on the traditions of the Sunnites, by Faṣīḥuddīn, Qāḍī of Nellore.

The work is divided into 10 chapters, two fāṣlās and a ghāṭima. Muqaddima, on the nature of animals (حيوان) on f. 1v.

Fāṣl. 1, on all animals of the land, on f. 2.

Fāṣl. 2, on all animals of the sea, on f. 10v.

Fāṣl. 3, on laws relating to all reptiles and (رواحف وحشرات الارض) insects on f. 11v.

The author was the descendant of Shaikh Bahā'uddīn Najam who is alleged to be the founder of the city of Burhānpur, and claimed descent from the saintly orthodox ḥabībī Hadrat 'U'nayn. He had already composed a longer work entitled Munatibbāt-e Muḥammad Shāh in 1137/1784.

This work is based on the holy Qur'ān, the Traditions, and standard works of fiqh. It is divided into two parts (parts).

Qism 1, on letters on the law.

Qism 2, on religious orders on the law.

List of contents in the beginning.

Beginning الحمد لله الذي علم أبانا آدم للأسماء

فمن الذين درسوا أبانا وماتوا وسيدنا ثلاثين

Ending: بحسب كرمه كاد شه ودر جملة خطا همی حکم است

ff. 13 + 83, ll. 11 + 10. S. 8.3 x 5.7"/21.1 x 14.3, cms.

Written in at Ahmadnagar.

Preserved in Bound

2694

P. 5.

أساس المصلى

ASĀS-UL-MUSALLĪ

A short treatise on prayers compiled by Lallar Rukn Saubādi

Beginning الحمد لله

في الدارين

Ending و چون باقیمه

ff. 15, ll. 21. S. 8.3 x 5.7"/21.1 x 14.3, cms.

Written in bad script, on 21 Dhul-hijja 1165/11 September, 1752.

Dampness stains. Inter margins repaired. Fair condition. Preserved in a portfolio.

ff. 132. ll. 13. S. 7.4 x 4.5⁹/18.6 x 11.2 cms.

Written in ~~Arabic~~ ~~hand~~ ~~script~~. With the date Durrat al-Hijab on
13 Rabi' I, 1155/7 May, 1742.

~~Condition~~ Dampness stains. Worm holes. Poor condition.
Bound.

2686

رسائل فقه

f. 75.

RA-ĀṬḤ-E-FIQH

This copy contains two works:

1. Risāla-e-fiqh (f. 1-8).

A collection of questions and answers on the ~~beginning~~
ing. The compiler's name is not given.

Beginning ~~in~~ ~~Arabic~~ ~~script~~ ~~beginning~~ ~~with~~ ~~the~~ ~~words~~ ~~الحمد لله رب العالمين~~

Ending ~~with~~ ~~the~~ ~~words~~ ~~و رتبه کشتی را رتبه هر دو~~
بسر گذرند - و الله اعلم

2. Musākhkhāt fī ḥikmat al-Sayyid

A collection of questions and answers on the ~~beginning~~
to the end of the ~~book~~ ~~with~~ ~~the~~ ~~words~~ ~~الحمد لله رب العالمين~~
is ~~in~~ ~~Arabic~~ ~~script~~ ~~beginning~~ ~~with~~ ~~the~~ ~~words~~ ~~الحمد لله رب العالمين~~

Beginning الحمد لله رب العالمين و الله اعلم
پرسید مر دی در صبح صادق - ایخ

Ending ~~with~~ ~~the~~ ~~words~~ ~~برین محله نمی آید و هر چه~~
جواب این جهاد را گفتند و تأیید و بانی

ff. 132. ll. 13. S. 7.4 x 4.5⁹/18.6 x 11.2 cms.

Written in ~~Arabic~~ ~~hand~~ ~~script~~. With the date Durrat al-Hijab on
Burhānpūr.

~~Condition~~ Worm holes removed. Poor condition. Bound.

Seals: 1. 'Aṣā.

المطالع من الله تعالى

2. Muḥammad Ṭimāl

شهادت رحمت جو در د امید

3. Shukh Ismā'īl ibn Shukh Iyās

شمس الغیث، سما عیال بن شمس، دوس

Ref: FIO. 2587; IvASh. 1046; IvC. 359; IS. 1274

2684

مجموع سلطانی

f. 59.

MAJMO'-E-SULTĀNĪ

A collection of questions and answers on many kinds of religious practices, compiled by an anonymous person. The work is arranged in 25 bābs.

Beginning

الحمد لله... بما انك... من كتب در مدد مسائل فقه در
عبادات - اسفغ

Ending

فیت مهر و حدیث و مهر مش - مد و کان

f. 166. ll. 11. S. 5.8x3.9"/14.8x9.8 cms.

Written in ordinary slakast nasta'liq. A late 17th cent. copy

European paper. Dark, grey stains. Worn leaves. Headings in red upto f. 111, and thereafter specimens of black ink staining. Preserved in a portfolio.

Ref: EIO. 2551; IvASh. 1046; IvC. 359.

2685

f. 38

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Beginning

الحمد لله الذي جعل البيت . . .

هذه عجائب في ملك الحج من كل حج - الخ

Ending

هذا ما قصده من ملك الحج طاب الحج و الأمرة

والناسك أو حرودك ونم - الخ

ff. 60, ll. 15. S. 7.7 x 4.5 / 5.4 x 2.4" / 19.4 x 11.2 / 13.5 x 9.5 cms.

Written in good rust'ī by Shākh Isma'īl, 1030 January 1041

Good ṭirwān - Good ṭirwān - Rubrications: Dumprass stains

Worn hides repaired - Fair condition - Bound

An autograph copy

A rare work

2683

P. 64.

مفتاح الصلاة

MIFTĀHU-S-SALĀT

A treatise on the details of prayers and other religious exercises collected together. According to the colophon the author Shākh Isma'īl Burhanpūrī b. Mashhūr Amā Shākh Isa Jūdā (b) completed this work in his own hand in Dhaka, 1001 November 1001.

Notes, and a few ghazals at the end, one by Mawlā Ghā Qādir, and the other by Ḥawāj Abu Isma'īl 'Abd 'Allāh.

Beginning

الحمد لله . . . بدان توبت بخت آید راحتی نماید که

داستن موصی - الخ

Ending

من امر غنیمت عمل کا فی است - و الله موفی و نعمی

ff. 111, ll. 19. S. 7.8 x 4.2" / 19.6 x 10.6 cms.

Written in ordinary rust'ī by Shākh Isma'īl b. Ḥas Qādir or Ḥabīb Isa Jūdā Muhammadi Shākh Isa Jūdā (b) December 1001

Rubrications: Dumprass stains - Worn hides - Fair condition - To be repaired and rebound

f. 213. ll. 17 to 19. S. 8.9 X 5.1⁸ 22.4 X 12.9 cms.

Written in ordinary nasta'liq by Shuja'at Khān in 1262/1681.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seal: Qāḍī Muḥammad Qayyūm d. 1262/1681 قاضي محمد قیام الدین

Ref. E. I. O. 2572-2574. IV As. 10. 33. Bk. 1228

2681

f. 58.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 19. ll. 17. S. 8.5 X 5.4⁸ 21.5 X 13.7 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. A few lines at both ends by a later hand. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2682

6. 1. اثارة الشوق والغرام إلى حب يد الله الحرام

ITHĀRA'U'L-ISHWĀQ WAI GĀRAMU'L-LĀHAI
BAIT'ILLAH'L-HARĀM

A treatise on the nature of love and desire and its effects
pertains to the love of Muḥammad Muḥsin d. 1030/1621
by Shāh Muḥammad 'Aḥ Madk.

The work is divided into four chapters. The basis on which it
was undertaken with a view to gain the patronage of Saif al-Dīn
'Alī Ḥafīẓ of Fāyaz who was succeeded by

A few Persian verse at the end.

321 5

Another copy of the same with notes and tables of the contents in the beginning.

Vol. 1, ll. 1v-20v.

Beginning: as usual

Ending

کون حرفہ ملا ہو، وہ گام ہی روی ہے کہ

Vol. 11, Pt. 2, 1974

Hexapod

ب چهارم در حد ریه و اول حرکت عضله و دوم حرکت ریه

loading, as well as

$$11 \quad \lambda_1 \neq \lambda_2, \quad 1 \leq \lambda_1, \lambda_2 \leq 4, \quad \lambda_1 + \lambda_2 \leq 5, \quad \lambda_1 \neq 1, \quad \lambda_2 \neq 1, \quad \lambda_1 \neq 2, \quad \lambda_2 \neq 2, \quad \lambda_1 \neq 3, \quad \lambda_2 \neq 3, \quad \lambda_1 \neq 4, \quad \lambda_2 \neq 4, \quad \lambda_1 \neq 5, \quad \lambda_2 \neq 5.$$

Written in primary nasta'liq by Shaykh Muhammad Barā'id
ibn Muhammad Husayn Shaykh 1124 March, 1, 12 during
the reign of Shaykh 1124 March, 1, 12 during

Admission tickets Admittances Admittances Fair condition.
Preserved in a portfolio.

647

مجموعۂ حاقی و عزائمکافی

САНКАТ КИТАБИ 11/2/11 МАКАНИ

A treatise on phrenology written by a man who works in a lunatic asylum. The work is dedicated to "Elizabeth, daughter of John A. Smith" and is signed "John A. Smith, 1844".

... ..

Beginning

محمد رفیع مسعود شہید

نام نهادہ اور متعلقہ

Finding

سہ ماہی و نول طالعہ رجب - ا - ثانی

و الله اعلم بالاعقاب

Written in good shikast-nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications: Dampness stains. Water holes. Poor condition. Bound.

Seals of Munir'u'l-Mulk, 1200.

Autograph of Durgah Quli Khan I, was Governor of Aurangabad, in 1171.

پیام نظامت محبتہ بنیاد ... درگاه قلی

2678

فقہ برہنہ

Fat. 4.

FIQH-E-BARAHNA

A well-known treatise on Hanafite fiqh, composed by Naṣir'u'd-Dīn Lāhūrī, after 989/1581.

The work is divided into two volumes and it is also called Fatāwī-e-Barahana. Table of contents in the beginning.

Vol. I, ff. 1v-190v, contents babs 1 to 3.

Beginning: حمد مرشدای حقا پرستہ ملت بہ صاف کمال - اسع

Ending: دریل اور ایہ -اری بیکاری ر نر کار عفی
یکپاری را معید الطالبین

Vol. II, ff. 191-332v, contents babs 4 to 26.

Beginning: باب اول در رکاء، وی احديث -سبوح موادک - اسع

Ending: ثم توجه الی دمشق وی -مة عشر و -مة

H. 4+332, d. 14.8 x 9.8 x 5.6 cm. 7 x 3.4" x 4" x 14" 15" x 8" x 5.5" cms

Written in ordinary nasta'liq by Asma bint al-Hajj, on 21 Jumāda II, 42 Juhūs ('Ālamgīr) = 1110/15 December 1698.

Ordinary 'unwāns at the beginning of each volume. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stain. Water holes. Poor condition. To be repaired and restored.

Ref: IV ASB 1037, Bk. 1226

2673

Fat. 2.

Another copy of the same, with notes at both ends.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 163. ll. 15. S. 8.6×5.4 "/ 41.8×13.5 cms.

Written in early nasta'liq by Jundall in 1047/1636, 1638.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2674

Fat. 1.

Another copy of the same with notes at both ends.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. iii+186. ll. 15. S. 10.0×5.9 "/ 25.1×14.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq by H. al-Kasbi, hand of Dost Muhammad, at Aurangābād. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2675

F. 33.

رساله صیدی

RISĀL A-F-SAIDIYAH

A treatise on the nature of the animals which are lawful to eat and the nature of those which are not, according to the law of Shari'ah. It is a work of the 12th century, and is a very fullness of the flesh of such animals.

The work is written in the style of the 12th century, and is a very fullness of the flesh of such animals.

مبحث دوم درد کمرشروط ارحیج

و وزیر و ایچ مدد احمد چ است رفیق و رفیق

Part III on notes published in 1917, pp. 157 ff. is missing.

مبحث - يوم نزل الحجر و مبعثات و ... من ابي و الانوار

The only assumption made in the preceding argumentation is that the \mathcal{L} -structure \mathcal{M} is a \mathcal{L} -model of Σ .

Beginning: خطبة الكذب ، كرم حجة الطهارة تستحق (طهران) ١٤١٤

Findings: در آن طار می است نه در بهر - و نه در محققه الحس

[illegible]

Writen by the author of the "History of the County of York, 1791."

and the other two are the same, we can find a contradiction by repeating the test on α .

Ref: 1v A5B 1035: IVC 357.

2672

فتاویٰ امنہ

LA LAMINA

A treatise on the history of the city of Medina, by Muhammad Amin al-Ashraf al-Fayyumi, known as al-Fayyumi al-Madani. It was compiled after 948/1541.

Notes at both ends.

Mediating: $\gamma = \beta_1 + \beta_2 + \beta_3$

وہابی علی بدعت ہے و ہمدردی کے لئے واجب

Finding

11. 135+1. 16. 27. 5 7.2x4. " 8.2x14 1 CHN.

[illegible][illegible]
$$k, r_{10}, s, t, u, v, w, x, y, z, \text{ and } \alpha \text{ are constants. } (1)$$

Round.

Ref: IV ASB 1030.

مرزا محمد محسن علی خان - ۱۲۰۳

2. Raff'u'd-Daulah, 1214.

رفیع الدوله - ۱۲۱۴

2669

Fol. 6.

فتاوی قراخانی

FATAWĪ E-QARĀKHĀNĪ

A well-known treatise on Hanafi fiqh compiled by Shihab al-Dīn Yaqub Muẓaffar Kirmānī, an official physician. It is named after Firuz Shāh Taghlaq III (752-790/1351-1358).

The text is a complete treatise on Hanafi fiqh, starting from the beginning.

Beginning: الحمد لله رب العالمین و نحمدہ و نصلی علی محمد و آلہ و سلم و یدبر الامور -

Ending: - کتبہ غیر تائیدہ بآراء ان محسن

H. 10 + 349, li. 17 to 26, S. 9.6 x 5.7*24.2 x 14.4, cms.

Written in a few different hands, mostly in a cursive hand. A good copy.

Headings in red. Damaged stains. A few worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: E.I.O., 2971; 1v ASR 1034, IVC 350

2670

F. 54

فقه باری

FUQH E-BĀRĪ

A treatise on fiqh compiled by Nur al-Dīn al-Jirānī (d. 1404) and Ahmad b. Zayn al-Dīn al-Kawālī by the order of Zayn al-Dīn Muhammad Bābur Padshāh (527-544/1494-1501) and dedicated to him. The work is based on seven famous works: Hujāya, Kaif al-Sayr, Waḥyā, Sharh e-Mughṭarāḡat e-Wahyā, Muḥāsana ḥuṣṣā, and Fatawī e-Qadīr Khānī.

The work begins with a short introduction in Arabic followed by the commentary.

Beginning : الحمد لله ادى أحكم أصول الشريعة ... الحمد لله ادى
هدانا إلى الصراط المستقيم ، نعم حمد - انعم

Ending : الحمد لله ادى حكمه اصول الشريعة ...
بس هيج محرم من مدح شوق و ... آل ... مدح است الحمد لله ...
و اصحابه اجمعين

ff. 138. ll. 24. S. 12.4 x 8.5* 31.2 x 21.4 cms

Written in clear naskh and shamsa script by Shaykh Karim 'All, on 19 Jumâda I. 1241/30 December, 1825.

Rubrications: Worm holes, repaired. Faint color and stain.
Preserved in a portfolio.

2668

F. 55. فوائد محمود خانی

FAWÂ'ID-E-MAHMÛD KHÂNI

A collection of one hundred and forty allegories (قصص) of five dedicated to Mahmūd Khân Sultan of the empire who was born in 1235 given was a disciple of Pr. Nizāmī in 1235 of Delhi (1235/1350)

Beginning : حمدی حمد و ... حمدی حمدی
را که بصبح قدیم و حکمت مستقیم - انعم

Ending : حمدی حمدی ... حمدی حمدی
این سخن تو دیک بکهر است

ff. 58. ll. 15. S. 8.1 x 4.9* 20.8 x 12.4. cms

Written in otoman script by Muhammad Ali Hakim of Isfahān, on 24 Safar 1270/20 January, 1854.

Rubrications: Worm holes: Faint color and stain.

2665

11.

Another view of the same subject by a lady in the beginning.
 [C. concludes her remarks.] [C. writes. Notes it to end.]

Beginning: *ابن عربی و صوفیائی روی است*

Ending: as usual.

$$f^* = (1/5^2) + \dots + 1/5^k + \dots = \sum_{k=1}^{\infty} 1/5^k = 1/5 \cdot \sum_{k=0}^{\infty} 1/5^k = 1/5 \cdot 5 = 1$$

Written in two different hands, in cursive script (1) and (2). The latter by Shafiq-ud-Din Muhammad. A late 12th cent. copy.

Dean's Special Worms - Large 1 1/2" x 1 1/2" Round

2666

4. 12.

⁷ Another copy of the same file type at the end

Beginning : as usual.

و آنچه می آید از مرصعی حاصل شده است ،
و نوابقها را عندهما - نسخ

H. 155. II. 19 or 23. S 90x55⁹/₂₅ 0x140 cms.

While the data are not as detailed as those available for the early 1990s, the early 1990s data are

Heater & Air Conditioning **Water Heating System**

2667

19.

تنوير المنار

TANWIRU'L-MANAR

[illegible]

ff. 62. ll. 22 to 30. S. $8.3 \times 5.1^{\circ}/21.0 \times 13.0$ cms.

Written on old fly leaf by Zafar 'All Bāg on 21 Jumādī II, 1172
19 February, 1756, at Sūrat

Dampness stains. Worn holes. Fair condition. To be repaired
and re-bound.

Seals: Zuḥdat al-'Ulamā' fī Isfahān 1189

ريذة العلماء شيوخ الإسلام حن - 1189

Autograph of Zafar 'All Bāg.

Ref: IvASH. 1024

2664

F. 11.

ترجمة كنز الدقائق

TARJAMA-E-KANZU'D-DAQĀ'IQ

A Persian paraphrase by Naṣr al-Dīn Jumāl al-Izdi, surnamed
al-Kirmānī on the Arabic work in Hanafite naḥw, Kanzu'd Daqā'iq of
Abū'l-Barkāt 'Alī ibn Abī Ḥmāt al-Mahmūd al-Nasabī, surnamed
Ḥafīẓu'ddīn, (d. 710 or 711/1310 or 1311).

Table of contents in the beginning.

Beginning

الحمد لله الذي وضع هذا شرح شريفا وسلام
كتب الظاهرة من بعض وصا شتى روى - بخ

Ending:

ويكـمهم عمر را بود

ff. 11 + 147. ll. 2, 8. 131. S. $10.4 \times 6.5^{\circ}/26.4 \times 16.4$ cms.

Written on good nasta'liq. An early lithographic copy.

Ordinary 'urwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in
red. Dampness stains. Worn holes. Fair condition. Preserved in a
portfolio.

Ref: EIO. 2575-2576. IvASH. 1070-1073, Rk. 1231-1233

The work is attributed to Satar Nawaz Dargah, who is shown as the ruler of a kingdom extending over a territory from Egypt to the east. In the preface he states that after A. H. 105, which should not be 1050, the condition of Muslims had deteriorated so much that the law and the Christian clergy suppressed them with the result that the Muslims were reduced to poverty and degradation. Satar Nawaz Dargah, he says, is the last ruler of the Muslims. His capital being the seat of authority, his power brought a large number from the surrounding countries were professed, thereby they were united to Islam and acknowledged him as their overlord. Since the learned and pious men of the land, he says, wrote this book for presentation to the Sultan.

Beginning

الحمد لله... چون بر روی زمین شرع مبین
صلی الله علیه و سلم صدق و بحسن جواب شد

Ending

جميع ملوك الارض عن احيات كرم الله
ملك على كل شيء قدير

Besides the above were the following facts:

2. A *fatwā*, (on ff. 55-62).

Hayat-i-Arwāh (i. e. *Lahiq* or *Life After Death*) is the heading of this *fatwā* by Muhammad al-Qāsim. There is no way that an inhabitant of Ahmadabad by name Anah Kanakā, daughter of Hadrat Kanakā Khān was given by her father in marriage to a person called Bihār Miyān for bringing her up. On Bihār Miyān's death, his relatives handed her over to a slave called Babta who raised her Kanakā (or Gangā) and sold her to Shariq Kanakā a new convert to Islam, for his house in New Shariq Kanakā made her to lead an immoral life for four years. During this period Gangā saved Rs. 20 from her earnings and paid back Shariq Kanakā and claimed her right to live as a free woman, and away from his company. When the case was referred to the Mufti the judgement was pronounced against her claim.

The compiler has quoted extracts from Arabic works against this judgement.

Beginning

الحمد لله انبى المعبود هب الحق منهم سيدنا

Ending

ان الانسان يذوق طعم اى امين
وانه هو الهادى الحمد عن خطى و الخطاه و اعظمين

ff. 202. ll. 15. S. 8.5 x 5.8"/21.0 x 14.6 cms.

Written in clear nasta'liq. A fatih do, 2000/1, at 2 Rabi' I 1057
10 November, 1650.

Crownshiny paper. Right margins. Dimples & stains. Water
hole. Fair condition. To be res-bound.

2662

F. 48.

شرح صلاة مسعودی

SHARH-E-ŞALÂT-E-MAS'ŪDÎ

A commentary on Part I of the *Sharḥ-e-Mas'ūdî* by a person who has introduced Qur'anic verses and traditions in the text in the text.

Beginning:

حمد لله امرای امر و امامت . . .

جمع کننده این متن - غ

Ending

امرای امر و امامت - غ

ff. 152. ll. 1000. S. 8.5 x 5.8"/21.4 x 14.6 cms.

Written in clear nasta'liq. Fatih. A late 12th cent. copy.

Right margins. Crownshiny paper. Dimples & stains. To be re-bound.

Seals: 1. Aūhā Nawāb, 1152.

اولیا نواب - 1152

2. Muḥammad Ḥusayn

محمد حسین - 1152

2663

F. 2

حرة المقب و حجة المصلا

SHARḤ-UL-HUWAḤ SH-ḤAJJ-UL-MUSALLA

A collection of canonic texts on the subject of the Hajj, compiled by 'Ala. In "Umar al-Sharḥ" (the title of the book) there are eight books, (list on f. 3).

2659

№ 46.

Another copy of the same Part II, in 45 bābs.

Beginning

الحمد لله الذي وعدنا الجنة لأطعبيه

بكرمه ومنه ومنع باب التوبة - الخ

Ending :

ونعمة و - هوار... يرون آبد - و بقا عمر

ff. 287, ff. 15. 5, 8.9 x 6.4⁹/22.6 x 16.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Remarks: Fair condition. 10 copies. 1 to be re-bound.

2660

№ 47/1

Another copy of the same in 44 bābs.

Beginning

Ending: as usual

ff. 277, ff. 15. 5, 8.5 x 6.5⁹/21.7 x 16.1 cms.

Written in clear nasta'liq. Fair condition. 24 bābs. 100 copies. 1 to be re-bound.

Remarks: Fair condition. 10 copies. 1 to be re-bound. 100 holes. Fair condition. To be re-bound.

2661

№ 47/2.

Another copy of the same in 44 bābs. (متفرقات) to miscellaneous topics (و كونه).

Beginning:

الحمد لله الذي وعدنا الجنة لأطعبيه

Ending

أشأن ربه من نعمه و - هوار... يرون آبد - و بقا عمر

The work is divided into three parts, (diftars) and the division of bāts and fās is according to the system of fiqh. It is written in Arabic on the system of fiqh.

This copy contains first two parts but part II does not come separately as in other copies. The author's name is not given in the preface.

Part I, contains 26 bāts and begins with knowledge (علم) and faith (ایمان) and ends with water (آب) and life (حیات).

Part II, contains 43 bāts and begins with (صلاة) and ends with prayers over the dead (صلاة الجنازة).

Table of contents in the beginning.

Beginning : سپس و ستایش مرادی و عرواح ،
و شکر و مہر مر کرد گاری را کہ - ایخ

Ending : معلوم شد

ff. 11+172, ll. 25. S. 10 4X6.5, 7 4X4.0⁸/25.4 x 19.8 x 10.2 cm.

Written in clear naskh, by Yūsuf b. Hāshim. A late 18th cent. copy.

Revisions: A dated 18th century stamp. Worm holes, ll. 85 to 115 by a later hand. Last leaf to 100 damaged. Poor condition. Bound.

Series : 1. Abu'l-Hasan Akrami 'Allāh Muḥammadiyūn کریم الدین محمد

2. Abu'l-Hasan Akrami 'Allāh Muḥammadiyūn 1134

ابو یوسف ارحیم الدین محمود - ۱۱۳۴

Autograph of Ja'far a'r-Riḍwī.

صاحب ملک هنر اجبت انسوی حمیر بن حلال انصاری

Ref. IvA5B. 1023; Bk. 1223

H. 202+2 H. 17. S. 11.9x8.6"/23.4x20.2 cms.

Written in or about Shams al-Din I. An early, elegant copy.

European paper. Written and neatly repaired. For condition Bound.

2655

F. 67.

منافع المسلمين

MANĀFI'U'L-MUSLIMIN

A Persian paraphrase compiled by Mahmud al-D. Barānī in Muḥammad I Jazūwānī, on the Arabic Saḥih's Wāḥya of 'Uṭayy al-Baḥ b. Mas'ūd (Mahmūd), d. 747/1346, a commentary on his father's Wāḥya-yatu'r-Riwayāt.

It was first undertaken at the instance of the treatise's spiritual guide, Kamālud-dīn 'Aḍī'l-Jamāl al-Shamūdī, Muḥammad al-Sāfi, and finally of Barhānu'd-dīn Muḥammad.

Beginning

حميد احسان محمد و پاس و ابو نع محمد و پاس

مر حضرت معبودی را که - الخ

Ending

ار الله عو می ت د - عی لله عند بحرمه -

اشرف الانبياء والمرسلين... رب العالمين

H. 322. 11, 21 S. 10.8x5.5"/27.4x14.8 cms.

Written in a 13th-century script at Barhān. A good, neat copy.

Arabic text in fol. Daughters' status. A few lines of text are missing. A few lines at the end are also missing.

Ref: Isk. 1229.

2656

F. 68

Another copy of the same text, but at a later date.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly

و بعد من جمع و هو ربه و مع ربه و مع ربه

f. iii+295, ll. 21. S. 12.3 x 7.9^o/31.4 x 19.8 cms.

Written by the author, Muhammad al-Fayyaz, on 22 Muharrar 1042 = 29 March 1632 for the Emperor's gratification.

Exquisite paper. Good illumination. Binding lacqued.

2653

F. 44.

شرح وقاية

SHARH-E-WIQĀYA

A treatise on hygiene by 'Abd al-Haq Sahwal Sarhrozi, in the famous Atami work *Wiqaya-i-Risayat* of 'Izzat 'Ish-Shar'at for 'Izzat 'Izzat, Matruh ibn Sayyid, a learned Arab physician for the Emperor, Mahmud ibn Muhammad, a Mahabbat 'Hafiz' who lived at the end of VIII-XIII. *Wiqaya* is a collection of the *Il-Haya*.

The manuscript was a gift to Muhammad Maghribi, Muhammad Ali Durr. The work was written in the reign of Emperor 'Alamgir, and completed in 1070/1665.

Beginning:

الحمد لله ... بعد هذا ميگر يد احقر عباد الله

افتى عبد الحق بمحاول مرهدي - الشيخ

Ending

مراد مراد ... مست ...

f. 299, ll. 18 to 20. S. 11.5 x 7.9^o 29.2 x 19.2 cms.

Written by the author, 'Abd al-Haq Sahwal Sarhrozi.

Rebri ... On purpose ... Worm holes ... For correction

Preserved in a portfolio

Ref: IVASB, 1040.

2654

F. 41.

Another ... the same ...

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2650

F. 15.

Another copy of the same, copied in Vol. 111 from Kitābu 'l-*Shif'a* to Kitābu 'l-*Uddin*.

Beginning *بسم الله الرحمن الرحيم* - *الحمد لله رب العالمين*

Ending *والله اعلم بالصواب* - *والله اعلم بالصواب*

f. 534, ll. 17. S. 12.8 x 7.7 / 32.4 x 19.0 cms

Written in good nasḥ. A late 13th cent. copy

European paper. Good condition.

2651

F. 14.

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 393, ll. 21. S. 12.2 x 7.6 / 31.0 x 19.2 cms

Written in primary script. Dated 1292/26 June 1875.

Jumāda I, 1292/26 June, 1875.

European paper. Good condition.

2652

F. 16

Another copy of the same. A late 13th cent. copy. *Shif'a* to Kitābu 'l-*Uddin*

Written in primary script.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين

Ending

والله اعلم بالصواب

150

Arabic Fiqhul-Akbar of Imām Abu Ḥanīfa a'n-Nu'mān b. Qāsim a'l-Kūfī, (d. 150 or 151/767 or 768).

Beginning . الحمد لله ... قال رضي الله عنه لا يكفر أحد بدنس
ولا يخرج - الخ

Ending أم هانئ و فرعون (از) ابتدا بدیخت اند ، اللهم رشد
و لحق بالصالحين ... و حمك يا أرحم الراحمين

The scribe who was of Mahlawī sect has added a tract on f. 47v-53

It is a query by Sayyid Marut, and reply by Sayyid Abnūl . The
topic dealt is (رد وین) refuting interpretation.

Beginning همدارحمد لله محمد و پس درود هر درود
مکشوف ناد - الخ

Ending . بر قول رحل و قال تمام دال است اللهم ربنا الحق حق ...
واصرنا على المبتدعين

f. 46+7. ll. 11. S. 6.4×3.9^o/16.2×9.8 cms.

Written in ordinary nash and nasta'liq. by Sayyid Ḥāshim, on 1
Rabi' II, 1254-24 June, 1838, at Hyderābād

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Printed.



2647

H. 9.

مجموعه

(MAJMO'A)

This copy contains two works :-

1. Tuhfatu'l Wa Kyā, on ff. 1v-1r.

A collection of 145 al'ā'ith rendered in to Persian by an anonymous person. These pertain to the attributions of the holy Prophet to Hadrat 'Alī on several topics.

Beginning

حماد بآسر ها سر ای دات بی هندی که هستی آمد
موجودات - الخ

Ending

در میان مکی بود و نصاری را یمنی سپرد و نصیر بی بد را

2. (Ahwāl-e-Ahmād b. Ja'fār) on ff. 21v-45r.

A biography of Ahmad b. Ahmad Hasan b. Muhammad b. Ja'fār, compiled by an anonymous person.

This copy is incomplete at the end.

Beginning

شیخ عربی سب و - ویدر و در و عرب و در - الخ

Ending thru 1v

ار شیع (سلام قطب دین) دیدم و رجب وقت
و چون وقت مراجعت شد التماس

H. 45. L. 15.5. 34x46 cm. Weight 1.34X114. 140X116 cms

Written in red ink. An early 19th cent. copy.

Red leather covers. Dimples stains. Worm holes. Fair condition overall.

2648

Aq. 94.

شرح فقه اکبر

SHARH-E-FIQH AKBAR

A Persian commentary compiled by Asad' Latif Shadr'illah
Munim - Gharib - Gharib, (3 825 1422), on ff. 1v-1r.

This copy contains the following items:

1. Risāla fi Ikhtiyārāt al-Sā'āt, on ff. 1v-24.

Another copy of this work, folio 8 verso to 24 verso, 1v-24v.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2. Risāla-e-Kallārāt, on ff. 25v-32

A tract on astronomical periods composed by the scholar Āmir al-Majlis, in Šafar, 1091/September, 1680.

Beginning

الحمد لله . أما بعد . في هذه الساعات
مجددات في مجدتي السبع

Ending

بسم الله الرحمن الرحيم .

3. Risāla fi l-farwā' Ikhtiyārāt, on ff. 33v-37

A tract on the time of (حر و احوار) by the same. It is based on the works of Ibn Bāhūya a'l-Qummi.

Beginning

الحمد لله . أما بعد . في هذه الساعات
در کتاب توحید - السبع

Ending:

وحدی و وحدی . بسم الله الرحمن الرحيم .
و آله الطاهرين

H. 39. ll. 12. S. 60x4.1"/15.2x10.4 cms

Written in a Thuluth calligraphic hand (1290-1327).

Ratifications. Worm holes. The condition is poor and it is re-bound.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

1. *Mira'tu'l-Musthalifin*, ff. 133v-140.

A treatise on the life of the Prophet Muhammad, by Mirza Asadullah Khan, written in 1214/1799, at Hyderabad.

The work is written in a simple, clear style, and is a few pages long. It contains a *khātma*, a *takmila*, and a *nasibat*.

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا
چون دیدم که - ح

Ending: الحمد لله الذي هدانا لهذا
-

3. *Mira'tu'l-Musthalifin*, ff. 133v-140.

A treatise on the life of the Prophet Muhammad, by Mirza Asadullah Khan, written in 1214/1799, at Hyderabad. It is a continuation of the work of Mirza Asadullah Khan, written in 1214/1799, at Hyderabad.

The work is written in a simple, clear style, and is a few pages long. It contains a *khātma*, a *takmila*, and a *nasibat*.

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا
صورت اقرار - الخ

Ending: الحمد لله الذي هدانا لهذا
و تفویض الوفاء بحب و رضى

ff. 140. ll. 13. S. 8.9 x 5.8", 22.8 x 14.8 cms.

A treatise on the life of the Prophet Muhammad, by Mirza Asadullah Khan, written in 1214/1799, at Hyderabad.

The work is written in a simple, clear style, and is a few pages long. It contains a *khātma*, a *takmila*, and a *nasibat*.

Written in excellent Shafi'a. A late 12th cent. copy.

blue. Good condition. To be re-bound.

2644

H.I. 45/1.

رسالة سعد و نخس

RISÂLA-E SAD WA NAHAS

Beginning:

الحمد لله رب العالمين

و نخس - غ

Ending:

در اول برج می آید "مهای" دوره

ff. 19+4. ll. 60. S. 7.9 x 4.6" / 20.2 x 11.8 cms

Written in Shafi'a. A late 12th cent. copy.

Not bound. In good condition.

Not bound

2645

H.I. 33.

مجموعه

MAJMA'AH

This copy contains the following works

1. Risâla fi Iktiyârâtî's-Sâ'at, ff. 1v-112

Another copy of the same, vide Nos. 2520 to 2544 2545/v 2546/1.

Written in primary nasta'iq, 12th cent. copy.

Dampness stains. Wormholes. Fair condition. Not bound.

2640

Man. 22. احادیث نبی فی شان علی

(AHĀDĪTH-E-NABĪ FĪ SHĀN I ALĪ)

A collection of traditions concerning the Prophet's son-in-law, the fourth Imam, written in primary nasta'iq, and explanation.

Beginning: ... حدیث اول در مجموع ششم (س) هر سبت است، قول نبی
مثل اهل بیتی - الخ

Ending: مرا و صو کردن آموختند از شیخ سید مروری و موحد

ff. 59+1, ll. 12. S. 7.9 x 5.4"/20.6 x 13.8 cms.

Written in primary nasta'iq, 12th cent. copy.

Dampness stains. Wormholes. Fair condition. Not bound.

2641

Man. 23. رسالة حدیث

(RSĀLAH-E-HADĪTH)

Another manuscript of the same title, copied in explanation by an anonymous scribe.

Beginning: بعد حمد خدا فی ارض وسم وریعت رسولی محمدا
بر مرآت صوفی صافی - الخ

Ending: مرگبست، م راد کن، محمدا حدیثی تا حدیثی تا حدیثی

ff. 51, ll. 14. S. 7.1 x 4.4"/18.2 x 11.2 cms.

The work is divided into twelve parts.

Beginning الحمد لله... آمين... ربه... يستحق الثناء وال
دوامه فصل - الخ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ . اللَّهُمَّ عَصَى - مَهْوَرَةٍ وَاحِدَةٍ .
 مِنَ الصَّارِ . . . يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

Arabic 'sūtas', on II, 51V-52.

(سورہ انور سورہی - سورہ علی علیہ السلام)

[illegible]H. 50+8. H. 7 D. $5.3 \times 4.0^{\circ} / 14.8 \times 10.4$ cms.

W. H. HEN

1. *Staphylococcus aureus* (ATCC 12228) and *S. aureus* (ATCC 12228).

bound.

چهارم: مردم حق فداوی نجد و بهشتی تباری

2. Hadrat Yār Khan. حیدر یار خان

41 11 48

2639

41. 4. 3.

مرجعة احادیث قدسی

$$M_{\alpha} = M(\lambda - A(\lambda)) \cdot [1, 1, \dots, 1]$$
[illegible]

is defective at both ends.

Beginning : abruptly.

ج. ک. ب. ۱۳۱ م. ۴۰۰

بدن نامہ و وی

پیشینه مکتب و روش های تدریس را

H. 211, H. 17, S. $7.1 \times 4.0^\circ / 19.4 \times 10.2$ cm.

معارف اليقين في شرح احاديث أربعين H. 1. 43.

MA'ARIFU L-YAQIN FI SHARH MADITHI-L'AKBARIN

A Persian commentary on the forty select traditions compiled by Muḥammad Bāqir Wā'il Tabrizi.

Beginning

 مجمع ومن حدیثی کہ رسول حواص صرف ہوا
 رسول میں ۔ الف

چون روح بر طراره و گشت ویر گفت
طراره حمل جدا حز جدا نکرد

ft. 149. ll. 16. S. $8.2 \times 5.0^*$, 20.8×12.8 cms.

Written in clear pasta sq. 30 leaf x 12th cent. 60 y

Lubrication. Dampness. Warmth. Bar condition.
 Bound.

[illegible]

سید محمد علی خان پارسا - ۱۲۹۰

2. Sayyid 'Ālam 'Alī.

صیغہ عالم علی -

Man. 7. شارة المصطفى لشعبة المرتضى

BASHĀRATU'L MUŞTAVĪL SHĪ'ARU'L MUKIADĀ

A collection of traditions in Arabic with their Persian paraphrase and glosses, pertaining to the happy news given by the holy Prophet for the friends of Hadrat 'Alī compiled by an anonymous person.

Beginning : محمدك يا من اقرب به الجنة...

مأور رهبر و بشوای مومنان کمر + خبر مراد شیر خدا را در پیر معبر - الخ

Ending هر که روز حشر بپیشی و حساب
داری بدست دامن آل ابوراب

ff. 197, ll. 31, S. 11.9x7.7"/30.0x19.6 cms

Acquired in 1964, by Muhammad Ali Khan, Agent of Ashraf-Khan,
Kashmir, 1440 AH/1919 AD

European paper. Handwritten in Perso-Arabic script. Fair condition.
To be repaired, and to be examined by a specialist.

2636

H.I. 25.

خواتیم الصالحین

KHWĀTIMU'S-SĀLIHĪN

A collection of letters, written by a woman, set with a fine, dark crystal, and a golden border. The work is a collection of letters, written by a woman, set with a fine, dark crystal, and a golden border. The work is a collection of letters, written by a woman, set with a fine, dark crystal, and a golden border.

The collection is a collection of letters, written by a woman, set with a fine, dark crystal, and a golden border. The work is a collection of letters, written by a woman, set with a fine, dark crystal, and a golden border.

(محبة المتحتمين)

Beginning الحمد لله رب العالمين...
حافظه بکوش - الخ

Ending الحمد لله رب العالمين...
نور الهدى...

ff. 54, ll. 12, S. 8.0x5.1"/20.6x13.0 cms

Acquired in 1964, by Muhammad Ali Khan, Agent of Ashraf-Khan,
at Lucknow

European paper. Handwritten in Perso-Arabic script. Fair condition.
Bound.

LISĀNU'DH-DHĀKIRĪN

A work dealing with the life of the holy Prophet and His family based on Shiite traditions collected by Mirza Muhammad Hāshim Nā'ini at the instance of His Mirza Muhammad Husayn Isfahani.

The work consists of two parts.

Part I. is subdivided into a muqaddima, four bābs, and a khātuma.—

Muqaddima, on true love (عشق حقیقی) on f. 4.

Bāb 1, on the birth of the holy Prophet and his family, on f. 10.

Bāb 2, on the childhood of the holy Prophet, on f. 15.

Bāb 3, on the early life of the holy Prophet, on f. 20.

Bāb 4, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 32.

Khātuma, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 34.

Part II. Death of Fātima, on f. 30v.

Bāb 1, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 41.

Bāb 2, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 79.

Bāb 3, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 84v.

Bāb 4, on the death of the holy Prophet and his family, on f. 100.

Epilogue (حکم الهامه) on f. 104.

Beginning. الحمد لله الذي جعل في الدنيا من نور محمد وآله...

و من بعد ذلك سبيل ربه في خلقه في خلقه...

Ending. نواعذ حق گذاری تا هیچ معاذی معبد المربیان...

ساحی میر محمد حسین اصغری رحمه الله عليه

The work is divided into a muqaddimah, five fasḥs, and a *shāh ma*

Beginning .

الحمد لله الذي أراح ظميتي . . أم بعد حين
كويدهاك راه سالكان - الخ

Ending :

دوسرا احوال ارمیر محفوظ دارد محمد و آقا طاهر

5. Risāla fi l-ḥuṣṣiyyāt wa-l-ṣā'at wa'l-ḥayāt (l. 117v-124)

Another copy of the same *vide* Nos. 2040/1, 2041/1, 2042/1, 2043/1 and 2046/1.

This copy is incomplete at the end

Beginning: as usual.

Ending Δ negative

دیگر شسته دست بری همه کار صورت ملاقات

11. 124 11. 14. 8 15 2 X 30 45 = 27 15 2 2 2 1 1 X 2 11 11.

Written in good ink. Early 19th cent. covers

Good 'unwāns' at the beginnings of 1, 2 and 4. Gold lined borders for 1 except 1st item. Rutreat. Dimpless stain. Wear lines, repaired. Fairly good condition. Bound.

2633

H.1. 26.

دستور الخائفين

DASTORU'L-KHÄ'IFIN

Another state work on the practice and observances of us & the
 first of its kind on the subject of women — *It is a Must for*
Husn by Mr. Muhammad Kader at-Ibrahimi for his children

The work is divided into three distinct sections:

Beginning

الحمد لله الذي اراد عرص صبي و مقصد - شي
ار قوتوب كلمات آدك - الخ

Ending

اولاً۔ خود تزیین و آرایش مطابقت میں فیصلہ کرنا شروع

fl. 183. ll. 11. S. $9.4 \times 6.0^\circ / 24.2 \times 15.2$ cms.

Written in ordinary na'k and nasta'liq, by Quām Imām, for Sayyid Paḍā, Aḥ Khān on 25 Rabi'ul-jaww 1297 24 October 1881, at Murshadābad.

European paper. Rustications. Dampness stains. Fair condition. Not bound.

2632

HI. 44

مجموعة رسائل باقر مجلسی

MAJMA'U'L-RASAIL-I-PAQIR MAHISI

This copy contains the following five works:

1. Maḥāṣin-i-Ḥā'ib (ff. 1v-65).

A treatise on ḥa'ibāt (hidden things), written by the author, compiled in Kamalān 1104 May, 1891 by the same writer. Language: Majisi.

The work, divided into ḥa'ibāt ḥuṣṣiyya (particulars of Heaven) and khātima.

Beginning الحمد لله الذي لا يلهو حرفة . . . و هو مستند فروع قدسي
مجد باقر مجلسی - الخ

Ending: والله قد على أعدائهم يجمعين

2. Risāla fī Ḥawāṣi' al-Ṣiḡha (ff. 6v-11v. Numbered 72v).

A treatise on ḥawāṣi' (Arabic: prayer at a certain hour) compiled by the same.

Beginning الحمد لله الذي أحل أمكان . . . من ربح ربح
رسالة وحيدة أنت كمال الخ

Ending رويك مني مني . . . والله الذي كل

3. Khutba-e-Nikāb (ff. 72v-74)

An Arabic sermon to be . . . close the subject

4. Risāla fī Sharḥ al-Ṣiḡha (ff. 74v-75v)

A treatise on doubts and objections (شك و شبه) in . . . compiled by the same.

3. Muhtaramu'd-Da'irah, 1257

محرم الدور ٥ - ١٢٥٧

4. I'tisama'l-Mulk, 1274.

اعتصام ملك - ١٢٧٤

2629

Ad/29.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. 46, ll. 17. S. $4.7 \times 9.3^{\circ}/23.7 \times 12.1$ cms.

Written in clear naskh and na'is on paper, dated 1117, i.e. November, 1724, at Hyderabad.

Impress stains. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound. Written as a bayad. Preserved in a portfolio.

2630

Man. 12

Another copy of the same. Stray notes at the end.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. m + III. ll. 11. S. $5.4 \times 4.1^{\circ}/16.4 \times 10.6$ cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Impress stains. To be repaired and re-bound.

2631

Man. 14.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

fl. 75, ll. 13. S. $7.2 \times 4.0^{\circ}/18.4 \times 11.8$ cms.

Written in clear nasta'liq, by Muhammad 'Abdu'l-ah a'l-Bukhārī,
on 18 Dhulhajja, 1190, 28 January, 1777.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound

Seals: Mustafai 'al-Damiri 1247

مستقیم ادویه - ۱۲۱۶

*All Misk Kida, 1178

گروه های علی موسی رضا - ۱۱۹۸

2628

Man 13.

رسالة في الرجعة

RISÂLATU FÎ'R-RAJ'AT

A collection of a few chapters, together with Persian paraphrase
and notes on political system, compiled by Mir 'Abbas 'Alī, extracted from
from his huge work, Bahârû'l-Anwâr.

It was written the return of the author, Mir 'Imam Murtazā, and is
connected with the history of the Afghans in the 18th century.

Beginning

حمد لله

حمد علی 'اج

Ending

به مراد می گوئی معجز معجز

صلی الله علیه وآله اجمعین و سلم نسلم اکثر کثیر

Printed at the press of the Mir 'Abbās 'Alī Bahādur, 1221

Written by the author, Mir 'Abbās 'Alī Bahādur, 1221

October, 1981

Printed by the press of the Mir 'Abbās 'Alī Bahādur, 1221

This work has been printed.

Seals: 1. Mir 'Abbās 'Alī Bahādur, 1221

میر عباس علیجهان بهادر - ۱۲۲۱

2. I'tisâmu'l-Mulk, 1245

عتمام الملك - ۱۲۴۵

Table of contents in the beginning by a later hand.

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا توحيده يصونه محمد بن فضل - الخ

Ending: باينجا منتهى شد

ff. 1+132, ll. 15. S. 7.0x4.1 / 4.5x2.2*/17.9x10.5, 12.9x5.9 cms.

Written in good naskh by the author, in kaji. 1034 June, 1683.

Good 'unwan. Gold and coloured ruled borders. Lubrications on margins. Dampness stains. Wormholes. Further attention to be repaired and re-bound.

An autograph copy.

Note dated 20 Jumâda II, 4, 1698 = Ab 1519 = 1117, December, 1699 on flyleaf.

2626

H.I. 5.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 123+1, ll. 14. S. 6.2x4.3*/17.2x11.0 cms.

Written in good naskh by a scribe of the early 12th cent. copy.

End of the text. Written in good naskh. End.

2627

H.I. 6

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 135 ll. 10. S. 7.5x5.0*/19.3x12.8 cms.

Written in good nasta'liq, by Muhammad 'Azīmu'd-dīn al-Mūsawī al-Burhānpūrī, on 14 Rajab, 1181 = December, 1767.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2621

H.I. 32.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

(a) Notes on Istinjās, fl. 117v-119v).

(b) Risāla-i-Qirāt, fl. 120-121.

(c) A tract on tajwīd by Qāḍī Ḥuṣn.

(d) A tract on the knowledge of life and death (ذیمن وج حیات و ممات) fl. 123-125v).

fl. 117+8. ll. 13. S. 7.8 x 5.1⁸/20.1 x 13.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 18th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Preserved in a portfolio.

2622

H.I. 29

Another copy, preserved in a portfolio.

Beginning: as usual.

Ending: و سرور و شادی و جوی و نشاطی کند - ای ها ای ها ای ها - آمین

fl. 15. ll. 14. S. 6.3 x 3.7⁸/10.1 x 9.8 cms

Written in clear naskh in 18th cent. A late 18th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Margins damaged. A few worm holes. Fair condition. Not bound.

Beginning

الحمد لله الذي دل في كده ... واد جرب واد
هميون اشرف - الخ

Ending

من لائق سم كده دن وادب بدر

... ..

Beginning

... ..

Ending

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

2617

H. I. 37

... ..

work.

beginning

... ..

Ending

... ..

n 141, ll. 17. S. 9.3 x 6.7⁸ 23.7 x 17.0 cms.

... ..

... ..

2618

H. I. 38

... ..

... ..

2615

H. I. 35.

الصافي شرح كافي

A'S-ŞĀFI, SHARH-E-KĀFI

Aḥ-Kāfi, an Arabic collection of Shi'a traditions was compiled by Abū J. al-Ḥ. 'Muhammad b. Ya'qūb al-Ḥāfi, al-Kāfi al-Kāfi (d. 28 or 30 or 34) M. al-Kh. al-Kāfi al-Kāfi (d. 18) 1781 write an Arabic commentary on the al-Kāfi by al-Ḥāfi when Shah 'Abbas II (Safawid) was a prisoner of war, 1655, was permitted to undertake Persian correspondence. This he did and completed the work in twenty years time.

The work is divided into three books (vide E. I. O. India Office Catalogue, p. 141).

The copy contains Book IV (كتاب الايمان والكفر) subdivided into 200 bābs, but ends abruptly in bāb 205.

This portion was completed in Jumāda II 1051 or 1641, 1655.

Beginning

الحمد لله الذي . . . وبعد چون بتوفيق الهی و توحده

پادشاهی - انج

Ending: abrupt

حسن اسلام علی است از اسلام بی مدق

و بی شك در شك شركت

16. 470. H. 23. S. 5. 4X6. 3; 7. 0X. *124. 1X10. 2. 18. 0X1. 0. 0ms

Written in Thuluth and Na'kha and Arabic. A very fine copy with rubrications. One of the best. Fairly good condition. Bound

Ref: E. I. O. 2067, Bk. 1221.

2616

H. I. 36.

Another copy of the same collection.

1. Book V (كتاب المعاد) (B. IV 175) divided into 60 bābs.

Beginning

گو هر مردی عواصس فکرت را در روی حوت - اغ

Ending :

هر آنیه بحق و صول رسیده باشد یعنی نه . . .

بعل تبه القراکرام

ff. 24p. d. 15. S. 1. X 53. 71 X 11. 245 X 141. 183 X 42 cms.

Written in good naskh and nasta'iq, by Muhammad b. Jamāl Asir, in Jumādā II 1104/February 1797.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Iv A5B 1116; IvC 374. Bk. 1304.

2613

Fol. 15.

— Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 24p. d. 15. S. 1. X 53. 71 X 11. 245 X 141. 183 X 42 cms.

Written in good nasta'iq. A very 1,1th cent. copy.

Good furwān. Good and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Good condition. To be repaired and re-bound. Preserved in a portfolio.

2614

Fol. 16.

Another copy of the same. A very 1,1th cent. copy.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 24p. d. 15. S. 1. X 53. 71 X 11. 245 X 141. 183 X 42 cms.

Written in good nasta'iq. A very 1,1th cent. copy.

Coloured furwān borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

Written in ordinary nasta'liq by Muhammad Kudā for Nawwāb Muḥammad ḥan in 1248 = 1832-33, at Aḥrangābād.

Headings in red. Damp-press stains. A few worm-holes. Fairly good condition. Bound.

2609

Is. 391.

Another copy of the same.

The Majazs are in youth as in the other copy.

Beginning

الحمد لله . أم بعد من جند كلمه ر خروج
کردن مختار بن عبد الله اثنى - الخ

Ending :

بعد از آنکه در شهر شهید شد . لی بعد از آنکه
در هجرت . بعد از آنکه در شهر شهید شد .

ff. 258. ll. 12. S. $8\frac{3}{4} \times 5.1^{\frac{1}{2}}$ 21.8 x 12.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq by Sayyid Mustafā Ḥusaini on 1248 = 1832-33, at Madras.

Light damp-press. A few worm-holes. Good condition. Bound.

2610

Is. 392

At the end of the text is a list of names.

Beginning .

الحمد لله . . . حمد و مدح محمد بن محمد
البحر رحمة الله عليه و روايت كند - الخ

Ending

پس خروج از دست من شد و ن . . .
عظیم و عجیب است از قصه من خواندین

ff. 212. ll. 15. S. $9.0 \times 5.9^{\frac{1}{2}}$ 27.6 x 15.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq by Mirza Asad Khan in 1261 = 1845-46, 6 October, 1842.

Light damp-press. A few worm-holes. Good condition. Bound.

2607

Ta. 389

Another copy of the same.

This copy however has seventeen majlis, with majlis 1 and 2, missing. Unlike other copies, therefore this copy has fifteen majlis in all. Majlis 1-17 are on ff. 18v, 30v, 52v, 67v, 81v, 117v, 137, 115, 124, 148v, 170v, 175v, 189, 203v, and 216.

Beginning:

الحمد لله... أما بعد، هذا وقد أحضر
محمد بن أحمد البخاري - الشيخ

Ending

وأن مصنف عظيم وقصه عجيب يستحق القصاص

ff. 217, ll. 15. S. 9.5 x 5.5, 0.7 x 1.1⁶ 23.5 x 13.0, 1.7 x 7.3 cms

Written in excellent nasta'liq, in 1125-1713, at Hyderabad. An early 11th cent. copy. (First two and last one folios are by a later hand, hence the date 1125. This copy is of much earlier date).

Gold ruled borders. Headings in white on gold set in alternate f cartouches. Worm holes, partly repaired. Not bound.

Seal: Sayyid Muhammad 'Ali Khan Bahadur سید محمد علی خان س - ر -

2608

Ta. 390.

Another copy of the same.

This copy has twenty-seven. Majlis of which first nine are noted here, and for other 18 spaces are left blank.

Beginning

الحمد لله... بعد من روى عن محمد بن أحمد البخاري - الشيخ

Ending

درماد مصنف در ادبیه و فقه و تاریخ و سبب شصت
و بیستم از حضرت پیر من الله علیه را دیداد

ff. 144, ll. 15. S. 8.5 x 4.8⁶ 21.4 x 12.2 cms

2606

مختار نامه

Ta. 388

MUKHTĀR-NĀMA

The Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

The Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

The Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

The Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

Beginning

الحمد لله... من یحی حد و حد که چرخ
عده حخته نه چرخ او را رز بر نه ده که -

Ending

مرد بخاکت رزق مرد و صفت حد و دی
نکرد و آن مصداق عظم است

the 20443. ll. 10. 5. 9.5x9.3 (23.0x11.1 cms.

The Mukhtār-Nāma is a collection of the most important and interesting passages from the Masnavi of Rumi, as compiled by the author of the Masnavi, Rumi, in 680.

Seals: 1. Rā'f'u'd-Daulah.

ربیع الدوله

Muhammad Ali

محمد کمال الدراجا

Ref: IVC 378.

Beginning

حضرت پوشیده و محیی نموده که در آن

شریعت - الخ

The translation begins on f. 2 thus:

انتم میکنم دم حرای درای پر شش - ج

Ending:

فی منه امام من ظهور سیه نلا و درین و تسعین فی در

السلطه براهه - صابها قد عن الاقات

fl. 20

written in ... by ...
Zurro, 'Arabic ... August, 1672.

... A few ...
to be repeated and recorded.

2604

Si. 12. مکارم الکرانم (ترجمة مکارم الأخلاق)

MAKĀRIMU'L KAKĀIM (TARJUMA' MAKĀRIMI 'AKHILAH)

Another translation of the ... by 'A. D. H. ...
...
(مکارم الکرانم).

...
...

Beginning

حمدی و شکر و محبت احدی ...

شرواعه عشر را - الخ

The translation begins thus

... حمدی و شکر و محبت احدی ...

Ending

... حمدی و شکر و محبت احدی ...

توکل و إله انیب

2602

H. L. 4.

ترجمہ چہل حدیث

TARJIMA-E-CHINAL HADITH

Another Person paraphrase of the son tradition by
surnamed Hakim Shifon 1 Rashedan 1047 4 April, 1050

This copy is for use by _____ (name of client)

Beginning - حسن حمدی (Ahmed)

Ending 30000 نحن نحرص على جودة - لاء ، ج ، ق ، م

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

[illegible]

12th of

Fair condition. To be repaired and re-bound.

Autograph and seal of Jāmsipār Klān, 1174.

حال سگار حال میں وہ جلد سے ۱۱۷۲

2603

S.I. 13. بحاسن القربان و ترجمه مكارم الاحلاق

MAHON, J. L. 1983. A comparison of Mahon's χ^2 test with the G-test. *Journal of the Royal Statistical Society, Series A* 146:393-398.

I have just received your letter of the 11th inst.
 and am glad to hear that you are well and
 doing well. I am well and hope this
 letter finds you the same. I have not
 much news to write at present. I am
 well and hope this letter finds you the same.
 I have not much news to write at present.

Muhammad al-ʿAṣḥarī-Karīmī (c. 1500–1570) who translated the work to Shām. Tahnāsp Ṣafawī, (c. 1570–1624) re-

This copy is defective by a fold on the beginning

2599

H. I. 15

Beginning :

Ending : as usual.

ff. xiv + 300, ll. 17. S. $9.3 \times 6.3^{\frac{1}{2}}$ 23.5×16.1 cms.

bound. Preserved in a portfolio

2600

H. I. 17.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. ix + 200, ll. 20. S. $12.2 \times 7.3^{\frac{1}{2}}$ 31.2×18.5 cms.

2601

H. I. 16

Beginning : as usual

Ending : as usual.

ff. xxi + 470, ll. 11. S. $10.3 \times 6.7^{\frac{1}{2}}$ 26.5×17.1 cms.

at-Mûsawî, on 25 Jumâda I, 1271/15 March, 1855.

Written in good nashq. The original was
found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

May and June 1958. Kept in a glass box. A good
preservation condition. No repair.

2597

H. 118.

Written in good nashq. The original was
found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

H. 442. L. 17. S. $9.8 \times 0.0^6 / 25.3 \times 15.2$ cms.

Written in good nashq. An early 12th cent. copy.

Found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

Seals: 1. Haidar Yâr Qhân.

حیدر یار خان

2. Haidar Yâr Khan Bahadur.

حیدر یار خان بہادر

3. Muniru'l-Mulk, 1200.

منیر الملک - ۱۲۰۰

2598

H. 114.

Written in good nashq. The original was
found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

H. 442. L. 17. S. $9.8 \times 0.0^6 / 25.3 \times 15.2$ cms.

Written in good nashq. The original was
found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

at the end of Şafar, 1114, early July, 1702.

Written in good nashq. The original was
found on 30 Rajab 1172/21 May 1758.

2594

H. L. 11.

Beginning.

Ending.

Ending: as usual

holes. Good condition. Bound.

2595

H. L. 11.

Table of contents is missing

Ending.

Ending: as usual

H. 240 + 2. H. 19. S. 10.7 x 7.0" / 27.4 x 17.8 cms.

Bound.

(Collected in 1914 at 1087 / April, 1976).

2596

H. L. 111.

Another copy of the same, without table of contents.

Beginning: as usual.

Ending: as usual

H. 133. H. 29. S. 11.5 x 7.5" 29. x 19.1 x 2 cms.

Written in good naskh. A late 19th cent. copy.

Includes a small paper insert. Dimples stars. Vorn
in the center of the page.

2592

H.I. 10.

ترجمہ قطب شاہی

TARJAMA-E QUTB SHÂHÎ

A Persian manuscript of the 'Asrâr al-Hikmah, a collection of
ethics and secret sciences by the author, a famous Sufi, compiled on
the basis of a book by Mubarriz. The author is 'Abd al-Hakim al-
'Alî, a famous Sufi. Manuscript of 'Asrâr al-Hikmah
Ibn al-Atun a'l-'Âmil, (d. 1050-1060)

The manuscript is written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

The manuscript is written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

Beginning

ی . توحیدت معرفت دانستن

وی ترجمہ وصف تو تریل صبح

... بہتر حدیثی کہ مجلس آرایان انجمن بقی - ایخ

Ending

علی ... لا ... ر ...

The manuscript is written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

The manuscript is written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

The manuscript is written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

Written in Nasta'liq script. It is a
Gazette, (1020-1030) in the center.

2590

Ta. 374.

دوازده مجلس

DŌWĀZDAH MAJLIS

Another copy of this text is in the library of the National Consultative Assembly, at the end.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم

Ending

الحمد لله رب العالمين

f. 64. ll. 12. S. 8.5 x 5.2"/21.0 x 12.6 cms

Written in or near the city of ...

History of ... Written by ...

Seals 1. Mir Yūsuf 'Alī, 1212

میر یوسف علی - ۱۲۱۲

2. Mustafā 'Alī, 1218

مستفای علی - ۱۲۱۸

3. Muṭa'annab-Dā'irah ...

مستفای علی - ۱۲۱۹

4. Muḥammad 'Alī, 1234.

محمد علی - ۱۲۳۴

5. Mustafā 'Alī, 1240.

مستفای علی - ۱۲۴۰

2591

Man. 9.

تحفة شاهي

TUHFA-E-SHĀHĪ

A collection of traditions dealing with the attributes of Haḍrat 'Alī, compiled by Ināyatullah, and the ... (930-984/1524-1576).

Beginning

الحمد لله رب العالمين

Ending

الحمد لله رب العالمين

2588

Ta. 372.

یازده مجلس

۸۸۷-۱۸۸۱۱۱

Written in ink on paper, 11 lines per page, 12 lines per page.

Beginning: الحمد لله رب العالمین و صلی الله علیه و آله و سلم

Ending: در ایامت و هم شد و نه در و نه در و نه در

و لعل جان بحق - در توبه و نه در توبه و نه در توبه

It is a copy of the original manuscript, written in 11 lines per page.

Written in ink on paper, 11 lines per page, 12 lines per page.

Primary subject: The history of the world, from the beginning to the end.

2589

Ta. 373.

Written in ink on paper, 11 lines per page, 12 lines per page.

It is a copy of the original manuscript, written in 11 lines per page, 12 lines per page.

Beginning: الحمد لله رب العالمین و صلی الله علیه و آله و سلم
و خود نهاد - الخ

Ending: حضرت حق - در ایامت و نه در ایامت و نه در ایامت

It. 64, ll. 15, S. 8.4 x 3.9" (21.2 x 9.8 cms)

Written in primary handwriting, 11 lines per page, 12 lines per page.

Headings in red. Worn holes. Fair condition. Bound.

2583

1a. 376.

Another part of the manuscript of the bayat

Beginning محسن دل درم کر شهادت... + ... به که درین راه
هفت آنحضرت حجة + ... - فرموده - مع

Ending رحمت ظاهر بدین + همه هن حرم عذکن رحمت او حسنه او

ff. 48, ll. 15, S. 49x8.3"/124x21.6 cms.

Written in good handwriting by a scribe called 'Abd al-Salam

1189 28 September, 1765

He is the same who wrote the *Naṭṭ* in the National

2584

1a. 369.

Another part of the manuscript of the *Naṭṭ* by Muhtasham
Kasbi, at the beginning

Beginning : بار این چه شورش که در خلق عالم است... راویان
احرار خائوس و قاتلان آثار غم اندوه... الخ

Ending همه به وار حیدرین آری به عرب پرور کور... الله و در ایام رحمت

ff. 80, ll. 12, S. 10.4x7.2"/26.4x18.2 - 28.4x10.7 cms

Written in good handwriting by Fakhm Kashkash in 1179

Unwashed and coloured ruled borders. Headings in red. Water
marks. Fair condition. To be repaired and re-bound

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2. Sakina Begum Durr-e-Mubarak of Jodhar

سکینه بیگم بنت محمد حعفر

A History of Haidar Yār Khān (1751-1801) in S.

2582

Ms. 386.

ده مجلس

DAH MAJLIS

A collection of stories pertaining to the life of the Holy Prophet, the Shi'ite Imāms, and other figures. Although the work is based on legends and traditions of Haidar Yār Khān, it has been reviewed on Shi'ite traditions and legends.

The nature of the work is not known.

The work is divided into ten parts.

Beginning بحمد و ثناء حضرت محمد و آل محمد
صدیقه کرده - الخ

Ending. که است قصه آفریننده عالم و خلق و حیوان

f. 75. ll. 16. S. 9.4 x 5.0" 23.8 x 12.6 cms.

Written in 1801 by Mirza Asad Muhammad Ahsan, Shāh 'Ālam II on 17 Rabi' I 1218 = 22 July 1796 in his 11th Regnal Year, at Dāhābād

Dampness stains. Worm holes, repaired. A few holes at the end damaged. Poor condition. Bound.

Ref: IvASB. 1106; IvC. 373.

Written in clear nasta'liq by Nūr al-Mulūk al-ʿAlī Shāh Muḥammad al-Ḥafīẓ, 1000/January, 1592, Kirmān.

Urvan. Matn in red. 16 lines. 1000. Written on parchment. Bound.

Seal: Muḥammad Ḥafīẓ al-Ḥafīẓ. ۱۰۰۰ هـ - ۱۰۰۱ هـ

2580

M and K, 32.

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: ۱۰۰۱ هـ

ff. 339. ll. 24. S. 12.7 x 7.4^o 32.1 x 15.6 cms.

Urvan. Matn in red. 16 lines. 1000. Written on parchment.

Urvan. Matn in red. 16 lines. 1000. Written on parchment. Bound.

Seal: Mir Yālgār 'Alī, 1221.

میر یادگار علی - ۱۲۲۱

2581

M and K, 6.

شرح نهج البلاغه

SHARH-Ū NAḤJ-Ū AL-AĞḤĀF

Arabic. Written in clear nasta'liq by Abū Ḥafṣa Ḥusayn al-ʿAlī Abī a'l-ʿAlī a'l-Ardibīlī.

Urvan. Matn in red. 16 lines. 1000. Written on parchment.

Beginning: ۱۰۰۱ هـ - ۱۰۰۲ هـ

Ending: ۱۰۰۱ هـ - ۱۰۰۲ هـ

ff. 397. ll. 19. S. 10.0 x 5.7^o 25.3 x 14.6 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

fl. 214 ll. 17 S. 12.4 x 7.3"/31.2 x 18.4 cms

Written in ordinary nast'liq. A really 14th cent. copy.

European paper. A few worm holes. Good condition. Bound.

2578

M. and K. 30. تنبيه الغافلين و تذكرة العارفين

TANBIHU 'L GHAFILIN WA TADHKIRATU 'L ARIIFIN

A Persian text, direct transcription of Persian. Not a full copy, contains a few pages. A 14th cent. copy. (See also IVC 978, 1571).

Beginning الحمد لله الذي هدانا لهذا وما كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله - مع

Ending سلام و نعت فرس. رد. - سلامی بروحه عالم و کمال
الحمد لله و قدسما علی تحریر هذه نسخة شريفة اعليها تعزية

fl. 324. ll. 29 S. 12.2 x 7.6"/30.7 x 19.0 cms.

Written in clear nast'liq. A really 11th cent. copy.

Kubrications. Dampness stain. Worm holes. To be repaired and re-bound.

Series. Shabb, Muhammad 'Alī was 1057. شیخ محمد علی او مس - 1057

Ref: IVC 372.

2579

M. and K. 31.

Another copy of the same.

Beginning as usual.

Ending و حمد های ایشان درین جهن در عمل در دست و مشغول
: معادات میان - مع

fl. 300. ll. 19 S. 11.5 x 6.9"/29.0 x 17.4 cms

H 1 48 (M. No. 119) روضة الارار

RAṬṬ AL-ʿAṢḤĀR

A Persian commentary on the same Nihāyat al-ḥajāt, composed in 947/1540 by Aḥmad Ḥaṣṣ al-Zawwār, a village under Isfahan. The commentator is better known as Ḥaṣṣ al-Zawwār. He flourished under Shāh ʿĪsmāʿīl Ṣāwī (904-954/1500-1550).

Beginning بحمد علی و شکر عز و جل ... بعد حمدی
بیت که بعد از سلام - انخ

Ending روی اظف و شرفت سلاح برده ...
اعمرانا ... علیهم اجمعین

H 301 (M. No. 120) روضة الارار

Written in goodish hand by Aḥmad Ḥaṣṣ al-Zawwār, on Shawwāl, 1027/2, September 1618, at Hyderabad, for the library of Sultan Muḥammad Qutb Shāh of Goiconda.

Text in unwaḥid script on 160 lines, with 10 lines in the margins of ff. iv & v. Gold floral border. Rubrication in purple & red. Wormholes. Firzai fast-fade lacquer. 11 cm. x 16 cm. Bound.

Seals of Hyder Yār Khān, حیدر یار خان

Autograph of Sultan Muḥammad Qutb Shāh of Goiconda (ع) و من لا ی

A rare work and a Royal copy with a full page autograph of the Founder of Mecca Masjid

M. and K. 54

A rare work, one of the few copies of the

Beginning : as usual

Ending بحمد علی و شکر عز و جل ... بعد حمدی

ff. 21, ll. 16. (diagonal) S. 6.1 x 7.2°/15.4 x 8.1 cms.

Written in clear nashīd by Muḥammad Ṭāḥī al-Jabrānī on 13 Rabi' I, 1088/6 May, 1677, at Bujāpur.

Written in good nashīd. Not bound.

2573

M. & K. 28

ترجمة نهج البلاغة

TAKJAMA-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Not a copy of the original. A copy of the original is in the hands of the author. The work was written at Bujāpur by Muḥammad Muḥsin al-Jabrānī on 13 Rabi' I, 1088/6 May, 1677.

A Persian translation of the original. Not bound.

This copy contains Vol. 1.

Beginning

حمد لله رب العالمين
ألا لله وحده لا شريك له

Ending:

او دراز کردن دست بشر خود بدرستی
و بپراچیدن حوامی

ff. 180, ll. 16 S. 7.4 x 4.7°/18.6 x 11.8 cms.

Written in good nashīd. A late 12th cent. copy.

Rubricated. The text is in good condition. To be repaired and re-bound.

2574

M. and K. 29.

ترجمة نهج البلاغة

TAKJAMA-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Another translation of the same by an anonymous person.

اه عیام الیك

2571

A. No. 660.

Another copy of the same.

Beginning 15 Nov 14

Ending: as usual.

ff. 16r, 11, 10, S 7.6 x 5.6"/19.5 x 14.5 cms.

Written in ear oast ed on 8 h ba, 1841, November, 1652.

[illegible]

Not bound

Seals: 1. Dargah Ouh.

4. 6. 2

2. Munirul-Mulk, 1200.

2572

Ag 12/2 and 3

حدت ساط

HADIYH-E-BINAT

An Arabic saying of Hudud 'Abd al-Jabbar' by Sulman Farsi extracted from Majma'u'l-Bayy an-juz' to have been composed by the Bābīya as Ḥaqq-i'l-Ḥudūd is a story of the pertaining to the time when people were ignorant of the law of the commander of the Faithful.

This copy is dated 1844, and is together with its Person
paraphrase. "

Beginning : حمد لله الذي هدانا لهذا - الحمد لله الذي هدانا لهذا
الذي كنا لنهتدي لہ - الحمد لله الذي هدانا لهذا

Ending در شبانان حضرت خرو احمد ، مصداق است
 بافتد و مصداق ، مصداق است

2568

A. No. 657

YOUNG, R. L., and J. E. SUTHERLAND. 1971. A note on the life cycle of

Beginning : as usual.

Ending :

۱. طه، و در هر ایامی تصدقات

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

1. *Phragmites australis* (Cav.) Trin. ex Steud.

tion, Basil.

Seals: 1. Hattar Yac Kân

محمد زار و دل -

شعبه الهیات - مدرسه عالی - ۱۳۴۱ - ۱۳۴۲

2569

A 200 600

Another copy of the same certificate at the

1

Ending: abruptly.

هو الله خير الله

$$H = 2' 5, 10, 17, 25, 31.5 \times 7.4; 7.5 \times 4.3'' - 10.4 \times 10.4, 10.4 \times 11.0 \text{ cm}$$

2570

A 2nd 655.

Another copy of the same contains the following details only.

Beginning: as usual.

Figure 1

$$x_1, \dots, x_n \in \mathbb{R}^n, \quad x_1 + \dots + x_n = 0, \quad x_1^2 + \dots + x_n^2 = 1.$$

W. H.

[Faint, illegible handwriting]

Ref. R. 19-20, ff. 18v-19r

2566

A. Nm. 655.

Another copy of the same text. The manuscript begins from f. 118v.

Prose in Arabic.

Beginning: *الحمد لله*

Ending:

من اهل ماء وردة و في البدء

الحمد لله الذي جعل في الدنيا ماء وردة و في الآخرة

Written in *otus-kh* by A. H. K. M. in the month of Kanun *kanun* November.

Good condition. The manuscript is written in *otus-kh* on *otus-kh* paper. The text is written in *otus-kh* and the margins are written in *otus-kh*. The manuscript is written in *otus-kh* and the margins are written in *otus-kh*.

Seals of Munirul Munk, 1200.

مسور الميك - ١٢٠٠

2567

A. Nm. 656.

Another copy of the same text. The manuscript is defective by a folio at the end.

Beginning: *الحمد لله*

Ending: abruptly

سورت اخوم و سورت اخوم و سورت اخوم

317 ff. 11. S. 85-86. 21.8 x 14.4 cm. 1, 8 x 8 cm.

Written in *otus-kh* on *otus-kh* paper. The manuscript is written in *otus-kh* and the margins are written in *otus-kh*.

Good condition, not damaged forward on *iv* and *sv*. Good and coloured ruled borders. Arabic text in *otus-kh*. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

۴۴ - لیل و نهار جو کتبہ

نقش نگین دست جیدر صغیر مراد

2565

مواضع شرح دیوان حضرت علی

DAVID L. SALTER AND HAROLD A. ...

A. I. ...
 A. I. ...
 (2. 800/1455)

1. The first part of the paper is devoted to the study of the asymptotic behavior of the solutions of the system (1) as $t \rightarrow \infty$. It is shown that the solutions of the system (1) are bounded and tend to zero as $t \rightarrow \infty$ if the matrix A is stable. The second part of the paper is devoted to the study of the asymptotic behavior of the solutions of the system (1) as $t \rightarrow \infty$ if the matrix A is not stable. It is shown that the solutions of the system (1) are unbounded and tend to infinity as $t \rightarrow \infty$ if the matrix A is not stable.

معودی راکہ - اخیر

Finding _____

The commentary begins from f. 111v

میں سے پہلے تھا۔ - - - - -

Finding اصرار کرنا کہ یہ سب ایک شخص سے ہیں جو اس وقت کہ مجھ

1. 4. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 8

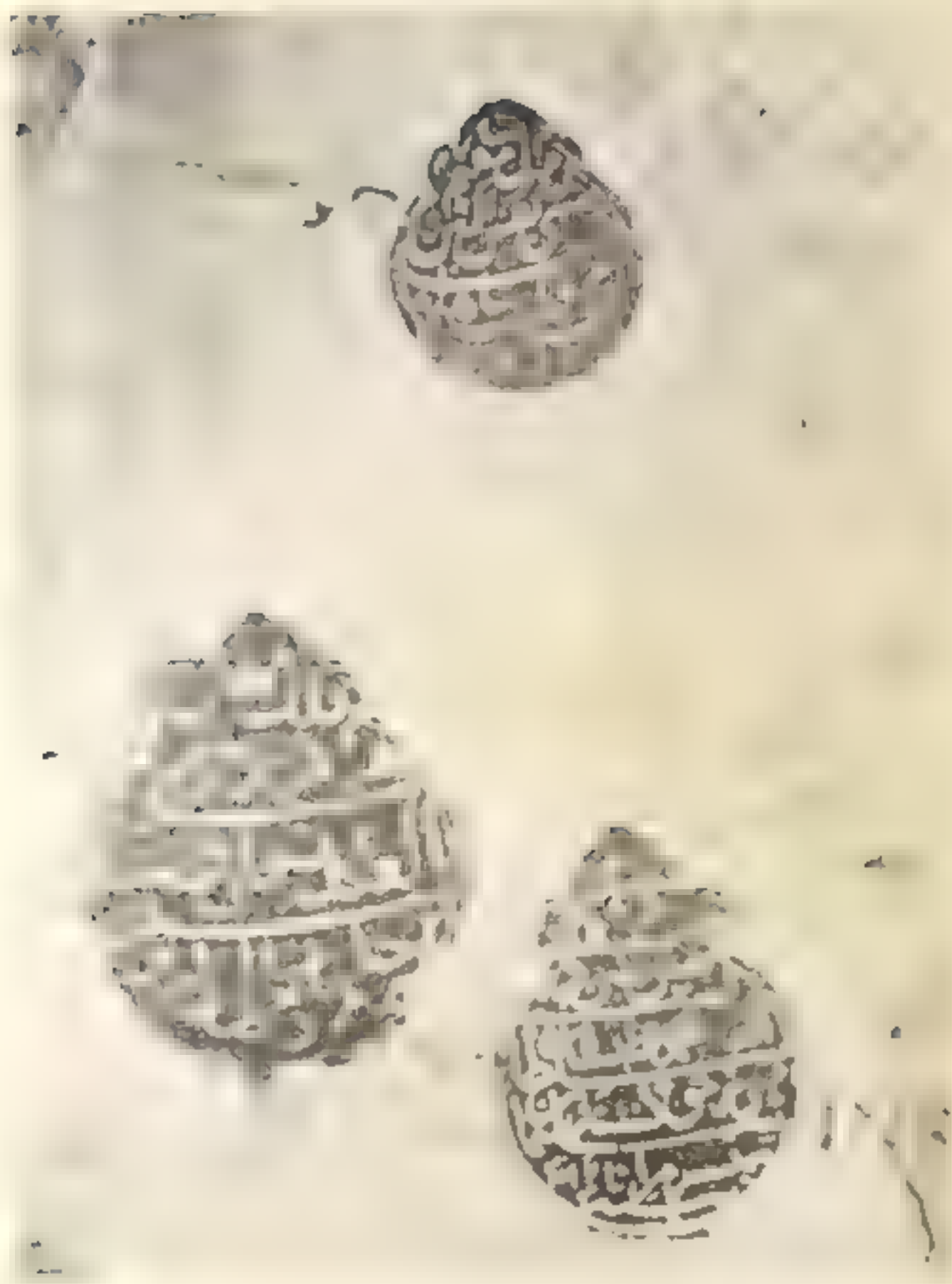
Written in good hand, in 8vo 1485.

Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals : Shauq Muhammad 'A' (war 1) - v -

2. Nadar Yâr Khan.

محمد یار خان



A Royal Seal, from the collection of the
3 Goleonda Kings—1, Ibrahim Qutb Shah,
2, Muhammad Qutb Shah, and
3, Muhammad Qutb Shah
respectively

Beginning . الحمد لله ... أما بعد فإن أصدق عبارة وأصغر حلقه - الحمد لله

Ending ... في قديم الزمان ...

f. 81. ll. 11. S. 7.1 x 4.8" 17.8 x 12.0 cms.

Written in ordinary Turkish and modern. An early 18th cent. copy.

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Seal - Seydi Mahamed Ali - 1221

سید محمد علی خان بکادر - ۱۲۲۱

Beginning

الحمد لله ... سنة ...

وبعد دوست يار جان - شيخ

Ending:

ذابر ان حضرت شاه فرستادند - الشيخ

fl. 107+3 ll. S. 8.8 x 9.0⁸/22.2 x 12.6 cms.

Chinnāpattan, V. ...

Preserved in a portfolio.

2560

Ha. 29

ستان المحدثين

RUSI'ANU'L-MUHADDITHIN

with the ...

Beginning

الحمد لله ...

ستان المحدثين

Ending

مثنى امين مثل نظر لا يرى ...

fl. ...

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy

A few worm holes. Good condition. Bound.

Printed in De hi in 1898

2561

Ha. 28

Another copy of the same, but defective at the end

2558

Aq 57/2.

ثمرۃ گلزارِ ایمان

THAMRA-E-GULZÄR-E-IYMÂN

A collection of forty traditions with their Persian para, utica and short notes thereon compiled, in 1773, by Hajj Tahir are in praise of Hadrat 'Ali l-Hayma. He is said to have been according to Sunni beliefs

The rate of compaction and α are given in the en-

Beginning

میشی که همه محبتان شده بر من
اللسان سازد، حمد خداوند یست که - ازین

Finding

رسیده است. می. کوشش. که. به. کار. در. این.

fl. 21 ll. 14. S. $8.3 \times 4.9^{1/2}$ 10 x 12.2 cm.

Written in good naskh at Istanbul in R. h. 1173
January, 1763

Rubrications Lampyris etc (no) addition to be re-
 bound

A rare work

سید حسین علی محمد - ۱۳۰۵ - ۱۳۰۶

2. Wazir Ali Lughat 1241

3 The same 1218 ۲۰۵ وزیر علی شید و دای حسن

2559

No. 18

رسالة حديث

RISĀLA-E-HADĪTH

A collection of Traditions with their Persian paraphrase compiled by
Dost Muḥammad Qādirī b. Dost Yār Khān

Beginning

بسم الله و حمد لله و صلاة و سلام على رسول الله
و آله و ائمه و على ذرئهم الطيبين الطاهرين صلوات الله عليهم
جمعاً

Ending

و شهادت بر حقانیت محمد و آله و ائمه
و بی داد آنحضرت غایتش را صریح خود و الله اعلم

f 402, l 25, S 146x96 113x77 58x243 25x17 cms

Written in ordinary nasta'liq in 11 lines with 25 Sepals per

1782

Coloured in 16 colours. Damages: 100% Water stains. Fair

dition. To be repaired, and re-bound

Seal of Muhammad Ali's Order

محمد علی افندریه صاحب

Ref: E.I.O 2650

2553

Ha 15

Another copy at the same outstanding library is two Khatas
(نقش و اصلا) on 14 and 145 lines.

Beginning:

در روایت غیر از کتاب مقدم است بر همه

Ending:

در احادیث مروری و غیره و در رحمت حق

f 40, l 25, S 146x96 113x77 58x243 25x17 cms

Written in ordinary nasta'liq. A late 18th century copy.

Rubrication: Red ruled borders. Damages: 100% Water stains

Fair condition. Preserved in a portfolio

2554

Ha. 11.

چهل حدیث

CHIHJ HADITH

A collection of forty Traditions with their Persian paraphrase by an
anonymous person.

Beginning

مرکز دار و پراهن، حبه و کلاه در

Fading: as usual.

11, 11, 11, 15, 5, 7.5 × 4.5"/18.8 × 11.4 cm*

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy

Fair condition. Preserved in a portfolio.

2551

Aq. 147/3.

Another copy of the same

Beginning 1891-1900

Fading: as usual

fl. o. ll. 17 to 22 S. $7.6 \times 4.4^{\circ}$, 19.2×11.0 cm.

— When the α and β subunits are released, the γ subunit is left.

Worm eaten. Poor condition. Not bound.

2552

تيسير القارى في شرح صحيح البخارى 11. 14

MASTRO, DONATELLO STEFANO SANTI, L'UNIVERSITÀ

[illegible]

This work is divided into four volumes of which this is the first. It is dedicated to a Major General of the Army.

This volume was completed in Kinnelon, N. J. in 1853/10 November, 1844.

2548

Ha. 20.

Another copy of the same, dated 1180, by a different scribe.

Beginning: as usual

Ending: as usual

f. m + 433, ll. 21. S. 11.5 x 8.0" / 29.1 x 20.1 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 18th cent. copy.

Bound in a simple, plain, light brown paper cover.

Best condition. Bound.

2549

Ha. 1.

رساله در اداب لباس

RISĀLA DAR ĀDĀB-E-LIBAS

A manuscript of the Risāla dar Ādāb-e-Libas, a treatise on the proper conduct and behavior of a person, written by Mirza Asadullah Khan, the author of the Fatawa-e-Alamgiri.

It is part of Dastur-e-Fa'ida, a collection of treatises on various subjects.

Beginning: در حمد و مدح حق تعالی و پس از آنکه بگویم که این کتاب را به
پادشاه اطهار تموده می آید که - الخ

Ending: در آخر این کتاب بسم الله الرحمن الرحیم
ختمه . . . والحمد لله رب العالمین

f. 1, ll. 1-2, 3-4, 5-6, 7-8, 9-10, 11-12, 13-14, 15-16, 17-18, 19-20, 21-22, 23-24, 25-26, 27-28, 29-30, 31-32, 33-34, 35-36, 37-38, 39-40, 41-42, 43-44, 45-46, 47-48, 49-50, 51-52, 53-54, 55-56, 57-58, 59-60, 61-62, 63-64, 65-66, 67-68, 69-70, 71-72, 73-74, 75-76, 77-78, 79-80, 81-82, 83-84, 85-86, 87-88, 89-90, 91-92, 93-94, 95-96, 97-98, 99-100, 101-102, 103-104, 105-106, 107-108, 109-110, 111-112, 113-114, 115-116, 117-118, 119-120, 121-122, 123-124, 125-126, 127-128, 129-130, 131-132, 133-134, 135-136, 137-138, 139-140, 141-142, 143-144, 145-146, 147-148, 149-150, 151-152, 153-154, 155-156, 157-158, 159-160, 161-162, 163-164, 165-166, 167-168, 169-170, 171-172, 173-174, 175-176, 177-178, 179-180, 181-182, 183-184, 185-186, 187-188, 189-190, 191-192, 193-194, 195-196, 197-198, 199-200, 201-202, 203-204, 205-206, 207-208, 209-210, 211-212, 213-214, 215-216, 217-218, 219-220, 221-222, 223-224, 225-226, 227-228, 229-230, 231-232, 233-234, 235-236, 237-238, 239-240, 241-242, 243-244, 245-246, 247-248, 249-250, 251-252, 253-254, 255-256, 257-258, 259-260, 261-262, 263-264, 265-266, 267-268, 269-270, 271-272, 273-274, 275-276, 277-278, 279-280, 281-282, 283-284, 285-286, 287-288, 289-290, 291-292, 293-294, 295-296, 297-298, 299-300, 301-302, 303-304, 305-306, 307-308, 309-310, 311-312, 313-314, 315-316, 317-318, 319-320, 321-322, 323-324, 325-326, 327-328, 329-330, 331-332, 333-334, 335-336, 337-338, 339-340, 341-342, 343-344, 345-346, 347-348, 349-350, 351-352, 353-354, 355-356, 357-358, 359-360, 361-362, 363-364, 365-366, 367-368, 369-370, 371-372, 373-374, 375-376, 377-378, 379-380, 381-382, 383-384, 385-386, 387-388, 389-390, 391-392, 393-394, 395-396, 397-398, 399-400, 401-402, 403-404, 405-406, 407-408, 409-410, 411-412, 413-414, 415-416, 417-418, 419-420, 421-422, 423-424, 425-426, 427-428, 429-430, 431-432, 433-434, 435-436, 437-438, 439-440, 441-442, 443-444, 445-446, 447-448, 449-450, 451-452, 453-454, 455-456, 457-458, 459-460, 461-462, 463-464, 465-466, 467-468, 469-470, 471-472, 473-474, 475-476, 477-478, 479-480, 481-482, 483-484, 485-486, 487-488, 489-490, 491-492, 493-494, 495-496, 497-498, 499-500, 501-502, 503-504, 505-506, 507-508, 509-510, 511-512, 513-514, 515-516, 517-518, 519-520, 521-522, 523-524, 525-526, 527-528, 529-530, 531-532, 533-534, 535-536, 537-538, 539-540, 541-542, 543-544, 545-546, 547-548, 549-550, 551-552, 553-554, 555-556, 557-558, 559-560, 561-562, 563-564, 565-566, 567-568, 569-570, 571-572, 573-574, 575-576, 577-578, 579-580, 581-582, 583-584, 585-586, 587-588, 589-590, 591-592, 593-594, 595-596, 597-598, 599-600, 601-602, 603-604, 605-606, 607-608, 609-610, 611-612, 613-614, 615-616, 617-618, 619-620, 621-622, 623-624, 625-626, 627-628, 629-630, 631-632, 633-634, 635-636, 637-638, 639-640, 641-642, 643-644, 645-646, 647-648, 649-650, 651-652, 653-654, 655-656, 657-658, 659-660, 661-662, 663-664, 665-666, 667-668, 669-670, 671-672, 673-674, 675-676, 677-678, 679-680, 681-682, 683-684, 685-686, 687-688, 689-690, 691-692, 693-694, 695-696, 697-698, 699-700, 701-702, 703-704, 705-706, 707-708, 709-710, 711-712, 713-714, 715-716, 717-718, 719-720, 721-722, 723-724, 725-726, 727-728, 729-730, 731-732, 733-734, 735-736, 737-738, 739-740, 741-742, 743-744, 745-746, 747-748, 749-750, 751-752, 753-754, 755-756, 757-758, 759-760, 761-762, 763-764, 765-766, 767-768, 769-770, 771-772, 773-774, 775-776, 777-778, 779-780, 781-782, 783-784, 785-786, 787-788, 789-790, 791-792, 793-794, 795-796, 797-798, 799-800, 801-802, 803-804, 805-806, 807-808, 809-810, 811-812, 813-814, 815-816, 817-818, 819-820, 821-822, 823-824, 825-826, 827-828, 829-830, 831-832, 833-834, 835-836, 837-838, 839-840, 841-842, 843-844, 845-846, 847-848, 849-850, 851-852, 853-854, 855-856, 857-858, 859-860, 861-862, 863-864, 865-866, 867-868, 869-870, 871-872, 873-874, 875-876, 877-878, 879-880, 881-882, 883-884, 885-886, 887-888, 889-890, 891-892, 893-894, 895-896, 897-898, 899-900, 901-902, 903-904, 905-906, 907-908, 909-910, 911-912, 913-914, 915-916, 917-918, 919-920, 921-922, 923-924, 925-926, 927-928, 929-930, 931-932, 933-934, 935-936, 937-938, 939-940, 941-942, 943-944, 945-946, 947-948, 949-950, 951-952, 953-954, 955-956, 957-958, 959-960, 961-962, 963-964, 965-966, 967-968, 969-970, 971-972, 973-974, 975-976, 977-978, 979-980, 981-982, 983-984, 985-986, 987-988, 989-990, 991-992, 993-994, 995-996, 997-998, 999-1000, 1001-1002, 1003-1004, 1005-1006, 1007-1008, 1009-1010, 1011-1012, 1013-1014, 1015-1016, 1017-1018, 1019-1020, 1021-1022, 1023-1024, 1025-1026, 1027-1028, 1029-1030, 1031-1032, 1033-1034, 1035-1036, 1037-1038, 1039-1040, 1041-1042, 1043-1044, 1045-1046, 1047-1048, 1049-1050, 1051-1052, 1053-1054, 1055-1056, 1057-1058, 1059-1060, 1061-1062, 1063-1064, 1065-1066, 1067-1068, 1069-1070, 1071-1072, 1073-1074, 1075-1076, 1077-1078, 1079-1080, 1081-1082, 1083-1084, 1085-1086, 1087-1088, 1089-1090, 1091-1092, 1093-1094, 1095-1096, 1097-1098, 1099-1100, 1101-1102, 1103-1104, 1105-1106, 1107-1108, 1109-1110, 1111-1112, 1113-1114, 1115-1116, 1117-1118, 1119-1120, 1121-1122, 1123-1124, 1125-1126, 1127-1128, 1129-1130, 1131-1132, 1133-1134, 1135-1136, 1137-1138, 1139-1140, 1141-1142, 1143-1144, 1145-1146, 1147-1148, 1149-1150, 1151-1152, 1153-1154, 1155-1156, 1157-1158, 1159-1160, 1161-1162, 1163-1164, 1165-1166, 1167-1168, 1169-1170, 1171-1172, 1173-1174, 1175-1176, 1177-1178, 1179-1180, 1181-1182, 1183-1184, 1185-1186, 1187-1188, 1189-1190, 1191-1192, 1193-1194, 1195-1196, 1197-1198, 1199-1200, 1201-1202, 1203-1204, 1205-1206, 1207-1208, 1209-1210, 1211-1212, 1213-1214, 1215-1216, 1217-1218, 1219-1220, 1221-1222, 1223-1224, 1225-1226, 1227-1228, 1229-1230, 1231-1232, 1233-1234, 1235-1236, 1237-1238, 1239-1240, 1241-1242, 1243-1244, 1245-1246, 1247-1248, 1249-1250, 1251-1252, 1253-1254, 1255-1256, 1257-1258, 1259-1260, 1261-1262, 1263-1264, 1265-1266, 1267-1268, 1269-1270, 1271-1272, 1273-1274, 1275-1276, 1277-1278, 1279-1280, 1281-1282, 1283-1284, 1285-1286, 1287-1288, 1289-1290, 1291-1292, 1293-1294, 1295-1296, 1297-1298, 1299-1300, 1301-1302, 1303-1304, 1305-1306, 1307-1308, 1309-1310, 1311-1312, 1313-1314, 1315-1316, 1317-1318, 1319-1320, 1321-1322, 1323-1324, 1325-1326, 1327-1328, 1329-1330, 1331-1332, 1333-1334, 1335-1336, 1337-1338, 1339-1340, 1341-1342, 1343-1344, 1345-1346, 1347-1348, 1349-1350, 1351-1352, 1353-1354, 1355-1356, 1357-1358, 1359-1360, 1361-1362, 1363-1364, 1365-1366, 1367-1368, 1369-1370, 1371-1372, 1373-1374, 1375-1376, 1377-1378, 1379-1380, 1381-1382, 1383-1384, 1385-1386, 1387-1388, 1389-1390, 1391-1392, 1393-1394, 1395-1396, 1397-1398, 1399-1400, 1401-1402, 1403-1404, 1405-1406, 1407-1408, 1409-1410, 1411-1412, 1413-1414, 1415-1416, 1417-1418, 1419-1420, 1421-1422, 1423-1424, 1425-1426, 1427-1428, 1429-1430, 1431-1432, 1433-1434, 1435-1436, 1437-1438, 1439-1440, 1441-1442, 1443-1444, 1445-1446, 1447-1448, 1449-1450, 1451-1452, 1453-1454, 1455-1456, 1457-1458, 1459-1460, 1461-1462, 1463-1464, 1465-1466, 1467-1468, 1469-1470, 1471-1472, 1473-1474, 1475-1476, 1477-1478, 1479-1480, 1481-1482, 1483-1484, 1485-1486, 1487-1488, 1489-1490, 1491-1492, 1493-1494, 1495-1496, 1497-1498, 1499-1500, 1501-1502, 1503-1504, 1505-1506, 1507-1508, 1509-1510, 1511-1512, 1513-1514, 1515-1516, 1517-1518, 1519-1520, 1521-1522, 1523-1524, 1525-1526, 1527-1528, 1529-1530, 1531-1532, 1533-1534, 1535-1536, 1537-1538, 1539-1540, 1541-1542, 1543-1544, 1545-1546, 1547-1548, 1549-1550, 1551-1552, 1553-1554, 1555-1556, 1557-1558, 1559-1560, 1561-1562, 1563-1564, 1565-1566, 1567-1568, 1569-1570, 1571-1572, 1573-1574, 1575-1576, 1577-1578, 1579-1580, 1581-1582, 1583-1584, 1585-1586, 1587-1588, 1589-1590, 1591-1592, 1593-1594, 1595-1596, 1597-1598, 1599-1600, 1601-1602, 1603-1604, 1605-1606, 1607-1608, 1609-1610, 1611-1612, 1613-1614, 1615-1616, 1617-1618, 1619-1620, 1621-1622, 1623-1624, 1625-1626, 1627-1628, 1629-1630, 1631-1632, 1633-1634, 1635-1636, 1637-1638, 1639-1640, 1641-1642, 1643-1644, 1645-1646, 1647-1648, 1649-1650, 1651-1652, 1653-1654, 1655-1656, 1657-1658, 1659-1660, 1661-1662, 1663-1664, 1665-1666, 1667-1668, 1669-1670, 1671-1672, 1673-1674, 1675-1676, 1677-1678, 1679-1680, 1681-1682, 1683-1684, 1685-1686, 1687-1688, 1689-1690, 1691-1692, 1693-1694, 1695-1696, 1697-1698, 1699-1700, 1701-1702, 1703-1704, 1705-1706, 1707-1708, 1709-1710, 1711-1712, 1713-1714, 1715-1716, 1717-1718, 1719-1720, 1721-1722, 1723-1724, 1725-1726, 1727-1728, 1729-1730, 1731-1732, 1733-1734, 1735-1736, 1737-1738, 1739-1740, 1741-1742, 1743-1744, 1745-1746, 1747-1748, 1749-1750, 1751-1752, 1753-1754, 1755-1756, 1757-1758, 1759-1760, 1761-1762, 1763-1764, 1765-1766, 1767-1768, 1769-1770, 1771-1772, 1773-1774, 1775-1776, 1777-1778, 1779-1780, 1781-1782, 1783-1784, 1785-1786, 1787-1788, 1789-1790, 1791-1792, 1793-1794, 1795-1796, 1797-1798, 1799-1800, 1801-1802, 1803-1804, 1805-1806, 1807-1808, 1809-1810, 1811-1812, 1813-1814, 1815-1816, 1817-1818, 1819-1820, 1821-1822, 1823-1824, 1825-1826, 1827-1828, 1829-1830, 1831-1832, 1833-1834, 1835-1836, 1837-1838, 1839-1840, 1841-1842, 1843-1844, 1845-1846, 1847-1848, 1849-1850, 1851-1852, 1853-1854, 1855-1856, 1857-1858, 1859-1860, 1861-1862, 1863-1864, 1865-1866, 1867-1868, 1869-1870, 1871-1872, 1873-1874, 1875-1876, 1877-1878, 1879-1880, 1881-1882, 1883-1884, 1885-1886, 1887-1888, 1889-1890, 1891-1892, 1893-1894, 1895-1896, 1897-1898, 1899-1900, 1901-1902, 1903-1904, 1905-1906, 1907-1908, 1909-1910, 1911-1912, 1913-1914, 1915-1916, 1917-1918, 1919-1920, 1921-1922, 1923-1924, 1925-1926, 1927-1928, 1929-1930, 1931-1932, 1933-1934, 1935-1936, 1937-1938, 1939-1940, 1941-1942, 1943-1944, 1945-1946, 1947-1948, 1949-1950, 1951-1952, 1953-1954, 1955-1956, 1957-1958, 1959-1960, 1961-1962, 1963-1964, 1965-1966, 1967-1968, 1969-1970, 1971-1972, 1973-1974, 1975-1976, 1977-1978, 1979-1980, 1981-1982, 1983-1984, 1985-1986, 1987-1988, 1989-1990, 1991-1992, 1993-1994, 1995-1996, 1997-1998, 1999-2000, 2001-2002, 2003-2004, 2005-2006, 2007-2008, 2009-2010, 2011-2012, 2013-2014, 2015-2016, 2017-2018, 2019-2020, 2021-2022, 2023-2024, 2025-2026, 2027-2028, 2029-2030, 2031-2032, 2033-2034, 2035-2036, 2037-2038, 2039-2040, 2041-2042, 2043-2044, 2045-2046, 2047-2048, 2049-2050, 2051-2052, 2053-2054, 2055-2056, 2057-2058, 2059-2060, 2061-2062, 2063-2064, 2065-2066, 2067-2068, 2069-2070, 2071-2072, 2073-2074, 2075-2076, 2077-2078, 2079-2080, 2081-2082, 2083-2084, 2085-2086, 2087-2088, 2089-2090, 2091-2092, 2093-2094, 2095-2096, 2097-2098, 2099-2100, 2101-2102, 2103-2104, 2105-2106, 2107-2108, 2109-2110, 2111-2112, 2113-2114, 2115-2116, 2117-2118, 2119-2120, 2121-2122, 2123-2124, 2125-2126, 2127-2128, 2129-2130, 2131-2132, 2133-2134, 2135-2136, 2137-2138, 2139-2140, 2141-2142, 2143-2144, 2145-2146, 2147-2148, 2149-2150, 2151-2152, 2153-2154, 2155-2156, 2157-2158, 2159-2160, 2161-2162, 2163-2164, 2165-2166, 2167-2168, 2169-2170, 2171-2172, 2173-2174, 2175-2176, 2177-2178, 2179-2180, 2181-2182, 2183-2184, 2185-2186, 2187-2188, 2189-2190, 2191-2192, 2193-2194, 2195-2196, 2197-2198, 2199-2200, 2201-2202, 2203-2204, 2205-2206, 2207-2208, 2209-2210, 2211-2212, 2213-2214, 2215-2216, 2217-2218, 2219-2220, 2221-2222, 2223-2224, 2225-2226, 2227-2228, 2229-2230, 2231-2232, 2233-2234, 2235-2236, 2237-2238, 2239-2240, 2241-2242, 2243-2244, 2245-2246, 2247-2248, 2249-2250, 2251-2252, 2253-2254, 2255-2256, 2257-2258, 2259-2260, 2261-2262, 2263-2264, 2265-2266, 2267-2268, 2269-2270, 2271-2272, 2273-2274, 2275-2276, 2277-2278, 2279-2280, 2281-2282, 2283-2284, 2285-

2546

Ha 21.

شرح سفر السعادة

SHARH SIFR AL-SADĀ'AH

(صراط مستقیم. Sitrât-e-Mustaqīm.)

Author: *Shaykh Muḥammad b. 'Alī b. 'Abd al-Rahmān al-Muḥammadiy al-Madaniy* (d. 1192/1193).
 Manuscript: *12th cent.*
 Binding: *12th cent.*

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
 الحمد لله وحده
 والصلاة على من لا نبي بعده
 وبعد

Ending

والله اعلم
 بالصواب

f. 62. ll. 25. S. 12.6 x 7.8" / 34.4 x 19.8 cms.

Written in clear naskh. An early 12th cent. copy.

For further details see the entry in the *Index*.

Ref: EIO 2546-2557; IV A+B 1002.

2547

Ha 22.

Author: *Shaykh Muḥammad b. 'Alī b. 'Abd al-Rahmān al-Muḥammadiy al-Madaniy* (d. 1192/1193).

Beginning

Ending

f. viii+314. ll. 25. S. 12.6 x 8.7" / 30.2 x 22.0 cms.

Written in clear naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrication: *Hamd* (in red). Written in clear naskh.

Bound.

1 pilogue on last page (f. 84) in which the author says that this copy was transcribed at the end of 1443/1444 and it was completed in the same year. These lines were written on 1st Rabi' I 1443 = August 1635.

f. 840 d. 27. Written on 27th 1443/1444 = XI 1635 = 184-8.

Written in neat nasta'liq by Shams al-Muhammadi, 1015-1114.

Unwan: Gold and silver thread borders. Kufic at top. Dampness stains. Wormholes. Binding at bottom. Text on paper and reset in existing covers.

2544

Ha. 25.

Another copy of the same. Part III (Kanz IX to XVII). This copy is left incomplete in latter XVII. Dress: 148 lines, 180 f. 180.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.
 رمانت احوال من است که در روز
 سه و کشیدی و شد و آتش بوی کرد

f. 205. ll. 27. S. 12.7 x 7.3" 32.1 x 18.5 cms.

Written in neat nasta'liq by Ahmad al-Jalili, 1015-1114.

Kufic at top. Dampness stains. Wormholes. Binding at bottom. Binding damaged.

2545

Ha. 24

Another copy of the same containing Part IV (Kanz XVIII to XX).

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 583. ll. 27. S. 12.7 x 8.1" 9.5 x 4.4" 22.0 x 20.4 24.0 x 14.2 cms.

Just like preceding one.

Kitāb 15, on Food (كتاب الأَطْعَمَة), on f. 284v.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending :

ان را ساقه گفته ایم بلند کر

Kitāb 16, on Dress (كتاب اللباس), on f. 316

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending :

و بویں اندیز که با او حسن بیع باشد
بقه اعلیٰ رواء در وطنی

Kitāb 17, on the use of arms (كتاب استعمال الأسلحة), on f. 358v.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending

الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Vol. IV

Kitāb 18, on manners (كتاب الآداب), on f. 376v

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending

الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Kitāb 19, on slaves (كتاب الرقيق), on f. 500.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending

الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا
رواه أحمد و البيهقي و دلائل النبوة ..

Kitāb 20, on Temptations (كتاب الغي), on f. 502

Beginning :

الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا

Ending

الحمد لله الذي جعل في خلقه
منازلًا ودرجاتًا
آله و آله و دو القصر و الإحسان

Kitāb 12, on Hunting and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: بسم الله الرحمن الرحيم الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: يومئذ لا ينفعكم شئ مما كنتم تعملون...

Kitāb 13, on Holy War (كتاب الجهاد)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

Kitāb 14, on Hunting games and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

Kitāb 15, on Hunting games and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

Kitāb 16, on Hunting games and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

Kitāb 17, on Hunting games and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

Kitāb 18, on Hunting games and Slaughter (كتاب الصيد والذبح)

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا...

Ending: وقال الترمذي: هذا حديث حسن...

ff 585 ll. 25-8 122 x 8.5 24 x 4 90, 210 X 2.4 218 X 122 ms

Written in ...

Unwān Goda ...

Worn holes, 10 ...

Ref: EIO. 2054-2655; IvAsib. 697-1001

2540

fla. 5

Another copy of the same

Beginning ...

Ending: as usual.

ff 1-2 ...

Written in ...

God ...

... Alex ...

2541

fla. 3.

Another ...

...

This ...

Kitāb 3, on Poor Rate (کتاب ارکاء) on f. 1v

Beginning ...
موجب نما - المع

Ending: ...
حجج قبل بود فاهمه و الله اعلم

Kitāb 4 on ...

Beginning ...
عار تست - الله

Ending: ...
روایت کرده اند از حرر و وار این صاحه

Kitāb 5 on the attributes of the ... (کتاب صفات ...)
on f. 105.

Beginning ...
کتاب صفات ...

Waṣl 4, on manners of the rich, on f. 145v.

Waṣl 5, on manners of the artisans, f. 153v.

As. VII on ten subjects, dress, food and drink (حسن سامع در آنچه
معلق بآرمه و آینه و لاله و صندل و شکر و زعفران)
in five waṣls

Waṣl 1, on attributes at certain times, on f. 153v

Waṣl 2, on attributes at certain times, on f. 161v

Waṣl 3, on dress, on f. 173v

Waṣl 4, on food, on f. 174v.

Waṣl 5, on drinks on f. 175.

As. VIII, on miscellaneous but highly different topics (اصل دهن در هر صفت
متفرقه از هر نوع)
in five waṣls:-

Waṣl 1, on health, on f. 176v.

Waṣl 2, on the Day of Judgement, on f. 181v.

Waṣl 3, on the stages after death, on f. 187.

Waṣl 4, on marriage, on f. 194.

Waṣl 5, on travelling, on f. 200v.

Beginning: الحمد لله رب العالمين شريف سياده صوته آثار...
بحسبواي اين حديث شريف - الفخ

Ending: سر - عني دوستي تازه ده دوست دهی پش را در ده

P 202 mm. l. 17.5 x 41.5 x 2.0" 19.5X12.5 14.5X5.5 cms

Written in good nasā' and nasta'iq. A late 11th cent. copy

Good ḥanwān. Coloured right borders. Rubrications. Margins re-
newed. Wormholes. Fair condition. To be repaired and preserved.

A rare work

Wash 4, on the attributes of the Holy Prophet, his titles and connections, on f. 13v.

Wash 5, on the attributes of the divines, on f. 26.

Aṣal II, on Prayer, etc. (أصل دوم در عبادت و آنچه متعلق بدان است)
five washes are for prayer, mosques and concentration.

Wash 1, on Prayers (در آداب عبادت و قصدت عبادت)

Wash 2, on Fasting (روزه), on f. 42v.

Wash 3, on Poor-rate (زکوة), on f. 97v

Wash 4, on Pilgrimage (حج), f. 53v.

Wash 5, on Holy War (جهاد), on f. 58v.

Aṣal III, on attributes of the Holy Qur'an in five ways

أصل سوم در صفات قرآن و معنی دعوت و عزم

Wash 1, on attributes of the Holy Qur'an, on f. 60.

Wash 2, on praise for Allah (تسبیح), on f. 68v

Wash 3, on Dhikr (ذکر) on f. 71.

Wash 4, on invocation (دعا), on f. 75v.

Wash 5, on prayers based on traditions (دعوات مأثورہ), f. 78

Aṣ IV, on good manners (حسن اوصاف و عظمی احکام)
in five washes. The washes are not given titles. These are on
79v, 112 and 116v.

Aṣ V, on evil manners (فحش اوصاف و زورتنی احلاق) (أصل پنجم در اوصاف روه و زورتنی احلاق)
in five washs on ff. 110, 123v, 128, 131, and 132

Aṣ VI, on manners of kings (أصل ششم در آداب ملوک و نصیحت و مروت)
و آداب علم و صاحب علم و زود پیشه و رتبه و مروت و معنی
in five washs

Wash 1, on kingly manners, on f. 134v

Wash 2, on manners of the Amirs, viziers and high people, on f. 138v

Wash 3, on manners of the learned of high status, on f. 143

Beginning

و هو اعتاج كريم - ج

Ending: الحمد لله

الاعظم ولا حترام ولا معتدای غیر مدیه

H. 135, H. 136, 8 1/2 x 5 1/2, 10 x 1 1/2 lines

Written in good naskh. A late 13th cent. copy.

Text in red. Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. To be repaired.

A rare work

Seal: Abn'l-Fath Muhammad Akramu'ddin, 30.

ابو الفتح محمد اکرم الدین - ۳۰

Abu 'l-Qāsim 'Abd al-Qādir 'Izz al-Dīn
أبو القاسم رَحِمَهُ اللهُ رَحِمَهُ

2537

Ha 16. الرسالة العلية في الاحاديث النبويه

A'R-RISĀLAH FĪ AL-ĀḤADITH FĪ SHADITHIN-NABAWIYYAH

A collection of thirty Tracts with elaborate notes, and illustrated by anecdotes, compiled by Ḥasan b. 'Alī al-Wa'iz al-Kashafī, (d. 910/1505).

The work is divided into thirty tracts and each is subdivided into five wasls.

The work is dedicated to Kāshafī's patron 'Alī Sher

The contents are as under:-

Preface, on f. 1v.

Asl 1, on Unity of God, توحيد و ايمان و اسلام و محبت
و ذکر اوصیاء
the faith, Islām, praise for the Holy Prophet and the
divines, on f. 3, in five wasl

Wasl 1, on Unity of God, on f. 3.

Wasl 2, on Faith, on f. 5v

Wasl 3, on Islām, on f. 12.

Written in ordinary na'tā'iq by Shaikh Ibrāhīm b. Shaikh Ibrāhīm of Kokan, on 27 Shabān, 1089/4 October, 1678

Rubrications. Dampness stains. Wormholes. Fair condition. To be repaired and reset in extra covers.

2534

Ad. 46.

مجموعه

MAJMA'AH

This contains the following works.

1. Farjama'at al-Idat il-Hisn (فجرنامه ایادت الحسن - 47v)

Another Persian parafrase of the Koran. Verses in the same. The names of the compiler and the translator are not given.

The work is divided into 10 bā's.

Beginning:

الحمد لله ... من بحر ...
وطائب الطاعات - الخ

Ending:

و ابدی و لآخره مستحب - و صلی الله علیه و آله
محمد و آله اجمعین

2. D'uā'-e-Kimiyā-e-Sa'adat (1-48-49v).

A short Arabic prayer.

3. Ad'yā' (1-50v-107v). A collection of different 1, ā's and hā's.

Beginning:

چون خواهد که دعوت بحر ... را کند - الخ

Ending:

و صلی الله علیه و آله محمد ... رحمتك ...

ff. 109, ll. 17. S. 10.0x6.2⁸/25.5x15.8 cms.

Written in clear rika'ah. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Wormholes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seals. Mir. Sultan Husain, 1194. میر سلطان حسین محمد شاه

عری - 1194

2532

Ad. 134

فتح المبين

FATHU'L-MUBIN

A Persian paraphrase of the *Ḥaṣṣe* of Sa'ad al-Dīn Abū Isḥāq Muḥammad b. Muḥammad b. Aḥmad Yūsuf al-Ḥafīz al-Damashqī ash-Shāfi'ī, composed in a *Ḥaṣṣe* of 80/440. It is a codex of 17 folios with a title page, a preface by the author, Aḥmad b. Muḥammad b. Aḥmad, and a concluding work of 10 folios. It is dated at the end of the 10th century AH. The manuscript is in the possession of the Ministry of Education, Tehran. (80/440, 17 folios, 10 cm x 15 cm).

Beginning

الحمد لله الواحد - لا اله الا هو - محمد بن عبد الله - ج

Ending

والسلام على من اتبع الهدى - محمد بن عبد الله - ج

R. 212. ll. 1. S. 10.4 x 6.1/20 8 x 15.4 cm.

Writer in clear nasta'liq of the 10th century AH. No signature.

Rule lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines, 10 lines. Fair condition. Bound.

Ref: EIO 2041.

2533

Ad. 49.

ترجمة الماثوره

TARJAMATU'L-MATHORAH

A Persian paraphrase of the *Ḥaṣṣe* of Sa'ad al-Dīn Abū Isḥāq Muḥammad b. Muḥammad b. Aḥmad Yūsuf al-Ḥafīz al-Damashqī ash-Shāfi'ī, composed in a *Ḥaṣṣe* of 80/440.

This copy is defective in the first folio, which is missing.

Beginning

الحمد لله ، محمد بن عبد الله ، ج

Ending :

والله المأثم إلى الرحمة والهدى

R. 441. ll. 17. S. 10.4 x 6.1/20 8 x 15.4 cm.

2530

A. No. 597.

Another copy of the same by Durr-i-Muhammadiyah.
Arab Shāh al-Durrani.

Beginning

بدانکه دلم این قصیده - معیده که - این

Ending

یا حو این عدای بی حسی در نوع مقادیر

f. 73, ll. 14. S. 9.4 x 5 1/2 (24.0 x 13.0 cms).

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Words in Fair condition. Bound.

2531

A. N. 84 الجواهر الفريدة في شرح القصيدة

AL-JAWÂHIRU L-FARĪDAH FĪ SHARH AL-QASĪDAH

A Persian (Tajik) manuscript on the same as above, copied in 1257/1841, by Sayyid-Hamid Mahammad Yazd. 'An 'Uthmaniyya (Ughli)-nawi, and dedicated to the then Prime Minister of Hydrabad, Mirza Asaf Khan. An hour of Salar June 1865.

Beginning:

زیب مطمع دهان نظم و بیان است
و شای باطنی است که - النخ

Ending:

الاه - امری خطیبی و رحیمی و حدی و عربی و فارسی
و - مکتب بکرده - بی عربی و فارسی و خطیبی و رحیمی

f. 150, ll. 21. S. 11.8 x 7.5 (30.0 x 19.0 cms) 22.4 x 22.4 cms

Written in elegant naskh. Fair condition. Bound. 1 June, 1865.

European paper. Unwān. Diverse ruled orders. Arabic text and words in red. Good condition. Bound.

ff. 138. ll. 14. S. 98x57² 25.2x14.6 cms

Written in ordinary naskh. Dated on 20 Jumāda II, 2, 1064
(A.C. 1073) in MS. M. 1064

Ref. in ———. W. 1064. ———. Fair condition. Not bound.

2528

A. Nm. 598

A rather smallish copy of the same text as above, but in a smaller hand. It was written in 1064/1073.

Ref. in ———. W. 1064. ———. Fair condition.

Beginning : وادی که در حبس منور در برین و زیب شد بخ

Ending : و امیس ایلاثم الحنة و امیحة

ff. 110. ll. 23. S. 90x51² 23.0x13.0 cms

Written in ordinary naskh. Dated on 10 Jumāda II, 1075/10 December, 1064

Dubbed into ———. W. 1064. ———. Fair condition. Bound.

2529

A. Nm. 594

A rather smallish copy of the same text as above, but in a smaller hand. It was written in 1064/1073.

Beginning : الحمد لله... وال شیع وقری حب ف
استحانی فضل لله - اخ

Ending : همچو گنده ی کو چک حفر است ، حباب می کند نفس خود را

ff. 113. ll. 17. S. 78x47; 54x28² 20.0x11. , 13.4x7.2 cms

Written in clear naskh. An early 11th cent. copy.

Ref. in ———. W. 1064. ———. Fair condition. Bound.

Ref. EIO. 2647 2052; IvASB. 989; IvC. 350

2526

A. Nm. 595.

شرح قصيدة برده

SHARH QASIDA-B-BURDA

A Persian commentary on the famous poem of the Holy Prophet composed by Sa'ad al-Din 'Abd al-Malik b. Sa'd al-Basri (d. 1040 A.D.) between 1400-1420 and 1420. The commentary is a dialogue between the author and his friend. The text is written in a clear and elegant hand.

The text is written in a clear and elegant hand. The text is written in a clear and elegant hand. The text is written in a clear and elegant hand.

Beginning:

بسم الله الرحمن الرحيم

Ending:

الحمد لله رب العالمين

fl. 11+60. ll. 25. 5. 9.8 x 6.0⁹ 25.4 x 15.2 cms

Material: Paper. Color: Brown. Binding: Simple. Condition: Good.

Found:

At the library of the Ministry of Education, Tehran, Iran.

عبد الرحيم بن محمد يبر - ٩٩١

2. Khatun 'Amir b. Muhammad Amir Khatun.

روح الامين بن محمد امين رضوي

3. Muhammad 'Ala al-Din, 1111.

عبد اكر - ١١١١

4. Muhammad 'Ala al-Din, 1111.

برده عليه شيع الاسلام - ١١٨٩

2527

A. Nm. 596

Another copy of the same

Beginning: Same

End: Same

To face p. 79.



Transcribed and collated by 'Abdu'r-Rahmān
(Khan e-Ḥānān) on f. 3 (a) of Sharh
Qasida-e-Burdah

ff. 11, 15, S. 78 x 50⁹ 19.5 x 12.0 cms.

Written on parchment, made up of 8 leaves, 16 pages.

Wormholes: four, some have been repaired and rebound.

Sent: Munir & Mulk, 1200

منير الملك = 1200

2525

ff. 11

Beginning

الحمد لله الذي جعل في الدنيا

أجمعين أمراً عظيماً أن أصف ما قد أتى

Ending

بالحمد لله الذي جعل في الدنيا

برحمته يا أرحم الراحمين

الحمد لله الذي جعل في الدنيا

الحمد لله الذي جعل في الدنيا

A collection of forty traditions with their Persian data in use.

ff. 11

الحمد لله الذي جعل في الدنيا

رسول قمرود - عده السلام - و كذا كذا حدثت

Ending

يعني رده شدن آهن و عسل - عده مرده و اسب

A new text, possibly by a later hand on ff. 5-7-9.

ff. 11, 15, S. 78 x 50⁹ 19.5 x 12.0 cms.

cm

ff. 11, 15, S. 78 x 50⁹ 19.5 x 12.0 cms.

Red leather cover. Binding: red. Dampness stains. Wormholes. Fair condition. (to be rebound).

fl. 70. ll. 15. S. 7.5x4.9"/19.0x12.4 cms.

Written in early nasḥ script, by Ḥafīẓ Maḥmūd al-Darī, d. Dhu'l-Ḥijja in Rajab, 1050/March, 1622 at Pathān, at

Rubrications. Dimples, stains. Worn holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: ELO, 2630; IVASB 957; Ivc 348

2523

fla. 27

Another copy of the same

Beginning سده ضعیف امیدوار بود که در گنجینه منجمه تصحیح مور
ذیبه و ذبیاه - ج

Ending و طرب نوی - رف - س - و فقه - ص - ب
و ایة المرحع و لمآب

fl. 63. ll. 15. S. 9.4x5.2"/23.8x13.2 cms

Written in early script, by Maḥmūd al-Darī, d. Maḥmūd Janāt, on 4 Jumāda II, 1103/12 February, 1692

Rubrications. Dimples, stains. Worn holes. Fair condition. Preserved in a portfolio

Seal: Faṭḥullah Baig

صح الله بیکت

2524

Aq. 144,4

Another copy of the same

Beginning الحمد لله... امده... کتاب رجس ب و سر هر اب
ذه حدیث - ج

Ending بهی جواب غده فصل راست رعادت ده

HADITH TRADITIONS

NOTES

2521

رسالة حديث

A. Nm. 996/2

1. At a 11AD 111

A further edition of the *Journal* is in preparation. A new number and the new volume will appear by the end of the year, as indicated by the plan for 1907.

روایت میں کہ اس وقت ۱۰۰۰ ہجری سے ۱۰۰۰ ہجری تک
روزِ جمعہ صحت رسالت صلی اللہ علیہ وسلم الخ

Finding : لا يوجد

Written on excellent old parchment, decorated with gold leaf.

to a set of the number 1 (for example, $\{1\}$ for $n = 1$), and to a set of the number 2 (for example, $\{1, 2\}$ for $n = 2$).

2522

الباب الأخبار

Ha 26

LUBĀBU'L-AKHBAR

A contract for electric trams was made by Abdul Wahab with the British firm of Messrs. J. H. & J. W. G. & Co. Ltd. The firm proposed to build and operate a tramway between the station and the city. The contract was signed by Abdul Wahab and the British firm on 1st January 1900.

Beginning * حمد و نسی و ع - مرحدای در حیر حلاله
و عم نواله که - الخ

و بطمه دست پیش اس فرا رانده و بی الله علیه و سه
و عن آله الا بعد و الا بعد و سه - بی کفر ا کفر

Written in excellent nashḥ by Zuhri'd-din 'Aḥmad 'ash-Shihfāzib Darwāzī, Muḥammīdī, for the petusal of Nawāb Shāh ḥāḥ surnamed Muḥammad ḥāḥ, paymaster of the Imperial Forces, a Janghizārī Amir under Jahanḡir who died in 1025 (1616). An early 11th cent. copy.

Arabic in red. Good and coloured rule borders. Damppness stains. Worm holes. Fair condition. Text repeated and re-bound.

Seas. Muḥimīd-Muḥk, 1206.

میر ملک - ۱۲۰۶

2520

A. D] 119.

شرح چهل آیه

SHARH-E-CHIHIL AYAH

A commentary on forty Qu'rānic verses selected from Suras ii to lxxii, and based on Part 2, of Bahārul-Anwār of Shāh ḥāḥ ḥāḥ al-Qummi, (1-381 or 381/391 or 1005). It is by an anonymous person.

Beginning در محله اوردهم بحر الانوار شریف صدوق - انش

Ending ان تکشف عنی صریحاً امت وما اصحت به

li. 8. ll. 12. S. 6.4 x 4.3; 4.9" x 2.0, 17.8 x 10.8, 1.4 x 7.4 cms

Written in good nashḥ and nasta'liq, by Muḥammīd ḥāḥ ḥāḥ ḥāḥ, surnamed Hashmatu'l-Āyāḥ, in 1,351 A.H.

European paper. Good 'urwān. Gold ruled borders. Good condition. Bound.

Written in ordinary nasta'liq by Qāsim Mān, at the instance of
Fayḍ Shāh, on ~~European paper~~ ~~European paper~~, 1545, at Hyderabad.

~~Rebound~~ Written on ~~European paper~~ ~~European paper~~ to be repaired and
re-bound.

2518

T. I. 47/1

Another copy of the same.

Beginning: ~~as usual~~

Ending: as usual.

ff. 84. ll. 14. S. 6.9 X 4 4⁰/17.8 X 11.2 cms.

Written in ordinary na'ṣṭā'liq, in four lines on 17 lines; 1
1324/43 [unc.], 1306 from the preceding copy, undated.

European paper. Rubrication in gold on 11 lines. To be re-bound.

2519

T. I. 5.

تفسير القرآن

TAFSIRU'L-QUR'ĀN

A Shi'ite commentary on the ~~Quron~~ ~~Quron~~ Qur'an by Sayyid Murādā
(according to a note on fly-leaf and on last folio).

This copy is the second half, and defective at both ends, by a folio
each.

Beginning abruptly کس می شنید وندی او این و نه از
روی نیاز قال رب گفت - الخ

Ending abruptly. از وی مصطفی خود را در عمر هجری
اشدخته و این امر خطیر

ff. 451-1=550. ll. 27. S. 12.5 X 7.5 8.8 X 5.6⁰/12.2 X 20.4 22.0 X 12.8
cms.

Beginning:

سورة من هشتاد و نه آیه است

مکیست و از انس مالک - الخ

Ending: as usual.

ff. 378+1. ll. 25. S. 9.5x5.6² 24.4x14.0 cms.

Written in or by a scribe, possibly Naim al-Din, on 2 Rabi' al-Thani 1027/5 February, C.E., from a copy transcribed by Hasan b. 'Abd al-Jabbar al-Mu'allam, ca. 1020/1811, at Shiraz, Iran. May, C.E. 1912.

Rubrications in red ink. The words 'Wa' and 'des' have been written in red ink, repeated, at the end of each line.

Script: 1. Verse 2 of Sura ix

و مومن... کافرون

2. Mu'tamanu'd-Daulah.

مؤتمن املوله

Autograph of Dargah Quli, 1172

2517

I 1 4

ترجمه آیات الأحكام

TARJAMA'I-U-ĀYĀTI'L-AHKAM

A Shiite commentary of the last Sura and the commands of the Holy Book, compiled by Shāh Qāsim (or Ghāz) al-Yazgani, 1027/1812, for Sultan Muḥammad II, the Shah of Persia, who died in 1027/1812.

The work is divided as follows:

1. Commentary on the last Sura, entitled: تفسیر سوره فلق و وحده

2. Tab I in eight parts, entitled: باب اول در عبادت

3. Tab II, in three parts, entitled: باب دوم از کذب و دروغ و ملات

Beginning:

بعد از مدح و ستایش از حق تعالی

که منشور دوات سلطان الحرمین را - الخ

Ending:

هر چند که آن شخص مستغنی باشد از آن جامع فیه رب الدنیا

ff. 205. ll. 13. S. 10.4x6.6²/26.8x17.0 cms.

2514

I. I. 9.

Another copy of the same, (Vol. III), containing Sūtras xix to cxiv, the end.

Beginning: سورة صريم عليها السلام مكية، يوذ وحشت به است
ابو امامة از ابی بن کعب - الخ

Ending: حوالله بشی بکوی قل اعوذ برب ادمس ... المعصومین

f. 377. ll. 25. S. 8.8 x 6.7"/22.6 x 17.4 cms.

Written in good nashī and nasta'liq, by Shāh 'Alī b. 'Imād al-Dīn al-Shīrāzī Zawwārī on 20 Jumādā l 977 = 1 October 1569.

Rubrications: Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2515

T. I. 8.

Another copy of the same.

Beginning: گهیه حصّ ذکر رحمة ربك عده رکر اندازی ره - الخ

Ending: as usual.

f. 95. ll. 25. S. 12.9 x 8.6, 9.5 x 5.6"/32.2 x 22.2 - 24.4 x 14.4 cms.

Written in clear nasta'liq - A mid 12th cent. copy.

Ordinary 'innwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2516

I. I. 10.

Another copy of the same Vol. III, but containing Sūtras xxvi to the end.

This copy contains commentary on the first five Sūras

Beginning سپس ونا وحمدی مسته حدی را که این هفت بوال - نبع

Ending کسی در سود که زن مع کید با اعتراف کید بران -
و انه اعلم بالصواب و باقه التوبیق والسلام

ff. 242, ll. 25. S. 13.4 x 9.4"/34.4 x 24.0 cms.

Written in good thulh and naskh by Moharrir al-Mu'ni b. Mir
Hasan Dāni, on 25 Shawwāl, 1041 (21 July, 1531).

Rubrications. Dimpiness stains. Worm holes. Fair condition. To
be repaired and re-bound.

*A rare work, and an old copy transcribed during the lifetime of the
author.*

2513

I. 1. 7.

Another copy of the same (Vol. II) containing Sūras vi to xviii

Beginning سورة الانعام، من سورة مکیست و ششصد
و شصت و پنج آیه است - الخ

Ending هر که دره سورة بحور مدوی در بوری شد در رمین : آمین

ff. 271, ll. 25. S. 13.1 x 8.8"/33.6 x 22.6 cms.

Written in good naskh, on 25 Shawwāl, 1041 (21 January, 1541, at
Burhānpur).

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and
re-bound.

This copy was made for Fakhr al-Dīn al-Hasan, as per his auto-
graph, and seal.

۱۱۴۱

Seen Fakhr al-Dīn

از طلب حق چون شد معجز الدین مصیب
مرید خاص سلطان جهان اور نگین زین

2510

I. I. 31.

Another copy of the same containing sūras xxxv to liv

This copy is defective at the end

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

شروع اہلک ... حت ... مستمر و در جمیع

f. 391. ll. 15. S. $12.2 \times 6.8^{\circ}/31.3 \times 17.5$ cms.

Written in good handwriting by Maḥmūd al-Kāẓimī. Copy

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2511

I. I. 34

Another copy of the same containing sūras v to the end

The copy is defective in the beginning by a few lines

Beginning: as usual.

صمره کبره ... و ... و ...

Ending: as usual.

f. 412. ll. 15. S. $12.5 \times 7.0^{\circ}/32.0 \times 17.8$ cms.

Written in good handwriting by Maḥmūd al-Kāẓimī in 1085/1074.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2512

I. I. 6.

حلا، الاذهان و جلا، الأحرار

در تفسیر قرآن

JALAU'L-AZHĀN WA JALAU'L-AHRĀN
DAR TAFSIR-E-QUR'ĀN

A Shi'ite commentary on the Glorious Qur'an compiled by Abū al-Muḥsin al-Ḥusayn b. Ḥasan al-Jarjani (d. 1075/1068).

2507

T. I. 33.

Another copy of the same containing Shīras xxxiv to the end.

Beginning : ایشان را ای وجه آورده باشد حاجر اصاری - الخ

Ending as usual

f. 720. ll. 21. S. 11.8 x 6.8" / 30.2 x 17.5 cms.

Written in clear nashī, on 13 Kabl' I, 107 / 3 September, 1696.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound

2508

T. I. 35.

Another copy of the same.

Beginning دینور فی سانی بن کعب رضی الله عنه ارجعبر! - الخ

Ending : as usual.

f. 406 ll. 21 S. 11.8 x 6.9" / 30.4 x 17.5 cms

Written in clear nashī by Muḥammad Sharīf b. Muḥammad 'Alī a'l Jurjānī, on 15 Muḥarram, 1057/10 February, 1647

Rubrication. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

a. Seals: Munir'u'l-Mulk, 1206.

میر ملک - ۱۲۰۶

2509

T. I. 15.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

f. 558. ll. 17-23 S. 11.9 x 7.8" / 30.4 x 19.6 cms.

Written in ordinary script by few different hands, in Kabl' II, 1272/December, 1855.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound Preserved in a portfolio.

Beginning : as usual

Ending : abrupt محرم من مافرد ایر - حسن

f. 519. ll. 17. S. $12.4 \times 7.1^{\circ}/31.7 \times 18.2$ cms.

Written in ~~red~~ naskh. A late 12th cent. copy

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Round.

Seals: Muhammad Jābir. محمد قادری مدنی محمد شاه عری

Handar Yār Khān. حیدر یار خان

2505

T. 1. 17

Another copy of the same from Sūra XIX to Sūra XXXV

Beginning : as usual

Ending خلاص و نجات کده هر يك ر فراخور آن پادشاه دهد

f. 342. ll. 23. S. $11.9 \times 7.8^{\circ}/30.4 \times 19.9$ cms.

Written in ordinary script by Mir Hasan al-Musawi surnamed Shams-
tari, on 3 Dhihijja 1272 5 August, 1856 at Hyderabad.

European paper. Rubrications. Worm holes. Poor condition. Not
bound.

Preserved in a portfolio.

Seals: Mir Muhammad Hasan Shamsi میر محمد حسن شمسری

2506

T. 1. 18

Another copy of the same from Sūra XIX to Sūra XXXV

Beginning : as usual.

Ending یا آنکه چون رسید طی ایشان حواحد رسید پس کوئد مسطر اند

f. 285. ll. 20. S. $12.8 \times 7.7^{\circ}/29.1 \times 19.2$ cms.

Written in ~~red~~ naskh. A late 12th cent. copy

Arabic in ~~red~~. Computed ruled borders. Dampness stains. Worm
holes. Fair condition. Not bound.

2502

T. I. 12

Another copy of the same containing the second Juz 11 to 40

Beginning

قال يا اهل بيت ، كملت حصر عليه السلام
 كه آياته گفتم كه ما غ

Ending: as usual.

ff. 40. ll. 16. S. 18x27/24x44"/24x10.5/24x11 cms.

Written in good naskh the last folio by 'Aḥmad, Abdu llah Ku ānī near Damāvand on 22 Rajab, 1082/8 January, 1700 in Hyderabad.

Rubrications, good and coloured in red & blue. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

2503

T. I. 13.

Another copy of the same, defective in the beginning by a folio and a good few folios between Sūras ix, xiii, 'xv' ff. 44-45.

Beginning abrupt v.

که خدای باری و رب العالمین که خلق
 زن در دست او است - غ

Ending: as usual.

ff. 574. ll. 22. S. 9.1x6.2"/23.4x16.0 cms.

Written in clear naskh and resting. A nice 17th cent. copy

Arabic in red. Dampress stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound. Preserved in a portfolio.

2504

T. I. 37.

Another copy of the same from Sūra xix to the end of 'kukū' r of Sūra xxxvi

This copy is left incomplete at the end.

2500

I. I. 46.

Another copy of the same (a continuation of No. 2492), from Sūra six to the end.

Beginning: as usual.

سورة

Ending: as usual.

H. 561. H. 29. S. 12 2 x 7 4" / 31 3 x 19 0 cms.

Written in penmanship A in 1162, with text, copy.

Collected by learned men in 1210/2, at Hyderabad.

Librarians: Dampness stains. Worm holes. To be repaired and resound.

A handwritten title on the back with 1 seal of his ancestors and Endowment Note وقف; on every page and autograph of Muhammad Baqir on last folio.

Seals: Muhammad Baqir L. S. 12 2. Muhammad A., 1162.

✱ باقر ابن شيخ ✱ ع - 1162

2501

I. I. 16

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

H. 45. H. 2. S. 6 x 5 1/2. 12 x 35 1/2 x 50 1/2. 2. 6 x 24 cms.

Written in good naskh and nasta'liq by Muḥḥ Faḥḥ Muḥḥmaḥ, in 41 Juhūs. Alamgir = 1162/1698.

Ordinary ṭawke. Gold and coloured ruled borders. Librarians. Dampness stains. Worm holes. About 90 folios in the beginning burnt out replaced. Fair condition. Not bound.

2495

1.1.32

50544 VI.

Regimenting as usual.

Ending: حو تہی مدل و ر دس مہی پیمہ
ورا وسوہ نکند و آدم

И. 406. II. 15. S. 14.2×6.7⁴/131.3×17.1 cmx

Written in good Arabic and good nasta'liq. A late 11th cent.
copy.

1. *Phragmites australis* (Cav.) Trin. ex Steud.

2496

11. 30

Abstract: The purpose of this study was to determine the effect of a 12-week training program on the heart rate variability (HRV) of young adults. The study was conducted in a laboratory setting. The participants were 20 young adults (10 males and 10 females) who were randomly assigned to two groups: a control group and an experimental group. The control group did not receive any training, while the experimental group received a 12-week training program. The HRV was measured at baseline and at the end of the 12-week training program. The results showed that the experimental group had a significant increase in HRV compared to the control group. The increase in HRV was observed in all parameters measured, including heart rate, standard deviation of normal-to-normal intervals (SDNN), and root mean square of successive differences (RMSSD). The findings suggest that a 12-week training program can improve HRV in young adults.

Beginning بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْمَائِدَةَ مِنَ السَّمَاءِ فِي الْفَجْرِ

Ending: as usual.

H. 400 li. 15. S. $113 \times 0.3^{\circ} / 25.9 \times 10^3$ cms.

Written at Waukegan on the 11th of May 1884. K. J. L.
 to Mr. J. L. L. at Waukegan on the 11th of May 1884.

Diphenylmethane, 2,2,4,4-tetramethyl-

2497

T. 1. 14.

$$\lambda_{\text{max}} = \frac{hc}{E} = \frac{(6.626 \times 10^{-34} \text{ J}\cdot\text{s})(3.00 \times 10^8 \text{ m/s})}{(2.97 \times 10^{-19} \text{ J})} = 6.71 \times 10^{-7} \text{ m}$$

Beginning

Ending: as usual.

作 ΔABC , 使 $AB = AC = 1$, $\angle A = 120^\circ$, $\therefore \angle B = \angle C = 30^\circ$, $\therefore \angle A = 120^\circ$.

An heirloom of the Collector with enforcements and seals of his
ancestors and Fragment No. (۱۱۹) of the same.

Seals: Muḥammad Haqir b. Shāghī, Muḥammad 'Alī, ۱۱۶۹.

✽ باقر این شیخ ✽ ع - ۱۰۶۹

Muḥammad Haider.

✽ حیدر

Haider Yār ḡyan.

حیدر یار گن

2493

I. I. 11.

Another copy of the same, from the beginning to the end of Sūra
xviii.

Beginning: as usual.

Ending: شیتا امرا - چری شکفت و شبیه و بر دل گان - دل ام افق

ff. 210. ll. 14. S. 30 x 7. 1/2 x 4. 1/2. 10 x 12. 1/2 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Good furwān. Gold and colour traced borders. Arabic initials.
First folio repenned by a later hand. Distinct stains. Worm holes.
Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2494

I. I. 22.

Another copy of the same, from the beginning to the end
of sūra vi with six folios of Sūra ix. Defective at the end.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly هر آینه مر رسد ست و مهر ن بر صواب و شکران

ff. 520+1. ll. 14. S. 11 1/2 x 7. 4 x 4. 1/2. 12 1/2 x 18 1/2. 10 x 12. 1/2 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. Muḥammad Muḥammad 'Alī
and Muḥammad Yūsuf 'Alī, c. 2. Kamadan, 1387 (October, 1945).

Kubrications. Coloured ruled border. Distinct stains. Worm
eaten. Poor condition. Not bound.

* 2. 4 2 5 + 1 5 + 4 6 + 1 + 2 4 5 2 5 1 + X 10.0"/
34.6 x 25.4 cms.

Written in clear naskh and nastaliq by Gul Muhammad. Late
12th cent. copies

State Worn holes. Fair condition. To be repaired and
re-bound

2491

T. I. 21

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 400. ll. 25. S. 11.2 x 6.0" 28.8 x 17.6 cms

Written in clear Mashk'at
1 20 September, in Kashmir

Refractious. Dampness Worn holes. Fair
Not bound.

State Muhammad

سید محمد علی خان پند - ۱۳۳۱

2492

T. I. 20.

Another copy of the same. Two leaves missing between ff. 2-3

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 372. ll. 29. S. 11.8 x 7.4" 30.2 x 19.0 cms.

Written in good naskh. A mid 11th cent. copy.

Contd. by learned men

Refractious. Dampness spots. Worn holes. Fair condition. To be
repaired, and re-bound

2485-2490

I. I. 23-28

~~A long text of the same name as the title~~

Vol. I From Sûra i to Sûra iv

Beginning : as usual.

Ending : ~~بسم الله الرحمن الرحيم~~ ~~الحمد لله رب العالمين~~ ~~والصلاة والسلام على سيدنا محمد وآله~~

Vol. II From Sûra v to Sûra ix.

Beginning : ای من کتب رسول الله صلی الله علیه و آله روایت کرده که - الخ

Ending : و هو رب العرش العظيم

Vol. III from Sûra x to Sûra xvi

Beginning : ای من کتب رسول الله صلی الله علیه و آله روایت کرده که - الخ

Ending : بسم الله الرحمن الرحيم

Vol. IV From Sûra xix to Sûra xxix

Beginning : as usual

Ending : و انت ربنا و انت ربنا و انت ربنا

Vol. V. From Sûra xxx to Sûra xiv

Beginning : ای من کتب رسول الله صلی الله علیه و آله روایت کرده که - الخ

Ending : و انت ربنا و انت ربنا و انت ربنا

Vol. VI. From Sûra xiv to Sûra cxiv, the end

Beginning : حم تبریک از کتاب قرآن مجید و انت ربنا و انت ربنا و انت ربنا
کتابت - الخ

Ending : ~~بسم الله الرحمن الرحيم~~

2483

T. L. 45

Another way to test $H_0: \lambda = 1$ (assuming the asymptotic IPD) is to use the following test statistic:

Beginning

Ending 15

ff 375. ll. 24. S. 133 $3 \times 7.5^{\circ}$ / 133 4×10.2 cms.

117

Address: _____

To be repaired, and re-bound.

2484

T. 1. 19.

خلاصة المنهج

KHULĀSATU'L-MANHAJ

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

This excellent copy contains the complete work

Всего книг: 10. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.

تاریخ و نام و نام خانوادگی : ...

4. 610, II 31. 5 133x34, 95x51⁷/341x215, 240x13,0 см.

W. J. ... 1985

$$C_{\alpha} = 1 + \frac{1}{2} \left(\frac{1}{\alpha} + \frac{1}{\alpha^2} \right) \quad \text{for } \alpha \in (0, 1) \quad \text{and} \quad C_{\alpha} = 1 \quad \text{for } \alpha \in (1, \infty).$$

red, Dampness stains, Good condition. Bound.

Ref. EIO. 2692-2695: Iv. A5B c⁸⁹.

2477

1.1.3.

Another copy of the same defective at the end. This copy contains
Sura 1 to verse 31 of 20.

Beginning 初級 初級者

و آج محل پر رقص ہاد و گیت ہر روز آتی ہیں
زمانہ ہجرت ۱۱

ff. 378, ll. 23. S. 12.2 x 8.2^{*} / 31.2 x 21.2 cms.

Walter H. Clegg, Clerk of the Court. An original and two copies.

To be repaired, and re-bound.

2478-2482

T 1. 41-44

منهج الصادق

1911 年 11 月 10 日

A related controversy is the question of an access to the system for the purpose of collecting information on the individual's behavior (1988/1989).

THE UNIVERSITY OF MICHIGAN LIBRARY

• (منهج الصادقين في الزام المخالفين)

The works are divided into five volumes :-

Vol. 1 From Sûta 1 to Sûta 111

Beginning : محمدی چون کلمات را فی بوحایت شد نسیه لطیف است ۴

و فو محبة سوانی (۱) که آهلیسون

Vol. II. From Sûra iv to Sûra viii

وَنَزِدْ بِكُنْهِ مَكِّيٍّ - الثَّغْوِ

2472

Leaf. 28

فتح المثنان

FATHU'L-MATHANI

A glossary of Qur'anic words arranged alphabetically and divided into a bâb for each alphabet.

It was compiled by 'Umar al-Sa'adî. It begins with (لا اله الا الله) and ends with (ا. نونس).

Beginning حمد و ثناء لله رب العالمين في صفة كبريائه و قدرته

Ending بونس م. يعجز عن عد و عده - علام

fl. 40- fl. 23 S. 11.0x6.6"/27.8x16.7 cms.

Written in cursive and nasta'liq by Mirza 'Ali Bâg, for Sayyid 'Ali Husain, in 1211/1896 at Hyderabad.

Arabic words in red ink. In the margin.

2473

Leaf. 10.

تفسير سورة بقره

TAF-SIR-E-SORA-E-HAQQAH

A collection of commentaries on the first sūrah of the glorious Qur'an, in a convenient, pocket-sized form. It begins on f. 4v.

Beginning این سوره را در قرآن یافتند ائمه اطهار بیت - ا. ح.

Ending دل را بهجت و مسرت بهر مدح و ثناء من استعجیل عطاء
من اهل ارضه و سمیه -

fl. 65- in 15 S. 11.5x 6.0"/29.0x15.2 cms.

Written in cursive and nasta'liq. A large, beautiful copy.

Red ink. Arabic text in cursive. Persian in nasta'liq. Early good condition. Bound.

2. Muqaddima e-Lafsi-e-Qāhri (f. 12-14) - Similar introduction to Urdu paraphrase by 'Abdu'l-Qādir b. Wāṣilī.

Beginning: الحمد لله الذي رأتك ونألى كـ - الخ

سبحك يا ذا الجلال والإكرام
 الحمد لله الذي رأتك ونألى كـ - الخ

Fading: "يا شيطان خذني من يدك" - الخ

وحي أولي من الله عز وجل
 الحمد لله الذي رأتك ونألى كـ - الخ

f. 14, ll. 23. S. 11.0x6.6"/27.8x16.7 cms.

Written in Arabic and Urdu in 12th century AD.
 Housed in 132 Arabic script.

Good condition.

2470

Taf 27

تفسير فتح العزيز

LAFSI-E-AH (f. 12-14)

A commentary on the last text (f. 12-14) containing the text of the Arabic text composed by Shaykh 'Adm' 'Azzal (Said Wāṣilī, f. 123, 1524).

The text is written in Arabic and Urdu in 12th century AD.

Beginning: سورة أول من هو ر س و ف - الخ

مكي است - الخ

Fading: من قرآن وحدثه بحسب ما سمع من أبيه

f. 14 + 310 d. 123 S. 11.0x6.6"/27.7x16.7 cms.

Written in Arabic and Urdu in 12th century AD.

2466

Taf. 8.

تفسير بسم الله

TAFSIR-E-BISMILLAH

A commentary on the verse Bismillah ar-Rahman ar-Rahim, compiled by Muhammad Amin.

Beginning: شاره معنی "بسم الله الرحمن الرحيم" هست که اسم الله خاص کرده شده است به الخ

Ending از من و در من به چیزی در وسط - هر چه هست از تو من گویم کرا

1. 20. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000. 1001. 1002. 1003. 1004. 1005. 1006. 1007. 1008. 1009. 1010. 1011. 1012. 1013. 1014. 1015. 1016. 1017. 1018. 1019. 1020. 1021. 1022. 1023. 1024. 1025. 1026. 1027. 1028. 1029. 1030. 1031. 1032. 1033. 1034. 1035. 1036. 1037. 1038. 1039. 1040. 1041. 1042. 1043. 1044. 1045. 1046. 1047. 1048. 1049. 1050. 1051. 1052. 1053. 1054. 1055. 1056. 1057. 1058. 1059. 1060. 1061. 1062. 1063. 1064. 1065. 1066. 1067. 1068. 1069. 1070. 1071. 1072. 1073. 1074. 1075. 1076. 1077. 1078. 1079. 1080. 1081. 1082. 1083. 1084. 1085. 1086. 1087. 1088. 1089. 1090. 1091. 1092. 1093. 1094. 1095. 1096. 1097. 1098. 1099. 1100. 1101. 1102. 1103. 1104. 1105. 1106. 1107. 1108. 1109. 1110. 1111. 1112. 1113. 1114. 1115. 1116. 1117. 1118. 1119. 1120. 1121. 1122. 1123. 1124. 1125. 1126. 1127. 1128. 1129. 1130. 1131. 1132. 1133. 1134. 1135. 1136. 1137. 1138. 1139. 1140. 1141. 1142. 1143. 1144. 1145. 1146. 1147. 1148. 1149. 1150. 1151. 1152. 1153. 1154. 1155. 1156. 1157. 1158. 1159. 1160. 1161. 1162. 1163. 1164. 1165. 1166. 1167. 1168. 1169. 1170. 1171. 1172. 1173. 1174. 1175. 1176. 1177. 1178. 1179. 1180. 1181. 1182. 1183. 1184. 1185. 1186. 1187. 1188. 1189. 1190. 1191. 1192. 1193. 1194. 1195. 1196. 1197. 1198. 1199. 1200. 1201. 1202. 1203. 1204. 1205. 1206. 1207. 1208. 1209. 1210. 1211. 1212. 1213. 1214. 1215. 1216. 1217. 1218. 1219. 1220. 1221. 1222. 1223. 1224. 1225. 1226. 1227. 1228. 1229. 1230. 1231. 1232. 1233. 1234. 1235. 1236. 1237. 1238. 1239. 1240. 1241. 1242. 1243. 1244. 1245. 1246. 1247. 1248. 1249. 1250. 1251. 1252. 1253. 1254. 1255. 1256. 1257. 1258. 1259. 1260. 1261. 1262. 1263. 1264. 1265. 1266. 1267. 1268. 1269. 1270. 1271. 1272. 1273. 1274. 1275. 1276. 1277. 1278. 1279. 1280. 1281. 1282. 1283. 1284. 1285. 1286. 1287. 1288. 1289. 1290. 1291. 1292. 1293. 1294. 1295. 1296. 1297. 1298. 1299. 1300. 1301. 1302. 1303. 1304. 1305. 1306. 1307. 1308. 1309. 1310. 1311. 1312. 1313. 1314. 1315. 1316. 1317. 1318. 1319. 1320. 1321. 1322. 1323. 1324. 1325. 1326. 1327. 1328. 1329. 1330. 1331. 1332. 1333. 1334. 1335. 1336. 1337. 1338. 1339. 1340. 1341. 1342. 1343. 1344. 1345. 1346. 1347. 1348. 1349. 1350. 1351. 1352. 1353. 1354. 1355. 1356. 1357. 1358. 1359. 1360. 1361. 1362. 1363. 1364. 1365. 1366. 1367. 1368. 1369. 1370. 1371. 1372. 1373. 1374. 1375. 1376. 1377. 1378. 1379. 1380. 1381. 1382. 1383. 1384. 1385. 1386. 1387. 1388. 1389. 1390. 1391. 1392. 1393. 1394. 1395. 1396. 1397. 1398. 1399. 1400. 1401. 1402. 1403. 1404. 1405. 1406. 1407. 1408. 1409. 1410. 1411. 1412. 1413. 1414. 1415. 1416. 1417. 1418. 1419. 1420. 1421. 1422. 1423. 1424. 1425. 1426. 1427. 1428. 1429. 1430. 1431. 1432. 1433. 1434. 1435. 1436. 1437. 1438. 1439. 1440. 1441. 1442. 1443. 1444. 1445. 1446. 1447. 1448. 1449. 1450. 1451. 1452. 1453. 1454. 1455. 1456. 1457. 1458. 1459. 1460. 1461. 1462. 1463. 1464. 1465. 1466. 1467. 1468. 1469. 1470. 1471. 1472. 1473. 1474. 1475. 1476. 1477. 1478. 1479. 1480. 1481. 1482. 1483. 1484. 1485. 1486. 1487. 1488. 1489. 1490. 1491. 1492. 1493. 1494. 1495. 1496. 1497. 1498. 1499. 1500. 1501. 1502. 1503. 1504. 1505. 1506. 1507. 1508. 1509. 1510. 1511. 1512. 1513. 1514. 1515. 1516. 1517. 1518. 1519. 1520. 1521. 1522. 1523. 1524. 1525. 1526. 1527. 1528. 1529. 1530. 1531. 1532. 1533. 1534. 1535. 1536. 1537. 1538. 1539. 1540. 1541. 1542. 1543. 1544. 1545. 1546. 1547. 1548. 1549. 1550. 1551. 1552. 1553. 1554. 1555. 1556. 1557. 1558. 1559. 1560. 1561. 1562. 1563. 1564. 1565. 1566. 1567. 1568. 1569. 1570. 1571. 1572. 1573. 1574. 1575. 1576. 1577. 1578. 1579. 1580. 1581. 1582. 1583. 1584. 1585. 1586. 1587. 1588. 1589. 1590. 1591. 1592. 1593. 1594. 1595. 1596. 1597. 1598. 1599. 1600. 1601. 1602. 1603. 1604. 1605. 1606. 1607. 1608. 1609. 1610. 1611. 1612. 1613. 1614. 1615. 1616. 1617. 1618. 1619. 1620. 1621. 1622. 1623. 1624. 1625. 1626. 1627. 1628. 1629. 1630. 1631. 1632. 1633. 1634. 1635. 1636. 1637. 1638. 1639. 1640. 1641. 1642. 1643. 1644. 1645. 1646. 1647. 1648. 1649. 1650. 1651. 1652. 1653. 1654. 1655. 1656. 1657. 1658. 1659. 1660. 1661. 1662. 1663. 1664. 1665. 1666. 1667. 1668. 1669. 1670. 1671. 1672. 1673. 1674. 1675. 1676. 1677. 1678. 1679. 1680. 1681. 1682. 1683. 1684. 1685. 1686. 1687. 1688. 1689. 1690. 1691. 1692. 1693. 1694. 1695. 1696. 1697. 1698. 1699. 1700. 1701. 1702. 1703. 1704. 1705. 1706. 1707. 1708. 1709. 1710. 1711. 1712. 1713. 1714. 1715. 1716. 1717. 1718. 1719. 1720. 1721. 1722. 1723. 1724. 1725. 1726. 1727. 1728. 1729. 1730. 1731. 1732. 1733. 1734. 1735. 1736. 1737. 1738. 1739. 1740. 1741. 1742. 1743. 1744. 1745. 1746. 1747. 1748. 1749. 1750. 1751. 1752. 1753. 1754. 1755. 1756. 1757. 1758. 1759. 1760. 1761. 1762. 1763. 1764. 1765. 1766. 1767. 1768. 1769. 1770. 1771. 1772. 1773. 1774. 1775. 1776. 1777. 1778. 1779. 1780. 1781. 1782. 1783. 1784. 1785. 1786. 1787. 1788. 1789. 1790. 1791. 1792. 1793. 1794. 1795. 1796. 1797. 1798. 1799. 1800. 1801. 1802. 1803. 1804. 1805. 1806. 1807. 1808. 1809. 1810. 1811. 1812. 1813. 1814. 1815. 1816. 1817. 1818. 1819. 1820. 1821. 1822. 1823. 1824. 1825. 1826. 1827. 1828. 1829. 1830. 1831. 1832. 1833. 1834. 1835. 1836. 1837. 1838. 1839. 1840. 1841. 1842. 1843. 1844. 1845. 1846. 1847. 1848. 1849. 1850. 1851. 1852. 1853. 1854. 1855. 1856. 1857. 1858. 1859. 1860. 1861. 1862. 1863. 1864. 1865. 1866. 1867. 1868. 1869. 1870. 1871. 1872. 1873. 1874. 1875. 1876. 1877. 1878. 1879. 1880. 1881. 1882. 1883. 1884. 1885. 1886. 1887. 1888. 1889. 1890. 1891. 1892. 1893. 1894. 1895. 1896. 1897. 1898. 1899. 1900. 1901. 1902. 1903. 1904. 1905. 1906. 1907. 1908. 1909. 1910. 1911. 1912. 1913. 1914. 1915. 1916. 1917. 1918. 1919. 1920. 1921. 1922. 1923. 1924. 1925. 1926. 1927. 1928. 1929. 1930. 1931. 1932. 1933. 1934. 1935. 1936. 1937. 1938. 1939. 1940. 1941. 1942. 1943. 1944. 1945. 1946. 1947. 1948. 1949. 1950. 1951. 1952. 1953. 1954. 1955. 1956. 1957. 1958. 1959. 1960. 1961. 1962. 1963. 1964. 1965. 1966. 1967. 1968. 1969. 1970. 1971. 1972. 1973. 1974. 1975. 1976. 1977. 1978. 1979. 1980. 1981. 1982. 1983. 1984. 1985. 1986. 1987. 1988. 1989. 1990. 1991. 1992. 1993. 1994. 1995. 1996. 1997. 1998. 1999. 2000. 2001. 2002. 2003. 2004. 2005. 2006. 2007. 2008. 2009. 2010. 2011. 2012. 2013. 2014. 2015. 2016. 2017. 2018. 2019. 2020. 2021. 2022. 2023. 2024. 2025. 2026. 2027. 2028. 2029. 2030. 2031. 2032. 2033. 2034. 2035. 2036. 2037. 2038. 2039. 2040. 2041. 2042. 2043. 2044. 2045. 2046. 2047. 2048. 2049. 2050. 2051. 2052. 2053. 2054. 2055. 2056. 2057. 2058. 2059. 2060. 2061. 2062. 2063. 2064. 2065. 2066. 2067. 2068. 2069. 2070. 2071. 2072. 2073. 2074. 2075. 2076. 2077. 2078. 2079. 2080. 2081. 2082. 2083. 2084. 2085. 2086. 2087. 2088. 2089. 2090. 2091. 2092. 2093. 2094. 2095. 2096. 2097. 2098. 2099. 2100. 2101. 2102. 2103. 2104. 2105. 2106. 2107. 2108. 2109. 2110. 2111. 2112. 2113. 2114. 2115. 2116. 2117. 2118. 2119. 2120. 2121. 2122. 2123. 2124. 2125. 2126. 2127. 2128. 2129. 2130. 2131. 2132. 2133. 2134. 2135. 2136. 2137. 2138. 2139. 2140. 2141. 2142. 2143. 2144. 2145. 2146. 2147. 2148. 2149. 2150. 2151. 2152. 2153. 2154. 2155. 2156. 2157. 2158. 2159. 2160. 2161. 2162. 2163. 2164. 2165. 2166. 2167. 2168. 2169. 2170. 2171. 2172. 2173. 2174. 2175. 2176. 2177. 2178. 2179. 2180. 2181. 2182. 2183. 2184. 2185. 218

ff. 478, ll. 27. S. 12.5 x 9.4"/31.7 x 23.7 cms.

Written in excellent nasta'liq on 42 baḥa, 1200/8 Mar., 1000

Good forward and good work on first two pages. Arabic text in red. Fine gold borders. Worn edges. Fair condition. Bound.

A rare work written during author's life time with marginal notes most probably in author's hand.

Endowment note dated 1216.

2465

M and K. 56

احسن القصص

1200/1000

A Persian copy of the ḥikma work by Ṣafī al-Dīn al-Ḥamīdī (d. 1216/1217) titled Ḥikma al-Muḥammadīya by Muḥammad b. Zayn al-Jūs (based on Ṣafī al-Dīn al-Ḥamīdī (chapter XII of the Ḥikma al-Muḥammadīya) deals with the story of Joseph. The compiler's name is not given.

The work is written in nasta'liq and contains 100 pages with 100 lines of text. The work is written in nasta'liq and contains 100 pages with 100 lines of text. The work is written in nasta'liq and contains 100 pages with 100 lines of text.

Beginning سر من مر حضرت محمد و بدی و نه و در کمال است و آری به کار
 دور و شب ماه و سال است - الخ

Ending و نه و در کمال است و آری به کار
 دور و شب ماه و سال است - الخ

ff. 52, ll. 15. S. 12.5 x 9.4"/31.7 x 23.7 cms.

Written in excellent nasta'liq on 42 baḥa, 1200/8 Mar., 1000

Good forward and good work on first two pages. Arabic text in red. Gold ruled borders. Worn edges. Fair condition. Bound.

A rare work.

ff. 135. ll. 15. S. 6.5 x 4.1"/14.5 x 10.3. cms

Written in good nasta'liq. on $\frac{1}{2}$ paper. 1015 A.H. 1606

Rubrications. Dampness stains. Worn leaves. For colln.

Last two folios by a later hand. Bound.

2464

Taf. 26.

شرح القرآن معینی

SHARHU'L-QUR'ÂN-E-MU'INI

A rare work on the Qur'an, written by Mir 'Abd al-
bâqir 'Abd al-Wahid Muhammad, a Sayyid Mirza, Sharif of Deccan.
Mir Muhammad 'Abd al-Wahid, a Sayyid 'Abd al-Wahid, the grandson
of a pious and learned ancestor, who had completed the work
dedicated this work to the Emperor 'Ālamgir.

The author was a pious and learned man, who had
'Ālamgir was a pious and learned man, who had
he completed the work in the year 1015 A.H.

1. Zafar al-Jalil, a pious and learned man.

Arabic. ASB Arabic No. 100

2. Intishāb-e-Şahih Mūsā.

3. Intishāb-e-Şahih Mūsā.

4. Intishāb-e-Şahih Mūsā.

5. Mir'âtü'l-'Adâlat, Persian.

6. Mir'âtü'l-'Adâlat, Persian.

7. Raddu'l Malâhid, Persian.

The above works are contained in the list.

Later on he wrote a book on the Qur'an, a Persian work on the Qur'an,
which he completed in the year 1015 A.H.

Beginning :

حمد و تحمید و تثنی و تمجید - مر محبوبی را سرست نه

حمد جمیع حامدان - تسبیح

Ending .

گفت و نه ب آن چه چون رنگ حبه - ست و محبتان

او چون رؤس شیطان بود

2461

Inf. 40.

Another copy of Part II. A. of the, in previous pagination 51
folios are missing between fl. 32 and 33.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

$\ln \frac{98}{1} = 1 + 0.673 - 0.74 + 0.12 + 0.14 + 0.18 + 0.18 = 0.35$

Written on poetry nearly 4 late 12th-century copy

Rule 10-1, amended 1987, states: Damages states where holes, fair condition. Not bound

2462

1 of 15

An open letter copy of 1771 is in the 1776-78 of chapter 4.

Beginning: as usual.

و رسیده شود، ملحقین اعلام هلاک مشترکان است

fl. 107. li. 13 to 16. S. 8.7×5.7 / 21.8×13.1 cms.

Written by Jeffrey D. Smith Volume 1 of 1000000

Rub. 21115. Dampness stains. Worm holes. Margins red
 or yellow. Preserved in alcohol. A worthless copy.

2463

Таб. 21.

تفسير سورة يوسف

$$|A| \leq |B| \quad \text{if } K(A, \gamma) \leq |B|$$

Alexander Jetté 1890-1976 on 10-10-1976 Hay Mazallar
Hussein al-Kholani ١٩٣٥ d' Khabâ ()

Beginning : أحسن قصص و عارواي و كبر و زحم و حب
او خود يست - الغ

Ending: توحیدِ حقایقِ عالی و سوتِ محمد مصطفی صلی الله علیه و آله و سلم

2458

Taf. 44.

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 1 + ff. 20. S. 40. 54, 01 X 2" 227 x 147. 15, 58 cms

Written in good naskh. After a 12th cent. copy.

Decorations. Headings of suras in red. Coloured ruled borders.

A few worm holes. Good condition. To be sighted & paired. Bound.

2459

Taf. 47

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 482. f. 21. S. 12. 56 x 67. 5.5" 105 x 255. 24 x 140 cms

Written in cursive naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Text in red. Damp stains. Worm

holes. Fair condition. Bound.

Seal: f'at hādū'ī Dār al-ḥ. 125.

عبد الله بن عبد الله

2460

Taf. 49

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 342. f. 21 + 34 on parchment. S. 11. 2" 280

Written in cursive naskh and cursive nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Arabic text in red. Damp stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seal: Ibrāhīm.

الحمد لله إبراهيم حليلا

2455

Taf. 46.

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Manuscript No. 50,526, 64 x 8 1/2 x 12 1/2 cm.

Written in good kh. Arabic with cent. row.

Red and gold and coloured borders. Damaged state.

Worm holes. Fair condition. Bound.

2456

Taf. 35.

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Manuscript No. 50,524, 64 x 8 1/2 x 12 1/2 cm.

Written in good kh. Arabic. Arabic text in red.

Gold and coloured ruled border. Arabic text in red. Worm holes.

Fair condition. To be repaired and re-bound.

2457

Taf. 32.

Another copy of Part II.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Manuscript No. 50,526, 64 x 8 1/2 x 12 1/2 cm.

Transcribed by Hân H. (Hân H. Hân), on 12/12/1902 7 December, 1902 at Amman.

Red ruled borders. Text in red. Damaged state. Worm holes.

Fair condition. Not bound.

Seal: Haidar Yâr Khân.

حیدر یار خان

fr. 300. ll. 19. S. 98×61 ; 7.4×10^4 250 x 154. IR 6×9 cm.

Written in clear caskh, on 2th 8cawad 1111, March 1700

Rubrications. Coloured ruled borders. Damages stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

2453

Fig. 41.

Another copy of Part I defective between nos. at the end of the copy ends in verse 8.

Beginning: as usual.

Ending: abrupt.

11 43, 11 25 10 1 ~ 10 30 7 2 110 5.1" 33' 48", 27 7' 35"

Written in ordinary naskh. A good 12th cent. copy.

Coloured lined borders. In wax, paper, oil, sand and s/z s o w r t e d
place. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound

2454

Taf 37.

Another copy of Part I, select * in the beginning of a fol. and ending in verse 90 of Chapter 17.

Beginning : 1300-1315

Ending abruptly رقص است! ہم سے! لا شر مگر رمی

И 230. И 41. 7. 108 04* 2,2 x 10⁸ см

Written in ordinary naṣḥ and ṯaṣṭīl. An early 15th cent. copy.
Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2450

Taf. 43.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 420, ll. 21. S. 12. 8.5 x 6.7"/12.5 x 17.0. cms.

Written in ordinary naskh in nasta'liq. A late 20 cent copy.

Ordinary unwan. Colour: lined borders upto f. 4. Rubrications and even Arabic text in red. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: Hardar Yār Khān.

حیدر یار خان

2451

Taf. 48.

Another copy of Part I. Defective at the end of verse 44 of Sata. This copy was left upon the table of Mirza Muhi-ud-din Mirza Akbar transcribed by Mirza Muhammad Ali Mirza.

Beginning: as usual.

Ending: as usual. و در حقیقت و سرایت مرثیه من هفت

f. 140, ll. 21. S. 8.9 x 6.7"/12.5 x 17.0. cms.

Written in ordinary naskh in nasta'liq. A late 19th cent copy.

Arabic text in red. Darfinesh. Fair condition. Bound.

Seals: Abul Hasan Ali Husayni

ابو قاسم حسینی

2452

Taf. 39.

Another copy of Part I. Defective in the middle. First 72 folios by a later hand.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 302. ll. 23. S. 10.9X6.8. 7.3. 19^o 27.5X17.1. 18.5X9.9 cms.

Written in clear cursive script. In one. Bound. 100/28 June, 1084.

Illuminated 'uwayā. Coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seals: of Mural Mu. 1206

صبر اللث - ١٢٠٦

2448

Taf. 34.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 520. ll. 19. S. 21.5X7.5. 8. X 4. 12.6X16.9. 21.1X11.6 cms.

Written in ordinary ruṣṣā. An early 12th cent. copy.

Ordinary 'uwayā. Coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2449

Taf. 31.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending:
احدا بكي. هي ر. و. ص. ع. عن ك. ك. ك. ك.
و. ع. ل. آ. ا. و. ا. ح. ح. ح. ح. ح. ح.

ff. 421. ll. 23. S. 10.9X6.8. 7.3. 19^o 27.5X17.1. 18.5X9.9 cms.

Written in ordinary ruṣṣā. An early 12th cent. copy.

Do the ruled borders. Text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding to be repaired.

Seals: Hardar Yār Khān.

حیدر یار خان

2445

Taf. 45

Another complete copy.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 71q. l. 25. S. 10.0 x 6.5. 7.1 x 1.6. 13.9 x 4.4 ms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

"nawab Good and coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seal: Mirza Muhammad Sa'adat, 1000. حواصی محمد سکندر - ۱۰۰۰

2446

Taf. 36.

Another complete copy, correct at both ends. It begins with verse 58 of Chapter 1 and ends with verse 102. 13, 11 x 3

Beginning: abruptly. همه بسحطون ایشان حرم گیرند
و ناخشنود باشند - الخ

Ending: abruptly. و از پس مشرکان بر روح و عیت مبنی رحمت

ff. 170. ll. 27. S. 11.0 x 6.5. 27.7 x 16.5. cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Annotations. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Preserved in a portfolio.

2447

Taf. 33.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Two full page vignettes in the beginning. Good and coloured ruled borders. Headings of the suras in red on gold. Marginal signs indicated by metalions. Text in bold script. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: R1 29, Rs. 1-3; E.I.O. 2081-2090.

2443

Taf. 29

Another complete copy of the same

Beginning: as usual

Ending: as usual

f. 603 ll. 29. S. 10.2 x 5.2, 7.5 x 5.5" 20.4 x 15.5, 18.4 x 13.5 cms

Written in good nashī. An early 11th cent. copy

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Text in red. Margins of a few folios at both ends renewed. Worm holes repaired. Fair condition. Bound.

2444

Taf. 30.

Another complete copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 529 ll. 2. S. 11.2 x 7.5, 7.5 x 5.5" 28.2 x 10.5, 10.3 x 12.5 cms

Transcribed in good nashī by Hasan 'Alī b. al-Imādī al-Kātib of Şan'ān, in 1057/1647.

Two full page ornate vignettes. Good and coloured ruled borders. Text in red.

Heading of suras in white on gold set in illuminated cartouches. Worm holes. Damaged folios repaired. Fairly good condition. Bound.

Beginning abraded - اعی در م اکانیں کہ محمد سر پورہ و جہوت - ا ج

Ending abraded - محمد بن محمد من بشہ ہر کر خواہد و بعد

ff. 40, 1, 25 - 110 x 65, 2 x 2, 127 x 15, 2 x 15 x 65 - 105

Written in good caskb - A late full cent copy

Good unwan, at the beginning of chapters 2 and 3. Gold and
colored lined borders. Arabic text in red. Dampness stains. Wear
holes. Margins once renewed. 2.9-2.1 damaged. Fair condition.
Bound.

2442

Taf. 38.

مواہب علیہ

MAWAHIB-³¹ - ALIYYAH (Ta'sreef-Husam)

- A complete copy of the well known and popular commentary on the
Glorious Quran by the same Kashgari compiled in 807/1414.

Part I- Beginning

بعد و تمہید فوائد محمد اعلی و تفسیر منی
ثنا خوانی - اللہ

Ending

معر - اللہ من اوراق من و متصفحہ بہ
الذلل برحمتک یا ارحم الراحمین

Part II Beginning

کہ بعض ذر مذہب صد فتن فاریدہ و مواہب اعلی
کہ بر حضرت شیخ رکی الدین - اللہ

Ending

کہمہ ماہ و روز و سال و تاریخ و وس
فی الحال دوم ذہر شوال نوشت

ff. 1, 1, 25 - 110 x 65, 2 x 2, 127 x 15, 2 x 15 x 65 - 105

Written in good Palat - A late full cent copy

The commentary is on :

Chapter 1 (سورة الفتح), on f. 51.

Chapter 2 (سورة البقرة), on f. 121v.

Chapter 3 (سورة آل عمران), on f. 202

Chapter 4 (سورة النساء), on f. 428.

Beginning :

بدا والله علىم حكيم-

ریت فافحه هر کتب و ریر حقه هر خطاب وصل برین عبادتی

مرامت حصه ت - ت صلوات الله و سلامه علیه و آله

قرآن خواند نست - الخ

Ending :

دوزینت گرفته لوح مسطور

همه نور است بل نور علی نور

47 ll. 30 x 24.5 x 5.6 cm, 8" 25.0 x 9.8, 19.2 x 14.4 cms

Written in ~~Arabic~~ na'ast, fine script. An early 19th cent. copy

Good 'unwā Golden ~~foilage~~ on margins and interlinear gold work on first two folios. Gold and ~~coloured~~ ink. Rubrications. Wormholes. ~~Text is damaged~~ but could ~~be~~ be repaired and re-bound.

Ref: R. 11, E.I.O. 2680.

2441

Taf. 23.

Arabic text in ~~Arabic~~ script. ~~Text is~~ ~~in~~ in the beginning and ~~every~~ at the end are in ~~Arabic~~ ~~the~~ contents are

Chapter 1, on f. 66.

Chapter 2, on f. 144v.

Chapter 3, on f. 41v, containing upto verse 120

Good unworn Gold and coloured ruled borders Rubrications.
Damp-stained, Worm holes, Fair condition Round.

2439

Leaf 20.

Another copy of the same.

Beginning

Ending بر راءه حین و مشهود سر نیز به بدید
وصلی الله علی نبینا و علیهم اجمعین

ff. 234. ll. 23. h. 8.7 x 5.4"/12.0 x 13.6. cms.

Transcribed by Muḥammad Sa'īd b. Muḥammad Muraḍ in ordinary
naskh, and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Round.

Seals: Harīr Yar Khān حیدر یار درکی - حیدر یار خان
- Mir Sultān Husayn میر سلطان حسین صوی احمد شاه
ادشاه غازی - 1174

At the end of the volume

2440

Leaf 22 حواهر التفسیر لاجل محمد الامیر

ḤAWAHRU'L-FAṢṢIḤ FI T-FHAWA'IM

A
request of
The
commentator
comment on the

The first covers chap-
ters, 1
The work begins with a
of the
(.)

Written in good naskh. A late 10th cent. copy with missing folios replenished by a later hand.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Preserved in a portfolio.

2437

Taf. 17.

Another copy of the same. It contains extra matter on ff. 348v-362v.

Beginning as usual.

Ending as usual on f. 48v, otherwise.

دیان حس د کره مومن ر گوید ان شقی می مقام امین... و آنه
وصحه و سلم

f. 302 ff. 16. S. 12.5 x 8.1 cm. 1st 7/12 x 12.5 cm. 1st 4 x 7.7 cm.

Written in good nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Brownish glazed paper. Good 'shāh' (wide) red borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. For condition, folios repaired and re-bound.

Seals: Shāh Nawāz Khān.

عبدہ شاہ نو ز خان

Muhammad Shāh on f. 19v.

محمد شاہ

2438

Taf. 19.

Another copy of the same.

Beginning as usual.

Ending: as usual.

f. 102 ff. 8. S. 12.5 x 8.1 cm. 1st 4 4th 12.5 x 15.1 cm. 1st 4 x 7.7 cm.

Written in good nasta'liq by Daulat 'Alī Khān A'zam on 12 Jan. 1710, for his master's son Sayyid Mahmūd on 14 Rabi' II 1130 (1 July 1710), at Daulatābād Fort.

اللهم صل على محمد

Autograph of Maximilian I of Mexico as he stands Hâm 1.

2435

Tab. 16

تفسير سورة يوسف

TAFSIR-E-SORAH-YUSUF

A further source mentions the author X I (*Sayyid*)
of the whom he mentioned therein as the first story
... .. with the story of Joseph. It
was compiled by Mu'izz al-Din Mahmud b. Farid Herati, a
as Mu'izz al-Miskin (d. 907/1502).

Beginning

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

مستكين معين المسكن - الخ

Feeding

[illegible]
$$1 \quad 0.2 \quad 0.4 \quad 0.6 \quad 0.8 \times 0.7, \quad 0.9 \times 0.8 \quad 1.0 \times 0.9 \quad 1.1 \times 1.0 \quad 1.2 \times 1.1 \quad 1.3 \times 1.2$$

Written in clear naskh, in 1073, 1064

On 11/17/1968, 5000 ft. W. of ...

Bound

Ret: IVC 355

2436

Inf. 18.

Answer copy of the same at contains every material, and
168-1734.

Beginning. as usual.

coding *accedat* on 1 5841' 100 ext 174 1 1 1 under:

من اهل السجود و من لا يصير و الحمد لله رب العالمين

fl 179 n. 21 or 22 S. $4.4 \times 3.5''$ 25.5×14.5 cm.

Part II Beginning:

قال ام اور ... قال اي ان الحصة بحجة مستعدة
است تا كيد ارجعت دهم انكا رست - الخ

Ending

و مشير براتنه مرام ست مستحسن بود - و شاع

ff. 125, ll. 41 v. 12.7 x 12.7 16.4 x 9.5 47.7 x 31.9 41.4 x 24 v. 1006

Written in good Bihār. A late 19th cent. copy.

Vignettes in the beginning. Matnna signs at the beginning of each
rua. Coloured ruled writers. Arabic text in broad script. Rubrications.
Worm holes. Fair condition. To be repaired and bound, in two parts.

Seals: 'Abdu'r-Rahim

مستدراة عن حق عبد الرحيم

Munir'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

In 1202/1584 this volume which must have been bound in two parts,
came to the library of 'Abdu'r-Rahim, in Aghajari. After a few
months he presented the work to Amir Naiman who appears to be a Shah
of that time.

Ref E. I. O. 2079.

2434

Leaf 4.

Another copy of the same work. It contains Part I from
chapter 7 ('a' a'rāi) to end of chapter 15 (al-Kahā) defective by a folio
at the end.

Beginning

... رة عرف جام ملي سب و صهي ك ...
هشت آیات رو - انخ

Ending, abruptly

قر ... شرمند ... ای ای ... و ...

ff. 30, ll. 25 v. 13 x 9.0 9.1 x 7.7 x 22.0 22 x 11 v. 1015

Written in clear Bihār. A late 19th cent. copy.

Coloured ruled board. Text in clear Bihār. Vignettes.
Fair condition. Key-arched and re-bound.

Seals: 1. Mahmūd.

یا محمود

2. Shaikh Bahādur.

شیخ بهادر

Marginal glosses. Notes in Arabic and Persian on folios 10-15 by a later hand on six folios in the beginning.

Beginning: بسم الله الرحمن الرحيم
فيقول المبدأ المغير - الخ

Ending: سبح و الحمد لله رب العالمين
آمين يا رب العالمين

ff. v + 132. ll. 23 S. 10.0 x 4.7"/20.0 x 11.8. cms.
Written in Arabic. Arabic text in Arabic.
Unwan Arabic text in Arabic. Arabic text in Arabic.
Worn and Arabic text in Arabic.
Ref: IvASB 957; IVC 334.

2430

Taf. 14.
Another copy of the same

Beginning: بسم الله الرحمن الرحيم
Ending: سبح و الحمد لله رب العالمين

ff. 152. ll. 15. S. 7.9 x 4.7"/20.0 x 11.8. cms.
Written in Arabic and Persian on 152 folios. Arabic text in Arabic.
ber, 1542.
Rubrications Arabic text in Arabic. Worn and Arabic text in Arabic.
Binding damaged.
Seals, Mfr. Ahmad. *Ab. 1227. میر محمد علی ۲۲۷
Previous owner's autograph.

2431

Taf. 13.
Another copy of the same

Beginning: بسم الله الرحمن الرحيم
Ending: سبح و الحمد لله رب العالمين

ff. 239. ll. 15 S. 6.7 x 3.6"/16.9 x 9.1. cms.
13

2428

Taf. 9.

تفسیر زاهدی

TAFSIR-E-ZAHIDI

A commentary on the Qur'ān by the famous scholar and
 Abū 'n-Naṣr Ahmad b. al-Ḥasib al-Dīnawarī as-Samānī and
 Dāwūd b. 'Abd al-Rahmān al-Ḥafṣī (d. 316/928).
 He has given the Arabic text with its meanings and notes, explaining
 points wherever necessary.

The work is written in the style of a commentary on the text of
 Sūra-e-Kahaf.

Beginning

بسم الله الرحمن الرحيم
 اول شیع (بسم الله الرحمن الرحيم)

Ending

الحمد لله رب العالمين
 حاضری او د

f. 362. ll. 31. S. 14.1 x 10.3; 11.6 x 7.3*/35.6 x 26.2; 27.8 x 18.6 cms.

Written in good Bahār. A late 9th cent copy

Coloured ruled borders. Ornate stamps at the beginning of each
 juz and lines indicating each section (فصل) in the margins.
 Rubrications. Archaic text in the script. Deep press stains. Warm
 hues. Damaged to some extent. To be repaired, and re-bound.

Ref. IVC 333.

2429

Taf. 11.

تفسیر یعقوب چرخي

TAFSIR-E-YA'QUB CHARKHI

A commentary on the last two parts (29 and 30) of the Qur'ān, preceded
 by Sūra-e-Fāṭha i.e. chapters 1 to 114 by Ya'qūb b.
 'Uthmān b. Maḥmūd al-Ḥaznavī a.k.a. Charkhi, (d. 838/1433).

Beginning: abruptly ... و انقبت عليك

Ending در سیه های مردمان رده و آدمیان

1 327 16 23 5 11 803 8904 2808128 2200138 cmx

Written in 2001 B.H. 1423 A.D. 1906 C.E. 1906

Counted need to be ... Text in cursive script with the word ALLAH in red. Headings of ... and ... in red. Dashes ... Writings ...

Seals of Mushirul-Mamalik. مشير الملک -

2427

Taf 5 البصائر في الوجوه والنظائر

VI BAŞÄ IR Fİ'L-WUJUH WA'N-NAZÄ IR

A critical study of the Glorious Qur'an, compiled by Abu l-Hasan al-Mu'in al-Nisāpūrī (d. 877-1181)

In the preface (divided into six parts) the commentator begins with the usual praise for Allah, the Holy Prophet, the ... and the Prophet's Family

Paşl 1, on f. 2 begins with the attributes of the Glorious Qur'an. The commentator states that the truths and subtleties (حقیق و ذوق) of the Holy Book are manifest as well as obscure (ظہری و باطنی). There are twelve doctrines like the twelve zodiac signs and 360 ways of life just like 360 degrees. This book is a source of pleasure for the devout and that of warning for the wicked. It is by no means the beauty to describe when the water of all the oceans turned into ink will not suffice.

Paşl 2, on f. 2v, since it is ordained that the Muslims should understand the text properly he undertook this work but not nervous as there is a warning in a hadith that the commentator should not give vent to his personal views

2425

ترجمہ تفسیر طبری

2426

and verse 10 of Chapter 22 are missing

5 Risāla-e-Waqf e-Lāzım, (A 2/ 58)

A track on a signpost shows by an arrow symbol a road

Beginning الحمد لله . . . ام بعد . بدل ہی جو سده قرآن - بخ

Ending: و.ج.سوره - انت را می برم بیست و نه بار تا خوب

6. Muhtasar der Bvân-e-Fayzî-Şer'ân, (n. 83 + 4v)

Another version of the same as in Nos. 240, 1 and 241, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending about 9 رهم است که در دفتر خط

fl. 64, ll 15. S. $9.4 \times 6.4^{\circ} / 23.6 \times 162$. cms

Written in ordinary script. A date 13th Dec 1918.

Rubrication. Dampness stains. Worm holes. Poor condition.
Not bound.

ff. 102 ll. varying 5.6 x 4.1" x 1.5-1.7 lines

Written in a few different attitudes of ordinary nasta'liq and nasta'liq.

A mid 13th cent. copy.

Dimpress stains. Worn holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2424

Aq. 138/1-7.

مجموعه

MAJMO'A

This copy contains the following works on tajwid
1. Maqṣūḥi' Ḥaṣṣ (ff. 1-6v)

Another copy of the same. (K. Nos. 2421 and 2422)

Beginning: as usual

Ending: as usual

2. Risāla e-Qur'at, (ff. 7-31)

A tract by an anonymous person.

Beginning

الحمد لله الذي جعل محمدك محمد واصلين إلى كمالين

Ending:

ثم بين المغرب إلى العشاء

3. Tuḥfa-e-Sulaimānī, (ff. 31v-52).

A tract compiled by Ḥasib al-Nasīm al-Qāfī and dedicated to
Shāh Sulaimān Ṣafawī, (1077-1105/1667-1694)

The work is divided into a maqāḍima, ten bābs and a khātma

Beginning

الحمد لله الذي أرسل الله قس على عبده ليكون له من عباد

Ending

روده... ثم بين ذلك ما ذكره

4. Risāla dar Bayān-e-Nuṣṣāḥāt (ff. 52-59).

A tract on silent nun etc. by an anonymous person

Beginning

الحمد لله... دار حكام الملوك... و... و...

Ending

الحمد لله... و... و... و...

والله اعلم بالصواب

Rubrications Dampness stains Worm holes Fair condition.
Not bound

Ref:- 1. EIO. 2705
3. IvASB (Art). 333.

2423

F 1.69/2.

مجموعه

MAJMU'A

This copy contains the following works

1. Nazmu'l-La'ali, (ff. Iv-10).

A versified treatise on correct recitation composed by Abū al-Qāsim, better known as Qāṭi and dedicated to shāh 'Abd al- . It is different from the one with the same title noted in No. 2422.

This copy is defective at the end.

Beginning

ای کلام از نظام دت به کت در صم
وی رشود شک یی شدت را ن شدم بکام

Ending: abruptly

ر در مو جعفر . بهر جعوب و اویس و روح
آمد مرطفس

2. Fāl-Nāma, (ff. 11-13).

A versified tract on divination by the aid of the Glorious Qur'ān by an anonymous person.

Beginning:

هر که از قرون آشد فال خویش
بی شک. او واقف شود از حال خویش

Ending: abruptly.

رعاب آیدت حذر خویش
با بگوید در کنارش یار خویش

3. Fāl-Nāma, (ff. 13-18v).

Another versified tract with a few lines in prose by an anonymous person. It is defective in many (مهم).

2420

Taj. 8.

عجائب التجويد

AJAL VISIT

A book that was written by a person whose address is not known. The copy is defective at the end.

Beginning :

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

Ending :

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

ff. 10, 11, 12. S 93 x 0.0 / 25.0 x 15.2 cm

Written by ...

He ...

from ...

2421

Taj. 8.

ر. ح. ج. د.

١١

person It deals with some main topics of tajwid

The work is divided into 8 parts

Beginning

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

Ending

الحمد لله الذي أول امرقن ... أما بعد

ff. 6, 11, 11 or 12. S 8.0 x 5.1 / 20.0 x 13.0 cm

Written by ...

He ...

References ... Position ... Preserved ...

Taj 9. فصول جماليه و رساله تجويد

FUṢŪL-E-JAMĀ'ĪYA AND RISĀLA-E-TAJWĪD

This copy contains two works. —

1. Fuṣūl-e-Jamā'īya, (ff. 1v-41v).

A short treatise on correct recitation compiled at the request of those fond of tajwīd. The title is on f. 1v, but the author has not given his name.

The work is divided into a muqaddima, 10 fās' (1. in text), and a khātima on usual topics.

Beginning: الحمد لله الذي يؤمنس بعهده على الإيمان - أما بعد بدأ ابن
مختصر يست در بيان عجويد قرآن - الخ

Ending: يا مبدء حود بجهه مستعجه است - و لله عزم

2. Risāla-e-Tajwīd, (ff. 42v-77)

Another short treatise by Muhammad b. 'Ad b. Muhammad a't-Husainī.

This copy which is left incomplete at the end is divided into a muqaddima, 2 hābs and a khātima. The divisions and sub-divisions are not properly marked, and spacings are left blank. There is great confusion, and hence these are not enumerated.

Beginning الحمد لله الذي هدانا لهذا... أما بعد جسي كرم
افرا امباد - الخ

Ending abruptly چون كوف و بصرى در ...

ff. 77. ll. 14. S. 6.1 × 3.3"/15.6 × 8.6 cms.

Written in good na'kh, in 1045-1064

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Round

Both works are rare.

Muhammad Hasan Farooqi, with the revelation of the
Garden of Aurangzeb, has written a book titled "The
Garden of Aurangzeb".

Beginning

لَا يَمْلِكُ لَكَ فِيهَا شَيْءٌ
لَا يَمْلِكُ لَكَ فِيهَا شَيْءٌ

Finding

حدثنا الألبان في حديثه عن عمار بن عبد الله بن

0, 20, 11, 12, 5, 21,0 x 0,1 * 27,8 x 16 7, cms.

Written in great haste and dictated by Jinnah at Baghbanpura
Husain, on 12/1/1904, at Hyderabad

1. *Staphylococcus aureus* (Gram +) 1000000

2418

رساله در تعدادات آیات قرآن

KINAYDAR LADĀPAṬI AYAL ECU AN

A critical study of the Georgian Qur'an dealing with the number of verses, new and old, and the contents of the text as contained by Hacın, Hısnı and Uzunân whose period is not known.

Beginning:

لا حرج، زیرا که این فقره هم که در بیان حسن و عیون و ...
الله کید الشیطان می گوید که - اغر

Ending.

حرم لی لارض ان اكل احدها لایه حرمه یورور
والنسی فی توسع الوصول و علم الحديث

$\theta = 10^\circ$, \parallel 1×10^{-6} 2×40 5×8 $2 \times 6 \times 1.6$ $8 \times 6 \times 1.6$

Write in cursive hand and on a 10¢ United States copy.

Rubric at _____ column _____ bar _____ leaf _____ folio _____ source
to us damaged _____ word _____ bar condition _____ To be re-bound

A rare work.

The work is divided into ten *bāb* and a *khātima*

| | |
|---------------------|--|
| Bāb i, on f. 11. | باب اول در خارج حروف |
| Bāb ii, on f. 16. | باب دوم در مدت حروف |
| Bāb iii, on f. 21. | باب سوم در تهجیم و اولاد حلا |
| Bāb iv, on f. 24. | باب چهارم در مدت حروف |
| Bāb v, on f. 29v. | باب پنجم در اندام حروف |
| Bāb vi, on f. 35v. | باب ششم در تون و لحن و یون و یون |
| Bāb vii, on f. 41. | باب هفتم در کسبت و وقف و وصل |
| Bāb viii, on f. 46. | باب هشتم در استعاده |
| Bāb ix, on f. 49v. | باب نهم در رسم نه گفتن |
| Bāb x, on f. 51. | باب دهم در رسم خواندن و مدح |
| Khātima, on f. 52v. | خاتمه در باب خلافت راویان امام عصر |
| Beginning | حمد و ثناء و اشعار و کلمات و معانی و معانیات |

Ending : کلماتی کوفی راوی او و الحارث و وی

ff. 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000

We have received this manuscript from the library of the

British Museum, London, and it is now in the possession of the

British Museum, London, and it is now in the possession of the

Poor condition To be repaired and re-bound

A work of local interest

2417

Taf. 18/5

خلاصة النوادر

KHULĀṢATU'N-NAWĀDIR

An abridgement of the *Shuharāt al-Salāṭīn* by *Shah Nawādir* Bayan al-*Ulayā*, *Qandahar*, undated at the end of the text.

After completing his education, the author left his native land of Samatpand, and stayed for a while in the court of Akbar at Agra. He was to be decided to go to the Mughal court where he came to Delhi in 1104/1703 and proceeded to the Deccan where the Mughal Emperor, Aurangzeb was staying. He was employed as an Amin in Jadh's court and employed by the title of Ibadat Khan. In 1108/1707 when Qutb Khatun Khan died, he was promoted to that post.

In 1110/1707 however, the Emperor Shah Aurang Bahadur Shāh I, permitted him to proceed to the Mughal court and to stay there long enough to defray the expenses of his journey and to stay there with Amānat Khān and Durrat Khān.

In 1120/1708 he left Surat for Jeddah and spent three years in Mecca and Medina where he met the famous Qurrās of the time.

He started this work in Mecca in 1121/1709 (ربیع الثانی ۱۱۲۱) and completed it in the same year in Medina (1127/1715 and 527-537).

Beginning پر نامہ سام آلاء نامش - فتوان - ست و کلامش

Ending و مصطفی اگر کسی کند نہ - عیش و حوہ و کام و...

ff. 54 + 2, ll. 25. 5.0 x 6.4" 24.0 x 16.2 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Headings in red with many parts of the text in red ink. The text is in black ink. Worn boxes. Fairly good condition.

A rare and valuable work.

2414

Taj. 12.

کفایۃ القاری

KIFĀYATU'L-QĀRI

A versified and concise treatise on correct recitation composed in 1130/1724, by Saifuddin. The mathnawī has 50 chapters, and is divided into 15 bābs on usual topics.

The date of composition is given in the last couplet as:

(تمت رسالہ سال ۱۱۳۰ھ)

Bāb vii, on (إلى آت) on f. 21.

Bāb ix, on (الرسم) on f. 23v.

Bāb x, on (الماءات) on f. 24v.

Bāb xi, on (أبواب) on f. 30v.

Bāb xii, on (أبواب حروف وسط حروف)

Rukū' on (أعرض) on f. 31

Khātma, necessary points for the copy on f. 32.

Beginning. الحمد لله على أسر و خدمت ... أم ...
گوید عبد الباری - النسخ

Ending: و به جاری و به این مدور عب من ... و که به - نسخ

f. 150 ll 21. S. to 200. 8 1/2 x 3 1/2" 27.5 x 10 1/2. 21 4 x 9 5 cms

Written in good nashī, on 8 Jumādā I 1105 = 21 July 1695.
Dacca (Jahangir 1620)

Rubrication Red ruled borders Worn hole Fair cond.
Bound.

Seals Mahammad Mahammad, 1105. ۱۱۰۵

Shakh 'Abdu'l Qādir 1101

شیخ عبد القادر
شیخ عبد القادر - ۱۱۶۱

2413

Taj. 6.

سبعة الثواني

SABA'TU'TH-THAWÂNĪ

A versified treatise on the usual topics of tajwīd with marginal
additions. This copy, in all probability, is an autograph one by Fada'l
Khan takhallus Yūsuf.

It is different from the partly versified treatise having the same title and described in IVC 345/1.

Beginning الحمد لله ... بدیع جمع که بر تحریر مشتبه و تقریر مستدرسه
در قلم آورده شود - الخ

Ending و - ریت ثم ریت ثم بمطاع عم آمین - و غنیه اعلم بحسب

fl. 8, ll. 5. 8.2 X 4.6⁸/20.6 X 11.5. cms

Written in ordinary naskh, on 16 Rāḥ 1080 to December, 1088

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be rebound.

Ref: IVASB 985/2.

2412

Tag. 13 کُنُزُ الْإِيمَانِ فِي قَوَاعِدِ الْقُرْآنِ

KANZU'L-IMÂN FI QAWÂ'IDI'L-QUR'ÂN

A treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ân, compiled by 'Abdu'l-Hārī Taqīu'd-dīn Muḥammad b. Abū'l-Faṭḥ a'l-Hamadānī a'l-Qāfī, in 1086/1075.

The work is divided into a maqaddima, 12 bābs, one rukū' and a khātima, as under:-

Maqaddima on lives of qurrā, on f. 2.

Bāb i, on 29 alphabets, on f. 7

Bāb ii, on (الد والقمر), on f. 9.

Bāb iii, on (التوبى و بون ال كه), on f. 12

Bāb iv, on (الراءات), on f. 15.

Bāb v, on (هزات), on f. 16v.

Bāb vi, on (الفتح والاماله), on f. 18v.

Bāb vii, on (الروم والاشمام), on f. 20.

Ref: Nos. 2410 and 2446

The work is written in the style of a *ḥikma* (مناجاة)

Folios in between 111 and 116 are missing. Notes at the end.

Beginning

بسم الله الذي هدانا لهذا...
وذلك الله وإيانا كه- أخ

Ending

ربطه هر که که در دستم می رود...
غیب شد هر که از من جدا شد...

f. 118 + 4 ll. 10 of 1. S. 15 x 5.0" 6.0 x 4" 21 x 14.0, 16.7 x 8.5
Cms

Written in ordinary *naskh* and *nasta'liq*. A late 14th cent. copy.

'Unwān. Rubrication. Red ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: (2) 17 ASB 984.

2410

Taj. 3.

Another copy of the same by Shukri. Ref. Nos. 2409/1 and 2424/6.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

f. 43 + 1. ll. 7. S. 8.3 x 5.9" 20.0 x 15.0 cms.

Written in bad *naskh* and *nasta'liq*. An early 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2411

زينة القارى

Taj. 17/2.

ZINATA'L-QARI

A short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān, compiled by Nuzrat b. 'Umar, alias Iskandar.

The work was undertaken by Ibn Ibrâhîm al-Muṣṭafâ Qârî, during the reign of Shân 'Abbâs II (1052-1077/1642-1666) the Salavî (1). It was commenced in Mecca and completed in Madîna (2) in 1067/1657.

This work is for the Shâtes and is divided into a Muqaddima, two and a Khâtima, as under:

Muqaddima, on the attributes of recitation, and

Bâb 1, on f. 7 باب اول در محرر - حروف و مورم

Bâb 2, on f. 9v. باب دوم در بیان صفات حروف

Bâb 3, on f. 10v. باب سوم در بیان حروف مرآت و مخرج

Bâb 4, on f. 18v. باب چهارم در بیان احکام موزون و موزون

Bâb 5, on f. 21v. باب پنجم در بیان ادغام

Bâb 6, on f. 26v. باب ششم در بیان گناه

Bâb 7, on f. 27 باب هفتم در بیان مد و حروف مد

Bâb 8, on f. 30 باب هشتم در بیان احوال و کس و اسم الله هو

Bâb 9, on f. 38v. باب نهم در بیان وقف

Bâb 10, on f. 42v. باب دهم در بیان ریه و لحظ و کیفیت راق

Bâb 11, on f. 50v. باب یازدهم در بیان اختلاف و تفاوت

Bâb 12, on f. 103v. باب سیزدهم در بیان حلاوت و سعه در سوره
فاحه و احلاص

Beginning حمد بحمد و تالی بهمد - حضرت ذر و حکیمی در سر - که
1142 قدرت کامله - انج

Ending: و در آن استماع دیگر مطلبی دیگر بود -

2. Mukhtasar dar 'Ilm-e-Tajwîd (I 111v-138v). A short treatise on correct recitation with special reference to حروف compiled by Ustâd Shukrî whose name is given at the end.

Taj. 18.

نظم لالی

NAẒM-E-LU'ĀLĪ

A versified treatise dealing with the usual topics of tajwīd, composed during the reign of Sulṭān Abdullāh Qutb Shāh of Golconda, compiled by Abū'l-Qāsim Muḥḥaḥḥ, taḡhūṣ Naẓm, in 1001, 1003.

(نظم لالی ۱۹۱)

There are ۳۷ (۳۷) couplets in this poem

Profuse marginal glosses

Beginning

فردا رب بلاغت ان محس دان معنی - کان بود بسیار
معنی و معبد و مختصر

Ending

مولانا مشهد ادم رب - برصا است در دکن برصا

ff. 16. ll. 6. S. 9.4 x 5.6"/28.8 x 14.2. cms.

Written in good naskh. A late 18th cent. copy.

Headings in red. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound.

A rare work.

Taj. 1

تحریر الذرا - مختصر در علم تحوید

ILHĀL-IL-ḤURRAH - MUḤTAṢṢAR DA'IRAT-ME-TAJWĪD

This copy contains two works :-

1. Muḥṭaṣṣar Qurrān il-Ḥurrah

A treatise on the correct reading of the Qur'ān, a translation of Ḥaṣṣan's (a'l-Kūfī) reading.

| | |
|--------------------|--|
| Fasl 1, on f. 1v. | فصل اول در بیان مخارج حروف |
| Fasl 2, on f. 3. | فصل دوم در بیان مد و قصر |
| Fasl 3, on f. 4 | فصل سوم در بیان ادغام |
| Fasl 4, on f. 4v | فصل چهارم در بیان طهار |
| Fasl 5, ibid. | فصل پنجم در بیان نصب |
| Fasl 6, ibid. | فصل ششم در بیان احاطه |
| Fasl 7, on f. 5 | فصل هفتم در بیان طهار بعضی از حروف |
| Fasl 8 on f. 5v. | فصل هشتم در بیان میم - کی |
| Fasl 9 ibid | فصل نهم در بیان تهمیم و ترفیق راآت |
| Fasl 10, on f. 6. | فصل دهم در بیان غلط و ترفیق لامت |
| Fasl 11 ibid. | فصل یازدهم در بیان تمجید و ترفیق افعات |
| Fasl 12, on f. 6v. | فصل دوازدهم در بیان وقف و اواخر کلمات |
| Khatimah, on f. 7. | خاتمه در بیان رموز که مصحف و صحیح کرده اند |

Notes on *مصیلت دعا بعد نماز* on ff. 1v-3, by a later hand.

Beginning الحمد لله النکمة الخیر فی الدنیا . . . اما بعد، این رساله ایست
مختصر مفید در بیان تجوید - الخ

Ending و ه اب ه علامت عمر مصری - تمت بحمد الله لیسلم
الذی اوسع لطفه . . . و آله الطاهرین

ff. ii+7. 11.20. S. 8.6 x 5.2^o/21.7 x 13.3. cms.

Written in good nasta'liq, by Husain Khan Ardabelli, on 14 Šahr
1051/15 May, 1614, at Jahānābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Ref: IVC 342 (Margins of ff. 1v-3).

Seals : ۱ Muḥammad Zuhūr Aḥmad

Muḥammad Fayyāḍ.

Muḥammad Shukūr.

Autographs of previous owners. :

محمد طه‌ور احمدی

محمد فیاض

محمد شکور

2406

M and K 74/2.

مقصود القاری

MAQṢUDU'L-QĀRĪ

A short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān by Muṭizū'd-dīn Qāḍī alias Qāḍī Khān Iṣḥāqī. The work was dedicated to the Emperor Jalānshīr (1014-1037/1605-1628). It is divided into a muqaddima and several short faṣṣ.

Beginning

حمد بی حد و نهای و مد مر حضرت قاری را که قرآن مجید

و فرقان حمید پروردگار و مومنان است - انسخ

Ending :

و مد الله کثره و مد موافق تغییر نیست بخلاف از وی

که همه اینها موافق تغییر است - والله اعلم

f. 68 ll. 11. S. 6.3 x 9.0^o/15.9 x 10.0. cms

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrication. Dampness stains. Worm holes repaired. Fair condition. Bound.

2407

Taj. 4.

رسالة تجوید

RISĀLA-E-TAJWĪD

A short treatise on correct recitation compiled by the father of Hukaymū'l-ḥāḥ.

The work is divided into twelve faṣṣ and a khātima, as under

2404

Tal. 11.

Another copy of the same.

Beginning 1980-1984

Feeding: 25-40g

♂ 32. 11.17. S. 8.5 × 5.7* 21.5 × 14.0. cm.

Written and revised by: *Archie, the Chief Editor*

DDT, DDE, and DDD were determined by gas chromatography-mass spectrometry (GC-MS) using a Hewlett-Packard 6890 gas chromatograph and a Hewlett-Packard 5973 mass spectrometer. The carrier gas was helium at a flow rate of 1 mL/min. The oven temperature was 100°C for 1 min, then increased to 250°C at 10°C/min, and held at 250°C for 10 min. The mass spectrometer was operated in the electron impact mode at 70 eV. The mass range was 40–300 m/z. The data were analyzed using the Hewlett-Packard ChemStation software.

2405

معدن القراآت

Taj. 15.

MA'DANU'L-QIR'AAṬ

A comprehensive work on street restoration compiled by Muḥarrak
 Pīrī Ibrāhīm, a pupil of Hāzrat Qasrī Saikh Ibrāhīm al-Shaykh
 Chaylān (1855/1875) and published in the London, Asian Library
 (f.4)

The date of completion 984 i.e., given as 20th Feb. 1974
(۹۸۴ هجری قمری) and the time 5.01 p.m.

The work is divided into a number of chapters, but the main part of the book is devoted to the study of the *khafma*.

مصل اول - رد کر محصلت قرآن ، داری

مجلد دوم در آداب قرآن

و در ذکر معرفت حضرت محدومی شیخ چندی روح

مصر چهارم ذرات هفت قرآت

من بعد در نامه اسی جهت فوری مه - مرده روی

Taj. 10.

قواعد القرآن

QAWĀ'IDU 'L-QURĀN

A treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān compiled by Yār Muḥammad ibn Khudā'īdād a s-Samarqandī. The work was dedicated to the Shaibānī Prince, 'Ubaḥau'llah, (640-646/1533-1539), and is divided into 12 bābs.

Besides marginal glosses, this copy contains

1. Sajawandī's poem on tajwīd, on f. 94-95.

It deals with (حم حرائب) h zb or manzh.

Beginning: حافظ این نظم را بشو کنون - تا ترا در وقت بشو رهمون

Ending: این ذکر تشدید را لازم بگیر - تا پید کفر دات تو بپذیر

2. A note on مسمکت قرآن , on ff. 95-101

3. A note on the famous ten— العشرة الكرام بأسمائهم ورموزهم

to Shaikh a'l-Jaūzī's father, on f. 100v.

4. A note on different readings of "Ta'wudh". (تمود)

Beginning: حمد بی حد وندی بی عد حضرت قادری را که قرآن مجید
و فرقان حمید بر ما فرستاد - الخ

Ending: سورة الإخلاص كمؤ - والله اعلم بالصواب وإليه المرجع والمآب

B. 94+7. ll. 9. S 44x6.4" 24.0x15.6 cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Ref: E.I.O. 2703; IVASB 973-974.

Appendix A table is drawn on fl. 101v-102, wherein all such words occurring in the whole text are tabulated, which are recited differently by different schools of Qāris—'Sabā'—'Ashar

Tables are drawn on fl. 13v-143 giving description about such words throughout the text from the beginning to the end

Beginning: الفرة، بحر نم کبف وقع - ا ح

Ending: وقس مدحه نقر حرکه الهمزة إلى اءء و قد ذکر فی لأصول

fl. 133 fl. 17. 8. 10.2 x 6.8, 7.7 x 4.7" 15.8 x 17.2 14.6 x 12.0 cms

Written in good nashk by Faḥḥullāh b. 'Umar al-Hāfiz al-Shirwānī, Dhulhijja, 867/August, 1463.

Ruled borders Dampness stains Worm holes, repaired. Good condition Bound

An important and rare work.

2402

Taj. 17. منهل العطشان فی رسم 'حرف القرآن

MANHALU'L-'ATSHÂN FI RASM AHK FI'L-QUR'ÂN

A critical study of the Glorious Qur'ân dealing with the orthography in different countries. The author, Ṭāḥir Ḥāfiz al-Jahānī, submitted to the ruling Sultan, Abū'n-Nasr Shamsu'd-Dīn Bahādur, (1404-1447), and obtained his permission to note corrections on all available copies in the metropolis of Istabân. He compiled this treatise as a guide, and divided it into a few parts.

The title stands for "The drinking place for the thirsty in (quenching the thirst for) the orthography of the Qur'ân."

Beginning حمد و سپاس ی حد و قیس پادشاهی ر که - الخ

Ending بعد از لام آلف چه در اسم است معنی همد کرد و عود حو
جزای او، بانید - و الله اعلم بالصواب

fl. 41. fl. 19. 8. 8.2 x 4.6, 6.1 x 2.7" 20.4 x 11.6 15.2 x 6.8, cms

Written in ordinary nashk and nasta'liq. A late 12th cent. copy. Rubrications. Coloured ruled borders Worm holes Fair condition. Bound.

A rare work

| | |
|--------------------|--|
| Bāb 9, on f. 91. | باب التاسع في معرفة التوسعة في مذهب حمزة وهشام في الوقف |
| Bāb 10, on 91v | باب العشر في معرفة السبعة في مذهب حمزة وهشام في الوقف |
| Bāb 11, on f. 92 | الباب الحادي عشر في الاطهار والانعام |
| Bāb 12, on f. 93 | الباب الثاني عشر في تعاليمهم في ادغام إد وقد واء ال ت وهي وبل وقل |
| Bāb 13, ibid | الباب الثالث عشر في ادغام حروف فرقت بحارحها |
| Bāb 14, ibid. | الباب الرابع عشر في احكام حروف - كيه و تسون |
| Bāb 15, on f. 93v. | باب الخامس عشر في جمع و ايماء من القصص |
| Bāb 16, on f. 94 | باب السادس عشر في امالة هذه التبيت في الوقف في مذهب الكيناني |
| Bāb 17, ibid. | الباب السابع عشر في مداهمه في الراآت |
| Bāb 18, on f. 94v | الباب الثامن عشر في البلاسات |
| Bāb 19, on f. 95 | الباب التاسع عشر في الوقف على اواخر الكلمة |
| Bāb 20, ibid. | الباب العشرون في الوقف على مرسوم الخط |
| Bāb 21, on f. 95. | الباب الحادي والعشرون في مداهمه في رآت بلاسة |
| Bāb 22, on f. 97 | الباب الثاني والعشرون في مداهمه في آت روتد |
| Bāb 23, on 97v. | الباب الثالث والعشرون في خلاص في آة من كثير |
| Bāb 24, on ibid | باب اربعة وعشرون في محارج حروف وسهتها |
| Beginning : | صحيح الخط السود اعود بانه من الشيطان برحيم - ارجع |
| Ending : | تمون ، و بطائم تعهون ، و حهان هه |

Volume II (ff. 86v-87v) وفي الكتاب اثني حملتها مشعر مصورا متروحا
مبيناً مرتباً غاية التبيين والتزيين

This volume is given the name of al-Tashkir 'ala Tariqit-Tashjir (ff. 86v), and it begins with an Arabic preface followed by diagrammatic trees explaining all the salient points raised in the 33 bābs of Volume I.

A few more charts are appended on f. 79v ff.

Beginning: الحمد لله الذي رزقنا بحال قدره ووال نعمه - بخ

Ending: عن لوائح محفوظ أمر الله عز وجل

Volume III (ff. 87v-100) وصفت لأصول في أصول محصورة
مقصورة مضبوطة

In this volume the author claims to have explained all relevant points by tabulate charts covering 11 folios which no other author has done.

These tables are divided into 24 bābs as under:—

Bāb 1, on f. 87v باب الأول في التمود والسمة

Bāb 2, on ibid. باب الثاني في مذهب أبي عمرو وفي الإدعاء الكبير ذي المثليين
في كلمة وفي كلمتين

Bāb 3 on f. 88. باب الثالث في مذهب أبي الإدعاء الكبير ذي المتقاربات في
كلمة وكلمتين

Bāb 4, on f. 89v باب الرابع في بيان المد والقصير

Bāb 5 on f. 90. باب الخامس في بيان الهمزتين من كلمة

Bāb 6 ibid. باب السادس في بيان الهمزتين من كلمتين

Bāb 7, on f. 90v. باب السابع في الهمزة المفردة في مذهب
ورع وأبي عمرو

Bāb 8, on f. 91. باب الثامن في بيان حركة الهمزة في مذهب ج، ف، هـ
والسكت على الساكن

- Bāb 18, on f. 30v. الباب الثامن عشر في انقافهم على اداءهم اذ وقد وانه
التبث و هل و بن
- Bāb 19, on f. 31. الباب تسع عشر في اداء الحروف فرمت محرمها
- Bāb 20, on f. 31v. الباب العشرون في احكام النون اب لنة و اشوين
- Bāb 21, on f. 32v. الباب الحادي و العشرون في ذكر الفتح و الإمالة
و بين العظين
- Bāb 22, on f. 37 الباب الثاني و العشرون في رمة هـ التبث في اوقف
في مذهب الكائي
- Bāb 23, on f. 37v. الباب ثالث و العشرون في مذهبهم في ار آت
- Bāb 24, on f. 39v. الباب اربع و العشرون في تعبط الامات و ترفيقها
- Bāb 25, on f. 40. الباب الخامس و عشرون في اوقف عن اواخر الكلم
- Bāb 26, on f. 41 الباب السادس و عشرون في اوقف على مرسوم الخط
- Bāb 27, on f. 42 الباب السابع و عشرون في آت الإصافة
- Bāb 28, on f. 45. الباب الثامن و عشرون في آيات المحدثات
من الرسم
- Bāb 29, on f. 49. الباب التاسع و عشرون في ذكر تنكير في فراءة
ابن كثير
- Bāb 30, on f. 47. الباب الثلاثون في محرج الحروف
- Beginning : الحمد لله الذي ادى قلوب القارئ - تلاوة تلاوة الآات
أما بعد جبين بي كونه محرم - الخ
- Ending : در كذب روح عرب في شرح العقدة انريد بين كرده
شده است - والله اعلم

A diagram showing the larynx, tongue, teeth and lips with different alphabets marked thereon to indicate the place from where the sound should come out, on f. 51.

The principles of recitation (أصول قراءة) have been reduced into Persian. These could easily be understood by children and beginners.

Bāb 1, on f. 6. باب الأول في ذكر أسماء القراء وأصنافهم وكناهم
وبلادهم وتاريخهم

Bāb 2, on f. 8v. باب الثاني في ذكر روايته الأئمة في كورين إلى
أنبي عليه السلام

Bāb 3, on f. 10. الباب الثالث في ذكر الاستعانة

Bāb 4, on f. 10v. الباب الرابع في ذكر البسملة

Bāb 5, on f. 11v. الباب الخامس في بيان ضمير الجمع

Bāb 6, on f. 12. باب السادس في ذكر إعدام الكبير في المثال

Bāb 7, on f. 13v. باب السابع في ذكر إعدام المتقرئين في كلمة وكلمتين

Bāb 8, on f. 16v. باب الثامن في ذكر هذه الكناية

Bāb 9, on f. 17. الباب التاسع في ذكر المد والقصر

Bāb 10, on f. 20. الباب العاشر في ذكر الهمزتين من كلمة

Bāb 11, on f. 21v. باب الحادي عشر في ذكر الهمزتين من كلمتين

Bāb 12, on f. 23. الباب الثاني عشر في ذكر الهمزة المفردة

Bāb 13, on f. 23v. باب الثالث عشر في نقل حركة الهمزة إلى الالف في فعالها

Bāb 14, on f. 24. باب الرابع عشر في رسم الهمزة في مذهب أبي عمرو

Bāb 15, on f. 25. باب الخامس عشر في السكوت على ما كان قبل
الهمزة في مذهب حمزة

Bāb 16, on f. 26. باب السادس عشر في رفع حمزة وحشم على الهمزة

Bāb 17, on f. 29v. باب السابع عشر في ذكر الإظهار والإدغام

ISLAMIC THEOLOGY

I QUR'ANIC SCIENCE

1 *Tajwid* —correct recitation of the Glorious Qur'an.

2401

1aj. 7 المبسوط في القراءات السبع و المضبوط
من أضات الطبع

A'L-MABSUT F'L-QIR'ATIS-SABA'WA'L-MADBUT MIN
AD'ATIT-TABA'

A detailed commentary by Muhammad b. Mahmūd b. Muhammad b. Ahmad b. 'Alī ash-Sharīf a's-Samarqandī a'l-Hamadānī, maternal grandson of Abu'l Qāsim a'l-Madāyanī a's-Samarqandī, on the famous versified work on tajwid of Abu'l-Qāsim a'l-Qāsim b. Farrūh ash-Shāṭibī (d. 590/1194), called *Hirzu'l-Amāni wa-Wajhu't-Tahāni* which is popularly known as *Qaṣīdati'sh-Shāṭibī*, or *Shāṭibiyya*.

This work in turn, is a paraphrase of a't *Tasir f'l-Qir'ati's Saba'* of 'Uṭmān a'd-Dānī (d. 444/1053).

The commentator claims that this work will be much easier than other works on *Shāṭibiyya* and the reader will not be in want of any other work.

The principles of *Shāṭibiyya* are commented upon in three ways and are divided into three *kitāb* (volumes).

The commentator's name is on ff. lv and 53, and the title, on f. 3v.

The contents are as under :-

Introduction (ff. lv-4v).

Vol. I in 30 *bābs* (ff. 4v-51).

TABLE OF CONTENTS FOR INDICES

| INDEX NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|------------|--|-----------|
| I | Names of Persons | i to xxxi |
| II | Names of Titles | i to xlv |
| III | Names of Copyists | i to xi |
| IV | Dates of Transcription | i to xii |
| V | Places of Transcription | i to vi |
| VI | Autographs and Seals with Dates found with them | i to xvi |
| VII | List of Concordance | i to xii |
| VIII | Autograph copies, Calli- graphically written Mss., Illustrated, Imperial, Rare Royal and Superbly decorated codices etc. | i to iv |



| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 5. | Dāfe'u'l- <u>Q</u> amm, (on ff. 2, 30v) | 398 |
| 6. | Risāla-e-Jabr wa Iḥṭ yār, (on ff. 30v-35v) | 398 |
| 7. | Risāla-e-ṭawā. wa Jawāb, (on ff. 36-39v) | 398 |
| 8. | Risāla dar Haqlqat-e-Marg wa Rub (on ff. 39v-42v) | 399 |
| 9. | A'r-Risālatu fī'n-Nafs, (on ff. 42v-44v) | 399 |
| 10. | A'r-Risālatu fī Baqār'n-Nafs-e-Insān, wa, (on ff. 44v-45v) | 399 |
| 11. | A'r-Risālatu fī Kayyāti Sudūri' Mauju tā'an Mabda'i'l-Awwal, (on ff. 45v-46v) | 399 |
| 12. | Iḥḥāt-e-Wāyibu'l-W aḥḥ, (on ff. 47-49) | 399 |
| 13. | A reply to the above by Tūsī, (on ff. 49v-51, | 400 |
| 14. | A note on Ḥadīḥ in Persian, (on f. 51v) | 400 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 3024 | Risāla e-Kawā'id e-Shar'iah | 393 |
| 3025 | Majmū'a | 393-394 |
| | 1. Miftāhu'l-Ghaib, (on ff. 1v-2v) | 393 |
| | 2. Risāla dar Khilāfat, (on ff. 3-68) | 394 |
| 3026 | Majmū'a | 394-395 |
| | 1. Idā'atu'sh-Shar'iah 1. Izāhatu Zādami'l-Muta' (on ff. 1-21v) | 394 |
| | 2. Siyā-yayyāra dar Kadī-e-Mulhillo e-Balkārah, (on ff. 22v-54v) | 395 |
| 3027 | Majmū'a | 395-396 |
| | 1. Kadī'u'l-Buhtāni l-Mawūm, (on ff. 2v-7) | 395-396 |
| | 2. Tanbihu's-Sālik, (on ff. 6v-8v) | 396 |
| 3028 | Majmū'a | 396-397 |
| | 1. Rūyat-e-Haqq, (on ff. 1v-3) | 396 |
| | 2. Jalb wa Ikhtiyār, (on ff. 3-5v) | 396-397 |
| | 3. Samā', (on ff. 5v-9) | 397 |
| | 4. Khwāb, (on ff. 9-10v) | 397 |
| | 5. Karā-e-Qulrat (on ff. 10v-13) | 397 |
| 3029 | Majmū'a | 397-400 |
| | 1. Nūru'l-Hidāya, (on ff. 1v-9) | 397 |
| | 2. Nathru'l-Ia'āli, (on ff. 10v-11v) | 397 |
| | 3. A'r-Risālatu fi Talqīn'u-Nishā'ain, (on ff. 11v-26v) | 398 |
| | 4. Risāla Uṣūl-e-Din, (on ff. 26v-39) | 398 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 3002 | A'q-Ḍarbatu'l-Haidariyah | 378-379 |
| 3003 | Ḍurwat Sanāmu'l-Islām u l-Ā'idu-Dīn'l-Islām | 379-380 |
| 3004 | Iyḍāḥ Latāfatu'l-Maqāl fi Tafṣīli'l-Jawāb | 380 |
| 3005 | Risāla-e-Munāzirah | 381-382 |
| 3006 | Ḍaḥḍiratu'l-'Uqbā | 382 |
| 3007 | Sinān-e-Haidariyah Kāsir-e Ḥudūr-e Muḥibbat-e-Hindiyah | 382-383 |
| 3008 | A'l-Fawā'idu't-Tā'ifah fi Ḥibbatir-Rāḥatāh | 383 |
| 3009 | Tuḥfa-e-Nāṣiriyyah wa Ḥawā'id-e-Haidariyyah | 384 |
| 3010 | Tark-e-Jūsh | 384-385 |
| 3011 | A'l-Qawlu'l-Mubīn | 385 |
| 3012 | A's-Saiful-Maslūl- fī Qutbi A'dā'ir-Rasul | 386-387 |
| 3013 | Anwāru'l-Absār fi Tahqīqi Marātibin-Nab' il-Mukhtār wa A'immati'l-A'ṭḥār | 387-388 |
| 3014 | — — — — — — — — — | 388 |
| 3015 | Tuḥfa-e-Munqalibah | 388-389 |
| 3016 | Kisā' al-Ḥadīth e-Khāṣṣat e Ḥaḍrat 'Ad | 389 |
| 3017 | Nāṣratu'l-Mu'minīn fi Kashf'ish-Shir'Ḥaṭi'l-Mu'annafīn | 389-390 |
| 3018 | Nūru'l-Hidāya | 390 |
| 3019 | — — — | 390 |
| 3020 | Risāla-e-Sawāl wa Jawāb | 391 |
| 3021 | Kaḥfi'l-Faḍīl | 391-392 |
| 3022 | Faḍl-e-Qudūsī dar Bayān-e-Iḥtilāḥ-e-Kā'im-e-Tūst | 392 |
| 3023 | 'Ainu'l-Inṣāf | 392-393 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| | 3. Haft-band, on ff. 118v-119v. | 364 |
| 2981 | — — — | 365 |
| 2982 | Hudūd al-'Ummah fi Ma'rā'atih-'Ashariyah | 365-370 |
| 2983 | Risāla-e-Yūhannā | 366 |
| 2984 | — — — | 367 |
| 2985 | — — — | 367 |
| 2986 | — — — | 367 |
| 2987 | Uṣūl-e-Fusūlu't-Tawḍīḥ | 368 |
| 2988 | Iḥyāt-e-Aqā'id-e-Iḥyā 'Ashariyah | 369 |
| 2989 | Iḥyāt al-Mu'āmin fi 'Ilm'il-Kāfī | 369-370 |
| 2990 | Saifu'l-Mu'minin fi Ḥudūd al-Mashrikin | 370 |
| 2991 | Iḥyāt-e-Hajj wa Iḥyāt al-Ḥajj | 370-371 |
| 2992 | Khazīna-e-Radd-e-Munāfiq | 371-372 |
| 2993 | Risāla-e-Munāfiq-e-Yusuf wa Nūḥ | 372 |
| 2994 | Tuḥfa-e-Iḥyā 'Ashariyah | 372-373 |
| 2995 | Risāla-e-Iḥyāt al-Munāfiq | 373 |
| 2996 | Kaḥf al-Salāḥ al-Hukmī, Muta' | 374 |
| 2997 | Kitāb-e-Mubīn | 374-375 |
| 2998 | Sūrat al-Imān (Ḥujjatu'l-Imān wa Iḥyāt al-Millat) | 375-376 |
| 2999 | Iḥyāt al-Sunna wa Imānat al-Bid'at bi Ta'nīl Asunnat | 376 |
| 3000 | Nozhatu'l-Iḥyā 'Ashariyah | 376-377 |
| 3001 | Jawāb-e-Risāla-e-Kaḥf al-Salāḥ | 377-378 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2960 | Şirât-e-Mustaqim wa Dîn-e-Qawim | 354 |
| 2961 | Barâhîn-e-Qâṭi'ah | 355 |
| 2962 | — — — | 355 |
| 2963 | Risâla-e-Qâḍizâda | 356 |
| 2964 | — — — | 356 |
| 2965 | Risâla dîr Bayân-e-Siyâdat | 357 |
| 2966 | Tarjamatu'l-Haqâ'iq | 357-358 |
| 2967 | Kifâiyatu'l-l'tiqâd | 358 |
| 2968 | Kitâbu'l-Imâmat | 358-359 |
| 2969 | — — — | 359 |
| 2970 | — — — | 359-360 |
| 2971 | — — — | 360 |
| 2972 | — — — | 360 |
| 2973 | — — — | 360-361 |
| 2974 | — — — | 361 |
| 2975 | Ithbât-e-Imâmat | 361 |
| 2976 | Ithbât-e-Imâmat | 362 |
| 2977 | Abşaru'l-Mustabşerin | 362-363 |
| 2978 | — — — | 363 |
| 2979 | Risâla-e-Munâzirah | 363-364 |
| 2980 | Majmû'a | 364 |
| | 1. Risâla-e-Munâzirah, (on ff. Iv-53) | 364 |
| | 2. Abşaru'l-Mustabşerin, (on ff. 53v-100) | 364 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|------------------------|---|-----------|
| 2045 | Majmū'a | 344-345 |
| | 1. Sarmāya-e-Iymān (on fl. IV-91) | 344 |
| | 2. Risāla-e-Tauhīd (on fl. 92v-131) | 345 |
| | 3. Risāla-e-Tauhīd, (on fl. 130-149) | 345 |
| 2046 | Majmū'a | 345-346 |
| | 1. Partawa-e-Anwār, (on fl. IV-73) | 345 |
| | 2. Mir'ātu'l-Haqīqat, (on fl. 74v-115) | 346 |
| | 3. Kiwayāt (on fl. 115v-131v) | 346 |
| b. CONTROVERSIAL WORKS | | |
| 2047 | Fuḥlātu'l-Abrār | 347 |
| 2048 | — | 347-348 |
| 2049 | Mahāju'l-Fādi fī ḥiṣṣat al-Imamāt al-Haṣa'at al-Kamilah | 348-349 |
| 2050 | — — — — — | 349-350 |
| 2051 | — — — — — | 350 |
| 2052 | Mahābitha-e-Tājar Dakanī bā 'Ulamā-e-ahle-e-Sunnat | 351 |
| 2053 | Risāla-e-Hasanīyah | 351 |
| 2054 | — — — — — | 351-352 |
| 2055 | — — — — — | 352 |
| 2056 | — — — — — | 352 |
| 2057 | — — — — — | 353 |
| 2058 | — — — — — | 353 |
| 2059 | Farḡat al-Luḡat fī Farḡat al-Kutub al-Turāth | 353-354 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| | 6. Risāla dar 'Ilm-e-'Arūḍ (ff. 179v-181v) | 338 |
| | 7. Tatsīr-e-Kalām-e-Taḥḍīd (ff. 181v-200) | 339 |
| | 8. A'r-Risāla fi Iḥbāb'e-Taḥḍīd, (margins of ff. 181v-184v) | 339 |
| 2940 | Majmū'a | 339-340 |
| | 1. Risāla dar 'Aḥbār wa Awāl-e-Aḥmādīya (ff. 1v-7) | 339 |
| | 2. Sharḥ-e-Ḥuṭbatu'l-Bayān (ff. 7v-23v) | 340 |
| | 3. Risāla-e-Miqdāriya (ff. 24v-41) | 340 |
| 2941 | Majmū'a | 340-341 |
| | 1. Sarmāya-e-Iymān, on ff. 1v-178 | 340-341 |
| | 2. Sharḥ Du'ā-e-Ya 'ān Yāḥadu, (on ff. 181v-201) | 341 |
| 2942 | Majmū'a | 341-342 |
| | 1. Risāla-e-Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 1v-32v) | 341 |
| | 2. Risāla-e-Ḥikmat, (on ff. 33v-52v) | 342 |
| | 3. Hadyatu's-Sālar, (on ff. 53v-61v) | 342 |
| 2943 | Majmū'a | 342-343 |
| | 1. Taḥkīrah, (on ff. 1v-41) | 342 |
| | 2. Ḥurmuṣu'l-Ḥarāmīyah (on ff. 42-4) | 343 |
| | 3. Kitāb Nām-e-Ḥukama, (on ff. 46v-50) | 343 |
| 2944 | Majmū'a | 343-344 |
| | 1. Wulāyat-e-Ḥadrāt-e-'Āliyyāt (on ff. 1-4) | 343 |
| | 2. Risāla dar Namāz (on ff. 5-15v) | 344 |
| | 3. Majmū'a-e-Ruqa'āt, (on ff. 16-30v) | 344 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2922 | Uşu-e-Din | 320 |
| 2923 | Marshidu'l-Wā'izīn | 321 |
| 2924 | Siratu'l-Mu'minin | 327-328 |
| 2925 | Sirāju'l-Hidāya fi Nihāyatih-Zuhūr | 329 |
| 2926 | Zād-e-Ā'zam | 329-330 |
| 2927 | " " | 330 |
| 2928 | Hiznu'l-Mu'minin | 330-331 |
| 2929 | Hadiqa-e-Sultāniyah | 331 |
| 2930 | Sultāniyah al-Farṣat li'l-Awām | 332 |
| 2931 | Bashāratu'sh-Shi'ah | 333 |
| 2932 | A'r-Risālatu fi'r-Raj'at | 332-334 |
| 2933 | Majma | 334 |
| 2934 | Zubdatu'l-'Aqā'id | 334-335 |
| 2935 | Risāla-e-'Aqā'id | 335 |
| 2936 | Sirāju'l-Mu'minin | 336 |
| 2937 | Kalid-e-Bihisht | 336 |
| 2938 | Risā'a-e-Ṣifāt-e-Thubūtīyah | 337 |
| 2939 | Majmū'a | 337-339 |
| | 1. Jawsām dar I'tiqād (ff. 1-113) | 337 |
| | 2. Risāla-e-Taḥlīd (ff. 113v-124) | 337-338 |
| | 3. Naṣā'isu'l-Arqām, (ff. 122v-147v) | 338 |
| | 4. Risāla-e-Tawḥīd (148-157) | 338 |
| | 5. Risāla-e-Jabr-wa-Ikhtiyār (ff. 157v-164) | 338 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2899 | Sham'-e-Yaqin (Ā'inā-e-Dīn) | 313 |
| 2900 | Jawāhirul-'Aqā'id | 314 |
| 2901 | Riyādu'l-Abrār & Manāqibul-Karrār | 315 |
| 2902 | Waqā'in'ī Masā'ib | 315-316 |
| 2903 | Shajratul-Ilāhiyah | 316 |
| 2904 | Risāla e-Ithbāt-e-Imān e Maw'ūd | 317 |
| 2905 | Manhajul-Rishād | 317 |
| 2906 | Risāla e-Iqna' Ashariya | 317 |
| 2907 | — — — | 318 |
| 2908 | Risāla dar Ithbāt-e-Imāmat | 319 |
| 2909 | Miftāh-e-Asrāru'l-Husaini | 319-320 |
| 2910 | Iqra't-e-'Al Darajāt | 320 |
| 2911 | — — — | 320 |
| 2912 | Nishā-e-Sarshār Arhāb-e-Iymān | 321 |
| 2913 | — — — — — | 321 |
| 2914 | Risāla-e-Raj'at-e-Shāhibul-Amar | 322 |
| 2915 | Zinatu'l-Hidāya | 322 |
| 2916 | Tanbihul-Ghāfilin | 323 |
| 2917 | Chihā Kanma | 323-324 |
| 2918 | Ijābatul-Mudtarfin fi Bayān'ul-Uṣūl wa Furū'ud-dīn | 324 |
| 2919 | — — — | 325 |
| 2920 | Ma'rifat-e-Ilāhiyāt | 325 |
| 2921 | Hadiyatu'l-Ma'minin | 325 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|----------------------------------|-----------|
| 2870 | Tubfatu'l-Gharā'ib | 301, 02 |
| 2877 | Asnā' al-Hayāt | 302 |
| 2878 | — — | 303 |
| 2879 | — — | — |
| 2880 | — — | 304 |
| 2881 | — — | 304 |
| 2882 | Kitāb al-Hayāt | 304-305 |
| 2883 | Hayāt al-Muttaḥḥin | 305 |
| 2884 | — — | 305-306 |
| 2885 | — — | 306 |
| 2886 | — — | 306 |
| 2887 | — — | — |
| 2888 | — — | 307 |
| 2889 | Hayāt al-Muḥib | 307, 08 |
| 2890 | — — | — |
| 2891 | — — | 309 |
| 2892 | Taḥkīratu'l-A'immaḥ | 310, 11 |
| 2893 | Hayāt al-Yaḥyā | 311 |
| 2894 | — — | 311, 12 |
| 2895 | Masiaku'l-Ārīḥ | 311 |
| 2896 | — — | 311-312 |
| 2897 | Masā'il al-Yaḥyā | 312 |
| 2898 | Shi'r al-Yaḥyā (Aḥmad al-Ḥamīdī) | 313 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2858 | Tuhfa-e-'Abbāsī | 289 |
| 2859 | Masā'ir-i-Afwar wa Mashāriq-i-Afwar | 289-290 |
| 2860 | Nukat-e-Dawam-e-Dā'imān-e-Qutb Shāhī | 290 |
| 2861 | — — — — — | 291 |
| 2862 | Nasihat-Nāma | 291 |
| 2863 | Manāqibu'l-Murtadawī | 291 |
| 2864 | — — — — — | 292-293 |
| 2865 | — — — — — | 293 |
| 2866 | — — — — — | 293 |
| 2867 | — — — — — | 294 |
| 2868 | — — — — — | 294 |
| 2869 | Rawdatu'l-Afwar wa Zuhātu'l-Afkār | 294-295 |
| 2870 | 'Aqā'id-e-Dīniyah | 295-296 |
| 2871 | 'Aqā'id-e-Qutb Shāhī | 296 |
| 2872 | Fawā'id-e-Munji | 297 |
| 2873 | — — — — — | 298 |
| 2874 | Sharh-e-Tajridu'l-'Aqā'id | 299 |
| 2875 | Mamū'at-e-Kāshī | 300-301 |
| | 1. Sharh-i-Tajridu'l-'Aqā'id, (on ff. 1v-3v) | 300 |
| | 2. 'Ā'ina-e-Shāhī (on ff. 8v-15v) | 300 |
| | 3. Tarjamatu'sh-Sharī'at, (on ff. 15v-33v) | 300 |
| | 4. Tarjamatu't-Tahārat, (on ff. 33v-40v) | 300-301 |
| | 5. Risāla-e-Jawāb, (on ff. 40-42v) | 301 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| 2836 | Hallu'l-'Aqâ'id | 274-275 |
| 2837 | — — — | 275 |
| 2838 | Tarjama-e-Bahru'l-Ansâb | 275-276 |
| 2839 | Arkânu'l-Iymân | 276-277 |
| 2840 | Tarjamatu'l-Manâqib | 277-278 |
| 2841 | — — — | 278 |
| 2842 | Tarjama-e-Mawâ'id - Karâmat u | |
| | Ma'rifatu'l-Imâmat | 278-279 |
| 2843 | Hisht-i-Gharib-Sifati | 279-280 |
| 2844 | — — — | 280 |
| 2845 | Risâla-e-Hasaniyah | 280-281 |
| 2846 | — — — | 281 |
| 2847 | — — — | 282 |
| 2848 | — — — | 282 |
| 2849 | — — — | 282-283 |
| 2850 | Ummat-e-Akbar - Tarjama-i-Ohudâ li'l-Qur'ân | 283 |
| 2851 | Kifâyatu'l-Mu'minîn | 283-284 |
| 2852 | — — — | 285 |
| 2853 | — — — | 285 |
| 2854 | — — — | 285-286 |
| 2855 | Risâla-e-Uşûl wa Ahkâm | 286-287 |
| 2856 | Uşûl-e-Imaniya | 287-288 |
| 2857 | Iuhla-e-Shâhi wa 'Atiyva-e-Irâbi | 288-289 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2815 | Anisul-Atqiyā | 260 |
| 2816 | Al-wal wal-idā' -e A'man-e-Tarīf | 261 |
| 2817 | Ishā'ul-Mu'minīn | 262-263 |
| 2818 | Al-bār' -e-Ma'āl | 262-263 |
| 2819 | Jawharul-Fadā'id | 263-264 |
| 2820 | Dhar'atun-Najāt | 264 |
| 2821 | Janāhu'n-Najāh | 265 |
| 2822 | Iyqāz-unvāmih'l-Ihtimām-in-Muqaddas Kullī Imām | 265-266 |
| 2823 | Tarjima-e Sirāyul-Iymān | 266 |
| 2824 | Iatwā | 267 |
| 2825 | 'Unwatu'l-Ma'āzid wal-Ma'ātib | 267-268 |
| 2826 | Mirqatu'l-Jannat | 268 |
| 2827 | Jām-e-Kaūthar | 269 |
| 2828 | Risāla Dar 'Aqā'id | 269-270 |
| 2829 | Risāla-e-Qāṣṣatib-din-Kaustar | 270 |
| 2830 | Risāla dar 'Aqā'id | 270 |
| 2831 | Nūr-Nāma | 271 |
| 2832 | ' — — | 271 |
| 2833 | Shama'-e-Iymān | 272 |
| — III — | | |
| 2834 | Ḥawāt' -e-A'māl wa 'Ijāz' -e-A'māl | 273 |
| 2835 | Tarjama-e-I'tiqādāt-e-Qummi | 274 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS |
|-----------|--|----------|
| 2800 | Majma'a | 250-251 |
| | 1. Tadhkirat-e-Zawaj' al-Hakim, (on ff. 1v-30v) | 252-253 |
| | 2. Amāl-e-Rūz-e-'Ashurah (on ff. 37v-101) | 251 |
| 2801 | Kasā'ir-e-Lugh | 251-252 |
| | 1. Tarjuma-e-Tabshiratu'l-Muta'allimin fi Ahkām'd-Rin, (on ff. 1v-81v) | 251-252 |
| | 2. 'Amdah (on ff. 82v-138) | 252 |

5. 'AQĀ'ID

(i) SUNNIES

THE DOGMA, MORAL DOCTRINES, AND FORMS OF WORSHIP

| | | |
|------|----------------------------------|---------|
| 2802 | Lata'if-e-Quliyat | 253 |
| 2803 | A'l-Mu'tamad fi'l-Mu'taqid | 254 |
| 2804 | Kulliyatu'l-Ahkām L-Din'il-Islam | 254-255 |
| 2805 | — — — — — | 255 |
| 2806 | — — — — — | 255 |
| 2807 | Natijatu'l-'Alim al-Nadbiyyin | 256 |
| 2808 | Marahiq'il-Qur'an | 256-257 |
| 2809 | Minajibu's-Salat | 257 |
| 2810 | Tahliq-e-Hayāt | 258 |
| 2811 | Tuhfatu's-Şalāt | 258 |
| 2812 | Takmilu'l-Iymān | 259 |
| 2813 | — — — — — | 259 |
| 2814 | — — — — — | 260 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| 2791 | Risāla dar Masā'il-e-Tahārat wa Ṣalāt | 244 |
| 2792 | — — — — — | 245 |
| 2793 | Nakḥbah | 245 |
| 2794 | Rasā'il-e-Baqi | 245-246 |
| | 1. Shāh-e-Nabāt, (on ff. 1-4) | 245 |
| | 2. Dastūru'l-'Amal, (on ff. 4-35) | 246 |
| 2795 | Khulāsatu'l-Aḥkām | 246 |
| 2796 | Hadyatu'ṣ-Ṣawm | 247 |
| 2797 | Zinatu'l-'Ibād | 247 |
| 2798 | Majmū'a | 248-249 |
| | 1. Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 1v-5v) | 248 |
| | 2. Tarjamatu'ṣ-Ṣalāt, (on ff. 9v-17v) | 248 |
| | 3. Uṣūl-e-Dīn Manzūm (on margins of 1v-5v) | 248 |
| | 4. Tarjuma-e-Chah Iḥsān, (on margins of 1v-5v) | 248 |
| | 5. A note on the position of Haḍrat 'Alī according to Maulana Rām's estimation on margin of 9v. | 248-249 |
| 2799 | Majmū'a | 249 |
| | 1. A'ṣ-Risālatu'ṣ-Ṣughra, (on ff. 1v-60) | 249 |
| | 2. Kitābu'ṣ-Ṣawm, (on ff. 61v-82v) | 249 |
| | 3. Ṣaḥīfu'n-Najāt, (on ff. 83v-86) | 249-250 |
| | 4. Hadyatu'ṣ-Ṣāliḥīn, (on ff. 86v-90v) | 250 |
| | 5. Ṣirāṭu'n-Najāt, (on ff. 91v-263) | 250 |

| CAT Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 233 |
| 4 | 1. 12v-124. (1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq) | 233-234 |
| 2773 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 234 |
| 2774 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 235 |
| 2775 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 235 |
| 2776 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 236 |
| 2777 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 237 |
| 2778 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 237 |
| 2779 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 238 |
| 2780 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 238 |
| 2781 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 238 |
| 2782 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 239-240 |
| 2783 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 240 |
| 2784 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 241 |
| | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 241 |
| | 2. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 241 |
| 2785 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 241 |
| 2786 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 241 |
| 2787 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 242 |
| 2788 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 243 |
| 2789 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 243 |
| 2790 | 1. 12v-124. Attributed to Imām J'āfar Ṣādiq | 244 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| | 7. Risāla-e-Zakāt, (on ff. 72v-76) | 225 |
| | 8. Risāla-e-Katārah, (on ff. 76v-82v) | 225 |
| | 9. Risāla dar Maith Kaūda-e-Muqallasa-e-Najaf wa Karbalā, (on ff. 83-92v) | 225 |
| | 10. Fuṣūḥ-e-Sulaimāniyah, (on ff. 93-106v) | 226 |
| | 11. Tarjama-e-Kitāb-e-Ahl (on ff. 107-137v) | 226 |
| | 12. Tarjama-e-'Iādīth-e-'Uyūn-e-Aḥbār-e-Kuḍā, (on ff. 137v-141v) | 226 |
| | 13. Sharḥ-e-Hadīth, (on ff. 141-154) | 227 |
| 2764 | Mā'idatu's-Samāwīyah | 227-228 |
| 2765 | Jāme'u'r-Ridwī | 228 |
| 2766 | Gul-e-Gulzār-e-Ma'ānī | 229 |
| 2767 | Tarjama-e-Hadyatu'l-Mu'minīn | 229-230 |
| 2768 | Ṣaidīyah | 230 |
| 2769 | Majmū'a | 231 |
| | 1. Risāla-e-Mab-e-Nafar, (on ff. 1-47v) | 231 |
| | 2. Miscellaneous prayers notes on magic and talismans, (on ff. 48-100v) | 231 |
| | 3. Ṣaidīyah, y Huzn (on ff. 100v-100v) | 231 |
| 2770 | Tuḥfa-e-Āshīyah | 231-232 |
| 2771 | Risāla-e-Fuḥ | 232 |
| 2772 | Majmū'a | 233-234 |
| | 1. Zīyārat-nāma, (on ff. 1v-93) | 233 |
| | 2. Tuḥfatu'l-Husainīyah, (on ff. 93v-101v) | 233 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2729 | Jāma'-e-Abbāsī | 205 |
| 2730 | — — | 206 |
| 2731 | — — | 206 |
| 2732 | — — | 206 |
| 2733 | — — | 207 |
| 2734 | — — | 207 |
| 2735 | — — | 207-208 |
| 2736 | Rasā'il-e-Fiqh | 208 |
| | 1. Tarjamatu'l-Ithnā 'Ashariyah (ff. 1v-16) | 208 |
| | 2. Uṣūl e-Dīn (ff. 19v-31) | 208 |
| 2737 | Tarjamatu'l-Ithnā 'Ashariyah | 209 |
| 2738 | Uṣūl-e-Dīn | 209 |
| 2739 | — — | 210 |
| 2740 | Wājibāt-e-Namāz | 210 |
| 2741 | Lawāmi'-e-Şāhibqirānī | 211 |
| 2742 | — — — | 211 |
| 2743 | — — — | 212 |
| 2744 | — — — | 212 |
| 2745 | — — — | 213 |
| 2746 | Ḥadiqatu'l-Muttaqin | 213 |
| 2747 | — — — | 214 |
| 2748 | — — — | 214 |
| 2749 | Sharḥ e-Ḥadiqatu'l-Muttaqin | 214-215 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|----------------------------|
| | Kutub-e-Bayan (22) wa Asrar-e-Mishâ'kh, (fl. 78v-80) | 194 |
| | 4. Şaigh-e-Nikâb, (on fl. 77-78) | 194 |
| | 5. Risâla-e-'Aqâ'id, (on fl. 78-80) | 194-195 |
| | 6. U'sûl-e-Dîn, (fl. 80v-81) | 195 |
| | 7. Jawâb-e-Ima, on (fl. 62-64), and in margins of fl. 64v-66) | 195 |
| 2712 | Şaidiyya-e-Tahmâsp Şafawi | 195-196 |
| 2713 | Şaikh-e- — | 196-197 |
| 2714 | — | 197 |
| 2715 | — | 197 |
| 2716 | Tarjama-e-Fiqhu'r-Ridwi | 198-199 |
| 2717 | Kutub-e-Kutgarî | 199-200 |
| 2718 | — | 200 |
| 2719 | Jama'at-e-Mu'tahidat-e- — | 200 |
| 2720 | — | 201 |
| 2721 | Jama'-e-'Abbâsi | 201-202 |
| 2722 | — | 202 |
| 2723 | — | 203 |
| 2724 | — | In two different hands 203 |
| 2725 | — | 204 |
| 2726 | — | 204 |
| 2727 | — | 205 |
| 2728 | — | 205 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---------------------------------------|-----------|
| 2694 | Asās-u'l-Masā'il | 182 |
| 2695 | Farā'id-e-Irtiqā'iyah | 183 |
| 2696 | Abkām-u'l-Haiwān | 183-184 |
| 2697 | Alkām-u's-Salat | 184 |
| 2698 | Kisā'at-e-Lan-kahma wa Asās-u'l-Harūn | 185 |
| 2699 | Farā'id-u'l-A'zamiyah | 185-186 |
| 2700 | Minhāju'l-'Adalat | 186-187 |
| 2701 | Khamsa-e-Mahbūb Shāhi | 187 |
| 2702 | Masā'il-e-Fiqh | 188 |
| 2703 | Risālah dar Fiqh | 188-189 |
| 2704 | Risālah dar Fiqh | 189 |
| 2705 | Farhang-e-Fiqh | 189-190 |
| 2706 | Qawā'id-e-Namāz wa Waqūf | 190 |

(ii) SHIITES

| | | |
|------|---|---------|
| 2707 | Nawā'is-e-Maram | 191 |
| 2708 | Rasā'il-e-Fiqh | 191-192 |
| | 1. Farhang-e-Jawā'id (on ff. 1-15) | 191-192 |
| | 2. Albyah Fārsi (on ff. 36v-48v) | 192 |
| 2709 | Shārh-e-Sharā'it-u'l-Islām | 192-193 |
| 2710 | Si'at-e-Hatir Pā' dar Bayan-e-Wajibāt | 193 |
| 2711 | Majmū'a-e-Rasā'il | 194-195 |
| | 1. Si'at-e-Hatir Pā' dar Bayan-e-Wajibāt (on ff. 1v-62) 194 | |
| | 2. 'Ajjā'ir-e-Dīniyah (on ff. 64v-7) 194 | |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 20 | Fiqh-e-Ahlyan (With notes at both ends) | 171 |
| 21 | — — — (With notes at both ends) | 171 |
| | Risāla-e-Šaḥīyah | 171-173 |
| | — — — | 172 |
| 22 | — — — | 172-173 |
| | Fiqh-e-Barahna | 173 |
| 23 | — — — (With notes and table of contents) | 174 |
| 24 | Majmū'a-e-Khānī h 'Izzī'l-Makānī | 174-175 |
| 25 | — — — — — | 175 |
| 26 | Baṭ'illāhī'l-Ḥarām | 175-176 |
| 27 | Miftāḥu's-Ṣalāt | 176-177 |
| 28 | Majmū'e-Sulṭānī | 177 |
| 29 | — — — — — | 177-178 |
| 30 | Rasā'il-e-Fiqh | 178 |
| | 1. Risāla-e-Fiqh, (pt. 1-b) | 178 |
| | 2. Mushkilātu'l-Fiqh (p. 8v-10v) | 178 |
| | Tūṣīru'l-Aḥkām | 179 |
| 31 | — — — — — | 179 |
| 32 | — — — — — | 180 |
| 33 | Mir'ātu'l-Musallī | 180 |
| 34 | Farḡību's-Ṣalāt | 180-181 |
| 35 | — — — | 181 |
| 36 | Mir'ātu'l-Masā'il-e-Muḥammad Shāhī | 181-182 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2652 | Farḡamatu'l-H. laya . . . Sharḥu'l-B. laya . . . containing table of contents and Vol. IV from Kitābu'sh-Shif'a to Kitābu'l-Khuthāḥ. | 157-158 |
| 2653 | Shuḥ-e-Wajīya | 158 |
| 2654 | — — — (Table of contents at the end). | 158-159 |
| 2655 | Manāfi'u'l-Mushmin | 159 |
| 2656 | — | 159-160 |
| 2657 | Sharḥ-e-Farā'idu's-Sirājiyah | 160 |
| 2658 | Ṣalāt-e-Mas'ūdi | 160-161 |
| 2659 | — — — (Part II, in 45 bābs) | 162 |
| 2660 | — — — (In 44 bābs) | 162 |
| 2661 | — — — (Containing Part III from poor rate to miscellaneous topics). | 162-163 |
| 2662 | Sharḥ-e-Ṣalāt-e-Mas'ūdi | 163 |
| 2663 | Kh. aratu'l-Fuqahā wa Hijjatu'l-Fudatā | 163-165 |
| 2664 | Tarjama e-Kanzu l-Daqlāq | 165 |
| 2665 | — — — — | 166 |
| 2666 | — — — — | 166 |
| 2667 | Tanwiru'l-Manār | 166-167 |
| 2668 | Ḥawā'id-e-Mahmūd Khān | 167-168 |
| 2669 | Fatāwa e-Qarākhān | 168 |
| 2670 | Fiqh e Rāburī | 168-169 |
| 2671 | Mukhtāru'l-Ikhtiyār 'Alā Ma'halu'l-Mukhtār | 169-170 |
| 2672 | Fatāwa-e-Amīniya | 170 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2597 | Risāla-e-Hudūd | 149-150 |
| 2598 | Risāla-e-Aḥkām-e-Ḥudūd | 150 |
| 2599 | Risāla-e-Ḥudūd | 150-151 |
| 2600 | Risāla-e-Sa'd wa Naḥas | 151 |
| 2605 | Majmū'a | 151-152 |
| | 1. Khawāṭir al-Muḥallīn 'alā (ff. 15-112) | 152 |
| | 2. Luḥūṭ al-Muḥallīn 'alā Ahkām al-Fiqh al-Muḥallī (ff. 112-132) | 152 |
| | 3. Muḥallī al-Mustahallin, (ff. 133v-140v) | 152 |
| 2646 | Majmū'a | 153 |
| | 1. Risāla fī Iḥtiyārāt al-Sā'āt, (on ff. 1v-24) | 153 |
| | 2. Risāla-e-Kanārāt, (on ff. 25v-32) | 153 |
| | 3. Khawāṭir al-Muḥallīn 'alā Iḥtiyārāt (on ff. 33v-39v) | 153 |
| 2647 | Majmū'a | 154-155 |
| | 1. Luḥūṭ al-Muḥallīn 'alā (on ff. 1v-15) | 154 |
| | 2. Ahwāl-e-Aḥmādīn Jādīd, (on ff. 20v-48) | 153 |
| 2648 | Sharḥ-e-Ḥijab-e-Akbar | 154-155 |

FIQH—LAW

(i) SUNNITES

| | | |
|------|---|-----|
| 2649 | Tarjamatu'l-Hudāya fī Sharḥ al-Bidāya | 156 |
| 2650 | — — — (Containing Vol. III. from Kitābu'l-Ba'i to Kitābu'l-I'dhān). | 157 |
| 2651 | — — — — — | 157 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2018 | A's-ṣā'ī Sharḥ-i-Kāf (Containing book XVI) | 134-135 |
| 2019 | Majma'at-i-Aḥḥad | 135-136 |
| 2020 | Risāla fi'l-Ḥayāt al-Sana'at Wal-Ayyam Wal- Lawā'iq | 136-137 |
| 2021 | — — — — — | 137 |
| 2022 | — — — — — (In an abridged form) | 137 |
| 2023 | — — — — — | 137 |
| 2024 | — — — — — | 138 |
| 2025 | Ḥaṣṣat-i-Ḥikmat al-Ḥayāt | 138-139 |
| 2026 | — — — — — | 139 |
| 2027 | — — — — — | 139-140 |
| 2028 | Risālatu fi'r-Raj'at | 140-141 |
| 2029 | — — — — — | 141 |
| 2030 | — — — — — (Stray notes at the beginning) | 141 |
| 2031 | — — — — — | 141-142 |
| 2032 | Maḥṣūṣat-i-Ḥikmat al-Ḥayāt | 142-143 |
| 2033 | Ḥikmat al-Ḥayāt | 143-144 |
| 2034 | Anisat-i-Akhvār | 144 |
| 2035 | Lisānu'dh-Dhākirin | 145-146 |
| 2036 | Khawāṭimu's-Sālihīn | 146 |
| 2037 | Maḥṣūṣat-i-Ḥikmat al-Ḥayāt | 147 |
| 2038 | Ḥikmat al-Ḥayāt | 147-148 |
| 2039 | (Lafẓama-e-Aḥḥad-e-Quds) | 148-149 |
| 2040 | (Aḥḥad-e-Naḥḥat) fi Shān-e-'Aḥḥad | 149 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|---|-----------|
| 2598 | (Table of contents in the beginning) | 123 |
| 2599 | — | 124 |
| 2600 | — (the beginning) | 124 |
| 2601 | — | 124 |
| 2602 | Tarjama-e-Chihāl Ḥadīth | 125 |
| 2603 | Mahāsnu'ī Adab, (Tarjama-e-Makārimu'l-Aḥlāq | 125-126 |
| 2604 | Makārimu'l-Karām, | 126-127 |
| 2605 | Tarjama-e-Makārimu'l-Aḥlāq | 127 |
| 2606 | Mulḥṭāt-Nāma | 128 |
| 2607 | — | 129 |
| 2608 | — | 129-130 |
| 2609 | — | 130 |
| 2610 | — | 130 |
| 2611 | Tarjama-e-'Uyūn Aḥbār'r-Riḍā | 131 |
| 2612 | Gauhar-e-Murād | 131-132 |
| 2613 | — | 132 |
| 2614 | — | 132 |
| 2615 | Ā'y-Sāh Sa'ad-e-Kāfi | 133 |
| 2616 | — (Books V and VI only) | 133-134 |
| 2617 | — (Containing extracts from the preceding work) | 134 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2578 | Tanbīhu'l Ghâfīn wa Ta'ẓīkiratu'l 'Arīfīn | 113 |
| 2579 | — — — — — | 113-114 |
| 2580 | — — — — — | 114 |
| 2581 | Sharh-e-Nahju'l-Balāghat | 114-115 |
| 2582 | Dah Majlis | 115 |
| 2583 | — — — — — (Bound as a bayād) | 116 |
| 2584 | — — (With marthiya of Muhtasham Kāshī, in the beginning) | 116 |
| 2585 | — — Muhtasham's marthiya is preceded Arabic prayer) | 117 |
| 2586 | — — — — — | 117 |
| 2587 | — — — — — (Bound as a bayād) | 117 |
| 2588 | Yāzdah Majlis | 118 |
| 2589 | — — — — — | 118 |
| 2590 | Duwāzdah Majlis | 119 |
| 2591 | Tuhfa-e-Shāhī | 119-120 |
| 2592 | Farjama e-Qutb Shāhī | 120-121 |
| 2593 | — — — — — (With table of contents in the beginning) | 121 |
| 2594 | — — — — — | 122 |
| 2595 | — — — — — | 122 |
| 2596 | — — — — — (Without table of contents) | 122 |
| 2597 | — — — — — | 123 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2558 | Ṭhamra-e-Gulzâr-e-Iymân | 101 |
| 2559 | Kisâla e Hadrat | 101-102 |
| 2560 | Rostânu'l-Muhaddithîn | 102 |
| 2561 | — — — | 102-103 |
| 2562 | E'âman bi Tadhâ'at Yâ'ân in Hima Sayyidat 'Ayyâm | 103 |
| 2563 | Tarjama-e-Ahâdith-e Nabawi | 103-104 |
| n. SHITEs | | |
| 2564 | Tarjama-e-Anwâr 'Ulu'um 'A'li'ân Wasit'î-Kadû | 104-106 |
| 2565 | Ḥawâṭih, (Sharh-e-Ḥawân-e-Hadrat 'A'li) | 106-107 |
| 2566 | — — — (With preface). | 107 |
| 2567 | — — — With commentary from f. 83v. | 107 |
| 2568 | — — — (Without preface). | 108 |
| 2569 | — — — | 108 |
| 2570 | — — — (Containing the preface only). | 108-109 |
| 2571 | — — — — — — — | 109 |
| 2572 | Ḥadith-e-Bisât | 109-110 |
| 2573 | Tarjama-e-Nabih'îl-Nawâṭ | 110 |
| 2574 | Tarjama-e-Nabih'îl-Nawâṭ | 110-111 |
| 2575 | Tarjama-e-Nabih'îl-Nawâṭ | 111 |
| 2576 | Kandatu'l-Abrâr | 112 |
| 2577 | — — — | 112-113 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2536 | Sharḥu'l-Mishkāt | 84-85 |
| 2537 | A'r-Risālatu'l-'Aḥyāyah fī'l-Abādīthi'n-Nabawīyyah | 85-87 |
| 2538 | — — — — — | 88 |
| 2539 | Ashḥātu'l Lāme'āt fī Sharḥi'l-Mishkāt | 88-89 |
| 2540 | — — — — — | 89 |
| 2541 | — — — — — (Vol. II), (a continuation of the preceding work) | 89-90 |
| 2542 | — — — — — (Vol. II) | 90 |
| 2543 | — — — — — (Vol. III and IV.) | 90-93 |
| 2544 | — — — — — (Part II, Kitāba) | 93 |
| 2545 | — — — — — (Part IV) | 93 |
| 2546 | Sharḥ-e-Sufaru's-Sa'ādat | 94 |
| 2547 | — — — — — (List of contents in the beginning). | 94 |
| 2548 | — — — — — | 95 |
| 2549 | Risāla dar Ādāb-e-Lihās | 95 |
| 2550 | — — — — — | 95-96 |
| 2551 | — — — — — | 96 |
| 2552 | Tawḥīdu'l-Qarī fī Sharḥ-e-Ḥadīthi'l-Bukhārī | 96-97 |
| 2553 | — — (Containing commentary on two Kitābs on ff. Iv and 34v respectively). | 97 |
| 2554 | Chihil ḥadīth | 97-98 |
| 2555 | Risāla-e-Ḥadīth dar Taḥḍīr-e-Ḥadīth 'Alī | 98-99 |
| 2556 | A'r-Risālatu fī 'Ilm-i-Usul-i-Abādīth | 99-100 |
| 2557 | Makhāzinu'l-Ma'rūf | 100 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------------------|--|-----------|
| 2520 | Sharh-e-Chihil Āyah | 75 |
| 3. HADITH—TRADITIONS | | |
| (i) SUNNITES | | |
| 2521 | Risāla-e-Hadīth | 76 |
| 2522 | Lubābu'l-Akḥbār | 76-77 |
| 2523 | — — | 77 |
| 2524 | — — | 77-78 |
| 2525 | — — | |
| 2526 | Sharh Qaṣida-e-Burdah | 79 |
| 2527 | — — — — | 79-80 |
| 2528 | — — — — (Defective in the beginning). | 80 |
| 2529 | — — — — (Compiled in 921/1515.) by Fakḥallāh, surnamed ḥwāja Ṣṣalāḥ | 80 |
| 2530 | — — — — (by Ibrāhīm b. Muḥammad b. 'Aḥd Shāh al-Istādīn) | 81 |
| 2531 | A'l-Jawābiru'l-Farāḥ fi Shathi'l-Qasḥah | 81 |
| 2532 | Faṭḥu'l-Mubīn | 82 |
| 2533 | Tarjamatu'l-Maṭṭūrah | 82-83 |
| 2534 | Majmū'a | 83 |
| | 1. Tarjamatu'l-Majmū'a il-Haṣṣa ḥaṣṣa il-ḥaṣṣa | 83 |
| | 2. Durrat-e-Kunayya | 83 |
| | 3. Ad'iya (fl. 500-1000) | 83 |
| 2535 | Riyāḍ-e-'Abbāsī | 84 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2501 | <u>Khulāṣat u'l-Manhaj</u> | 66 |
| 2502 | — — — (Containing the second half Juz 16 to 30) | 67 |
| 2503 | — — — | 67 |
| 2504 | — — — (From Sūra xix to the end of Rukū' 1 of Sūra xxxvi) | 67-68 |
| 2505 | — — — (From Sūra xix to Sūra xxxv). | 68 |
| 2506 | — — — (From Sūra xix to Sūra xxxii). | 68 |
| 2507 | — — — (Containing Sūra xxxiv to the end) | 69 |
| | — — — | 69 |
| 2509 | <u>Khulāṣat u'l-Manhaj</u> | 69 |
| 2510 | — — — (Containing Sūra xxxvi to liv). Defective at the end). | 70 |
| 2511 | — — — (Containing Sūra liv to the end of Rukū' I of Sūra xxxvi) | 70 |
| 2512 | <u>Jalālu'l-Aḥdān wa Jalālu'l-Aḥzān dar Tafsīr-e-Qur'ān</u> | 70-71 |
| 2513 | — — — (Vol. II) containing Suras vi to xviii) | 71 |
| 2514 | — — — (Vol. III) containing Sūra xix to cxiv, the end). | 22 |
| 2515 | — — — | 72 |
| 2516 | — — — (Vol. III, but containing Suras xxxvi to the end). | 72-73 |
| 2517 | <u>Tarjamat-u-Āyāt u'l-Aḥkām</u> | 73-74 |
| 2518 | — — — | 74 |
| 2519 | <u>Tafsīru'l-Qur'ān</u> | 74-75 |

| CAT NOS | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 2482 | Manhajū'ṣ-Ṣādiqin (Vol. V From Sūra xxvi to Sūra cxiv) | 59 |
| 2483 | — — (Vol. I containing the commentary 60 upto verse 279 of Sūra II). | |
| 2484 | Ḍuḥāsatu'l-Manhaj | 60 |
| 2485-2490 | — — — (Vol. I from Sūra i to Sūra iv) | 61 |
| 2486 | — — — (Vol. II From Sūra v to Sūra ix) | 61 |
| 2487 | — — — (Vol III From Sūra x to Sūra xviii) | 61 |
| 2488 | — — — (Vol. IV From Sūra xix to Sūra xxx) | 61 |
| 2489 | — — — (Vol. V From Sūra xxx to Sūra xiv) | 61 |
| 2490 | — — — (Vol. VI From Sūra xiv to Sūra xlv) | 61-62 |
| 2491 | — — — (from Sūra i to Sūra xviii) | 62 |
| 2492 | — — — | 62-63 |
| 2493 | — — — (From the beginning to verse 70 of Sūra xviii) | 63 |
| 2494 | — — — (From the beginning to the end of Sūra vi) | 63 |
| 2495 | — — — (From the beginning to the end of Sūra vi) | 64 |
| 2496 | — — — (Containing Sūras vii to xviii) | 64 |
| 2497 | — — — (Containing Sūras vii to xviii) | 64-65 |
| 2498 | — — — (From the beginning of Sūra viii to the end of Sūra xviii). | 65 |
| 2499 | — — — (Containing first 192 verses of Sūra li). | 65 |
| 2500 | — — — (A continuation of No. 2492, from Sūra xix to the end). | 66 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|--------------|---|--------------|
| 2460 | Mawāhib-e-'Adyyah (Tafsir-e-Husaini) | (Part II, 47 |
| 2461 | — — — — — | (Part II) 48 |
| 2462 | — — — — — | (Part II) 48 |
| 2463 | Tafsir-e-Sūra-e-Yūsuf | 48-49 |
| 2464 | Sharhu'l-Qur'ān-e-Mu'In | 49-50 |
| 2465 | Aḥsanu'l-Qaṣaṣ | 50 |
| 2466 | Tafsir-e-Bismillah | 51 |
| 2467 | Amāratu'l-Kalām 'r-Rahmān | 51-52 |
| 2568 | — — — — — | 52 |
| 2469 | Fathu'r-Rahmān bi Tarjamatu'l-Qur'an | 52 |
| — | Muqaddima-e-Tafsir-e-Qādiri | 53 |
| 2470 | Tafsir Fathu'l-'Aziz | 53-54 |
| 2471 | Sālaru't-Tafsir | 54 |
| 2472 | Fathu'l-Maḥānī | 55 |
| 2473 | Tafsir-e-Sūra-e-Baqarah | 55 |
| (ii) SHIITES | | |
| 2474 | Lawāme'u't-Tāwil | 56 |
| 2475 | A'l-Ighṭeṣāṣ bi Tarjamatu'l-Khawāṣ | 57 |
| 2476 | — — — — — | 57 |
| 2477 | — — — — — | 58 |
| 2478-2482 | Manḥajus-Sāliḥīn (Vol. I From Sūra I to Sūra III) | 58 |
| 2479 | (Vol. II From Sūra IV to Sūra VIII) | 58-59 |
| 2480 | — (Vol. III From Sūra IX to Sūra XVII) | 59 |
| 2481 | — (Vol. IV From Sūra XIX to Sūra XXXV) | 59 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|----------------|
| 2437 | Tafsir-e-Nura e-Yūsuf (It contains extra matter on H. 348v-362v) | 37 |
| 2438 | — — — | 37 38 |
| 2439 | — — — | 38 |
| 2440 | Jawāb ur-r'f-Tafsir il-Tublati'-Amir | 38 39 |
| 2441 | — — — — | 33-40 |
| 2442 | Mawāhib-e-'A'iyah (Tafsir-e-Husaini) | 40 41 |
| 2443 | — | 41 |
| 2444 | — — — — — | 41 |
| 2445 | — — — — — | 24 |
| 2446 | — — — — — | 42 |
| 2447 | — — — — — | (Part I) 42-43 |
| 2448 | — — — — — | (Part I) 43 |
| 2449 | — — — — — | (Part I) 43 |
| 2450 | — — — — — | (Part I) 44 |
| 2451 | — — — — — | (Part I) 44 |
| 2452 | — — — — — | (Part I) 44-45 |
| 2453 | — — — — — | (Part I) 45 |
| 2454 | — — — — — | (Part I) 45-46 |
| 2455 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2456 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2457 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2458 | — — — — — | (Part II) 47 |
| 2459 | — — — — — | (Part II) 47 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|---|-----------|
| | 8 Mathnawī-e-Mīr Ḥasan (f. 94v-102v) | 25-26 |
| 2424 | Majmū'a | 26-27 |
| | 1. Maqṣūdū'l-Qārī, (ff. 1-6v) (Refer Nos: 2400 and 2422/2). | 26 |
| | 2. Risāla-e-Qirā'at, ff. 7-31) | 26 |
| | 3. Tuhfa-e-Sulaimānī, (ff. 31v-52) | 26 |
| | 4. Kasa'idat Ḥayan-e-Nūn-e-Sakīn, (ff. 53-56) | 26 |
| | 5. Risāla-e-Waql-e-Lāzīm, (ff. 57-58v) | 27 |

2. TAFSIR—CRITICAL STUDIES AND COMMENTARIES

(i) SUNNITES

| | | |
|------|---|-------|
| 2425 | Tarjama-e-Tafsīr-e-Ṭabarī | 28 |
| 2426 | — — — (Containing Part II) | 28-29 |
| 2427 | A'l-Basā'ir fi'l-Wujūhī Wa'n-Naza'ir | 29-31 |
| 2428 | Tafsīr-e-Zāhidī | 32 |
| 2429 | Tafsīr-e-Ya'qub Charkhī | 32-33 |
| 2430 | — — — — | 33 |
| 2431 | — — — — | 33-34 |
| 2432 | — — — — | 34 |
| 2433 | Baḥr-e-Mawwāj | 34-35 |
| 2434 | — — — (Containing portion of Part I from chapter 7 (a'l-arāf) to end of chapter 18 (a'l-Kahaf). | 35-36 |
| 2435 | Tafsīr-e-Sūra-e-Yūsuf | 36 |
| 2436 | — — — | 36-37 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2412 | Kutub'ul-Ju'ani li-Qawā'id-e-Qur'ān | 15-16 |
| 2413 | Sab'atu'lb-Thawānī | 16-17 |
| 2414 | Kifayatu'l-Qārī | 17-18 |
| 2415 | Marghūbu'l-Qārī | 18 |
| 2416 | Hād'iqat'ul-Qurā'at | 18-19 |
| 2417 | Khuṣṣātu'n-Nawādir | 19-20 |
| 2418 | Risāla dar Ta'dūdāt-e-Āvāt-e-Qur'ān | 20 |
| 2419 | 1. Risāla-e-Jamāliya an'ul-Kāfiya-e-Tajwid (# 41v-4iv) | 21 |
| " | 2. Risāla-e-Tajwid, (# 42v-77) | 21 |
| 2420 | 'Ajāibu't-Tajwid | 22 |
| 2421 | Risāla-e-Tajwid | 22 |
| 2422 | Majmū'a | 23-24 |
| | 1. Muḥall'ul-Qurra, (ff. iv-v) | 23 |
| | 2. Maqṣud'ul-Qārī, (ff. iv-v, not in Nos 2409 and 2424) | 23 |
| | 3. Aḥ. Maqṣud'ul-Qārī, (ff. iv-v) | 23 |
| 2423 | Majmū'a | 24-26 |
| | 1. Nazmu'l-La'ā'if, (ff. iv-10) | 24 |
| | 2. Fāḥ-Nāma, (ff. 11-13). | 24 |
| | 3. Fāḥ-Nāma, (ff. 13-18v) | 24-25 |
| | 4. Risāla-e-Qurā'at, (ff. 19-34v) | 25 |
| | 5. Chihil-Sūrah, (ff. 36v-56) | 25 |
| | 6. Nazm-e-Hafẓ, (ff. 65-69v) | 25 |
| | 7. A New Version of the 100th Verse of the 100th Sūrah (ff. 93v). | 25 |

TABLE OF CONTENTS

VOLUME VII

ISLAMIC THEOLOGY

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS |
|----------|---|----------|
| | (i) Preface By Dr. M. L. Nigam, Director | (i-ii) |
| | QURANIC SCIENCE | |
| | <i>1. Tajwid Correct recitation of the Glorious Qur'an</i> | |
| 2401 | A'l-Mabshūṭ fi'l-Qirā'ati's-Sah'ā wa l-Madīni Min A'qā'ati't-Tab'a | 1-6 |
| 2402 | Manhalu'l-'Atshan fi Kasm-e-Abrufi'l-Qur'an | 6 |
| 2403 | Qawā'idu'l-Qur'an | 7 |
| 2404 | — — — | 8 |
| 2405 | Ma'danu'l-Qirā'at | 8-10 |
| 2406 | Maqṣūdu'l-Qārī | 10 |
| 2407 | Risāla-e-Tajwid | 10-11 |
| 2408 | Naṣm-e-La'ill | 12 |
| 2409 | Tuḥfatu'l-Qurrā' and Muḥṭaṣar Dar 'Ilm-e-Tajwid | 12-14 |
| | 1. Tuḥfatu'l-Qurrā' (H. IV-110v) | 12-13 |
| | 2. Muḥṭaṣar dar 'Ilm-e-Tajwid (H. 111v-113hv) | 13-14 |
| 2410 | — — — (Ref: Nos. 2409/a and 2424/b) | 14 |
| 2411 | Zīnātu'l-Qārī | 14-15 |

... ...

... ...

1987. UŞOL E-FUŞULU' T-IAWDIH

... ...



LIST OF PHOTO BLOCKS

Catalogue VII of Persian Manuscripts

| SL. NOS. | MS. NOS. | PARTICULARS | CAT. NOS. | PAGING P. |
|----------|---------------------------|--|-----------|-----------|
| 1. | Taf. 5 | Colophon of the oldest, rare and valuable copy of the <i>Sharh-e-Tarjama-e-Qutb Shâhi</i> by <i>Hasan Kitâbdâr</i> (d. 1176 A.H.) in <i>Arabic</i> naskh, D. 11. Dehli 1207 A. H/9 July, 1207 A.D. | 2427 | 31 |
| 2. | A. No. 57 | First page of the oldest and most valuable copy of the <i>Khānān</i> on f. 5a of <i>Sharh Qasida-e-Burda</i> . | 2526 | 70 |
| 3. | H. I. 47. (M. No. 208) | A Royal Codex bearing the royal seals and signatures of the 3. Golconda Kings (Ibrahim Qutb Shâh (2 M. No. 101), Qutb Shâh and (3) Muhammad Qutb Shâh. | 2564 | 105 |
| 4. | H. I. 10 | Colophon of a Royal Codex <i>Tarjama-e-Qutb Shâhi</i> transcribed by <i>Hasan Kitâbdâr</i> (d. 1176 A.H.) in <i>nasta'liq</i> and having <i>Ibn-e-Kutâb</i> 's Autograph in the margin. | 2592 | 131 |
| 5. | F. I. 15. | Opening page of a rare and excellent Royal Codex <i>Tarjama-e-Qutb Shâhi</i> transcribed by <i>Muhammad Mo'min 'Arab Shirâzi</i> . | 2716 | 199 |

2839. ARKANU'L IYMAN

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2855 RI-ALA E-USUL WA SHIKAT

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2859. USUL E-KHAMSA

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2857 TUHF E-SHAHI WA 'ATIYYA E-ILAH

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2876 TUBI ATIL-LAHARAT

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2900. JAWAHIRU'L-AQAI'D

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2900. JAWAHIRU'L-AQAI'D

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2900. MAN TAL E TALHIN FI MARIFATI

HUDA-TIL-KAMILIN

A Persian work on the subject of Faith, by Shahzad a Sultanam. Transcribed in 990 1558

2576. RAḤḤAT U'L-ABRĀR

A Persian work on the life of the Prophet, 'Aḥmad, Husein of Zawwār (d. 12 āh) and his sons, as recorded in Nakhsh and Nishā'iq. 'Abd al-Ḥamīd Ḥusaynī, a descendant of Sayyid Muḥammad Ḥusaynī, author.

2633. DASTIRU'L-KHAFĪN

A work on the Sufi path, written by the author, Muḥammad Kāshānī, d. 1172. Translated by the author. An autograph copy of 1172/1758.

2704. AḤMAD U'L-ḤASHIYAH FI TULAYM ILA BĀḤI BĀḤI BAḤI'L-HARĀM

A treatise on the life of the Prophet, 'Aḥmad, Husein of Zawwār (d. 12 āh) and his sons, as recorded in Nakhsh and Nishā'iq. 'Abd al-Ḥamīd Ḥusaynī, a descendant of Sayyid Muḥammad Ḥusaynī, author. An autograph copy.

2716. TARJUMA-E-FIOHU'R-RIDĀI

A Persian work on the life of the Prophet, 'Aḥmad, Husein of Zawwār (d. 12 āh) and his sons, as recorded in Nakhsh and Nishā'iq. 'Abd al-Ḥamīd Ḥusaynī, a descendant of Sayyid Muḥammad Ḥusaynī, author. Translated by the author. 1220 at Hyderabad. In the library of the Library of Muhammad Qutb Shāh of Golkonda.

2815. ANISU'L-A'QIYYA

A work on the Sufi path, written by the author, Muḥammad Kāshānī, d. 1172. Translated by the author. 1222/1252 by Muḥammad 'Abdu'l-Qādir.

2819. JAWHARU'L-FADĀIY

A treatise on the life of the Prophet, 'Aḥmad, Husein of Zawwār (d. 12 āh) and his sons, as recorded in Nakhsh and Nishā'iq. 'Abd al-Ḥamīd Ḥusaynī, a descendant of Sayyid Muḥammad Ḥusaynī, author. Translated by the author. 1222/1252 by Muḥammad 'Abdu'l-Qādir.

2820. DHARĪ'ATU'N-NAJĀT

A collection of forty-nine verses with Persian translation and commentary by the author. 1171/1758 at Hyderabad. 'Aḥmad, Husein of Zawwār (d. 12 āh) and his sons, as recorded in Nakhsh and Nishā'iq. 'Abd al-Ḥamīd Ḥusaynī, a descendant of Sayyid Muḥammad Ḥusaynī, author. xviii cent. copy.

NOTES ON RARE WORDS

Catalogue VII of Persian Manuscripts

2407. AL-MAL'U'ŪT FI QUR'ĀN S-SĀMĪ 'ADĪ MIN AḌḌĪ'Ī-TABĀ'

An interesting collection of words from the Qur'an, arranged alphabetically, as far as the Sogdian alphabet is concerned. It is a valuable work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2408. MANṢUR FĀRISĪ, AN FĀRĀ MAḤMĪD FĀRĀN

A critical edition of the text of the 'Manṣur' by Fārisī, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2409. NAẒM E-LU'ĀLĪ

A critical edition of the text of the 'NaẒm e-Lu'ālī' by Lu'ālī, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2410. SABA'TUTH-THAWANĪ

An interesting treatise on the 'Saba'tuth-Thawani' by Thawani, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2411. KĪ MĀ VĀK FĀDĪ ALĪ FĀYĀ, FĀNĪ

A critical edition of the text of the 'Kī Mā Vāk Fādī Alī Fāyā' by Fānī, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2412. FĪSṬĪ F-JAMĀLĪYĀ AND FĪSṬĪ F-JĀMĪYĀ

Two short treatises on the 'Fīstī f-Jamālīyā' and 'Fīstī f-Jāmīyā' by Jamālīyā and Jāmīyā, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

2413. A'Ī-LAṢĀ IR FĪ FĀ WUJĪH WĀN-SĀZĀ IR

A critical edition of the text of the 'A'ī-Lāṣā Ir Fī Fā Wujīh Wān-Sāzā Ir' by Abul-Lāṣā', and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars. It is a very rare work, and is well known to Persian scholars.

The eight Indices, covering names of persons, titles, names of copyists, dates and places of transcription, autographs and seals, lists of concordance, calligraphically written, illustrated and royal codices, which are the very soul of the catalogue, have also been prepared with utmost care.

It is heartening to note that the staff of the manuscripts section has done an excellent job in bringing out this catalogue to coincide with the celebrations of 1400 years of Islamic era.

Lastly I must also thank Justice Sharfu'ddin Ahmad, the Director, and Staff of the Dairatu'l-Ma'arif-i'l-Osmania for their co-operation and care in bringing out this catalogue. I hope it will inspire scholars and students to embark on further researches on the subject.

M. L. NIQAM

Director,

Salar Jung Museum

PREFACE

It gives me immense pleasure in introducing to readers the seventh concise catalogue of the Persian manuscripts in the Salar Jung Museum, Hyderabad. This volume is specifically devoted to Islamic theology containing both the Sunnite and Shiite theologies. Besides, it covers various other subjects like Recitation of A'l-Qur'ān, its Glossaries and Commentaries. Traditions and Islamic jurisprudence etc.

Tajwid, Tafsīr, Hadīth, Fiqh, 'Aqā'id and other numerous subjects form the contents of this catalogue. The oldest dated manuscript is an incomplete Sunnite commentary entitled "A'l-Baṣā'ir Fī'l-Wujūh w'an-Naẓā'ir," on the Glorious Qur'ān, compiled by Abu'l-Faḍā'il Muḥammad a'n-Nishāpūrī and transcribed by Hibbatu'llah bin Muḥammad in 603 A.H./1207 A.D. in Archaic Naskh. Equally important is a Shiite commentary on the first sūras of the Qur'ān entitled Jalālu'l-Aḥḥān wa Jalāli'l-Aḥzān by Abu'l-Mahāsīn a'l-Husain bin Ḥasan Jurjānī and transcribed in Thulth and Naskh by Muḥammad Mu'min Tūnī in 993 A.H./1591 A.D. This catalogue covers dated manuscripts from 7th century A.H. to 13th century A.H. and undated manuscripts which can be placed between 8th century A.H. to 14th century A.D.

Precise care has been taken in giving all the necessary technical and literary information about each and every manuscript with cross references to available catalogues in other famous libraries. Antiquity and historical value of manuscripts also has been taken into account. A detailed list of manuscripts with a supplement of rare manuscripts and a list of Illustrations is added in the beginning for the convenience of scholars.

A
CONCISE DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF
THE PERSIAN MANUSCRIPTS
IN
THE SALAR JUNG MUSEUM & LIBRARY

COMPILED
BY
LATE HĀJĪ MAULĀNĀ MUHAMMAD ASHRAF
(*Special Officer for Cataloguing*)

WITH A PREFACE
BY
DR. M.L. NIGAM
Director, Sālār Jung Museum

VOLUME VII
CONCERNING 627 MANUSCRIPTS OF ISLAMIC THEOLOGY

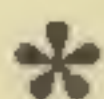
Published by
DIRECTOR
Salar Jung Museum and Library
Hyderabad, Andhra Pradesh
INDIA

1980

Price Rs:

Salar Jung Museum Publications
New Series No. 9/7

CATALOGUE
OF
THE PERSIAN
MANUSCRIPTS



Volume VII
(Islamic Theology)

Salar Jung Museum and Library
Hyderabad, Andhra Pradesh
INDIA

1980

Price Rs: